प्रधान-सम्पादकीय

प्राचीन कालकी मानवीय प्रवृत्तियोंका विधिवत् वर्णन व विश्लेषण ही इतिहास है। ऐसे इतिहासके लिए आधारभूत सामग्री प्राप्त होती है मानवकी निर्मितियोंके भग्नावशेषों अर्थात् गुफाओं, चैत्यों, स्तूपों, समाधियों, गृहों, मन्दिरादि धर्मायतनों व मूर्तियों जैसे स्थापत्यके भग्नावशेषोंसे, चित्रोंसे व साहित्यिक रचनाओंसे। किन्तु इनसे भी अधिक प्रामाणिक और यथावत् वृत्तान्त उन लेखोंसे मिलता है जो राजाओं व अन्य धनिकोंके दानकी तथा उनके द्वारा निर्माण कराये गये मन्दिरादिकी स्मृति-रक्षणार्थ पाषाणखण्डों व ताम्रपटों आदि पर उत्कीर्ण कराये गये पाये जाते हैं। ऐसे प्राचीनतम लेखोंकी लिपि बहुधा वही ब्राह्मी है जिससे आजकी नागरी लिपि विकसित हुई है, तथापि उसका प्राचीनतम रूप इतना भिन्न था कि उसे पढ़ना बहुत कठिन सिद्ध हुआ। बड़े परिश्रमके पश्चात् उस लिपिकी कुंजी हाथ लगी, जिससे लगभग गत अढ़ाई सहस्र वर्षोंके शिलालेख पढ़े और समझे जा सके। किन्तु चालीस-पचास वर्ष पूर्व सिन्धु घाटीसे ऐसे भी मुद्रालेख प्राप्त हुए हैं, जिन्हें पढ़ने और समझनेका अभी प्रयास ही चल रहा है, कोई सफलता प्राप्त नहीं हो सकी।

जो प्राचीन शिलालेख पढ़े गये और प्रकाशित हुए वे पुरातत्त्व विभागके बहुमूल्य व दुर्लभ ग्रन्थमालाओं व पत्रिकाओंमें समाविष्ट पाये जाते हैं। इनमें जैन धर्म सम्बन्धी शिलालेखोंका विवरण भी यत्र-तत्र बिखरा पाया जाता है। इन लेखोंका ऐतिहासिक महत्त्व तब प्रकट हुआ जब सन् १८८९ में मैसूरके पुरातत्त्व विभागकी ओरसे श्रवणबेलगोलके १४४ शिलालेखोंका अलगसे संग्रह एक विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना सहित प्रकाशित हुआ। सन् १९२३में इसका संशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रकाशमें आया

जिसमें शिलालेखोंकी संख्या ५०० हो गयी। इसी बीच सन् १९०८ में फ्रांसीसी विद्वान् गैरीनोकी एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने तब तक प्रकाशित हुए आठ सौ पचास जैन शिलालेखोंका परिचय कराया। इस सब सामग्रीके सम्मुख आनेपर कुछ जैन विद्वानोंकी आँखें खुलीं, और उन्हें अनुभव हुआ कि जब तक इस सामग्रीका उपयोग करते हुए धर्म व साहित्य सम्बन्धी लेख नहीं लिखे जायेंगे तबतक जैनधर्मका प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। स्वभावतः उस समय जो विद्वान् जैन साहित्य और इतिहासके संशोधनमें तल्लीन थे उन्हें इस आवश्यकताका विशेष रूपसे बोध हुआ। इनमें माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके संस्थापक व प्रधान सम्पादक स्वर्गीय पं० नाथूरामजी प्रेमीकी याद आती है। उन्होंने ही अपनी प्रेरणा-द्वारा जैनशिलालेख संग्रहका प्रथम भाग तैयार कराकर प्रस्तुत ग्रन्थमालाके २८वें पुष्पके रूपमें प्रकाशित किया, जिसमें श्रवण-बेलगोलके उपर्युक्त पाँच सौ शिलालेख नागरी लिपिमें हिन्दी सारांश तथा विस्तृत भूमिका व अनुक्रमणिकाओं सहित जिज्ञासुओं व लेखकोंको अति सुलभ हो गये। इसका तुरन्त ही हमारे साहित्य व इतिहास संशोधन कार्यपर महत्त्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। तद्विषयक लेखोंमें इनके उपयोग द्वारा बड़ी वांछनीय प्रामाणिकता आने लगी जिसके लिए प्रेमीजी-जैसे विद्वान् बहुत आतुर थे। अब उन्हें अन्य शिलालेखों को भी इसी रूपमें सुलभ पानेकी अभिलाषा तीव्र हुई जिसके फलस्वरूप उक्त गैरीनो महोदयकी रिपोर्टके आधार शिलालेख संग्रह भाग २ और ३ में (ग्र० ४५-४६ सन् १९५२, १९५७) आठ सौ पचास लेखोंका पाठ व परिचय हमारे सम्मुख आ गया।

आगेका लेख-संग्रह कार्य बड़ा कठिन प्रतीत हुआ, क्योंकि इसके लिए कोई व्यवस्थित सूचियाँ उपलभ्य नहीं थीं। किन्तु इस कार्यको पूरा कराना हमने अपना विशेष कर्तव्य समझा। सौभाग्यसे डॉक्टर विद्याधर जोहरापुरकरने यह कार्य-भार अपने ऊपर लेकर विशेष प्रयासों द्वारा यह छह सौ

चौवन लेखोंका परिचय करानेवाला चौथा संग्रह प्रस्तुत कर दिया। प्रस्तावनामें उन्होंने लेखोंका काल, प्रदेश, भाषा, प्रयोजन, मुनिसंघ, राजवंश आदि दृष्टियोंसे जो विश्लेषण व अध्ययन किया है वह बहुत महत्त्वपूर्ण है इसके लिए हम उनके बहुत कृतज्ञ हैं। हमें दुःख है कि पण्डित नाथूरामजी प्रेमी आज हमारे बीच नहीं रहे! कितना हर्ष होता उन्हें इस नये लेख संग्रहको देखकर!

शिलालेख-संग्रहके इन भागोंमें संकलित सामग्रीका जैन साहित्य और इतिहासके संशोधन कार्यमें विशेष उपयोग हो रहा है, और होगा इसमें सन्देह नहीं। किन्तु इस विषयमें अब तकके अनुभवके आधारसे कुछ सूचनाएँ कर देना हम अपना कर्तव्य समझते हैं—

१. लेखोंका जो मूल पाठ यहाँ प्रस्तुत किया गया है, वह सावधानी पूर्वक तो अवश्य लिया गया था, तथापि उसे अन्त-प्रमाण होनेका दावा नहीं किया जा सकता। कन्नड लेखोंको यहाँ जो देवनागरीमें लिखा गया है उसमें भी लिपिभेदसे अशुद्धियाँ हो जाना सम्भव है। आगे-पीछे विशिष्ट विद्वानों-द्वारा पाठ व अर्थ-संशोधन सम्बन्धी लेख लिखे ही गये होंगे। अतएव विशेष महत्त्वपूर्ण मौलिक स्थापनाओंके लिए संशोधकोंको मूलस्रोतों का भी अवलोकन कर लेना चाहिए।

२. इधर कुछ कालसे ऐसी प्रवृत्ति दिखाई देती है कि जहाँ दो आचार्योंमें नाम-साम्य दिखाई दिया वहाँ उन्हें एक ही मान लिया गया। किन्तु यह बात भ्रामक है। एक ही नामके अनेक आचार्य विविध कालोंमें भी हुए हैं और सम-सामयिक भी। अतएव उन्हें एक सिद्ध करनेके लिए नाममात्रके अतिरिक्त अन्य प्रमाणोंकी भी खोज करना चाहिए।

३. इन प्रकाशित शिलालेखोंसे यह अपेक्षा नहीं करना चाहिए कि उनमें समस्त प्राचीन आचार्योंका उल्लेख आ ही गया है: अतएव इनमें किसी आचार्यके नामका अभाव किसी विशिष्ट अनुमान व तर्कका आधार

नहीं वनाया जा सकता। ये लेख जैन मुनियोंकी पूरी गणनाका लेखा नहीं समझना चाहिए।

४. कन्नड लेखोंका जो सार हिन्दीमें दिया गया है उसीके आधार मात्रसे कोई नयी कल्पनाएँ नहीं करना चाहिए। उसके लिए मूल पाठ और उसके शब्दशः अनुवादका अवश्य अवलोकन करना चाहिए।

यथार्थतः ये लेख-संग्रह सामान्य जिज्ञासुओंके लिए तो पर्याप्त हैं। किन्तु विशेष संशोधकोंके लिए तो ये मूल सामग्रीकी ओर दिग्निर्देश मात्र ही करते हैं।

इस ग्रन्थमालाको अपनी गोदमें लेकर श्री शान्तिप्रसादजी व श्रीमती रमारानीजीने न केवल समाजके एक अग्रणी हितैषी सेठ माणिकचन्द्रजीकी स्मृतिकी रक्षा की है व ग्रन्थमालाके जन्मदाता पं० नाथूरामजी प्रेमीकी भावनाको सम्मान दिया है किन्तु जैन साहित्यकी रक्षा व जैन इतिहासके नवनिर्माण कार्यमें वड़ी महत्त्वपूर्ण सेवा की है जिसके लिए समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

– ही. ला. जैन
– आ. ने. उपाध्ये
(प्रधान सम्पादक)

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

प्रस्तुत संग्रहका प्रथम भाग डॉ० हीरालालजी जैन-द्वारा संपादित होकर सन् १९२८ में प्रकाशित हुआ था। उसमें श्रवणबेलगोल तथा निकटवर्ती स्थानोंके ५०० लेख संकलित हुए थे। इसका दूसरा तथा तीसरा भाग श्री विजयमूर्ति शास्त्री-द्वारा संकलित हुआ। इन दो भागोंमें फ्रेन्च विद्वान् डॉ० गेरिनो-द्वारा संपादित पुस्तक 'रिपोर्टर द एपिग्राफी जैन'के आधारसे ८५० लेख दिये हैं। डॉ० गेरिनोकी पुस्तक पेरिससे सन् १९०८ मे प्रकाशित हुई थी। अतः इन दो भागोंमें सन् १९०८ तक प्रकाशित हुए लेख ही आ सके हैं। इन ८५० लेखोंमें-से १४० लेख प्रथम भागमे आ चुके हैं तथा १७५ लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं अतः इनकी सूचना-भर दी गयी है – शेष ५३५ लेखोंका पूरा विवरण दिया गया है। इस तरह पहले तीन भागोंमें कुल १०३५ लेखोंका संग्रह हुआ है।

सन् १९५७ में इस संग्रहके तीसरे भागके प्रकाशित होनेपर श्रीमान् डॉ० उपाध्येजीने हमें प्रस्तुत चौथे भागके संपादनके लिए प्रेरित किया। तबसे कोई चार वर्ष तक अवकाशके समयका उपयोग कर यह कार्य हमने किया। इसे कुछ विस्तृत रूप देनेके लिए हमने सन् १९६१ की गर्मियोंकी छुट्टियोंमें दो सप्ताह तक उटकमंड स्थित प्राचीनलिपिविद्–कार्यालयमें भी अध्ययन किया। इसके फलस्वरूप सन् १९०८ के बाद प्रकाशित हुए कोई ६५४ लेखोंका संग्रह प्रस्तुत भागमें प्रकाशित हो रहा है।

यद्यपि ये सब लेख पुरातत्त्वविभागके प्रकाशनोंमें पहले प्रकाशित हो चुके हैं तथापि साधारण अभ्यासकके लिए वे सुलभ नहीं हैं – उनका संपादन अँगरेजीमें हुआ है तथा उनका मूल्य भी बहुत अधिक है। अतः इस संग्रहमें उनका पुनः प्रकाशन उपयोगी होगा

इसमें सन्देह नहीं है।

यह कहना तो संभव नहीं है कि इन भागोंमें अबतक प्रकाशित सब लेख संगृहीत हो चुके है – तथापि अधिकांश लेखोंका संग्रह करनेकी हमने कोशिश की है।

यह स्पष्ट ही है कि इन प्रकाशित लेखोंके अतिरिक्त अभी सैकड़ों लेख अप्रकाशित भी हैं – विशेषकर मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा उत्तरप्रदेशके सैकड़ों मूर्तियों तथा मन्दिरों आदिके लेखोंका अध्ययन अभी बहुत कम हुआ है। परिशिष्टमें दिये हुए नागपुर मूर्तिलेख संग्रहसे इस कार्यके विस्तारकी कल्पना हो सकती है। हमें आशा है कि इन लेखोंका संग्रह भी प्रस्तुत मालाके अगले भागोंमें प्रकाशित हो सकेगा।

माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके प्रारम्भसे ही इसका कार्य स्व० नाथूरामजी प्रेमीने बहुत श्रद्धा तथा उत्साहसे सँभाला था। हमें जैन इतिहासके अध्ययनमें उनसे बहुत प्रोत्साहन मिला है। खेद है कि इस पुस्तकके सम्पादनके पूर्ण होनेसे पहले ही उनका स्वर्गवास हो गया। हम उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

प्रस्तुत संग्रहकी प्रेरणाके लिए हम आदरणीय डॉ० उपाध्येजीके भी ऋणी हैं। उटकमंडके प्राचीन लिपिविद् कार्यालयके प्रमुख डॉ० दिनेशचन्द्र सरकारसे वहाँके पुस्तकालयमें अध्ययनकी सुविधा मिली तथा वहाँके अन्य अधिकारी डॉ० गै एवं श्री० रित्तीसे अच्छा सहयोग मिला एतदर्थ हम उनके ऋणी हैं। उन सब विद्वानोंका ऋण तो स्पष्ट ही है जिन्होंने इन लेखोंका पहले सम्पादन किया था तथा विभिन्न पत्रिकाओंमें उन्हें प्रकाशित किया था।

अन्तमें कन्नड भाषा अथवा इतिहासके अज्ञानवश जो त्रुटियाँ रही हों उनके लिए हम पाठकोंसे क्षमा चाहते हैं।

जावरा – दिसम्बर १९६१ — वि० जोहरापुरकर

संकेत-सूची

(अ) पूर्णतः उपयुक्त पत्रिकाएँ –

ए० इ०	एपिग्राफिया इण्डिका
रि० इ० ए०	एन्युअल रिपोर्ट ऑन इण्डियन एपिग्राफी
रि० सा० ए०	एन्युअल रिपोर्ट ऑन साउथ इण्डियन एपिग्राफी
इ० म०	इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ़ दि मद्रास प्रेसिडेन्सी
इ० पु०	इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ़ दि पुदुकोट्टै स्टेट
ए० रि० मै०	एन्युअल रिपोर्ट ऑफ़ दि मैसोर आर्किऑलॉजिकल डिपार्टमेण्ट
रि० आ० स०	एन्युअल रिपोर्ट ऑफ़ दि आर्किऑलॉजिकल सर्व्हे ऑफ़ इण्डिया

(आ) अंशतः उपयुक्त पत्रिकाएँ –

सा० इ० इ०	साउथ इण्डियन इन्स्क्रिप्शन्स
इ० ए०	इण्डियन एण्टिक्वेरी
मे० आ० स०	मेमॉयर्स ऑफ दि आर्किऑलॉजिकल सर्व्हे ऑफ़ इण्डिया
इ० हि० का०	इण्डियन हिस्टॉरिकल कांग्रेस-रिपोर्ट
इ० ओ० का०	इण्डियन ओरिएण्टल कॉन्फरन्स-रिपोर्ट

■

प्रस्तावना

१. लेखोंका साधारण परिचय—

जैन शिलालेख संग्रहके प्रस्तुत चौथे भागमें कुल ६५४ लेख संगृहीत हैं। इन्हें समयके क्रमसे प्रस्तुत किया है। इसमें सनपूर्व चौथी सदीका १ (क्र० १) सनपूर्व तीसरी सदीका १ (क्र० २), सनपूर्व पहली सदीके ११ (क्र० ३ से १३,) सन् पहली सदीका १ (क्र० १४), दूसरी सदीके ४ (क्र० १५ से १८), पांचवी सदीका १ (क्र० १९), छठी सदीके दो (क्र० २० व २१), सातवीं सदी के २२ (क्र० २२ से ४३) आठवीं सदीके १० (क्र० ४४ से ५३), नौवीं सदीके २० (क्र० ५४ से ७३), दसवीं सदीके ४२ (क्र० ७४ से ११५), ग्यारहवीं सदीके ६७ (क्र० ११६ से १८२), बारहवीं सदीके १३४ (क्र० १८३ से ३१६,) तेरहवीं सदीके ७३ (क्र० ३१७ से ३८९), चौदहवीं सदीके ३० (क्र० ३९० से ४१९), पन्द्रहवीं सदीके ३५ (क्र० ४२० से ४५४) सोलहवीं सदीके ४७ (क्र० ४५५ से ५०१), सत्रहवीं सदीके १५ (क्र० ५०२ से ५१६), अठारहवीं सदीके ११ (क्र० ५१७ से ५२७), तथा उन्नीसवीं सदीके ८ (क्र० ५२८ से ५३५) लेख हैं। शेष ११९ लेखोंका समय अनिश्चित है।

इन ६५४ लेखोंमें राजस्थानके २१, उत्तरप्रदेशके ९, बिहारके ४, बंगालका १, गुजरातके ३, मध्यप्रदेशके १५, उड़ीसाके १६, महाराष्ट्रके ७, आन्ध्रके ४६, मद्रासके ८२, केरलका १ एवं मैसूर प्रदेशके ४४७ लेख हैं।

भाषाकी दृष्टिसे इन लेखोंका विभाजन इस प्रकार है — प्राकृतके १८, संस्कृतके ८८, हिन्दीके ३, तेलुगुके ८, तमिलके ७७ एवं कन्नडके ४६०।

प्रयोजनकी दृष्टिसे ये लेख मुख्यतः चार भागोंमें बाँटे जा सकते हैं —८७ लेखोंमें जिनमन्दिरोंके निर्माण अथवा जीर्णोद्धारका वर्णन है, १२६ लेखोंमें जिनमूर्तियोंकी स्थापनाका वर्णन है, २०८ लेखोंमें मन्दिरों तथा मुनियोंको गाँव, जमीन, सुवर्ण, करोंकी आय आदिके दानका वर्णन है, तथा १६४ लेखोंमें मुनियों, गृहस्थों तथा महिलाओंके समाधिमरणका उल्लेख है। इसके अतिरिक्त १३ लेखोंमे गुहा-निर्माणका, ४ लेखोंमें (क्र० ४८६, ४८७, ४८९ तथा ५७६) मठोंके आर्थिक व्यवहारोंका, ३ लेखोंमें (क्र० ४२५, ४७१ तथा ४७२) साम्प्रदायिक समझौतोंका एवं एक लेख (क्र० ५०७) में सामाजिक कुरूढिके निवारणका वर्णन है।

लेखोंके इस स्थूल परिचयके बाद हम इनसे प्राप्त ऐतिहासिक तथ्योंका कुछ विस्तारसे अवलोकन करेंगे – पहले जैनसंघके बारेमें तथा बादमें राज-वंशों आदिके विषयमें।

२. जैनसंघका परिचय—

(अ) यापनीय संघ—प्रस्तुत संग्रहमें यापनीय संघका उल्लेख कोई १७ लेखोंमें हुआ है। इनमें सबसे प्राचीन लेख गंग राजा अविनीतका ताम्रपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है (ले० २०)[1]। इसमें 'यावनिक' संघ-द्वारा अनुष्ठित एक मन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

इस संघके कुमिलि अथवा कुमुदि गणका उल्लेख चार लेखोंमें है[2] (क्र० ७०, १३१, ६११ एवं ६१२)। इनमें पहले लेख (क्र० ७०) में नौवीं सदीमें इस गणके महावीर गुरुके शिष्य अमरमुदल गुरुका वर्णन है। इन्होंने कीरॆप्पाक्कम् ग्रामके उत्तरमें देशवल्लभ जिनालयका निर्माण

---

१. पहले संग्रहके क्र० ९९, १०० तथा १०५ लेखोंमें ५वीं सदीके उत्तरार्धमें भी यापनीय संघका उल्लेख है।

२. पहले संग्रहमें इस गणका कोई उल्लेख नहीं है।

कराया था। दूसरे लेख (क्र० १३१) में सन् १०४५ में इस गणके कुछ आचार्योंका वर्णन है। इस समय चावुण्ड नामक अधिकारीने मुगुन्द ग्राममें एक जिनालय बनवाया था। अन्य दो लेख (क्र० ६११ तथा ६१२) अनिश्चित समयके निषिधि लेख हैं। इनमें पहला लेख इस गणके शान्तवीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है।

यापनीय संघका दूसरा गण पुन्नागवृक्षमूल गण चार लेखोंसे ज्ञात होता है (क्र० १३०, २५९, १६८, ६०७)। पहले लेखमें सन् १०४४ में इस गणके बालचन्द्र आचार्यको पूलि नगरके नवनिर्मित जिनालयके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी लेखके उत्तरार्धमें सन् ११४५ में इस गणके रामचन्द्र आचार्यको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस गणका अगला उल्लेख (क्र० २५९) सन् ११६५ का है। इसमें इस गणकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है – मुनिचन्द्र – विजयकीर्ति – कुमारकीर्ति त्रैविद्य – विजयकीर्ति (द्वितीय)। शिलाहार राजा विजयादित्यके सेनापति कालणने एक्कसम्बुगे नगरमें एक जिनालय बनवाकर उसके लिए विजयकीर्ति (द्वितीय) को कुछ दान दिया था। एक लेखमें (क्र० १६८) वृक्षमूलगणके मुनिचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है – यह सन् १०९६ का लेख है। एक अनिश्चित समयके लेख (क्र० ६०७) में भी वृक्षमूलगणके एक मन्दिर कुसुमजिनालयका उल्लेख है। हमारा अनुमान है कि इन दो लेखोंका वृक्षमूलगण पुन्नागवृक्षमूलगणसे भिन्न नहीं होगा।[1]

यापनीय संघके कण्डूर गणका उल्लेख तीन लेखोंमें है (क्र० २०७, ३६८,३८६) इनमें पहला लेख १२वीं सदीके पूर्वार्धका है तथा इसमें

---

१. पहले संग्रहमें पुन्नागवृक्षमूलगणके दो उल्लेख सन् ८१२ तथा सन् ११०८ के हैं (क्र० १२४, २५०)।

इस गणके बाहुबली, शुभचन्द्र, मौनिदेव एवं माघनन्दि इन चार आचार्यो-का वर्णन है – इनमें परस्पर सम्बन्ध बतलाया नहीं है। दूसरे लेखमें १३वीं सदीमें इस गणके एक मन्दिरका उल्लेख है तथा तीसरे लेखमें इसी समयकी एक जिनमूर्तिका उल्लेख है।[1]

इसी संघके कारेयगणका उल्लेख १२वीं सदीके पूर्वार्धके एक लेख (क्र० २०९) में है। मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवसूरि ये इस गणके आचार्य थे।[2]

पाँच लेखोंमें यापनीय संघका उल्लेख किसी गण या गच्छके बिना ही प्राप्त होता है (क्र० १४३,२९८–३००,३८४)। इनमें पहला लेख सन् १०६० का है तथा इससे जयकीर्ति – नागचन्द्र – कनकशक्ति इस गुरुपरम्पराका पता चलता है। अगले दो लेख १२वीं सदीके हैं तथा इनमें मुनिचन्द्र एवं उनके शिष्य पाल्यकीर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है। अन्तिम लेखमें १३वीं सदीमें नेमिकीर्ति आचार्यका उल्लेख है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहसे यापनीय संघका अस्तित्व छठी सदीसे तेरहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।[3]

(आ) मूलसंघ—प्रस्तुत संग्रहमें मूलसंघके अन्तर्गत सेनगण, देशी गण, सूरस्थगण, बलगारगण (बलात्कार गण) क्राणूरगण तथा निगमा-

---

१. पहले संग्रहमें इस गणका उल्लेख सन् ९८० में हुआ है (क्र० १६०)।

२. पहले संग्रहमें इस गणके दो लेख सन् ८७५ तथा दसवीं सदी-पूर्वार्धके हैं (क्र० १२०,१८२)।

३. पहले संग्रहमें यापनीय संघके तीन और गणोंका उल्लेख है – कनकोपलसम्भूत वृक्षमूल गण, श्रीमूलमूलगण तथा कोटिमडुव गण-(तीसरा भाग-प्रस्तावना पृ० २७–२९)।

न्वय इन छह परम्पराओंके उल्लेख विस्तारसे मिलते हैं।[1] इनका अब क्रमशः विवरण प्रस्तुत करेंगे।

(आ १) सेनगण—इसका प्राचीनतम उल्लेख सन् ८२१ का है (क्र० ५५)। इस लेखमें इसे 'चतुष्टय मूलसंघका उदयान्वय सेनसंघ' कहा है। इसकी आचार्यपरम्परा मल्लवादी-सुमति पूज्यपाद-अपराजित इस प्रकार थी। लेखके समय गुजरातके राष्ट्रकूट शासक कर्कराज सुवर्णवर्षने अपराजित गुरुको कुछ दान दिया था।[2]

सेनगणके तीन उपभेद थे – पोगरि अथवा होगरि गच्छ, पुस्तक गच्छ, एवं चन्द्रकवाट अन्वय। पोगरि गच्छका पहला लेख (क्र० ६१) सन् ८९३ का है तथा उसमें विनयसेनके शिष्य कनकसेनको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस लेखमें इसे मूलसंघ-सेनान्वयका पोगरियगण कहा है। दूसरा लेख (क्र० १३४) सन् १०४७ का है तथा इसमें नागसेन पण्डितको सेनगण-होगरि गच्छके आचार्य कहा है। इन्हें चालुक्य राज्ञी अक्कादेवीने कुछ दान दिया था।[3]

चन्द्रकवाट अन्वयका पहला लेख (क्र० १३८) सन् १०५३

---

१. पहले संग्रहमें उल्लिखित देवगणका कोई लेख इस संग्रहमें नहीं है। पहले संग्रहमें मूलसंघके प्राचीन उल्लेख (क्र० ९०, ९४) पाँचवीं सदीके हैं। तथा उनमें गण आदिका उल्लेख नहीं है।

२. पहले संग्रहमें सेनगणका प्राचीनतम उल्लेख सन् ९०३ का है (क्र० १३७)। इसे देखकर डॉ० चौधरीने कल्पना की थी कि आदिपुराणकर्ता जिनसेन ही सेनगणके प्रवर्तक होंगे (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४४) किन्तु प्रस्तुत लेखसे जिनसेनके गुरु वीरसेनके समयमें ही सेनसंघकी परम्पराका अस्तित्व प्रमाणित होता है। वीरसेनने धवलाटीकाकी रचना सन् ८१६ में पूर्ण की थी।

३. पहले संग्रहमें पोगरिगच्छके चार उल्लेख सन् १०४५ से १२७१ तक के आये हैं। (क्र० १८३,२१७,१८६,५११)

का है तथा इसमें अजितसेन-कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन इस परम्पराका वर्णन है। लेखके समय सिन्द कुलके सरदार कंचरसने नयसेनको कुछ दान दिया था। नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन (द्वितीय) का उल्लेख सन् १०८१ के लेख (क्र० १६५) में मिलता है। दोण नामक अधिकारी-द्वारा इन्हें कुछ दान दिया गया था। इन लेखोंमें नरेन्द्रसेन तथा नयसेनकी व्याकरण-शास्त्रमें निपुणताके लिए प्रशंसा की गयी है।[1]

एक लेख (क्र० १४७) में चन्द्रिकवाट वंशके शान्तिनन्दि भट्टारकका सन् १०६६ में उल्लेख है। इसमे मूलसंघका उल्लेख है किन्तु सेनगणका उल्लेख नहीं है।

सेनगणके तीसरे उपभेद पुस्तकगच्छका वर्णन १४वीं सदीके एक लेख (क्र० ४१५) में है। इसमें ग्यारह आचार्योंकी परम्परा बतलायी है। इस परम्पराके प्रभाकरसेनके शिष्य लक्ष्मीसेनके समाधिमरणका प्रस्तुत लेखमें वर्णन है। लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनका समाधिमरण सन् १४०५ में हुआ था (ले० ४२१)।

प्रस्तुत, संग्रहके पाँच लेखोंमें सेनगणका उल्लेख किसी उपभेदके बिना हुआ है (क्र० ४९२, ४९३, ५०४, ५०७, ६२६)। पहले दो लेखोंमें सन् १५९७ मे सोमसेन भट्टारक-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अगले दो लेखों (५०४, ५०७) में समन्तभद्र आचार्यका सन् १६२२ एवं १६३२ में उल्लेख है। सन् १६२२ में उन्होंने एक मन्दिरका जीर्णोद्धार किया था तथा सन् १६३२ में दीवालीका त्योहार मनानेके ढंगमें कुछ सुधार किया था। अन्तिम लेख अनिश्चित समयका है तथा इसमें प्रसिद्ध वादी भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्तीके समाधिमरणका उल्लेख है।[2]

---

१. पहले संग्रहमें चन्द्रकवाट अन्वयका कोई वर्णन नहीं है।

२. भावसेन कृत संस्कृत ग्रन्थ विश्वतत्त्वप्रकाश जीवराज ग्रन्थमाला (शोलापुर) द्वारा प्रकाशित हो रहा है। इसकी प्रस्तावनामें हमने भावसेनका समय १३वीं सदीका उत्तरार्ध निश्चित किया है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहके १३ लेखोंसे सेनगणका अस्तित्व आठवीं सदीसे सत्रहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।[1]

(आ २) देशीगण—प्रस्तुत संग्रहमें देशीगणके पुस्तकगच्छ, आर्यसंघग्रहकुल, चन्द्रकराचार्याम्नाय, तथा मैणदान्वय इन चार परम्पराओंका उल्लेख हुआ है।

पुस्तकगच्छका एक उपभेद पनसोगे (अथवा हनसोगे) वलि था। इसका पहला उल्लेख (क्र० ७४) दसवीं सदीके प्रारम्भका है[2] तथा इसमें श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है। इस वलिका दूसरा लेख (क्र० २७२) सन् ११८० के आसपासका है तथा इसमे नयकीर्तिके शिष्य अध्यात्मी बालचन्द्र-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है। इस शाखाके चार लेख और हैं (क्र० २९२, ३३५, ४१६ तथा ५३८) जो बारहवींसे चौदहवीं सदी तकके हैं। इनमें ललितकीर्ति, देवचन्द्र तथा नयकीर्ति आचार्योंका उल्लेख है। अन्तिम लेखमें 'घनशोकवली' इस प्रकार इस शाखाके नामका संस्कृतीकरण किया गया है।

पुस्तकगच्छका दूसरा उपभेद इंगुलेश्वर वलि था। इसका उल्लेख सात लेखोंमें (क्र० २९०, ३१०, ३६९, ३७८, ३८२, ६०६, ६४२) मिला है। ये सब लेख १२वीं – १३वीं सदीके हैं। तथा इनमें हरिचन्द्र, श्रुतकीर्ति, भानुकीर्ति, माघनन्दि, नेमिदेव, चन्द्रकीर्ति तथा जयकीर्ति

---

१. सेनगणकी पुष्करगच्छ नामक शाखा कारंजा (विदर्भ) में १५वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थी। इसका विस्तृत वृत्तान्त हमारे ग्रन्थ 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है। पुष्करगच्छ सम्भवतः पोगिरि गच्छका ही संस्कृत रूप है।

२. यहाँ इस संग्रहमें देशीगणका पहला उल्लेख है। पहले संग्रहमें देशीगणके उल्लेख सन् ८६० (क्र० १२७) से मिले हैं तथा पनसोगे शाखाके उल्लेख सन् १०८० (क्र० २२३) से प्राप्त हुए हैं।

इन आचार्योंके उल्लेख मिलते हैं।[1]

प्रस्तुत संग्रहमें पुस्तकगच्छके उल्लेख विना किसी उपभेदके भी कई लेखोंमें मिलते हैं। इनमें पहला लेख (क्र० १६४) सन् १०८१ का है तथा इसमें सकलचन्द्र भट्टारकका उल्लेख है। इस प्रकारके अन्य लेख १७ हैं (क्र० १७१, १७७–८, १९०, २०३, २३४, २५१, ३१८–९, ३६१-६, ४९०, ५६१)। ये लेख १६वीं सदी तकके हैं। इनसे कोई विस्तृत गुरु-परम्पराका पता नहीं चलता[2]!

देशीगणके दूसरे उपभेद आर्यसंघग्रहकुलका उल्लेख एक ही लेख (क्र० ९४) में मिला है। यह लेख दसवीं सदीका है तथा इसमें कुलचन्द्र-के शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख है। विशेप यह है कि यह लेख उड़ीसाके खण्डगिरिपर्वतपर मिला है जव कि देशीगणके अन्य उल्लेख मैसूर प्रदेशके हैं।[3]

देशी गणका तीसरा उपभेद चन्द्रकराचार्याम्नाय भी एक ही लेखसे ज्ञात होता है (क्र० २१७) तथा यह मध्यप्रदेशमें मिला है। इसमें प्रतिष्ठाचार्य सुभद्र-द्वारा १२वीं सदीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरकी प्रतिष्ठाका उल्लेख है।[4]

देशी गणके चौथे उपभेद मैणदान्वयके शुभचन्द्र आचार्यका एक उल्लेख १३वीं सदीमें मिला है (क्र० ३७२)।[5]

---

१. पहले संग्रहमें इंगुलेश्वर बलिके उल्लेख सन् ११८३ (क्र० ४११) से सन् १५४४ (क्र० ६७३) तकके हैं।

२. पहले संग्रहमें पुस्तक गच्छके उल्लेख सन् ८६० (क्र० १२७) से सन् १८१३ (क्र० ७५३) तक के हैं।

३, ४ पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका कोई उल्लेख नहीं है।

५. पहले संग्रहमें इस अन्वयका उल्लेख नहीं है इससे मिलता जुलता एक उपभेद वाणद बलि है जो पुस्तकगच्छके अन्तर्गत था (क्र० ४७८) इसका उल्लेख सन् १२३२ का है।

किसी उपभेदके बिना भी देशीगणके कई उल्लेख मिले हैं। इनमें दो लेखोंमें (क्र० ८३, १६१) सन् ९५० तथा १०१६ में गुणचन्द्र और रविचन्द्र आचार्योंका उल्लेख है। इन लेखोंमें देशी गणके साथ सिर्फ कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण है। कोई १८ लेखोंमें मूलसंघ – देशीगण इस प्रकार उल्लेख है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० ११३, २२१, २५६) बारहवीं सदीके हैं। कोई ८ लेखोंमें देशीगणके साथ अन्य कोई विशेषण नहीं है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १२६, १३१, १४०) सन् १०३२ तथा १०५४ के हैं और इनमें अष्टोपवासी कनकनन्दि आचार्यको कुछ दान देनेका वर्णन है।

(आ ३) कोण्डकुन्दान्वय—देशी गणके पुस्तक गच्छको प्रायः कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण दिया गया है। कुछ लेखोंमें किसी संघ या गणके बिना सिर्फ कोण्डकुन्दान्वयका उल्लेख है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १८०, २२२) ग्यारहवीं-बारहवीं सदीके हैं। एक प्राचीन लेख (क्र० ५४) में सन् ८०८ में कोण्डकुन्देय अन्वयके सिर्मलगेगूर गणके कुमारनन्दि-एलवाचार्य-वर्धमानगुरु इस परम्पराका उल्लेख है। वर्धमानगुरुको राष्ट्रकूट राजा कम्भराजने एक ग्राम दान दिया था। इस लेखमें कोण्डकुन्देय अन्वय यह शब्द प्रयोग है जो स्पष्टतः कोण्डकुन्दे स्थानका सूचक है।[1]

(आ ४) सूरस्थ गण – प्रस्तुत संग्रहमें इस गणका पहला उल्लेख सन् ९६२ का है (क्र० ८५)। इसमें प्रभाचन्द्र – कल्नेलेदेव-रविचन्द्र-

---

१. पहले संग्रहमें कोण्डकुन्दान्वयका प्रथम उल्लेख सन् ७९७ में (क्र० १२२) बिना किसी गणके हुआ है। वहाँ सिर्मलगेगूर गणका कोई उल्लेख नहीं है। कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण क्वचित् द्राविड़ संघ, सेनगण आदिके लिए भी प्रयुक्त हुआ है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४९, ५१)

रविनन्दि-एलाचार्य इस परम्पराका वर्णन है। गंग राजा मारसिंह २ ने एलाचार्यको एक ग्राम अर्पण किया था।[1]

सूरस्थ गणके दो उपभेदोंका पता चला है – कौरूर गच्छ तथा चित्रकूटान्वय।[2] कौरूर गच्छका एक ही लेख है (क्र० ११७) तथा इसमें सन् १००७ में अर्हणन्दि पण्डितका वर्णन है। चित्रकूटान्वयके १० लेख हैं। पहले लेखमें (क्र० १५३) सन् १०७१ में इस अन्वयके श्रीनन्दि पण्डितकी एक शिष्याको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। श्रीनन्दिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी – चन्द्रनन्दि-दामनन्दि-सकलचन्द्र-कनकनन्दि-श्रीनन्दि। श्रीनन्दि तथा उनके गुरुबन्धु भास्करनन्दिके समाधिलेख सन् १०७७-७८ के हैं (क्र० १६०)। इस अन्वयका तीसरा लेख (क्र० १५८) सन् १०७४ का है तथा इसमें अरुहणन्दिके शिष्य आर्य पण्डितको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अगले दो लेखोंसे (क्र० २३७-३८) इस अन्वयकी एक परम्पराका पता चलता है जो इस प्रकार थी – वासुपूज्य-हरिणन्दि-नागचन्द्र। हरिणन्दि तथा नागचन्द्रको सन् ११४८ मे कुछ दान मिला था। इस अन्वयके अन्य लेख अनिश्चित समयके हैं। इस प्रकार कोई १४ लेखोंसे सूरस्थ गणका अस्तित्व दसवीं सदीसे बारहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।[3]

(आ ५) बलगार-(बलात्कार)-गण – इस गणका पहला उल्लेख

---

१. सूरस्थ गणका प्राचीन लेख पहले संग्रहमें सन् १०५४ का है (क्र० १८५)।

२. पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका वर्णन नहीं है। वहाँ चित्रकूटान्वयका सम्बन्ध बलगार गणसे भी पाया गया है (क्र० २०८)

३. कुछ लेखोंमें सेनगण और सूरस्थगणको (जिसे कहीं-कहीं शूरस्थ भी कहा है) अभिन्न माना है। इसका विवरण हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' के सेनगण विषयक प्रकरणमें दिया है।

सन् १०७१ का है (क्र० १५४)।[1] इसमें मूलसंघ-नन्दिसंघका वलगार गण ऐसा इसका नाम है तथा इसके ८ आचार्योंकी परम्परा दी है जो इस प्रकार है – वर्धमान-महावादी विद्यानन्द–उनके गुरुबन्धु तार्किकार्क माणिक्यनन्दि-गुणकीर्ति-विमलचन्द्र-गुणचन्द्र–गण्डविमुक्त-उनके गुरुबन्धु अभयनन्दि।[2] अगले लेख (क्र० १५५) में इसी परम्पराके तीन और आचार्योंके नाम हैं–अभयनन्दि-सकलचन्द्र-गण्डविमुक्त २–त्रिभुवनचन्द्र। इन लेखोंमें गुणकीर्ति तथा त्रिभुवनचन्द्रको मिले हुए दानोंका विवरण है। लेख १५७ में सन् १०७४ में पुनः त्रिभुवनचन्द्रका उल्लेख है। इस गणके अगले महत्त्वपूर्ण लेख (क्र० ३४२, ३७६) तेरहवीं सदीके हैं। इनमें शास्त्रसारसमुच्चय आदि ग्रन्थोंके कर्ता माघनन्दि आचार्यका वर्णन है। इनकी गुरुपरम्परामें १९ आचार्योंके नाम दिये हैं किन्तु उनका क्रम व्यवस्थित प्रतीत नहीं होता।

चौदहवीं सदीसे बलात्कारगणके साथ सरस्वतीगच्छका उल्लेख मिलता है। इसकी एक परम्पराके आचार्य अमरकीर्ति थे। इनके शिष्य माघनन्दिने सन् १३५५में एक मूर्ति स्थापित की थी (क्र० ३९३) इसी परम्पराके तीन लेख और हैं। इनमें वर्धमान, धर्मभूषण तथा वर्धमान २ इन भट्टारकोंका उल्लेख है। ये लेख सन् १३९५ तथा १४२४ के हैं (क्र० ४०३,

---

१. इस लेखसे वलगार गणकी परम्पराका अस्तित्व सन् ९०० तक ज्ञात होता है। अतः डॉ० चौधरीकी यह कल्पना गलत प्रतीत होती है कि यह वलहारि गणका ही रूपान्तर है। वलहारि गणका उल्लेख पहले संग्रहमें सन् ८५० के लगभग मिला है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० २९, ३०)।

२. इस परम्परामें माणिक्यनन्दिका नाम उल्लेखनीय है। हमारा अनुमान है कि परीक्षामुखके कर्ता माणिक्यनन्दि इनसे अभिन्न होंगे।

४०४, ४३४)।[1]

बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छकी उत्तर भारतीय शाखाओंके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४४८, ४६०,४६८)।[2] इनमें सन् १५०० में रत्न-कीर्तिका तथा सन् १५३१ में धर्मचन्द्रका उल्लेख है।

(आ ६) क्राणूर गण – इस गणके उल्लेखोंमें पहला दसवीं सदीका है (क्र० ९६)।[3] इसमें एक विस्तृत गुरुपरम्पराका वर्णन है किन्तु लेख-के बीच-बीचमें घिस जानेसे इस परम्पराका ठीक ज्ञान नहीं होता। इस लेखमें मुनिचन्द्र आचार्यके एक शिष्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है।

क्राणूर गणके तीन उपभेदोंके उल्लेख मिले हैं – तिन्त्रिणी गच्छ, मेपपापाण गच्छ तथा पुस्तकगच्छ। तिन्त्रिणी गच्छके ६ लेख हैं (क्र० २१२, २९१, ३२३, ४७६, ५६५, ६१९)। पहले दो लेख बाहारवीं सदी-के हैं[4] तथा इनमें मेघचन्द्र तथा पर्वतमुनि इन आचार्योका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १२०७ का है तथा इसमें अनन्तकीर्ति भट्टारकको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अनन्तकीर्तिके पूर्ववर्ती छह आचार्योके नाम भी इस

---

१. इस परम्पराका वर्णन पहले संग्रहके क्र० ५७२ तथा ५८५ में भी है।

२. पहले संग्रहमें ऐसे दो लेख हैं (क्र० ६१७, ७०२)। क्र० ६१७ में इसे मदसारद गच्छ पढ़ा गया है, यह 'श्रीमद्शारद गच्छ'-अर्थात् सरस्वतीगच्छका ही रूपान्तर है। उत्तर भारतमें बलात्कार-गणकी इस शाखाएँ १४वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थीं। इनका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है।

३. पहले संग्रहमें क्राणूरगणका प्राचीनतम लेख सन् १०७४ का (क्र० २०७) है।

४. पहले संग्रहमें तिन्त्रिणीगच्छका पहला लेख सन् १०७५ का (क्र० २०९) है।

लेखमें दिये हैं। इस गच्छके चौथे लेख (क्र० ४७६) में सन् १५५६ मे देवकीर्ति-मुनिचन्द्र-देवचन्द्र यह परम्परा दी है। लेखके समय देवचन्द्रको कुछ दान मिला था।

मेपपापाणगच्छके दो लेख हैं (क्र० २१४, ६०३)। पहले लेखमें सन् ११३० में प्रभाचन्द्रके शिष्य कुलचन्द्र आचार्यका वर्णन है। दूसरा लेख इस गच्छकी एक वसदिके वारेमें है।[1]

पुस्तक गच्छका एक लेख (क्र० २४०) सन् ११५० का है किन्तु यह बीच-बीचमें घिसा हुआ है अतः इसका तात्पर्य स्पष्ट नहीं है।[2]

बारहवीं-तेरहवीं सदीके चार लेखोंमें (क्र० २०२, ३१२, ३२६, ३७३) क्राणूरगणके कनकचन्द्र, माधवचन्द्र तथा सकलचन्द्र आचार्योंका वर्णन है। इनका गच्छ नाम अज्ञात है।

इस तरह कोई १५ लेखोंसे क्राणूरगणका अस्तित्व दसवीं सदीसे सोलहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।

(आ ७) निगमान्वय—मूलसंघ-निगमान्वयका एक लेख (क्र० ३९०) सन् १३१० का है। इसमें कृष्णदेव-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।[3]

उपर्युक्त विवरणसे मूलसंघके भेद-प्रभेदोंका अच्छा परिचय मिलता है। कोई १५ लेखोंमें किसी भेदका उल्लेख किये विना मूलसंघका उल्लेख मिलता है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० ११२, १४५, २०४) दसवीं-

---

१. पहले संग्रहमें मेपपापाणगच्छका पहला उल्लेख सन् १०७९ का है (क्र० २१६)

२. पहले संग्रहमें इस गच्छका कोई उल्लेख नहीं है (देशीगण तथा सेनगणमें भी पुस्तकगच्छ थे उनका वर्णन पहले आ चुका है।)

३. पहले संग्रहमें इस अन्वयका कोई लेख नहीं है।

ग्यारहवीं सदीके हैं। इस तरह प्रस्तुत संग्रहमें कुल मिलाकर मूलसंघके कोई १५० लेख आये हैं।

(इ) गौड संघ—इस संघका एक लेख (क्र० ८४) मिला है। इसमें सोमदेवसूरि-द्वारा एक जिनालयके निर्माणका उल्लेख है।[१]

(ई) द्राविड संघ—इस संघके नन्दिगण-अरुंगल अन्वयका एक लेख ग्यारहवीं सदीका है (क्र० १७५)

इसमें शान्तिमुनि-वादिराज-वर्धमान यह परम्परा दी है। वर्धमानके समाधिमरणका स्मारक उनके गुरुबन्धु कमलदेवने स्थापित किया था। इस अन्वयका अगला लेख सन् ११९२ का है (क्र० २८२) तथा इसमें वासुपूज्यके शिष्य वज्रनन्दिका वर्णन है। इनकी गुरुपरम्परा काफ़ी विस्तार-से दी है किन्तु उसमें आचार्योंका क्रम स्पष्ट नहीं है। चौदहवीं सदीके एक लेखसे (क्र० ३४४) इस अन्वयके श्रीपाल-पद्मप्रभ-धर्मसेन इस परम्पराका पता चलता है।

द्राविड संघके तीन लेखोंमें (क्र० २५२, ३५७, ४०९) अरुंगल अन्वयका उल्लेख नहीं है। ये लेख सन् ११५९, १२९५ तथा १४वीं सदीके हैं। अन्तिम दो लेखोंमें क्रमशः गुणसेन तथा लोकाचार्यका नाम ज्ञात होता है। इस तरह प्रस्तुत संग्रहके कोई आठ लेखोंसे इसका अस्तित्व ११वीं सदीसे १४वीं सदी तक प्रमाणित होता है।[२]

---

१. गौडसंघका पहले संग्रहमें या अन्यत्र साहित्यमें कोई वर्णन नहीं है। सोमदेवसूरिके लिखित यशस्तिलकचम्पू तथा नीतिवाक्यामृत ये ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

२. पहले संग्रहमें द्राविड संघके उल्लेख सन् ९९० (क्र० १६६) से मिले हैं। इसे कहीं-कहीं मूलसंघ-द्रविडान्वय और द्रविड संघ-कोण्डकुन्दान्वय कहा है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ३५-४३)

(ट) माथुर संघ—इसका उल्लेख सन् ११७० के एक लेखमें (क्र० २६५) है। इस संघके महामुनि गुणभद्र-द्वारा इस लेखकी रचना की गयी थी। लेखमें लोलक श्रेष्ठी-द्वारा पार्श्वनाथमन्दिरके निर्माणका वर्णन है।[1]

(ठ) पंचस्तूप निकाय—प्रस्तुत संग्रहके एक लेख (क्र० १९) में काशीके पंचस्तूप निकायके आचार्य गुहनन्दिका वर्णन है। इनके शिष्योंके लिए वटगोहाली ग्राममें एक विहार था जिसे ब्राह्मण नाथशर्माने सन् ४७९ में कुछ दान दिया था।[2]

(ड) जम्बूखण्डगण—इसका उल्लेख छठी-सातवीं सदीके एक लेखमें (क्र० २२) हुआ है। इसके आचार्य आर्यणन्दिको सेन्द्रक राजा इन्द्रणन्दने कुछ दान दिया था।

(ढ) सिहवूर गण—इसका एक लेख (क्र० ५६) मिला है। इसमें सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्ष-द्वारा इस गणके नागनन्दि आचार्यको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।[3]

(ण) जैन संघके विषयमें साधारण विचार—अब तक जैन मुनियोंके विभिन्न संघोंका जो परिचय दिया गया है उससे स्पष्ट है कि इनमें व्यवहार-

---

१. माथुर संघ बादमें काष्ठासंघका एक गच्छ बन गया था। इसका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है।

२. धवलाटीकाके कर्ता वीरसेन आचार्य पंचस्तूप अन्वयके ही थे (धवला-प्रशस्ति)। किन्तु उनके प्रशिष्य गुणभद्र उन्हें सेनान्वयका कहते हैं। हो सकता है कि पंचस्तूपान्वयको ही बादमें सेनान्वय नाम प्राप्त हुआ हो। किन्तु सेनान्वय सन् ७८० के लगभग अस्तित्वमें आ चुका था यह पहले स्पष्ट कर चुके हैं।

३. जम्बूखण्ड गण तथा सिंहवूर गणका वर्णन पहले संग्रहमें नहीं है।

की दृष्टिसे कोई खास भेद नहीं था। इन सभी संघोंके मुनि मठ-मन्दिर बनवाते थे, उनके लिए खेत, घर, बगीचे, गाँव आदिका दान ग्रहण करते थे, राजसभाओंमें वादविवाद करते थे, प्रसंगानुकूल राजकार्यमें मदद देते थे तथा मन्त्रसाधना, ज्योतिष और वैद्यकका आश्रय लेकर जैन संघका प्रभाव बढ़ानेकी कोशिश करते थे। ये सब प्रवृत्तियाँ जैन साधुके मूलभूत उद्देश-वीतराग भावकी साधनाके कहाँतक अनुकूल हैं यह प्रश्न विचारणीय है। इन्हें रोकनेका ऐसा कोई व्यवस्थित प्रयत्न दिगम्बर सम्प्रदायमें हुआ हो ऐसा प्रमाण नहीं मिला है।[1]

यह तो नहीं कहा जा सकता कि दिगम्बर साधुसंघके सभी मुनि इस प्रकारकी प्रवृत्तिप्रधान गतिविधियोंमें ही मग्न रहते थे – साधुसंघका एक वर्ग अवश्य ही प्राचीन शास्त्रोक्तमार्गका निःस्पृह भावसे अनुसरण करता रहा होगा। किन्तु लौकिक कार्योंसे दूर रहनेके कारण इन वीतराग साधुओंका शिलालेखों आदिमें वर्णन मिलना कठिन है।

३. राजवंशोंका आश्रय—

(अ) उत्तर भारतके राजवंश—प्रस्तुत संग्रहमें जैन संघका सम्मान करनेवाले जिन राजवंशोंका उल्लेख है उनमें कलिंगके राजा खारवेलका वंश प्रथम व प्रमुख है। सन्पूर्व पहली सदीमें इस वंशके तीन राजपुरुषों-द्वारा जैन साधुओंके लिए खण्डगिरि पर्वतपर कई गुहाएँ बनवायी गयीं। खारवेलकी पटरानी, महाराज कुदेपश्री तथा कुमार बडुख ये वे तीन राजपुरुष हैं (ले० ३–५)। यहींके एक लेख (क्र० ९) में नगरके न्यायाधीश

---

१. श्वेताम्बर सम्प्रदायमें इन प्रवृत्तियोंको रोकनेके कुछ प्रयत्न होते रहे हैं। इस विषयमें पं० नाथूरामजी प्रेमीका लेख 'चैत्यवासी और वनवासी' (जैन साहित्य और इतिहास-द्वितीय संस्करण) देखने योग्य है।

सुभूति-द्वारा निर्मित गुहाका भी उल्लेख है।[1]

पाटलिपुत्रके गुप्त राजाओंके समयका एक लेख (क्र० १९) प्रस्तुत संग्रहमें है। यह सन् ४७९ का है तथा इसमें एक ब्राह्मण-द्वारा वटगोहालीके जैन विहारको कुछ दान मिलनेका वर्णन है।[2]

हस्तिकुण्डी (राजस्थान) के राष्ट्रकूट वंशके राजा विदग्धराजका उल्लेख सन् ९४० के एक लेख (क्र० ८१) में मिला है। आचार्य वासुदेवके उपदेशसे इस राजाने ऋषभदेवका एक मन्दिर बनवाया था। इस मन्दिरके लिए राजाने अपनी सुवर्णतुला कराकर दान दिया था तथा नगरके व्यापारियोंसे कुछ करोंकी आय भी अर्पित की थी। यह कार्य सन् ९१७ में हुआ था। विदग्धराजके पुत्र मम्मटने सन् ९४० में उक्त दानको पुनः सम्मति दी। मम्मटके पुत्र धवलकी वीरताका विस्तारसे वर्णन इस लेखमें मिलता है। धवलके पुत्र बालप्रसादके समय सन् ९९७ में उक्त मन्दिरका जीर्णोद्धार हुआ था।

उड़ीसाके राजा उद्योतकेसरीके समय – दसवीं सदीके दो लेख (क्र० ९३-९४) इस संग्रहमें हैं। इनमें खण्डगिरिके पुरातन मन्दिरोंके जीर्णोद्धारका वर्णन है।

---

१. पहले संग्रहमें खारवेलके जीवनके विषयमें एक विस्तृत लेख (क्र०२) आ चुका है। उसके पहले मौर्य सम्राट् अशोकके लेखमें (क्र० १) निर्ग्रन्थों (जैनों) की देखभालका भी उल्लेख हुआ है।

२. पहले संग्रहमें गुप्तकालके तीन लेख (क्र० ९१-९३) आये हैं। उसके पहले शक और कुषाण राजाओंके कई लेख भी हैं।

३. पहले संग्रहमें इस राजवंशका उल्लेख नहीं है। वहाँ इसके पहले गुर्जर प्रतिहार राजा भोजका एक लेख (क्र० १२८) है। इसी समयके कच्छपघात तथा चन्देल वंशोंके भी कुछ लेख पहले संग्रहमें आये हैं (क्र० १५२, २२८ आदि)।

मालवाके परमार वंशके राजा भोजके समयका – ग्यारहवीं सदी (पूर्वार्ध) का एक लेख (क्र० १३५) मिला है।[1] इसमें सामन्त यशोवर्म-द्वारा कल्कलेश्वर तीर्थके मुनिसुव्रतमन्दिरके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी वंशके उदयादित्यके समयका एक मन्दिर ऊनमें है (क्र० १७४)।

गुजरातके चौलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) का एक लेख मिला है (क्र० १४६)। इसने सन् १०६६ में वायड अधिष्ठानकी वसतिकाके लिए कुछ भूमि दान दी थी। इसी वंशके राजा भीमदेव (द्वितीय) के समय – बारहवीं सदीके अन्तका एक लेख (क्र० २८७) है। इसमें वेरावलके चन्द्रप्रभमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अणहिल्लपुरमें राजा-द्वारा नन्दि-संघके आचार्य श्रीकीर्तिके सम्मानका भी इसमें उल्लेख है।[2]

बुन्देलखण्डके कलचुरि वंशका एक लेख मिला है (क्र० २१७)। इसमें राजा गयाकर्ण तथा उसके सामन्त गोल्हणदेवके समय – बारहवीं सदीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।[3]

राजस्थानके चाहमान वंशके पाँच लेख हैं (क्र० २१८, २३१-३२, २३५, २६५)।[4] पहले चार लेख नडोलके राजा रायपालके समयके सन् ११३२ से ११४६ तकके हैं। इनमें पहले लेखमें रानी मीनलदेवी-द्वारा यतियोंके लिए दानका तथा बादके लेखोंमें ठाकुर राजदेव-द्वारा मन्दिर

---

१. इस वंशका उल्लेख पहले संग्रहमें नहीं है। परमार वंशकी बाँस-वाडा व चन्द्रावती शाखाके लेख वहाँ आये हैं। (क्र० २०४, ४७१, ४७२)।

२. चौलुक्य कुमारपालका एक लेख (क्र० ३२२) पहले संग्रहमें है।

३. इस वंशके कोई लेख पहले संग्रहमें नहीं हैं।

४. पहले संग्रहमें नडोलके चाहमान वंशके दो (क्र० ३५७–५८) तथा जालोरके चाहमान वंशका एक (क्र० ५०७) लेख है।

और यतियोंके लिए कुछ दानका वर्णन है। पाँचवाँ लेख शाकम्भरीके चाहमान राजा सोमेश्वरके समयका सन् ११७० का है। इसमें बिजोलिया-के पार्श्वनाथ मन्दिरके लिए पृथ्वीराज २ तथा सोमेश्वर-द्वारा दो गाँव दान दिये जानेका वर्णन है। इस राजवंशके कोई ३० पीढ़ियोंका वर्णन इस लेखमें मिलता है।[1]

मुगल साम्राज्यके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४८१, ५०६, ५१२)। पहला लेख अकबरके समयका सन् १५७१ का है। इसमें महेश्वरके आदिनाथ मन्दिरका जीर्णोद्धार मण्डलोई सुजानराय-द्वारा होने-का वर्णन है। शाहजहाँके राज्यका एक लेख (क्र० ५०६) सन् १६२८ का है। इसमें भी एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १६६२ का – औरंगजेबके समयका है। इसमें राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदास-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।[2]

(आ) दक्षिण भारतके राजवंश—

(आ १) गंग राजवंश—इस वंशके १३ लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं। इनमें पहला (क्र० २०) राजा अविनीतका एक दानपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है। इसमें यापनिक संघके जिनमन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० २४) सातवीं सदीके अन्तका शिवकुमार पृथ्वीकोंगुणिवृद्धराजके समयका है। इसमें राजा तथा कुछ अन्य सज्जनों-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। तीसरे लेखमें (क्र० ४८) आठवीं सदीके अन्तमें राजा श्रीपुरुष तथा नवीं सदीके प्रारम्भमें राजा शिवमारके समय कुछ अधिकारियों-द्वारा एक जिनमन्दिरके

---

१. पहले संग्रहमें इसके बाद गुजरातके बाघेल और ग्वालियरके तोमर वंशके कुछ लेख हैं।

२. पहले संग्रहमें मुग़ल राज्यके कई लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं। एक लेख (क्र० ७०२) दिगम्बर सम्प्रदायका भी है।

लिए दो गांवोंके दानका वर्णन है। चौथे लेखमें (क्र० ६३) राजा दुग्गमार-द्वारा नवीं सदीमें एक मन्दिरको भूमिदान देनेका उल्लेख है। इसके वाद दसवीं सदीके प्रारम्भके एक लेखमें (क्र० ७६) एरेय राजाके समय एक जैन आचार्यके समाधिमरणका वर्णन है। सन् ९५० के एक लेख (क्र० ८३) में राजा बूतुगकी रानी पद्मब्बरसि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ दानका वर्णन है। सन् ९६२ में राजा मारसिंह २ ने अपनी माता-द्वारा निर्मित मन्दिरके लिए एलाचार्यको एक गाँव दान दिया था (क्र० ८५) इसी वर्षमें इस राजाने मुंजार्य नामक जैन ब्राह्मणको भी एक गाँव दान दिया था (क्र० ८६)। सन् ९७१ मे इस राजाके समय शंखजिनालयको कुछ दान मिलनेका वर्णन एक लेखमें (क्र० ८८) में है। दसवीं सदीके अन्तके एक लेख (क्र० ९६) में राजा रक्कसगंग तथा नन्नियगंगके समय कुछ दानका वर्णन है। एक लेख (क्र० १५४) में बूतुग राजा तथा रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख है। इनकी स्मृतिमें गंगकन्दर्प नामक जिनमन्दिर अण्णिगेरे नगरमें बनवाया गया था। एक अन्य लेखमें (क्र० २०७) पुनः रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख हुआ है। इस तरह गंगवंशके राज्यकालमें जैनसंघकी स्थिति सदा ही प्रभावशाली रही थी।[1]

(आ २) कदम्ब वंश – इस वंशके स्वतन्त्र राज्यकालका एक लेख (क्र० २१) इस संग्रहमें है जो छठी सदीके राजा रविवर्माके समय-का है। इस राजाने एक सिद्धायतनके लिए कुछ भूमि दान दी थी।[2] राष्ट्रकूट तथा चालुक्य साम्राज्यमें कदम्बवंशके कई सामन्त प्रादेशिक शासक थे। ऐसे सामन्तोंके कोई १५ लेख मिले हैं। सन् ८९० के एक

---

१. पहले संग्रहमें गंग वंशके कई लेख हैं, जिनमें सबसे प्राचीन लेख (क्र० ९०) पाँचवीं सदीके उत्तरार्धका है।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जो पाँचवीं व छठी सदीके हैं (क्र० ९६-१०५)।

लेखमें कदम्ब महासामन्त अलियमरस-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका वर्णन है (क्र० ६०)। सन् १०४५ के एक लेखमें कोंकण प्रदेशमें महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवके शासनका उल्लेख है (क्र० १३१) तथा एक मन्दिरको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। सन् १०८१ के दो लेखोंमें कदम्ब राजा गोवलदेव तथा 'कादम्बचक्रवर्ति' वीरमके समय एक वसदिको दान मिलनेका तथा एक महिलाके समाधिमरणका वर्णन है (क्र० १६३-४)। सन् १०९६ में कदम्ब कुलके सामन्त एरेयंगकी रानी असवव्वरसिने एक मन्दिर वनवाया था (क्र० १६९)। सन् ११२३ और ११३० के दो दानलेखोंमें (क्र० २०२ व २१४) कदम्ब सामन्त तैलपदेव तथा मयूरवर्माके शासनका उल्लेख है। तैलपदेवके शासनका उल्लेख सन् ११४८ के दो दानलेखोंमें भी है (क्र० २३६-२३८)। सन् १२०७ के एक दानलेखमें कदम्ब सामन्त ब्रह्मका तथा सन् १२१८ में जयकेशीका उल्लेख मिला है क्र० ३२३ व ३२५)। सन् १५०४ में कदम्ब लक्ष्मप्परसने चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्यको धर्माधिकार प्रदान किये थे (क्र० ४५५)। एक अनिश्चित समयके लेख (क्र० ६१४) में त्रिभुवनवीर नामक कदम्ब शासककी रानीके समाधिमरणका उल्लेख है।

(आ २) राष्ट्रकूट वंश – प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशके देज्ज महाराजके सामन्त सेन्द्रक इन्द्रणन्दका एक लेख है (क्र० २२) जो छठी-सातवीं सदीका है। इन्द्रणन्दने आर्यनन्दि आचार्यको एक ग्राम दान दिया था।[1] राष्ट्रकूट वंशकी प्रधान शाखाके कोई १३ लेख इस संग्रहमें हैं।[2] इनमें पहला

---

१. देज्ज राजाका राष्ट्रकूटोंके प्रमुख वंशसे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है। सेन्द्रक वंशके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं – (क्र० १०४, १०६, १०९)।

२. पहले संग्रहमें इस शाखाके दस लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १२४) सन् ८०२ का है।

लेख सन् ८०८ का है (क्र० ५४)। इसमें सम्राट् गोविन्दराज जगत्तुंगके राज्यकालमें उनके ज्येष्ठ बन्धु रणावलोक कम्भराज-द्वारा वर्धमानगुरुको एक गाँवके दानका वर्णन है। दूसरे लेख (क्र० ५५) में सन् ८२१ में सम्राट् अमोघवर्षका तथा उनके चाचाके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्षका उल्लेख है। कर्कराजने अपराजितगुरुको एक खेत दान दिया था। सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्षने नागनन्दि आचार्यको भूमिदान दिया था (क्र० ५६)। सन् ८६४ में इसी सम्राट्के राज्यकालमें एक समाधिलेख लिखा गया था (क्र० ५७)। नवीं-दसवीं सदीके एक लेखमें नेमिचन्द्र आचार्यका वर्णन है जिसमें उन्हें राष्ट्रकूट वंशके लिए आनन्ददायी कहा है (क्र० ७२)। सन् ९०२ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् कृष्ण २ अकालवर्षके शासनका तथा सन् ९२५ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् गोविन्द ४ नित्यवर्षके शासनका उल्लेख है (क्र० ७७, ७८)। कृष्ण २ की रानी चन्दियब्बेने सन् ९३२ में एक जिनमन्दिर निर्माण कराया था (क्र० ७९)। सन् ९५० के एक लेखमें कृष्ण ३ अकालवर्षके शासनका तथा इसके बादके एक लेखमें सम्राट् खोट्टिगका वर्णन है (क्र० ८३,८७)। इन्द्र ४ नित्यवर्षने एक जिनमूर्तिका पादपीठ बनवाया था (क्र० ८९)। सम्राट् इन्द्र ३ के सेनापति श्रीविजयकी प्रशंसामें एक स्तम्भलेख मिला है (क्र० ९७)।

बारहवीं सदीके एक लेख (क्र० २१७) में कलचुरि राजा गयाकर्णके अधीन राष्ट्रकूट कुलके सामन्त गोल्हणदेवका उल्लेख है।

(आ ४) पाण्ड्य वंश – इस वंशके पाँच लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं।[1] इनमें पहला (क्र० २३) सातवीं सदीके राजा वरगुण विक्रमादित्यके समयका दानलेख है। आठवीं सदीके एक लेखमें (क्र० ५०) सुन्दर पाण्ड्य राजा-द्वारा एक जिनमन्दिरकी जमीनोंको करमुक्त करनेका वर्णन है। सन् ८७० में राजा वरगुण २ के समय दो मूर्तियोंका जीर्णोद्धार हुआ

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशका कोई लेख नहीं है।

था (क्र० ५८)। सित्तन्नवासलके गुहामन्दिरका जीर्णोद्धार नवीं सदीमें राजा अवनिपशेखर श्रीवल्लभके समयमें हुआ था (क्र० ६२)। इस वंशका अन्तिम लेख (क्र० ३५६) सन् १२९० का एक दानलेख है तथा इसमें मारवर्मन् विक्रम पाण्ड्यके राज्यका उल्लेख है।

(आ ५) पल्लववंश—इसका उल्लेख तीन लेखोंमें है। इनमें पहला लेख (क्र० २०) छठी सदीके पूर्वार्धका है। इसमें पल्लव राजा सिंहविष्णु-की माता-द्वारा निर्मित एक जिनमन्दिरका वर्णन है। दूसरे लेख (क्र० ३९) में सातवीं-आठवीं सदीके शासक पल्लवादित्य वादिराजुलको अर्हत् भट्टारक-का पादानुध्यात कहा है। तीसरा लेख (क्र० ५३७) अनिश्चित समयका है तथा इसमें पेर्रजिगदेव नामक पल्लव राजाके शासनका उल्लेख है।[1]

(आ ६) चालुक्य वंश—बदामीके चालुक्य राजाओंके दो लेख इस संग्रहमें हैं।[2] पहला (क्र० ४६) सन् ७०८ का है तथा इसमें राजा विजयादित्यकी रानी कुंकुमदेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। दूसरे लेख (क्र० ४६) में राजा कीर्तिवर्मा २के राज्यमें सन् ७५१ में एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।

वेंगीके चालुक्य राजाओंके तीन लेख इस संग्रहमें हैं।[3] पहला (क्र० ४८) लेख राजा जयसिंहवल्लभ २ के राज्यका—आठवीं सदीके प्रारम्भका है तथा इसमें रट्टगुडि वंशके सामन्त कल्याणवसन्त-द्वारा अर्हत् भट्टारकको कुछ दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० ४९) आठवीं सदीके उत्तरार्धमें राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके समयका है तथा इसमें सामन्त गोंकय्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए दानका वर्णन है। तीसरे (क्र० १००)

---

१. इस वंशका एक लेख पहले संग्रहमें है (क्र० ११५)।

२. इस शाखाके ६ लेख पहले संग्रहमें हैं (क्र० १०६-८ तथा १११, ११३,११४)।

३. इस शाखाके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं (क्र० १४३-१४४, २१०)।

में दसवीं सदीके उत्तरार्धमें अम्मराज २-द्वारा विजयवाटकके जिनमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है ।

कल्याणीके चालुक्य राजाओंके लेख संख्यामें सर्वाधिक–५८ हैं । लेखोंकी अधिकताके कारण हम यहाँ उन लेखोंका ही उल्लेख करेंगे जिनमें इस वंशके सम्राटोंका जैन धर्मकार्योंसे साक्षात् सम्बन्ध आया था – जिनमें सिर्फ़ उनके राज्यकालका उल्लेख है उनका निर्देश सूचीमें होगा ही । इस वंशके लेखोंमें पहला (क्र० ११७) सन् १००७ का है तथा इसमें सामन्त नागदेवकी पत्नी-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है । यह लेख सम्राट् सत्याश्रय आहवमल्लके समयका है । सन् १०२७ के एक लेखमें (क्र० १२४) सम्राट् जयसिंह २ की कन्या सोमलदेवी-द्वारा एक मन्दिरको कुछ दान मिला था ऐसा वर्णन है । सन् १०३२ के एक लेखमें सम्राट् जगदेकमल्ल-द्वारा एक मन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है (क्र० १२६) । इस मन्दिरका नाम ही जगदेकमल्ल जिनालय था । जगदेकमल्लकी बहन अक्कादेवीने सन् १०४७ में गोणदवेडंगि जिनालयको कुछ दान दिया था (क्र० १३४) । सन् १०५५ के एक लेखमें आचार्य इन्द्रकीर्तिको त्रैलोक्यमल्लकी सभाका आभूषण कहा है । (क्र० १४१) । इस वंशका अन्तिम लेख (क्र० २७४) सन् ११८५ का है तथा इसमें सोमेश्वर ४ के राज्यकालमें एक मन्दिरको कुछ दानका वर्णन है ।[1]

(आ ७) चोल वंश—इस वंशका उल्लेख कोई २५ लेखोंमें है ।[2] इनमें पहला (क्र० ८२) सन् ९४५ का है तथा इसमें राजा परान्तक १ के समय एक कूपके निर्माणका वर्णन है । सन् ९९९ के एक लेखमें

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १६६) सन् ९६० के आसपासका है ।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख (क्र० १६७, १७१, १७४) हैं ।

(क्र०९२) राजराज १ के समय कुछ जैन आचार्योंका उल्लेख है। दसवीं सदीके उत्तरार्धके एक दानलेखमें (क्र० ९८) गण्डरादित्य मुम्मुडि चोल राजाका उल्लेख है। सन् १००९ के एक लेखमें (क्र० ११९) राजराज १ की आज्ञाका वर्णन है जो ब्राह्मणों तथा जैनोंको नियमित रूपसे कर देनेके लिए दी गयी थी। दो दानलेखोंमें (क्र० १२१,१२९) ग्यारहवीं सदी-पूर्वार्धमें राजेन्द्र १ चोलके शासनका उल्लेख है। सन् १०६८ के दो दानलेख राजेन्द्र २ के शासनकालके हैं (क्र० १५०-५१)। कुलोत्तुंग १ के शासनके पाँच लेख हैं (क्र० १६७,१७३,१९४,१९५,१९८)। जो सन् १०८६ से १११८ तकके दानलेख हैं। विक्रमचोलके शासनके दो दानलेख सन् ११३१ तथा ११३४ के हैं (क्र० २१५,२१९) कुलोत्तुंग २ के राज्यकालके तीन लेख हैं जिनमें एक सन् ११३७ का है (क्र० २२३, २२४,२२६)। राजराज २ के शासनके तीन लेख सन् ११५६-५७ के हैं। (क्र० २४८-२५०)। कुलोत्तुंग ३ के समयके दो लेख हैं (क्र० ३२४,३८०) इनमें पहला सन् १२१६ का तथा दूसरा अनिश्चित समयका है। इस दूसरे लेखके अनुसार कुलोत्तुंग राजाने नल्लूर नामक गांव एक देवमन्दिरको अर्पण किया था।

इस तरह हम देखते हैं कि चोल राजाओंके प्रायः सब लेख राजपुरुषों-से साक्षात् सम्बन्ध नहीं रखते।

युद्धके दिनोंमें चोल सेना-द्वारा जिनमन्दिरोंका विध्वंस होनेका वर्णन सन् १०७१-७२ के एक लेखमें (क्र० १५४) हुआ है।

(आ ८) होयसल वंश—इस वंशके कोई ३० लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं।[1] इनमें सबसे पहला लेख (क्र० १४९) सन् १०६२ का है तथा

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० २००) सन् १०६२ का ही है।

इसमें राजा विनयादित्य-द्वारा अभयचन्द्र पण्डितको दान दिये जानेका वर्णन है। सन् १०६९ के एक लेखमें विनयादित्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन हैं। ग्रामीण लोग ग़रीबीके कारण यह कार्य नहीं कर सके थे अतः राजाने सहायता देकर यह मन्दिर वनवाया था (क्र० १५२) ग्यारहवीं सदी-अन्तिम चरणके एक लेखमें (क्र० १७५) वर्धमान आचार्यको होयसल राज्यके कार्यकर्ता यह विशेषण दिया है। राजा बल्लाल १ के सेनापति मरियानेने वारहवीं सदीके प्रारम्भमें एक मूर्ति स्थापित की थी (क्र० १८३)। वारहवीं सदी – प्रथम चरणके दो लेखोंमें राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी तथा उसके वन्धु दुद्दमल्ल-द्वारा जिन-मन्दिरोंको दान देनेका वर्णन हैं (क्र० १८८-८९)। इस समयके चार लेखोंमें (क्र० २००, २०१, २१२, २१३) विष्णुवर्धनके चार सेनापतियों– गंगराज, उसका पुत्र वोप्प, पुणिसमय्य तथा मरियानेके धर्मकार्यों का – मन्दिर निर्माण, दान आदिका वर्णन है। राजा नरसिंह १ ने सन् ११५९में एक मन्दिरको कुछ दान दिया था (क्र० २५२) तथा उसके सेनापति भरतिमय्य एवं माचियणने सन् ११४५ तथा ११५३ में इसी प्रकारके दान दिये थे (क्र० २३३, २४६)। सन् ११७६ तथा ११९२ के लेखोंमें (क्र० २७१, २८२) राजा वीरवल्लाल २ द्वारा जिनमन्दिरोंको दान देने-का वर्णन है तथा सन् ११७३ एवं ११९० के लेखोंमें इसी राजाके अधीन अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानोंका उल्लेख है (क्र० २६८, २८१)। इसी राजाके समयके तीन दानलेख और हैं (क्र० २८५, २८६, ३२३) जो सन् ११९९ से १२०७ तक के हैं तथा दो समाधिलेख हैं (क्र० ३२०-३२२)। राजा नरसिंह ३ ने सन् १२६५में एक जिनमन्दिरको दान दिया था (क्र० ३४२) तथा उसके अधीन अधिकारियोंने सन् १२५७, १२७१ तथा १२८५ में ऐसे ही धर्मकार्य किये थे (क्र० ३३५, ३४५, ३५१)। एक लेखमें राजा रामनाथ-द्वारा पार्श्वनाथ मन्दिरको दान देनेका वर्णन है (क्र० ३६०) तथा एक अन्य लेखमें राजा वीरवल्लाल ३ के समय सन्

१२१९में कुछ स्थानीय अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानका उल्लेख मिलता है (क्र० ३३१)।

(आ ९) कलचुर्य वंश—प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशका उल्लेख सात लेखोंमें है।[1] इनमें पहला लेख सन् ११५९ का है तथा इसमें किसी सेनापति-द्वारा एक जैन आचार्यको दान मिलनेका वर्णन है (क्र० २५१)। यह लेख राजा बिज्जलके समयका है। इस राजाका उल्लेख चार अन्य लेखोंमें है (क्र० २५६, २६०-२६२)। ये लेख सन् ११६१ से ११६८ तक के हैं तथा इनमें स्थानीय अधिकारियों-द्वारा जैन आचार्योंको मिले हुए दानोंका वर्णन है। इस वंशके अन्तिम दो लेख राजा सोविदेवके राज्यके सन् ११७३ तथा ११७५ के हैं (क्र० २६७, २७०) तथा इनमें भी स्थानीय व्यक्तियोंके दानोंका उल्लेख है।

(आ १०) यादव वंश—देवगिरिके यादवोंका उल्लेख प्रस्तुत संग्रहके १५ लेखोंमें है।[2] इनमें पहला लेख (क्र० ३२६) राजा सिंहणके समय सन् १२३० में लिखा गया था तथा एक मन्दिरके लिए कुछ दानका इसमें वर्णन है। इस राजाके समयके तीन अन्य लेखोंमें (क्र० ३२८, ३२९, ३३०) तीन महाप्रधानों – प्रभाकरदेव, मल्ल तथा बीचिराज-द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है। ये लेख सन् १२४५ तथा १२४७ के हैं। राजा कन्हरदेवके राज्यके चार लेख हैं (क्र० ३३४, ३३६, ३३७, ३३९)। ये लेख सन् १२५७ से १२६२ तकके हैं इनमें तीन दानलेख हैं तथा एक समाधिलेख है। राजा महादेवके समयके तीन लेख हैं (क्र० ३४०, ३४१, ३४४), ये सन् १२६५ तथा १२६९ के हैं तथा तीनों समाधिमरणके स्मारक हैं। राजा रामचन्द्रके समयके चार लेख हैं (क्र० ३५२, ३५४, ३५५, ३५९), ये सन्

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० ४०८, ४२५, ४२६)।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके ९ लेख हैं, जिनमें पहला (क्र० ३१७) सन् ११४२ का है।

१२८५ से १२९७ तक के हैं। पहले लेखमें सर्वाधिकारी मायदेव-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है, दूसरा एक समाधिलेख है, तीसरेमें एक मन्दिरके लिए दानोंका वर्णन है तथा चौथेमें महामण्डलेश्वर तिकमदेवके मन्त्रीके पुत्र-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है।

(आ ११) विजयनगरके राजवंश—विजयनगर राज्यके कोई २० लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं।[1] इनमें पहला (क्र० ३९३) सन् १३५५ का है तथा हरिहर राजाके समय एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। बुक्क राजाके समयके दो लेख हैं (क्र० ३९४, ३९६), ये सन् १३५७ तथा १३७६ के हैं। पहला लेख एक जिनमन्दिरके अवशेषोंमें है तथा सेनापति वैचयका इसमें उल्लेख है। दूसरा एक समाधिलेख है। राजा हरिहर २ के सेनापति इरुगने एक जिनमन्दिर बनवाया था (क्र० ४०३)। तथा इस राजाके अधीन गोवाके शासक माधवके सेनापति नेमण्णने पार्श्वनाथ-मन्दिरको सन् १३९५ में कुछ दान दिया था (क्र० ४०२)। सन् १३९५ के ही एक लेखमें वैचय दण्डनायकके पुत्र इम्मडि बुक्कमन्त्रीश्वर-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है (क्र० ४०४)। राजा बुक्क २के समयके दो लेख हैं (क्र० ४०६, ४१५) इनमें एक शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका स्मारक है तथा दूसरेमें लक्ष्मीसेन भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है। राजा देवरायके समयके दो लेख हैं (क्र० ४२५, ४३४) – पहला सन् १४१२ का है तथा दो मन्दिरोंकी सीमाओंके बारेमें एक समझौतेका इसमें वर्णन है। दूसरा सन् १४२४ का है तथा इसमें राजा-द्वारा नेमिनाथ-मन्दिरके लिए वरांग ग्रामके दानका वर्णन है। राजा मल्लिकार्जुनके समय सन् १४५० में एक मन्दिरको मिले हुए दानोंका वर्णन एक लेखमें है (क्र० ४४०)। कृष्णदेव महारायके समयके एक लेखमें (क्र० ४५६)

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला सन् १३५३ का है (क्र० ५५८)।

मन्दिरोंकी भूमियोंको करमुक्त करनेका वर्णन है, यह लेख सन् १५०९ का है। वरांग ग्रामकी मन्दिरकी जमीनको खेतीयोग्य वनानेका वर्णन सन् १५१५ के एक लेखमें है (क्र० ४५८)। राजा अच्युतदेवने सन् १५३० में एक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए कुछ करोंकी आय दान दी थी (क्र० ४६७)। राजा सदाशिवके समय रामराजने सन् १५४५ में एक जिनमन्दिरको कुछ भूमि दान दी थी (क्र० ४७३)। इसी राजाके समयका एक दानलेख सन् १५५६ का है (क्र० ४७६)। राजा रामदेवके समय सन् १६१९ में एक जैन विद्वान्को कुछ दान दिया गया था (क्र० ५०३)। इस राज्यका अन्तिम लेख सन् १७५७ का है (क्र० ५२०) तथा इसमें सदाशिव रायके अधीन शासक अरसप्पोडेय-द्वारा चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

(आ १२) दक्षिण भारतके छोटे राजवंश—अब हम उन राजवंशोंके उल्लेखोंका विवरण देखेंगे जिन्होंने राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल या यादव राज्योंमें सामन्तोंके रूपमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया था। ऐसे वंशोंमें नोलम्बवंश प्रथम है जिसके चार लेख मिले हैं (क्र० ५९, ६१, १२३, १३९)।[1]

इनमें पहले दो लेख राजा महेन्द्रके समयके हैं। एकमें राजा-द्वारा सन् ८७८ में एक जिनमन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है तथा दूसरेमें सन् ८९३ में आचार्य कनकसेनके लिए कुछ दानका उल्लेख है। नोलंब घटेयंककारने एक जिनमन्दिरको सन् १०२४ में भूमिदान दिया था (क्र०१२३)। नोलंब ब्रह्माधिराजके समय सन् १०५४ में अष्टोपवासी मुनिको कुछ दान मिले थे (क्र० १३९)।

हुम्मचके सान्तर वंशके चार लेख मिले हैं (क्र० १३७,२५८,४२२-

---

१. पहले संग्रहमें नोलम्बवाडिके कई उल्लेख हैं किन्तु नोलम्ब राजाओंका कोई लेख नहीं है।

४६१)।[1] इनमें पहला लेख सन् १०५३ का है तथा इसमें राजा वीर सान्तर-द्वारा उसके जैन मन्त्री नकुलरसको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। दूसरे लेखमें राजा तैलपदेवके जैन सेनापति गोग्गिकी मृत्युके बाद राजा-द्वारा उसके कुटुम्बियोंको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। यह लेख सन् ११६२ का है। तीसरे लेखमें राजा पाण्ड्यभूपाल-द्वारा एक जिन-मन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। यह लेख सन् १४१० का है। चौथा लेख सन् १५२२ का है तथा इसमें इम्मडि भैरवरस राजा-द्वारा वरांगके नेमिनाथमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है।

सिन्द कुलके सामन्तोंके चार उल्लेख मिले हैं (क्र० १३८, १६६, २६१, २६४)।[2] इनमें पहला सन् १०५३ का है तथा इसमें सिन्द कंचरस-द्वारा नयसेन आचार्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है। दूसरा लेख सन् १०८५ का है तथा यह सिन्द वर्मदेवरसके समयका दानलेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६७ में सिन्द होलरस-द्वारा एक बसदिको दान दिये जानेका वर्णन है। अन्तिम लेखमें सन् ११७० में सिन्द चावुण्डरस-द्वारा जैन शालाको भूमिदान मिलनेका वर्णन है।

रट्ट कुलके उल्लेख छह लेखोंमें हैं (क्र० १७६, १८६, २५९, ३१७, ३१८, ३१९)।[3] इनमें पहला लेख ११वीं सदीका राजा कार्तवीर्य २ के समयका है, इसका विवरण अधूरा है। दूसरा लेख सन् ११०८ का है तथा इसमें राजा लक्ष्मीदेव-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६५ में राजा कार्तवीर्य ३-द्वारा एक्कसम्बुगेके जिनमन्दिरके

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १४६) सन् ६५० के आसपासका है।

२. पहले संग्रहमें सिन्द राजाओंके लेख नहीं हैं।

३. पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १३०) सन् ८७५ का है।

दर्शनका वर्णन है। अन्तिम तीन लेख कार्तवीर्य ४ के राज्यके सन् १२०१ तथा १२०४ के हैं। इनमें राजा-द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है।

शिलाहार वंशके चार लेख मिले हैं (क्र० १९२, २२१, २२२, २५३)।[1] इनमें पहला सन् १११५ का है तथा इसमें राजा गण्डरादित्य-द्वारा उनके जैन सामन्त नोलम्बको दो गाँवोंके दानका वर्णन है। अगले दो लेखोंमें गण्डरादित्यके जैन सामन्त निम्बका वर्णन है। इसने सन् ११३५ में एक जिनमन्दिरका निर्माण कराया था। अन्तिम लेखमें गण्डरादित्यके जैन सेनापति जिन्नण तथा विजयादित्यके सेनापति कालणका उल्लेख है। कालणने सन् ११६५ में एक मन्दिर बनवाया था।

काकतीय वंशका एक लेख सन् १११७ का मिला है (क्र० १९७)।[2] इसमें राजा प्रोलके मन्त्री बेतकी पत्नी-द्वारा अन्मकोण्डमें पद्मावती देवीका मन्दिर बनवानेका वर्णन है।

गुत्त वंशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यने सन् ११६२ में पार्श्वनाथ-मन्दिरके लिए कुछ दान दिया था (क्र० २५७)।[3]

कोंगाल्व वंशके शासक वीरकोंगाल्वने सन् १११५ के आसपास सत्यवाक्यजिनालय नामक मन्दिर बनवाया था (क्र० १९३)।[4]

मैसूरके राजा चामराजकी रानी देवीरम्मणिने मैसूरके शान्तिनाथ-मन्दिरमें दीपस्तम्भ तथा कलश दान दिये थे (क्र ५२४-५२५)। इनका

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० २५०, ३२०, ३३४)।

२,३. पहले संग्रहमें इन दो वंशोंका उल्लेख नहीं है।

४. पहले संग्रहमें इस वंशके छह लेख हैं जिनमें पहला सन् १०५८ का है (क्र० १८९)।

समय १८वीं सदीका अन्तिम चरण है।[1]

(इ) राजाश्रयके विषयमें साधारण विचार – उपर्युक्त विवरणसे यह स्पष्ट होता है कि जैन संघको प्रायः सभी राजवंशोंके समय–विशेषकर दक्षिण भारतीय राजवंशोंके समय–अपने धर्मकार्योंमें अच्छी सहायता मिली है। इस सम्बन्धमें एक बातका ध्यान रखना चाहिए कि इनमें-से अधिकांश राजाओंका कुलधर्म जैनधर्म नहीं था – वे विष्णु, शिव, सूर्य या लक्ष्मीके उपासक थे।[2] तथापि उनकी प्रजामें जैन आचार्योंका अच्छा प्रभाव रहा होगा अतः जैन संघके विषयमें उनकी नीति सहानुभूतिपूर्ण रही है।[3]

४ जैन संघकी दुरवस्था – बारहवीं सदीसे दक्षिण भारतमें वीरशैव तथा श्रीवैष्णव सम्प्रदायोंका प्रभाव बढ़ता गया तथा इनके आक्रामक रुख-का परिणाम जैन आचार्यों तथा मठ-मन्दिरोंको सहना पड़ा। इसके प्रत्यक्ष उल्लेख पहले संग्रहके दो लेखोंमें हैं।[4] इस संग्रहके कई लेखोंसे अप्रत्यक्ष रूपसे यही बात स्पष्ट होती है – ये लेख विष्णुमन्दिरों तथा शिवमन्दिरोंमें लगे पाये गये हैं। स्पष्ट है कि जैन मन्दिरोंके ध्वंसावशेषोंसे ही ये पत्थर

---

१. पहले संग्रहमें मैसूरके राजाओंके कई लेख हैं।

२. जिन्हें हम 'जैन' राजा कह सकते हैं ऐसे राजाओंकी संख्या सीमित ही है – कलिंगके खारवेल, नवीं सदीसे दसवीं सदी तकके गंग राजा, दसवीं- ग्यारवीं सदीके होयसल राजा तथा कुछ सामन्त ये जैन राजा कहे जा सकते हैं। आठवीं सदी तकके गंग राजा तथा बारहवीं सदीके तथा बादके होयसल राजा भी विष्णु, शिव आदिके उपासक थे।

३. यहाँ उल्लिखित राजवंशोंके राजनीतिक प्रभाव, राज्यविस्तार आदिके बारेमें तीसरे भागकी प्रस्तावनामें डॉ० चौधरीने विस्तारसे लिखा है अतः वे बातें यहाँ दुहरायी नहीं हैं।

४. लेख क्र० ४३५-३६।

विष्णु या शिवके मन्दिरोंमें ले जाये गये हैं। इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण कोल्हापुरका महालक्ष्मी मन्दिर है जहाँके कुछ स्तम्भोंपर पार्श्वनाथमन्दिर सम्बन्धी लेख मौजूद हैं (क्र० २२२)। आन्ध्र प्रदेशमें अन्मकोण्ड पहाड़ीपर देवी पद्मावतीका मन्दिर था जो बादमें पूरी तरह ब्राह्मणोंके अधिकारमें चला गया (क्र० १९७)। इस तरहके अन्य उदाहरण भी हैं।

५ समारोप—जैनधर्म, साहित्य तथा समाजके इतिहासके लिए शिलालेखोंका महत्त्व सर्वमान्य है। अबतक इस संग्रहके लेखोंसे प्राप्त तथ्योंका जो विवरण दिया है उससे यह बात अतिस्पष्ट होगी। इस ऐतिहासिक जानकारीका उपयोग कर जैन साहित्य तथा कथाओंकी प्रामाणिकता परखना आवश्यक है। साहित्यिक तथा शिलालेखीय दोनों साधनोंके समन्वित उपयोगसे ही तथ्यपूर्ण इतिहासका निर्माण सम्भव है।

इस संग्रहके अन्तमें तीन परिशिष्ट दिये हैं। पहले परिशिष्टमें इस संग्रहकी तैयारीके समय जो श्वेताम्बर लेख हमारे अवलोकनमें आये उनकी सूची दी है। दूसरे परिशिष्टमें उन जैनेतर लेखोंकी संक्षिप्त जानकारी दी है जिनमें जैन व्यक्तियोंसे संबद्ध कुछ उल्लेख हैं। तीसरे परिशिष्टमें नागपुरके समस्त मूर्तिलेखोंका संग्रह है। यह संग्रह आजसे कोई २५ वर्ष पहले श्रीमान् शान्तिकुमारजी ठवलीने तैयार किया था जो कई कारणोंसे अबतक प्रकाशित नहीं हो सका। इस पुस्तकमें प्रस्तुत संग्रहको अन्तर्भूत करनेकी अनुमतिके लिए हम श्रीठवलीजीके आभारी हैं। हमें आशा है कि इन तीन परिशिष्टोंसे प्रस्तुत संग्रह अभ्यासकोंके लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

जैन शिलालेख संग्रह

[मूल लेख तथा सारांश]

मूल लेख तथा सारांश

१

बारली (जि० अजमेर) (राजस्थान म्युजियम)

बारलीसे एक मील दूर मिलोत माताके मन्दिरमें।

प्राकृत, ब्राह्मी—सनपूर्व ४थी सदी

१ वीराय भगव (ते)

२ चतुरसिति व (से)

३ ये सा (लि) मालिनि

४ रं नि (वि) ठ माझिमिके

[इस लेखमें भगवान् वीरका निर्देश है जिससे प्रतीत होता है कि यह किसी जैन मन्दिरका लेख होगा। इसकी लिपि सम्राट् अशोकके लेखोंकी लिपिसे प्राचीन है। इससे अनुमान होता है कि इसमें जो ८४वें वर्षका निर्देश है वह महावीरके निर्वाणके बादका ८४वाँ वर्ष होगा। इसकी अन्तिम पंक्तिमें माध्यमिका नगरीका उल्लेख है। लेख टूटा है अतः इसका उद्देश्य ज्ञात नहीं होता।]

[इ० ए० ५८ (१९२९) पृ० २२९]

२

मालकोण्ड (नेलोर, आन्ध्र)

प्राकृत–ब्राह्मी, सनपूर्व ३री सदी

[यह लेख स्थानीय पहाड़ीकी एक गुहाके अग्रभागमें है। यह गुहा अरुवाहि कुलके नन्दसेठिके पुत्र विरिसेठिने अर्पित की ऐसा लेखमें कहा है।

लिपि सनपूर्व ३री सदीकी है। ये गुहाएँ श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थीं।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५३१ पृ० ५९]

३

खण्डगिरि (ओरिसा)— (मंचपुरी गुहा—ऊपरका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी, सनपूर्व पहली सदी

१ अरहंतपसादाय कालिंगा (नं) (सम) नानं लेणं कारितं राजिनो लालाक (स)

२ हथिसाहस-पपोतस धु (तु) ना कलिंगच (कवतिनो सिरिखा)-रवेलस

३ अगमहिसि (ना) कारि (तं)

[अरहंतोंकी कृपासे कलिंग प्रदेशके श्रमणोंके लिए यह गुहा कलिंग-चक्रवर्ती खारवेलकी महारानीने बनवायी। यह हस्तिसाहसके प्रपौत्र लालाककी कन्या थी]

[ए० इं० १३ पृ० १५९]

४

खण्डगिरि—(मंचपुरी गुहा—नीचेका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी सनपूर्व पहली सदी

१ खरस महाराजस कलिंगाधिपतिनो महा (मेघ) वाह (नस) कुदेपसिरिनो लेण

[कलिंगके अधिपति महाराज खर महामेघवाहन कुदेपश्रीने यह गुहा बनवायी।]

[ए० इं० १३ पृ० १६०]

५

खण्डगिरि—(मंचपुरी गुहा—नीचेका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

कुमारो वडुखस लेणं

[यह गुहा कुमार वडुखने बनवायी ।]

[ए० इं० १३ पृ० १६१]

६

खण्डगिरि (सर्पगुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

चूलकमस कोठाजेया च

[चूलकम्म (क्षुद्रकर्म अथवा चूडाकर्म) का कक्ष ।]

[ए० इं० १३ पृ० १६२]

७

खण्डगिरि (सर्पगुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ कंमस हलखि–

२ णय च पसादो

[कर्म तथा हलखिण (सल्लक्षण) का बनवाया प्रासाद ।]

[ए० इं० १३ पृ० १६२]

८

खण्डगिरि (हरिदास गुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

[यह लेख सर्पगुहाके पहले लेखके समान ही है ।]

[ए० इं० १३ पृ० १६२]

९

खण्डगिरि (बाघ गुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ नगर अखदंस

२ सभूतिनो लेणं

[नगरके न्यायाधीश सुभूतिकी गुहा]

[ए० इं० १३ पृ० १६३]

१०

खण्डगिरि (जम्बेश्वर गुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

महामदास बारियाय नाकियस लेणं

[महामदकी पत्नी नाकियाकी गुहा]

[ए० इं० १३ पृ० १६३]

११

खण्डगिरि (छोटा हाथीगुंफा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

अगिख····स लेणं

[अगिख····की गुहा]

[ए० इं० १३ पृ० १६४]

१२

खण्डगिरि (तत्त्वगुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

पादमुलिकस कुसुमास लेणं कि····

[पदमूलिकके कुसुमकी गुहा]

[ए० इं० १३ पृ० १६४]

१३

खण्डगिरि (अनन्तगुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सनूपूर्व पहला सदी

दोहद समणनं लेणं

[दोहदके श्रमणोंकी गुहा]

[ए० इं० १३ पृ० १६४]

१४

खण्डगिरि (तत्त्वगुहा)

ब्राह्मी, पहली सदी

१ ····व····

२ ····ण त थ द ध न····

३ ····ण त थ द ध न····श प स····

४ ····ण त थ द ध न प फ व····श प स ह····

५ ····त थ द ध न प फ य····श प स ह····

६ ····थ····

[यह वर्णमाला चित्रित की गयी है जो सम्भवतः किसी नवदीक्षित साधुका कार्य है।]

[ए० इं० १३ पृ० १६५]

१५

मथुरा (उत्तर प्रदेश)

प्राकृत–ब्राह्मी, वर्ष ८४ (दूसरी सदी)

१ ओं सिद्ध स ८० ४ व ३ दि २० ५ एतस्मि पूर्वय दमित्रस्य धितु ओख-

२ रिकाये कुटुबिणिये दताये दानं वर्धमानप्रतिमा प्रतिथपिता

३ गणतो कोट्टियतो····सत्यसेनस्य····धरवृधिस्य नि····

[वर्ष ८४ में वर्षा ऋतुके तीसरे महीनेके २५वें दिन दमित्रकी पुत्री तथा ओखरिककी पत्नी दता (दत्ता) ने यह मूर्ति स्थापित की। कोट्टिय गणके····सत्यसेन····धरवृद्धि।] [यदि लेखका वर्ष शककालका हो तो वह सन् १६२ होगा।]

[ए० इं० १९ पृ० ६७]

१६

मथुरा

प्राकृत–ब्राह्मी, पहली-२ री सदी (खण्डित जैनमूर्तिके पादपीठपर)

(शा) खातो वाच (कस्य) आर्य ऋ (पि) दासस्य निर्वर्तना···· रकस्य भट्टिदामस्य····

[····शाखाके वाचक आर्य ऋषिदासने यह बनवायी। ····रक भट्टिदामकी····]

[रि० आ० स० १९११-१२ पृ० १७]

१७–१८

मथुरा

प्राकृत–ब्राह्मी, २री सदी

[यह लेख २री सदीकी लिपिमें है। अरहतके प्रणामसे इसका प्रारम्भ होता है तथा लाघकके पुत्रका इसमें उल्लेख है। एक अन्य पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें वर्धमानको प्रणाम किया है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ५२८–२९ पृ० ७७]

१९

पहाड़पुर ताम्रपत्र (जि० राजशाही, बंगाल)

गुप्त वर्ष १५९ = सन् ४७९ संस्कृत

अगला भाग

१ स्वस्ति पुण्ड्र (वर्ध) नादायुक्तका आर्यनगरश्रेष्ठिपुरोगाश्चाधिष्ठा
नाधिकरणं दक्षिणांशकवीथेयनागिरट्ट-

२ माण्डलिकपलाशाट्टपार्श्विक - वटगोहालीजम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपो-
त्तक-गोपाटपुञ्जक-मूलनागिरट्टप्रावेश्य-

३ नित्वगोहालीषु ब्राह्मणोत्तरान् महत्तरादिकुटुम्बिनः कुशलमनुव-
र्ण्यानुबोधयन्ति । विज्ञापयत्यस्मान् ब्राह्मणनाथ-

४ शर्मा एतद्भार्या रामी च युष्माकमिहाधिष्ठितानाधिकरणे द्विदी-
नारिक्यकुल्यवापेन शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवीसमुदयबाह्या-

५ प्रतिकरखिलक्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तदर्हथानेनैव क्रमेणावयोः
सकाशाद् दीनारत्रयमुपसंगृह्यावयोः स्वपुण्याप्या-

६ यनाय वटगोहाल्यामवास्यान् काशिक-पंचस्तूपनिकायिकनिर्ग्रन्थ-
श्रमणाचार्य-गुहनन्दि-शिष्यप्रशिष्याधिष्ठितविहारे

७ भगवतामर्हतां गन्धधूपसुमनोदीपाद्यर्थन्तलवटकनिमित्तं च
अ (त) एव वटगोहालीतो वास्तुद्रोणवापमध्यर्धं ज-

८ म्बूदेवप्रावेश्य-पृष्ठिमपोत्तकेत् क्षेत्रं द्रोणवापचतुष्टयं गोपाटपुंजाद्
द्रोणवापचतुष्टयं मूलनागिरट्ट-

९ प्रावेश्यानित्वगोहालीतः अर्धत्रिकद्रोणवापानित्येवमध्यर्धं क्षेत्र-
कुल्यवापमक्षयनीव्या दातुमि (त्यत्र) यतः प्रथम-

१० पुस्तपालदिवाकरनंदि-पुस्तपालधृतिविष्णु - विरोचनरामदास-हरि-
दास-शशिनन्दिषु प्रथमनु·······मवधारण-

११ यावधृतमस्त्यस्मदधिष्ठितानाधिकरणे द्विदीनारिक्यकुल्यवापेन
शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवासमु (दयबा) ह्याप्रतिकर-

१२ (खिल) क्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तद् यद् युष्मान् ब्राह्मणनाथ-
शर्मा एतद्भार्या रामी च पलाशाट्टपार्श्विकवटगोहालीस्थ-

पिछला भाग

१३ ········कपञ्चस्तूपनिकायिकाचार्यनिर्ग्रन्थ-गुहनन्दि- शिष्यप्रशिष्या-
धिष्ठितसद्विहारे अर्हतां गन्ध (धूपा) द्युपयोगाय

१४ (तलवा) टकनिमित्तं च तत्रैव वटगोहाल्यां वास्तुद्रोणवाप-
मध्यर्धं क्षेत्रं जम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपोत्तके द्रोणवापचतुष्टयं

१५ गोपाटपुञ्जाद् द्रोणवापचतुष्टयं मूलनागिरट्टप्रावेश्यनित्वगोहालीतो
द्रोणवापद्वयमाढवा (पद्व) यांधिकमित्येवम-

१६ मध्यर्धं क्षेत्रकुल्यवापं प्रार्थयतेत्र न कश्चिद् विरोधः गुणस्तु यत्
परमभट्टारकपादानामर्थोपचयो धर्मषड्भागाप्याय-

१७ नं च भवति तदेवं क्रियतामित्यनेनावधारणाक्रमेणास्माद् ब्राह्म-
णनाथशर्मत एतद्भार्याराभियाश्च दीनारत्र-

१८ यमार्यीकृत्यैताभ्यां विज्ञापितकक्रमोपयोगायोपरिनिर्दिष्टग्रामगो-
हालीकेषु तलवाटकवास्तुना सह क्षेत्रं

१९ कुल्यवाप अध्यर्धोक्षयनीवीधर्मेण दत्तः कु १ द्रो ४ तद् युष्माभिः
स्वकर्मणाविरोधिस्थाने पट्कनडैरप-

२० विंच्छय दातव्योक्षयनीवीधर्मेण च शश्वदाचन्द्रार्कतारककालमनु-
पालयितव्य इति सं १०० (+) ५० (+) ९

२१ माघ दि ७ उक्तं च भगवता व्यासेन । स्वदत्तां परदत्तां वा यो
हरेत वसुन्धरां ।

२२ स विष्ठायां कृमिर्भूत्वा पितृभिः सह पच्यते ॥ षष्टिवर्षसह-
स्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः ।

२३ आक्षेप्ता चानुमन्ता च तान्येव नरके वसेत् ॥ राजभिर्बहुभिर्दत्ता
दीयते च पुनः पुनः । यस्य यस्य

२४ यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ पूर्वदत्तां द्विजातिभ्यो
यत्नाद् रक्ष युधिष्ठिर । महीं महिमतां श्रेष्ठ

२५ दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ।। विन्ध्याटवीष्वनम्भःसु शुष्ककोटर-
वासिनः । कृष्णाहिनो हि जायन्ते देवदायं हरन्ति ये ।।

[यह ताम्रपत्र गुप्तवर्ष १५९ के माघ मासके ७वें दिन लिखा गया था। ब्राह्मण नाथशर्मा तथा उसकी पत्नी रामीने पुण्ड्रवर्धनके राजकोषमें तीन दीनार देकर डेढ़ कुल्यवाप ज़मीन प्राप्त की। इसमें ४ द्रोणवाप ज़मीन पृष्ठिमपोत्तक गाँवमें, ४ द्रो० गोपाटपुंजक गाँवमें, २½ द्रो० नित्व-गोहालीमें और १½ द्रो० वटगोहालीमें थी। काशीके पञ्चस्तूपनिकायके निर्ग्रन्थ श्रमणोंके आचार्य गुहनन्दिके शिष्य-प्रशिष्योंका एक विहार वट-गोहालीमें था। वहाँ भगवान् अर्हत्की पूजाके लिए गन्ध, धूप, फूल, दीप आदिकी व्यवस्थाके लिए यह ज़मीन नाथशर्मा तथा रामीने दान दी। इस ताम्रपत्रमें परमभट्टारक पदसे किसी सम्राट्का उल्लेख किया है। ये सम्भवतः गुप्तवंशीय सम्राट् बुधगुप्त थे। पहाड़पुरके समीपका गोआलभिटा गाँव ही सम्भवतः प्राचीन वटगोहाली है। यहाँके एक बड़े मन्दिरके उत्खननमें कई जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण अवशेष मिले हैं।]

[ए० इं० २० पृ० ५९]

२०

होसकोटे (मैसूर)

६वीं सदी पूर्वार्ध संस्कृत

पहला पत्र :

१ स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्न-
वेयकुलामलव्यो-

२ मावभासनभास्करस्य स्वभुजजवजयजनितसुजनजनपदस्य
दारुणारिगण-

३ विदारणरणोपलब्धव्रणविभूषणभूषितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्री-

४ मत्कोंगणिवर्मधर्ममहाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागतगुणयुक्तस्य

५ विद्याविहितविनयस्य सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्य-
प्रयोजनस्य

द्वितीयपत्र : पहला भाग

६ विद्वत्कविकांचननिकषोपलभूतस्य विशेषतोप्यनवशेषस्य नीति-
शास्त्रस्य वक्तृप्र-

७ योक्तृकुशलस्य सुविभक्तभक्तभृत्यजनस्य दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेतुः
श्रीमन्माधववर्मम-

८ हाधिराजस्य पुत्रस्य पैतृपितामहगुणयुक्तस्य अनेकचतुर्दन्त-
युद्धावाप्त-

९ चतुरुदधिसलिलास्वादितयशसः समदद्विरदतुरगारोहणातिशयो-
त्पन्नतेजसो धनुर-

१० भियोगजनितसम्पादितसम्पद्विशेषस्य श्रीमद्धरिवर्ममहाधिराजस्य
पुत्रस्य

द्वितीय पत्र : पिछला भाग

११ गुरुगोब्राह्मणपूजकस्य नारायणचरणानुध्यातस्य श्रीमद्विष्णु-
गोपमहाधि-

१२ राजस्य पुत्रस्य त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरजःपवित्रीकृतोत्तमांगस्य
व्यायामोद्वृत्तपीन-

१३ कठिनभुजद्वयस्य स्वभुजबलपराक्रमक्रयक्रीतराज्यस्य चिरप्रनष्ट-
ब्रह्मदे-

१४ यबहुसहस्रविसर्गाप्रयणकारिणः क्षुत्क्षामोष्टपिशिताशनप्रीतिकर-
निशितधा-

१५ रासेः कलियुगमलपंकावसन्नधर्मवृषोद्धरणनित्यसन्नद्धस्य श्रीमाधव-
महाधिराज-

तृतीय पत्र : अगला भाग

१६ स्य पुत्रेण जननीदेवतापर्यंकतलसमधिगतराज्येन निजप्रभाव-
खंडित-

१७ रिपुनृपतिमंडलेनाखंडलविलंबिविभवविक्रमेण करितुरगवरारो-
हणसौष्ट-

१८ वजनितगुणविशेषेण स्वदानकुसुममंजरीसुरभितसमंतादिगंत-
रालिन-

१९ तबुधमधुकरसमुदयेन वरांगनापांगशरविक्षेपलक्षांगेन प्रजापरिरक्ष-

२० णैकदीक्षाक्षपितकल्मषेणापरिणतवयसापि परिणतमतिसत्त्व-
सम्पदा परम-

तृतीय पत्र : पिछला भाग

२१ धार्मिकेण श्रीमता कोंगण्यधिराजेनात्मनः प्रवर्धमानविजयैश्वर्ये
द्वादशे संवत्स-

२२ रे कार्तिके मासे शुक्लपक्षे तिथौ पौर्णमास्यां शासनाधिकृतस्य
सकलमंत्रतंत्रांतग-

२३ तस्य विविधागमजलप्रक्षालितविशुद्धबुद्धेः सिंहविष्णुपल्लवाधि-
राजस्य

२४ जनन्या भर्तृकुलकीर्तिजनन्यार्थं चात्मनश्च धर्मप्रवर्धनार्थं च
प्रतिष्ठापिताय अर्हद्दे-

२५ वतायतनाय यावनिकसंघानुष्ठिताय कोरिकुन्दभागे पुल्लिऊर्
नाम ग्रामे

चतुर्थ पत्र : अगला भाग

२६ महातटाकस्याधस्तात् मूलाभ्याशे श्रमणकेदारसहितसप्तकण्डुका-
वापमात्रं

२७ क्षेत्रं मध्यभागे पंचकण्डुकावापमात्रं क्षेत्रं इक्षुनिष्पादनक्षमसे-

२८ कन्तोदक्षेत्रं ग्रामं दक्षिणेन कण्डुकावापमात्रं पद्मं उत्तरेण च द्वा-

२९ दशकण्डुकावापमात्रमारण्यक्षेत्रं च देवतायतनसन्निकृष्टमेकं वेश्म च

३० एतत् सर्वं सर्वपरिहारपरिगृहीतं पानीयपातपुरस्सरं दत्तं योस्य

चतुर्थपत्र : पिछला भाग

३१ लोभात् प्रमादाद् वापि हर्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति अपि चास्मिन्न-

३२ र्थे मनुगीता(न्) श्लोकानुदाहरन्ति ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्

३३-३८ (नित्यके शापात्मक श्लोक)

३९ कुवलालत्वष्टकारस्य इदम्पटुवस्य पुत्रेण पेरेरन्नामलिखिताम्पट्टिका ॥ शिवमस्तु

[यह ताम्रपत्र गंगवंशीय राजा माधव (द्वितीय) के पुत्र कोंगण्य-धिराज (अविनीत) द्वारा राज्यवर्ष १२ के कार्तिक शु० १५ को दिया गया था। इसमें यावनिक संघ-द्वारा अनुष्ठित एक अर्हद्देवतायतन (जिन-मन्दिर) के लिए पुल्लिऊर ग्रामकी कुछ भूमि और एक घर दान दिये जाने-का उल्लेख है। यह मन्दिर पल्लव राजा सिंहविष्णुकी माता-द्वारा निर्माण किया गया था। ताम्रपत्रको इदम्पटुवके पुत्र पेरेरने लिखा था।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० ८०]

२१

कोरमंग (मैसूर)

६वीं सदी, संस्कृत

प्रथम पत्र

१ सूर्यांशुद्युतिपरिपिक्तपंकजानां शोभां यद् वहति सदास्य पाद-पद्मम्।

सिद्धम्

२ देवानां मकुटमणिप्रभाभिषिक्तं सर्वज्ञः स जयति सर्व-
लोकनाथः (॥१)

३ कीर्त्या दिगन्तरव्यापी रघुरासीन्नराधिपः (।) काकुस्थतुल्यं काकु-
स्थो यवीयांस्तस्य भूपतिः (॥२)

४ तस्याभूत् तनयः श्रीमान् शान्तिवर्मा महीपतिः (।) मृगेशस्तस्य
तनयो मृगेश्वरपराक्रमः (॥३)

५ कदम्बामलवंशाद्रेः मौलितामागतो रविः (।) उदयाद्रिमकुटटेप
(टाटोप) दीप्तांशुरिवांशुमान् (॥४)

६ नृपश्छलनकी विष्णुर्दैत्यजिष्णुरयं स्वयं (।) हिरण्मयचलन्मालं
त्यक्त्वा चक्रं विभावितः (॥५)

७ साम्राज्ये नन्दमानोपि न माद्यति परंतपः (।) श्रीरेषा मदयत्य-
न्यानतिपीतेव वारुणी (॥६)

द्वितीय पत्र

८ नर्मदं तं मही प्रीत्या यमाश्रित्याभिनन्दति (।) कौस्तुभाभारुण-
च्छायं वक्षो लक्ष्मीर्हररिव (॥७)

९ रवावधि जयन्तीयं सुरेन्द्रनगरी श्रिया (।) वैजयन्तो चलच्चित्रं
वैजयन्ती विराजते (॥८)

१० रवेर्भुजंगदासीव चंदनप्रीतमानसा (।) तथा श्रीर्नाभवत् प्रीता
मुरारेरपि वक्षसि (॥९)

११ विश्वा वसुमती नाथन्नाथते नयकोविदम् (।) द्यौरिवेन्द्रं ज्वलद्व-
ज्राप्तिकोरकितांगदम् (॥१०)

१२ यस्य मूर्ध्नि स्वयं लक्ष्मी हेमकुम्भोदरच्युतैः (।) राज्याभिषेकम-
करोदम्भोजशबलैर्जलैः (॥११)

१३ रघुणालम्बितामौली (मौलौ) कुण्डो गिरिरिधारयत् (।) रवेराज्ञां
वहत्यद्य मालामिव महीश्वरः (॥१२)

१४ धर्मार्थं हरिदत्तेन सोयं विज्ञापितो नृपः (।) स्मितज्योत्स्नाभिषिक्तेन वचसा प्रत्यमापत (॥१३)

द्वितीय पत्र : दूसरा भाग

१५ चतुस्त्रिंशत्तमे श्रीमद्राज्यवृद्धिसमासमा (।) मधुर्मासस्तिथिः पुण्या शुक्लपक्षश्च रोहिणी (॥ १४)

१६ यदा तदा महाबाहुरासंग्रामपराजितः (।) सिद्धायतनपूजार्थं संघस्य परिवृद्धये (॥१५)

१७ सेनोत्पलकस्यापि कोरमंगाश्रितां महीम् (।) अधिकान्निवर्तनान्येव दत्तवां स्वामरिन्दमः (॥१६)

१८ आमन्दी दक्षिणस्याथ सेतोः केदारमाश्रितम् (।) राजमानेन मानेन क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (॥१७)

१९ समणे सेतुबंधस्य क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (।) तच्चापि राजमानेन वेटिकोटेद्विनिवर्तनम् (॥१८)

२० उञ्छादिपरिहर्तव्ये समाधिसहितं हितम् (।) दत्तवांश्श्रीमहाराजस्सर्वसामन्तसंनिधौ (॥१९)

२१ ज्ञात्वा च पुण्यमभिपालयितुर्विशालं तद्भंगकारणमितस्य च दोषवत्ताम्

तीसरा पत्र :

२२ ·········श्रमस्खलितसंयमनैकचित्ताः संरक्षणेस्य जगतीपतयः प्रमाणं (॥२०)

२३ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः (।) यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं (॥२१)

२४ अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्भुक्तं सद्भिश्च परिपालितम् (।) एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च (॥२२)

२५ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां (।) षष्टिर्वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः (॥२३)

[यह ताम्रपत्र कदम्बवंशीय राजा मृगेशके पुत्र रविवर्मा-द्वारा दिया गया था। हरिदत्तके निवेदनपर राजाने सिद्धायतनकी पूजा तथा संघ-की वृद्धिके लिए कोरमंग ग्रामकी कुछ जमीन दान दी ऐसा इसमें निर्देश है। दानकी तिथि राज्यवर्ष ३४ के चैत्र शुक्ल पक्षकी पुण्यतिथि कही गयी है।]

[ए० रि० मै० १९३३ पृ० १०९]

२२

गोकाक ताम्रपत्र (जि० बेलगाँव, मैसूर)

६–७वीं सदी, संस्कृत–नागरी

१ स्वस्ति ॥ वर्धतां वर्धमानेन्दोर्वर्धमानगणोदधेः । शासनं नाशित-
२ रिपोर्मासुरं मोहशासनं ॥ (१) इहास्यामवसर्पिण्यान्तीर्थ-
३ कराणां चतुर्विंशतितमस्य सन्मतेः श्रीवर्धमानस्य वर्धमा-
४ नायां तीर्थसन्ततावागुप्तायिकानां राज्ञामष्टसु वर्षशते-
५ षु पंचचत्वारिंशदग्रेषु गतेषु राष्ट्रकूटान्वयजातश्रीदे-

दूसरा पत्र : पहला भाग

६ जमहाराजस्याभिमतः श्रीसेन्द्रकामलकुलांबरोदितदी-
७ प्रदिवाकरो विजयानन्दमध्यराजात्मजः श्रीमानिन्द्रणन्दाधि-
८ राजः स्ववंश्यानामात्मनश्च धर्मवृद्धये कुष्माण्डीविषये
९ पर्वतप्रत्यासन्नजलारग्रामे जम्बूखण्डगणस्थाय ज्ञान-
१० दर्शनतपस्सम्पन्नाय आर्यणन्द्याचार्याय भगवदर्ह-

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

११ त्प्रतिमानवरतपूजार्थं शिक्षकग्लानवृद्धानां च तपस्विनां वै-
१२ यावृत्यार्थं ग्रामस्योत्तरतः पूर्वाणग्रामविरेयसीमकं द-
१३ क्षिणेन मुञ्जजलमार्गपर्यन्तं अपरतः पुन्दावीस्तस-
१४ हितवल्मीकं तस्मादुत्तरतः पुष्करणी ततश्च यावत् पूर्वविरेय-
१५ कं राजमानेन पंचाशन्निवर्तनप्रमाणक्षेत्रन्द-

तीसरा पत्र

१६ त्तवानेतद् यो हरति स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च
१७-२० बहुभिर्वसुधा भुक्ता-(नित्यके शापात्मक श्लोक)

[यह ताम्रपत्र सेन्द्रक वंशके अधिराज विजयानन्दके पुत्र इन्द्रणन्द-द्वारा जम्बूखण्डगणके आचार्य आर्यणन्दिको दिया गया था। अर्हत्प्रतिमाकी पूजाके लिए तथा तपस्वियोंकी सेवाके लिए जलार ग्रामके पासकी कुछ भूमि उन्हें दी गयी थी। राजा इन्द्रणन्द राष्ट्रकूट वंशके देज्ज महाराजका सामन्त था। इस ताम्रपत्रका काल आगुप्तायिक राजाओंका ८४५वाँ वर्ष इस प्रकार कहा है। किन्तु इसमें कौन-सी कालगणना अभिप्रेत है यह स्पष्ट नहीं क्योंकि लिपिकी दृष्टिसे यह ताम्रपत्र छठी या सातवीं सदीका प्रतीत होता है।]

[ए० इं० २१ पृ० २८९]

२३

चितरल (केरल)

७वीं सदी, तमिल

भगवती मन्दिरके लिए प्रसिद्ध तिरुच्छाणत्तुमलै पहाड़ीपर

[इस लेखमें अरिट्टनेमि भटारके शिष्य गुणन्दांगि कुरट्टिगल-द्वारा देवीके लिए कुछ सोनेके आभूषण दान देनेका निर्देश है। यह लेख विक्रमादित्य वरगुणके २८ वें वर्षका है।]

[इ० म० तिरुवांकुर २]

२४

कुलगाण (मैनूर)

संस्कृत–कन्नड़, ७वीं सदी

पहला पत्र

१ स्वस्ति श्री जितं भगवता श्रीमज्जान्हवेय····
२ श्रमणाचार्यमाधिनः स्वखड्गैक····
३ राक्मैकयशसः दारुणारिगणविदार····
४ ण्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्कोंगणिवर्मध····

दूसरा पत्र

५ युक्तस्य श्रीमन्माधवमहाधिराजस्य प्रियोरसस्य श्रीविष्णुवर्मगोपमहाधिराजस्य अने-
६ कचतुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशसः पुत्रस्य श्रीमन्माधवमहाधिराज-
७ जस्य पुत्रस्य श्रीमत्कृष्णवर्ममहाधिराजस्य भागिनेयस्य श्रीमत्कोंगणिवृद्धराजस्या-
८ विनीतनाम्नः पुत्रस्य श्रीदुर्विनीतनामधेयस्य समस्तपाणाटपुन्नाटाधिपतेरात्मजस्य श्री-

दूसरा पत्र (व)

९ मत्कोंगणिवृद्धराजस्य प्रथितमुष्करद्वितीयनामधेयस्य सर्वविद्यापारगस्य सूनोः श्रीम-
१० त्पृथिवीकोंगणिवृद्धराजस्य श्रीविक्रमद्वितीयनामधेयस्य सर्वविद्यानिकषोपलभूतस्य प्र-
११ योगनिपुणतरस्य श्रीविक्रमोपार्जितानेकजनपदस्य प्रतापोपनतसकलसामन्तस्य

१२ वनविनीतस्यात्मजे 'श्रीमत्पृथिवीकोंगणिवृद्धराजे प्रणितानेक-
राजस्य मकुटमणिम-

तीसरा पत्र

१३ यूखपुंजपिंजरितांगुष्टे वरयुवतिमनोनयनसुभगे रिपुनृपतिगजाश्व-
रथनरोत्वन-

१४ लोकसमदद्विरदतुरगारोहणोपमीसमाननिरतिशयनिजशरीरश्री-
वल्लभे सकल-

१५ पाणाटपुन्नाटाद्यनेकजनपदाधिपतौ मनोविनीतस्य भ्राता शिव-
कुमारः श्रीमत्पृथिवी-

१६ कोंगणिवृद्धराजः स्थिरविनीतः अवनिमहेन्द्रविख्यातः पाणाटपु-
न्नाटाद्यनेकजनपदाधि-

तीसरा पत्र (ब)

१७ पतिः पृथिवीं परिपालयति कोङ्गूनाडा केल्लिपुसूरा चेट्टिअक्के
कगुंलप्पोल तट्टवल्लु-

१८ वेरेडं वसदिगालुमेरडु कलनिडं तोट्टमुं मनेत्तानमुं पृथिवीकोंगणि
मुत्तरसरनुमतदो-

१९ लं पल्लवेलारसर् पोय्दार् कोकन्दियुं मयिल्लूरगयुं मेल्पालुं
जादिगालु कोलिगंकेरेक्कालु ओन्दुतोट्टमुमा-

२० रु कलनिडं पृथिवीकोंगणि मुत्तरसरनुमतदोलं गंजेनाडर् कण्णमन्
पोय्दार् चन्त (न्द्र) सेनाचा-

चौथा पत्र

२१ र्यर् कर्तारराग अदकें साक्षि केल्लिपुसूर् पन्निर्वरुं अय्सामन्तरुं
नालत्ताणिडं इदा-

२२ नलिद्रोन् पंचमहापातगनण्योन् श्री बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि-
स्सक (ग)-

२३ रादिभिः यस्य यस्य यदा भूमि (:) तस्य तस्य तदा फलं ॥
देवस्वं तु विषं घो-

२४ रं न विषं विषमुच्यते विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकं ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा

चौथा पत्र (व)

२५ यो हरेति वसुन्धरा षष्टिं वर्षसहस्राणि घोरे तमसि वर्तते ।
मारगो-

२६ टेररोन्दु गोट्टं पांयदार् देवरा पसु गोटोन्दु नोट्टं कोण्डत्तु गंजे-
नाडर्

२७ कण्णम्मन् कोडुगूर्नाडाल घोरंकल्वायगरं सीम्माल्वायगरुमिर्वरं
तुप्पूरालभरम्परान-

२८ नुमनप्पडिसि पांयुदडु तुल् दिल् काल् किलिप्पुनूर् चेदियक्क

पाँचवाँ पत्र

२९ से ३२ तक पंक्तियाँ १२ से १६ तक के समान हैं ।

३३ पाणाटपुन्नाटाद्यनेकजनपदाधिपतिः पृथिवीं परिपालयति के.डुगूर्-
विषये

३४ केल्लिपुसूर् नाम ग्रामे जिनालयाय वसदिकालुं जातिकालुं
मेलशालुं कोलि-

३५ गन्केरेकालुं कर्गुलदापोल तट्टुवल्लुवेरेडं एलुकलनिडं नालु-
तोट्टमुं म—

३६ नेत्तानमुं चन्द्रसेनाचार्यके उदपूर्वं कोट्टदके साक्षी कोट्टेरदं
कारेअल्कुं

[इस ताम्रपत्रके प्रारम्भमें गंग वंशके राजाओंकी वंशावली इस प्रकार बतलायी है – कोंगणिवर्मा माधव – विष्णुवर्मगोप – माधव – अविनीत कोंगणिवृद्धराज – दुर्विनीत – मुष्कर कोंगणिवृद्धराज – श्रीविक्रम पृथिवीकोंगणिवृद्धराज – श्रीवल्लभ पृथिवीकोंगणिवृद्धराज । श्रीवल्लभके बन्धु शिवकुमार अवनिमहेन्द्र पृथिवीकोंगणिवृद्धराजके शासनकालमें यह लेख लिखा गया था । पल्लवेल अरसने राजाकी अनुमतिसे केल्लिपुसूर् ग्रामका एक खेत, बगीचा और कुछ जमीन एक जिनमन्दिरको दान दी उसका इस लेखमें निर्देश है । इसी समय गंजेनाड निवासी कण्णम्मनूने भी कुछ खेत इस मन्दिरको अर्पण किये । मारुगोट्टेरर्ने एक बगीचा तथा ओरंकल्वाय्गर् और सीम्पाल्वाय्गर्ने कुछ खेत दान दिये । राजाने भी कुछ खेत दान दिये थे । इस जिनमन्दिरके अधिष्ठाता चन्द्रसेनाचार्य थे ।]

[ए० रि० मैं० १९२५ पृ० ९०]

२५-२६-२७

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

७वीं सदी, कन्नड

[ये तीन लेख रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाड़ीपर पाषाणोंपर खुदे हैं । इनमें निम्नलिखित नाम उत्कीर्ण हैं –

१ सिंगनन्दिवन्दितन्

२ श्रीउरिगपसिण्डि

३ श्रीसूलाकोमरन्

इनकी लिपि ७वीं सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५४-५५-५६ पृ० १२६]

२८

रत्नगिरि (कटक, उड़ीसा)

संस्कृत, ७वीं सदी

[इस लेखमें ७वीं सदीकी लिपिमें एक जिनालयका उल्लेख है। लेख खण्डित है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४४८ पृ० ६७]

२९

पेनिकेलपाडु (कडप्पा, आन्ध्र)

संस्कृत-तेलुगु, ७वीं सदी

[इस लेखमें वृषभ नामक जैन आचार्यकी प्रशंसा की गयी है। उन्हें भव्यरूपी कमलके लिए मेघके समान तथा वाद-विवादमें पर्वतके समान दृढ़ कहा है। इस स्थानको अब संन्यासिगुण्डु कहा जाता है। लिपि ७वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४०१ पृ० १२०]

३०

काँगरपुलियंगुलम् (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

(एक जैनमूर्तिके नीचे –) श्रीअच्चणन्दि

[यहाँसे २८वें लेख तक ९ लेखोंका समय लिपिके आधारपर कहा है।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ५४]

३१

मुत्तुप्पट्टि (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[(जैनमूर्तिके नीचे –) यह मूर्ति वेण्बुनाडुके कुरण्डि अट्टउपवासि भटारके शिष्य गुणसेनदेवके शिष्य कनकवीरपेरियडिगळ्-द्वारा बनवायी गयी थी ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६१]

३२

मुत्तुप्पट्टि (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[यह मूर्ति कुरण्डि अष्टोपवासिके शिष्य माघनन्दि-द्वारा बनवायी गयी थी ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६२]

३३-३८

कीलक्कुडि (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[यहाँ जैन मूर्तियोंके समीप निम्न नाम खुदे हैं – कनकनन्दि भटारके शिष्य अभिनन्दन भटारके शिष्य अरिमण्डल भटारके शिष्य अभिनन्दन भटार (२) ।

अज्जणन्दिकी माता गुणमतियार् ।

गुणसेनदेवके शिष्य अनत्तवन् मासेनन्का भतीजा आच्चन् श्रीपालन् ।

गुणसेनदेवके शिष्य कण्डन् पोर्पट्टन् । वेण्बुनाडुके तिरु कुरण्डिके सेवक कनकनन्दि । गुणसेनदेवके शिष्य अरैयंगाविदि, पल्लिके प्रमुख ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६३–६९]

३९

नलजनम्पाडु (आन्ध्र)

तेलुगु, ७वीं-८वीं सदी

अगला भाग

१ स्वस्ति भ–	२ गवदर्हंत (प)–
३ रमभट्टारकस्य पा–	४ दानुध्यात परममा–
५ हेश्वर पर(मे) श्वर प–	६ ल्लवादित्य श्रीवादि–
७ राजुल अन्दु पल्ले–	८ यरि कोडुकु वादि (रा)–
९ जेन्वानूरु राजमा (नं)–	१० बु मूनूरु बुट्टु आर्ल–
११ पट्टु क्षेत्रंबु प(रि)–	१२ स्ति पल्लेयारि (द्रा)–
१३ यनंबुनाकु इच्चे	१४ द्दीनि रक्षिंचिनवानि (कि)

पिछला भाग

१५ अडुगडु–	१६ गश्वमेधंबुना
१७ पलंबगु	१८ द्दीनि लच्चिन–
१९ वानिकि एकलु	२० श्रीपर्वतंबु
२१ लच्चिन पाप–	२२ बगु वाच्चो–
२३ लाल कोडुकु	२४ पल्लवाचा–
२५ ज्यंस्य लिकि–	२६ तम् (॥)

[इस लेखमें परमेश्वर पल्लवादित्य वादिराजुल नामक शासक-द्वारा ३ पुट्टि जमीन किसी ग्राममुख्यको दिये जानेका उल्लेख है। वादिराजुलको अर्हतभट्टारक तथा महेश्वर दोनोंका भक्त कहा गया है। लेखकी लिपि ७वीं-८वीं सदीकी है।]

[ए० इं० २७ पृ० २०३]

४०-४३

सातानिकोट (कुर्नूल, आन्ध्र)

कन्नड, ७वीं-८वीं सदी

[यहाँ एक खेतमें पाषाणोंपर निम्न नाम खुदे हैं –

१ श्री····कोपा (शि) की निसिधि

२ संसारभीत

३ श्रीविमलचन्द्रन्

४ गणिगे महाव्रति

इनकी लिपि ७वीं-८वीं सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ३३०, ३३२,
३३७, ३३९ पृ० ४१-४२]

४४

माचेर्ल (कृष्णा, आन्ध्र)

तेलुगु, ८वीं सदी, पूर्वार्ध

[यह लेख पूर्वीय चालुक्य राजा सकललोकाश्रय जयसिंहवल्लभ (द्वितीय) के राज्यवर्ष ८ में लिखा गया था। दयावसन्त पृथिवीदेशरट्टगुडिके प्रपौत्र तथा धन्यवसन्त पृथिवीदेशरट्टगुडिके पुत्र कल्याणवसन्तुलु-द्वारा अरहन्तभटारको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। इस दानकी रक्षा कोंठूरूके रट्टगुडि वंशके शासक करेंगे ऐसा लेखमें कहा है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १८ पृ० १३१]

४५

शिग्गांव (धारवाड, मैसूर)

शक ६३० = सन् ७०८

संस्कृत-नागरी

[यह ताम्रपत्र चालुक्य राजा विजयादित्यके ११वें राज्यवर्ष शक ६३० में आषाढ़ पौर्णिमाके दिन दिया गया था। किसुवोलल्के राजस्कन्धावारसे राजाने पुरिगेरे नगरमें कुंकुमादेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए गुड्डिगेरे ग्राम दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ ए० क्र० ४९]

४६

अण्णिगेरि स्तम्भलेख (जि० धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ६ = सन् ७५१-५२, कन्नड

१ स्वस्ति कीर्त्तिवर्म(सत्या)श्रय
२ श्रीपृथु(वीवल्लभ) महाराजा
३ धिराज परमेश्वर भटारर
४ राज्यं ओन्दुत्तरनभिवृद्धि स-
५ ले आरनेया वर्षं प्रव-
६ र्द्धमानमागे जे-
७ बुलगेरिये कलि-
८ यम्म गावुण्डुगेय्दो
९ चेदियमानुमाडिसिदोद्
१० इदर मुन्दे कोण्ड-
११ गुलरकुप्प कीर्त्तिवर्म-
१२ गोलासिय निरिसिदा
१३ कीर्त्तन। दंगापालस्य लि-
१४ खितं। प्रभुनामन्।

[यह लेख बदामीके चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वितीयके राज्यके छठे वर्षका अर्थात् सन् ७५१-५२ का है। इसमें जेबुलगेरिके ग्रामाधिकारी कलियम्म-द्वारा एक चेदिय अर्थात् जिनमन्दिर बनवाये जानेका निर्देश है।]

[ए० इं० २१ पृ० २०४]

४७

कुडलूर (मैसूर)

कन्नड, ८वीं सदी

श्रीयम्मं तोरेय तडिय तोण्टद्दोल् तम्म भागमं देवर्गे कोट्टर् अय्यप्प राडणर् पक्कद्तोण्टमं कोण्डु तोरेय तडिय तम्म भागद् तोण्दमं मूडण-वन्दिगे कोट्टर् रणपाकरसर् आले कोण्डु तोट्टर् ॥

[इस लेखमें रणपाकरसके राज्यकालमें श्रीयम्म तथा अय्यप्प-द्वारा किसी नदीतीरपर स्थित पूर्वीयवसदिके लिए कुछ उद्यान आदिके दानका उल्लेख है। लिपि ८वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९०९ पृ० १४]

४८

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

संस्कृत–कन्नड, ८वीं-९वीं सदी

[यह ताम्रपत्र गंग राजा श्रीपुरुष-द्वारा दिया गया था। इस राजाके 'अनुकूलवर्ती' पसिण्डि गंग कुलके नागवर्मा तथा कदम्बकुलके तुलुअडिने तगरे प्रदेशके तोल्लग्राममें स्थित चैत्यालयके लिए मल्लवल्लि ग्राम दान दिया था। इसी प्रकार कोशिक वंशके मणलि मनेओडेयोन्ने कुछ भूमि दान दी। इसी ताम्रपत्रके अन्तिम भागमें गंग राजा शिवमारके राज्यमें सिन्दनाडु ८००० के शासक विट्टरस-द्वारा तोल्लरके चैत्यके लिए करिमानी ग्रामके दानका भी उल्लेख है। तदनन्तर इसी चैत्यके लिए राजा शिवमारके मामा विजयशक्ति अरस-द्वारा ६ खंडुगभूमिके दानका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२० पृ० २७]

४९
मुनुगोड्डु (गुण्टूर, आन्ध्र)
तेलुगु, ८वीं सदी

[यह लेख पूर्वीय चालुक्य राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके राज्यवर्ष ३७ का है। इस समय महामण्डलेश्वर गोंकय्यने मुनुगोड्डुके जिनालयके लिए कुछ भूमि दान दी थी। यहींके एक अन्य लेखमें गोंकके सेवक बोयुगट्ट-द्वारा इस जिनालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है जिसका निर्माण अग्गोति-द्वारा मुनिसुव्रतके तीर्थमें किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १७-१८ पृ० ६]

५०
तिरुगोकर्णम् (मद्रास)
तमिल, ८वीं सदी

[यह लेख शडैयापारै नामक पहाड़ीपर एक जिनमूर्तिके पास है। पाण्ड्य राजा कोणेरिण्मैकोण्डान् सुन्दरपाण्ड्यदेवके २४वें वर्षकी एक राजाज्ञाका इसमें उल्लेख है। तदनुसार तेंकविणाड्डुके निवासियोंसे कहा गया था कि कल्लाल्प्पल्लिके पेरुनंकिलि चोलप्पेरुम्पल्लि आल्वारके पूजादिके लिए स्थानीय पल्लि (जिनमन्दिर) के व्यवस्थापकों-द्वारा अर्पित ज़मीनोंको करमुक्त किया गया।]

[इ० पु० क्र० ५३० पृ० ८५]

५१-५३
ब्रिटिश म्यूज़ियम (लन्दन)
८वीं-९वीं सदी, संस्कृत–नागरी

१ अनन्तवीर्य २ सुलोचना ३ धृति

[ये नाम तीन मूर्तियोंके पादपीठोंपर खुदे हैं। ये मूर्तियाँ यक्ष तथा

यक्षिणियोंकी हैं और इनके शिरोभागमें जिनमूर्तियाँ खुदी हैं। अक्षरोंकी लिपि तथा मूर्तिशिल्प ८वीं-९वीं सदीके हैं।]

[Medieval Indian Sculpture in the British Museum P. 41-42]

५४

वदनगुप्पे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, शक ७३० = सन् ८०८

[इस ताम्रपत्रके पाँच पत्रोंमें-से पहले तीन पत्र द्वितीय भागके लेख क्र० १२३ के समान हैं जिनमें राष्ट्रकूट राजाओंका वंशवर्णन गोविन्दराज३ तक किया गया है।]

चतुर्थ पत्र : पहली ओर

५१ धारावर्षश्रीवल्लभमहाराजाधिराजस्य पुत्रः शौचाचारप्रभुगुंणगणप्रण-

५२ मितसमस्तलोकः परोपकारकरुणापरः परमेश्वरचरणारविन्दवन्दनाभिनन्दनः र-

५३ णावलोकश्रीकम्भराजः पुन्नाड एडेनाडुविषये वदनोगुप्पे नाम ग्रामः तलव-

५४ ननगरं अधिवसति विजयस्कन्धावारे। त्रिंशदुत्तरेष्वतीतेषु शकवर्षेषु कार्तिक-

५५ मास-पौर्णमास्यां रोहिणीनक्षत्रे सोमवारे कोण्डकुन्देयान्वय सिर्मलगे-

५६ गूरुगण कुमारणन्दिभट्टारकस्य शिष्यः एलवाचार्यगुरुः तस्य शिष्यो वर्धमा-

५७ नगुरुः (।) सर्वप्राणिहितः साक्षात् सिद्धान्तानुगमोद्धतः (।) शान्तः सर्वज्ञकल्पोयं नयोच्च-

५८ तगुणोन्नतः (॥) तस्मै तं ग्रामं अदात् स्वपुत्रश्रीशंकरगण्ण विज्ञापनेन श्रीकम्मदेवः श्रीविजय-

५९ वसतये तलवननगरे प्रतिष्ठितायै। तस्य सीमान्तराणि वडगण दिरं पोन्नपुं-

चतुर्थ पत्र : दूसरी ओर

६० लि वडगण पडुवण कोनेडु पोसत्तिगल्लु पडुवणसीमे कदम्ब-गेरेय पेर्न-

६१ ग पडुवण तेंकण कोनेडु पोंगुलवल्निय तेन्नोल्ते तेंकण सीमे वेलक्काल तेन्नो-

६२ ल्वे तेंकण मूडण कोनेड्डु मुडुवन्नि कोरलु मूडणसीमे कल्लि-वेट्टिन मूडण पोरे-

६३ ये मूरु वेट्टु ओलगु मूडण वडगण कान्नेडु वन्निदिय वडगण ओल्वे

६४ अस्य दानस्य साक्षिणः षण्णवतिसहस्त्रविषयः प्रकृतयः

६५ योस्यापहर्ता लोभान्मोहात् प्रमादेन च स पंचभिर्महद्भिः पातकै (:) संयुक्तो

६६ भवति यो रक्षति स पुण्यभाग् भवति अपि चात्र मनुगीता (:) श्लोका (:) स्वदत्तां परदत्तां

६७ वा यो हरेत वसुन्धरां (।) षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः (॥) स्वं दातुं

६८ सुमहच्छक्यं दुःखं अन्यस्य पालनं (।) दानं वा पालनं वेत्त दानाच्छ्रेयोनुपा-

पाँचवाँ पत्र : पहली ओर

६९ लनं (॥) वहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः (।) यस्य यस्य यदा भूमि (:) तस्य

७० तस्य तदा फलं (॥) देवस्वं तु विषं घोरं न विषं विषमुच्यते (।) विषमेकाकिनं हन्ति

७१ देवस्वं पुत्रपौत्रिकं (॥) विश्वकर्माचार्येण लिखितं (॥)

[यह ताम्रपत्र राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्दराज (तृतीय) के राज्यकालमें सम्राट् (ध्रुव निरुपम) धारावर्षके पुत्र रणावलोक कम्भराज-द्वारा कार्तिक शु० १५ शक ७३०, सोमवारके दिन दिया गया था । कोण्डकुन्देय अन्वय-सिमलगेगूरु गणके कुमारणंदि भट्टारकके प्रशिष्य तथा एलवाचार्यके शिष्य वर्धमानगुरुको वदनोगुप्पे ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । यह दान तलवननगरकी श्रीविजयवसतिके लिए दिया गया था ।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ११२]

५५

सूरत ताम्रपत्र (गुजरात)

शक ७४३ = सन् ८२१, संस्कृत—नागरी

१ ओं । श्रियः पदं नित्यमशेषगोचरं नयप्रमाणं प्रतिषिद्धदुष्पथं । जनस्य भव्यत्वसमाहितात्मनो जयत्यनुग्राहि जिनेन्द्रशासनं ॥ (१) स वो-

२ व्याद् वेधसा धाम यन्नाभिकमलं कृतं । हरश्च यस्य कान्तेन्दु-कलया कमलंकृतं ॥ (२) आसीद् द्विषत्तिमिरमुद्यतमण्डलाग्रो ध्वस्तिनय-

३ नभिमुखो रणशर्वरीषु । भूपश्शुचिर्विधुरिवास्तदिगन्तकीर्ति-र्गोविन्दराज इति राजसु राजसिंहः ॥ (३) दृष्ट्वा चमूमभि-

४ मुखीं सुभटाट्टहासामुन्नामितं सपदि येन रणेषु नित्यं । दष्टाधरेण दधता भ्रुकुटिं ललाटे खड्गं कुलं च हृद(यं)-

५ च निजं च सत्वं ॥ (४) खड्गं कराग्रान्मुखतश्च शोभां मानो मनस्तस्समभेव यस्य । महाहवे नाम निशम्य सद्यस्-

६ यं रिपूणां विगलत्यकाण्डे ॥ (५) तस्यात्मजो जगति विश्रुत-
दीर्घकीर्तिरार्तार्तिहारिहरिविक्रमधामधारी । भूप-

७ त्रिविष्टपनृपानुकृतिः कृतज्ञः श्रीकर्कराज इति गोत्रमणिर्बभूव ॥
(६) तस्य प्रभिन्नकरटाच्युतदानद-

८ न्तिदन्तप्रहाररुचिरोल्लिखितांसपीठः । क्ष्मापः क्षितौ क्षपितशत्रु-
रभूत्तनूजः सद्राष्ट्रकूटकनकाद्रिरिवेन्द्रराजः ॥ (७) तस्योपा-

९ र्जितमहसस्तनयश्चतुरुदधिवलयमालिन्याः । भोक्ता भुवश्शत-
क्रतुसदृशः श्रीदन्तिदुर्गराजोभूत् ॥ (८) काञ्चीशकेर-

१० लनराधिपचोलपाण्ड्यश्रीहर्षवज्रटविभेदविधानदक्षं । कर्णाटकं
बलमचिन्त्यमजेयमन्यैर्भृत्यैः कियद्भिरपि

११ पि यस्सहसा जिगाय ॥ (९) अभ्रूविभंगमगृहीतनिशातशस्त्र-
मश्रान्तमप्रतिहताज्ञमपेतयत्नं । यो वल्लभं सपदि दण्ड-

१२ बलेन जित्वा राजाधिराजपरमेश्वरतामवाप ॥ (१०) आसेतो-
र्विपुलोपलावलिलसल्लोलोर्मिमालाजलादाप्रालेयक-

१३ लंकितामलशिलाजालात्तुषाराचलात् । पूर्वापरवारिराशिपुलिन-
प्रान्तप्रसिद्धावधेर्येनेदं जगती स्वविक्रमबलेनैका-

१४ तपत्रीकृता ॥ (११) तस्मिन् दिवं प्रयाते वल्लभराजे क्षतप्रजा-
बाधः । श्रीकर्कराजसूनुर्महीपतिः कृष्णराजोभूत् ॥ (१२) यस्य
स्वभुजप-

१५ राक्रमनिश्शेषोत्सादितारिदिक्चक्रं । कृष्णस्येवा(कृष्णं) चरितं
श्रीकृष्णराजस्य ॥ (१३) शुभतुंगतुंगतुरगप्रवृद्धरेणूद्धरुद्धरवि-
किरणं । ग्रीष्मेपि नभो निखिलं

१६ प्रावृट्कालायते स्पष्टं ॥ (१४) दीनानाथप्रणयिषु यथेष्टचेष्टं
समीहितमजस्रं । तत्क्षणमकालवर्षो वर्षति सर्वार्थिनिर्व(प)णं ॥
(१५) राहप्पमा-

१७ स्मभुजजातबलावलेपमाजौ विजित्य निशितासिलताप्रहारैः । पालिध्वजावलिशुभामचिरेण यो हि राजाधिराजपरमेश्वरतां

१८ ततान ॥ (१६) क्रोधादुत्खातखड्गं प्रसृतरिपुभयैर्भासमानं समन्तादाजावुद्वृत्तवैरिप्रकटगजघटाटोपसंक्षोभदक्षं । सौर्यं त्यक्त्वारि-

दूसरा पत्र : पहला भाग

१९ वर्गो भयचकितवपुः क्वापि दृष्ट्वैव सद्यो दर्पोध्मातारिचक्रक्षयकरमगमद्यस्य दोर्दण्डरूपं ।। (१७) पाता यश्चतुरंबुराशिरसनालंकारभाजा भु-

२० वश्चय्याश्चापि कृतद्विजामरगुरुप्राज्याज्यपूजादरो । दाता मानभृदग्रणीर्गुणवतां योसौ श्रियो वल्लभो भोक्तुं स्वर्गफलानि भूरितपसा

२१ स्थानं जगामामरं ॥ (१८) येन श्वेतातपत्रप्रहतरविकरव्राततापात्सलीलं जग्मे नासीरधूलीधवलितवपुषा वल्लभाख्यस्सदाजौ । श्रीमद्गोविन्दराजो जि-

२२ तजगदहितस्त्रैणवैधव्यहेतुस्तस्यासीत् सूनुरेक····लितारति(म)त्तेभकुम्भः ।। (१९) तस्यानुजः श्रीध्रुवराजनामा महानुभावः प्रथितप्रतापः ।

२३ प्रसाधिताशेषनरेन्द्रच(क्रः) क्रमेण बालार्कवपुर्बभूव ॥ (२०) जाते यत्र च राष्ट्रकूटतिलके सद्भूतचूडामणौ गुर्वी तुष्टिरथाखिलस्य जगतः सुस्वामिनि प्रत्यहं । (सत्यं) सत्यमिति प्रसा-

२४ सति सति क्षामासमुद्रान्तिकामासीद् धर्मपरे गुणामृतनिधौ सत्यव्रताधिष्ठिते । (२१) शशधरकिरणनिकरनिभं यस्य यशः सुरनगाग्रसानुस्थैः । परिगी-

२५ यतेनुरक्तैर्विद्याधरसुन्दरीनिवहैः ॥ (२२) दृष्टोन्वहं योर्थिजनाय नित्यं सर्वस्वमानन्दितबन्धुवर्गः प्रादात् प्रहृष्टो हरति स्मवेगात् प्राणान् यमस्यापि नितान्त-

२६ वीर्यः ॥ (२३) रक्षता येन निश्शेषं चतुरम्भोधिसंयुतं । राज्यं धर्मेण लोकानां कृता हृष्टिः परा हृदि ॥ (२४) योसौ प्रसाधित- (समुन्नत) सारदुर्गो गांगौघसन्ततिनिरोध-

२७ विवृद्धकीर्तिः । आत्मीकृतोन्नतनृपांकविभूतिरुच्चैर्व्यक्तं ततान परमेश्वरतामिहैकः ॥ (२५) तस्यात्मजो जगति सत्प्रथितोरु- कीर्तिर्गोविन्दराज इ-

२८ ति गोत्रललामभूतः त्यागी पराक्रमधनः प्रकटप्रतापः सन्तापि- ताहितजनो जनवल्लभोभूत् ॥ (२६) पृथ्वीवल्लभ इति च प्रथितं यस्या-

२९ परं ज(ग)ति नाम । यश्चतुरुदधिसीमामेको वसुधां वशे चक्रे ॥ (२७) एकोप्यनेकरूपो यो ददृशे भेदवादिभिरिवात्मा । परबल- जलधिमपारं

३० तरन् स्वदोर्भ्यां रणे रिपुभिः ॥ (२८) एको निहंतिरहं गृहीतशस्त्रा मे परं बहवो । यो नैवंविधमकरोच्चित्तं स्वप्नेपि किमुताजौ ॥ (२९) राज्याभिषेककलशैरभि-

३१ षिच्य दत्तां राजाधिराजपरमेश्वरतां स्वपित्रा । अन्यैर्महानृपति- भिर्बहुभिस्समेत्य स्तम्भादिभिर्भुजबलादवलुप्यमानां ॥ (३०) एकोनेकनरेन्द्रवृन्दसहिता-

३२ न्यस्तान् समस्तानपि प्रोत्खा(ता)सिलताप्रहारविधुरां बध्वा महासंयुगे । लक्ष्मी(म)प्यचलां चकार विलसत्सच्चामरग्राहिणीं संसीदद्गुरुविप्रसज्जनसुहृद्व-

३३ न्धुपभोग्यां भुवि ॥ (३१) तत्पुत्रोत्र गते नाकमाकम्पितरिपुव्रजे । श्रीमहाराजसर्वाख्यः ख्यातो राजाभवद् गुणैः ॥ (३२) अर्थिषु यथार्थतां यस्समभिष्टफलाप्तिलब्धतो-

३४ षेषु । वृद्धिन्निनाय परमाममोघवर्षाभिधानस्य ॥ (३३) राजा-

मूत् तत्पितृव्यो रिपुभवविभवोद्भूत्यभावैकहेतुर्लक्ष्मीवानिन्द्रराजो गुणिजननिकरान्तश्चमत्का-

३५ रकारी। रागादन्यान् व्युदस्य प्रकटितविनया यं नृपं सेवमाना राजश्रीरेव चक्रे स(कल)कविजनोद्गीततथ्यस्वभावं ॥ (३४) निर्व्वाणावाप्तिवानासहितहितजनो –

३६ पास्यमाना सुवृत्तं वृत्तं जित्वान्यराज्ञां चरितमुदयवान् सर्वतो हिंसकेभ्यः। एकाकी दृप्तवैरिस्खलनकृतिसहप्रातिराज्येशशंकुर्ल्लाटीयं मण्डलं

३७ यस्तपन इव निजस्वामिदत्तं ररक्ष ॥ (३५) यस्यांगमात्रजयिनः प्रियसाहसस्य क्ष्मापालवेपफलमेव बभू(व) सैन्यं। मुक्त्वा च सर्वभुवनेश्वरमादिदे –

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

३८ वं नावन्दतान्यममरेष्वपि यो मनस्वी ॥ (३६) श्रीकर्कराज इति रक्षितराज्यभारस्सारः कुलस्य तनयो नयशालिशौर्यः। तस्या –

३९ भवद् विभ(व)नन्दितबन्धुसार्थः पार्थः सदैव धनुषि प्रथमश्शुचीनां ॥ (३७) दानेन मानेन सदाज्ञया वा शौर्येण वीर्येण च कोपि भूपः। एतेन साम्योस्ति

४० न वेति कीर्तिस्सकौतुका भ्राम्यति यस्य लोके ॥ (३८) स्वेच्छागृहीतविषया(न्)दृढसंघभाजः प्रोद्वृत्तदृप्ततरशौल्किकराष्ट्रकूटान्। उत्खातखड्गनिज –

४१ बाहुबलेन जित्वा योमोघवर्षमचिरात् स्वपदे व्यधत्त ॥ (३९) तेनेदमनिलविद्युच्चंचलमालोक्य जीवितमसारं। क्षितिदानपरमपुण्यः प्रवर्तितो ध –

४२ र्मदायोयम् ॥ (४०) स च समधिगताशेषमहाशब्दमहासामन्ता-

धिपतिः सुवर्णवर्षश्री(क)र्कराजदेवः कुशली सर्वानेव यथासंबध्य-
मानान् राष्ट्रपति –

४३ विषयग्रामपतिग्रामकूटयुक्त नियुक्तवासावकाधिकारिकमहत्तरादि-
कान् समनुदर्शयत्यस्तु वस्संविदितं यथा मया श्रीवर्द्धिकालट –

४४ स्थावासितविजयस्कन्धावारस्थितेन　　मातापित्रोरात्मनश्चैहिका-
मुष्मिकपुण्ययशोभिवृद्धये श्रीनागसारिकास्वतलसन्निविष्टार्हच्चैत्या-
ल(या)यतनानि(वह्न) –

४५ सम्बपुराभ्यमण्डितवसतिकायाः खण्डस्फुटितनवकर्मबल्यलिदान-
पूजार्थं तथा तथानिवध्यमानचातुष्टयमूलसंघोदयान्ययसेन –

४६ सेनसंघमल्लवादिगुरोश्शिष्यश्रीसुमतिपूज्यपादः तच्छिष्य-श्रीमद्-
पराजितगुरोः　　श्रीनागसारिकाप्रतिवद्ध　　अम्बापाटकग्रामस्य
उत्तरदिशि

४७ हिरण्ययोगानिधानां द्याघुवापी यस्याघाटनानि पूर्वतः श्रीधर-
वापिका दक्षिणतो वहः अपरतः पूरावी महानदी उत्तरत-
स्सम्बपुर –

४८ वापिका । एवमियं चतुराघाटापलक्षिता सधान्यहिरण्यादेया
अचाटभटप्रवेश्यस्सर्वराजकीयानामहस्तप्रक्षेपणीयः आच –

४९ न्द्रार्काणवक्षितिसरित्पर्वतसमकालीनः शिष्यप्रशिष्यान्वयक्रमोप-
भोग्यः शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु त्रिचत्वारिंशद् –

५० धिकेष्वतीतेषु वैशाखपौर्णमास्यां स्नात्वोदकातिसर्गेण प्रतिपादि-
तास्योचितया आचार्यस्थित्या भुंजतो भोजयतः कर्षतः कर्षयतः
प्रतिदि –

५१ शतो वा न केनचित् परिपन्थिना कर्णाया ॥ तथागासिनृपति-
भिरस्मद्वंश्यैरन्यैर्वा सामान्यं भूमिदानफलमवेत्य विद्युल्लोला-
न्यनित्यान्यैश्व –

५२ र्याणि तृणाग्रलग्नचंचलबिन्दुचंचलं च जीवितमाकलय्य स्वदाय-
निर्विशेषोयमनुमन्तव्यः परिपालयितव्यश्च । यश्चाज्ञानतिमिर-
पटलावृत –

५३ मतिराच्छिन्द्यादाच्छिद्यमानकं वानुमोदेत स पं(च)भिर्महापात-
कैरुपपातकैश्च संयुक्तस्स्यादित्युक्तं च भग(व)ता वेदव्यासेन
व्यासेन ॥

५४-५८ [नित्यके शापात्मक श्लोक – षष्टिं वर्षसहस्राणि आदि]

५९ यथा चैतदेवं तथा शासनदाता लिपिज्ञस्स्वहस्तेन स्वमतमारोप-
यति ॥ स्वहस्तोयं मम श्रीकर्कराजस्य श्रीमदि –

६० न्द्रराजसुतस्य ॥ लिखितं चैतन्मया महासन्धिविग्रहाधिपतिना
नारायणेन कुलपुत्रकश्रीदुर्गभट्टसूनुना ॥ जीयाद्दुरितविद्वेषि
शासनं जि –

६१ नशासनं । यदन्यमतशैलानां भेदने कुलिशायते ॥ (४९)
जयति जिनोक्तो धर्मष्षड्जीवनिकायवत्सलो नित्यं । चूडामणि-
रिव लो(के)

६२ विभाति यस्सर्वधर्माणाम् ॥ (५०)

[यह ताम्रपत्र शक ७४३ में वैशाख पूर्णिमाको दिया गया था। इसमें पहले राष्ट्रकूट सम्राटोंकी वंशावली अमोघवर्ष (प्रथम) तक दी गयी है। तदनन्तर अमोघवर्षके पितृव्य(चाचा)इन्द्रराजके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्ष-का उल्लेख है जो गुजरातमें शासन कर रहा था। अमोघवर्षके राज्यारोहण-के बाद कई सामन्तोंने विद्रोह किया था उनपर विजय प्राप्त करनेमें कर्क-राजकी ही मदद उपयोगी सिद्ध हुई थी। कर्कराजने उक्त वर्षमें मूलसंघ-सेनसंघके मल्लवादिगुरुके शिष्य सुमतिपूज्यपादके शिष्य अपराजितगुरुको नागसारिकाके जिनमन्दिरके लिए हिरण्ययोगा नामक खेत दान दिया था।]

[ए. इं. २१ पृ. १३३]

५६

राणिबेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

शक ७८१ = सन ८६०, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष (प्रथम) के समयका है। नागुल पोल्लब्बे द्वारा स्थापित नागुलवसदिके लिए शक ७८१ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। यह दान सिंहवूरगणके नागनन्द्याचार्यको दिया गया था।]

[रि० आ० स० १९३३-३४ पृ० २०९]

५७

बेंडूर (मैसूर)

शक ७८५ = सन् ८६४, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष १ के समय शक ७८५, तारण संवत्सरमें लिखा गया था। त्रिकप्प नामक अधिकारीको कुछ भूमि दिये जानेका इसमें उल्लेख है। व्रतोंका पालन और सन्यसन इनका भी उल्लेख हुआ है। अतः यह समाधिमरणका स्मारक प्रतीत होता है।]

(मूल कन्नडमें मुद्रित) [ए० इ० इ० ११ पृ० ६]

५८

पेवरमलै (मदुरा, मद्रास)

शक ७९२ = सन् ८७०, तमिल

१ शकर याण्डुएलु-नूर्त्तोण्णूर्रिरण्डु

२ पोन्दणवरगुणर्क्कु याण्डु एट्टु गुणवीरक्कु-

३ रवडिगल् मागाक्क(र्)कालत्तु शान्तिवीरक्-

४ कुरवर् तिरुवयिरै पोरिय (पार्श्व)प(र)दारैयुमिय-

५ क्कि अव्वैगलैयुं पुतुक्कि इरण्डुक्कुमुद्-

६ टावविशुमीरडिगलुक्कु शोराग अमैत्त पो-
७ ण् ऐन्नूर्रैन्दु काणम् ॥

[यह लेख पाण्ड्य राजा वरगुण २ के राज्यवर्ष ८, शक ७९२ का है। इस समय गुणवीरके शिष्य शान्तिवीरने तिरुवयिरै स्थित पार्श्वनाथ मूर्ति तथा यक्षीमूर्तिका जीर्णोद्धार किया था। इसके लिए उन्हें ५०२ काणम् (सुवर्णमुद्रा)दान मिला था।]

[ए० इं० ३२ पृ० ३३७]

५९

धर्मपुरी (सालेम, मद्रास)

शक ८०० = सन् ८७८, कन्नड

किलेमें मारियम्मन देवालयके आगे पड़े हुए स्तम्भपर

[इस लेखमें पल्लव महेन्द्र नोलम्ब-द्वारा किसी जैन मन्दिरके लिए दान दिये जानेका निर्देश है। इस लेखका समय शक ८००, विलम्बि संवत्सर था।]

[इ० म० सालेम ८१]

६०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड, शक ८११ = सन् ८९०

[इस लेखकी तिथि कार्तिक पूर्णिमा, शक ८११, शोभन संवत्सर ऐसी है। इस समय दण्डनायक अम्मरसने कुपण तीर्थकी यात्रा की तथा महासामन्त कदम्बवंशीय अलियमरस-द्वारा निर्मित वसदिके लिए कुछ दान दिया था।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १५९ पृ० ४१]

६१
धर्मपुरी (सालेम, मद्रास)
शक ८१८ = सन् ८९३, कन्नड

मल्लिकार्जुन मन्दिरके आगे एक स्तम्भपर

[राजा महेन्द्राधिराज नोलम्बके समय शक ८१५ में यह लेख लिखा गया। इसमें निवियण्ण और चण्डियण्ण-द्वारा मूलसंघ, सेनान्वय, पोगरिय-गणके आचार्य विनयसेन सिद्धान्तभटारके शिष्य कनकसेन सिद्धान्तभटारको मूलपल्लि ग्राम दान देनेका उल्लेख है।]

[इ० म० सालेम ७४]

६२
सित्तन्नवासल (पुदुकोट्टै, मद्रास)
९वीं सदी, तमिल

[यह लेख पाण्ड्य राजा अवनिपशेखर श्रीवल्लभके समयका है। इलंगौतमन् (इसीका नाम मदिरै आशिरियन् भी था) द्वारा अन्तर्मण्डप-का जीर्णोद्धार तथा वाह्य मण्डपका निर्माण किये जानेका इसमें उल्लेख है। इस मन्दिरको अरिवन् कोयिल् (अर्हन्मन्दिर) कहा गया है। इस गुहा-मन्दिरके वाहरी भागपर कई यात्रियोंके नाम खुदे हैं जिनकी लिपि ७वीं सदीकी है।]

[रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १६७-१६९ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० २१५ पृ० ९९]

६३
हेब्बलगुप्पे (मैसूर)
९वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्तिश्रीनरसीगेरे अप्पोर् दुग्गमार

२ कोयिल्वसदिगे अरगण्डुगव्वेदे मण् कोट्टर्

३ अरमण्डमेगालुमगोकेमोगेयु ओड्डिपा-
४ डियुं गोय्यिन्दम्मगलरुगण्डुग बेदेन्तेल् गण्कोट्टर्
५ इदानलित्तु केडिसिदोनोवकल् केडुग पंचम-
६ हापातकनक्कवन् मक्कलु साग-
७ वसद्रियान्केय्दोन् नारायण पे-
८ रुन्तच्चन्

[यह लेख ९वीं सदीकी लिपिमें है। नरसीगेरे अप्पोर् दुग्गमार (जो गंगवंशका राजपुत्र था) द्वारा एक जिनमन्दिर (कोयिल्वसदि) को ६ खण्डुग भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। इतनी ही भूमि अरमण्डमेगलु, अगोकेमोगे, ओड्डिपाडि इन ग्रामोंके निवासियों-द्वारा तथा गोयिन्दम्म-द्वारा दान दी गयी थी। श्रेष्ठ शिल्पकार नारायणने इस वसदिका निर्माणकार्य किया था।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० २४०]

६४

मोटे बेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

९वीं सदी, कन्नड

[यह लेख ९ वीं सदीकी लिपिमें है। इसमें किसी वसदिके लिए चन्द्रनन्दि भट्टारको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है। इस लेखकी स्थापना इन्दर पिट्टम्मके सेनबोव कुण्डमय्य-द्वारा की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १११ पृ० १२९]

६५

कलकत्ता (नाहर म्युज़ियम)

९वीं सदी, कन्नड

१ श्री जिनवल्लभन सज्जन
२ भागियब्बेय माडिसिद
३ प्रतिमे

[यह लेख पीतलकी चौवीसतीर्थंकरमूर्तिके पादपीठपर है। लिपि ९वीं सदीकी है। यह मूर्ति जिनवल्लभकी स्वजन (पत्नी) भागियवे-द्वारा स्थापित की गयी थी। लिपिसे स्पष्ट होता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित हुई थी।]

[ए० रि० मैं० १९४१ पृ० २५०]

६६-६७

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कहा है कि तिरुनरुंगोण्डैके किलैप्पल्लि (जैन मन्दिर) का चतुर्मुगत्तिरुक्कोयिल् (चतुर्मुख वसति) तथा पूर्वका सभामण्डप तलक्कूडि निवासी विशैयनल्लूलान् कुमरन् देवन्ने बनवाया था। लेखकी लिपि ९वीं सदीकी है। यहींके अन्य दो भागोंमें इसी समयकी लिपिमें वाणकोवरैयर् तथा आरुलगपेरुमान्का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०६-७ पृ० ६६]

६८-६९

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें नारियप्पाडि निवासी शिगणार् पेरियवडुगणार्-द्वारा दो जैन पल्लियों (मन्दिरों) के लिए १० पोण् (मुद्राएँ) दान दिये जानेका निर्देश है। यहींके एक अन्य लेखमें नारियप्पाडि निवासी पेरियन-क्कनार्के पुत्र (नाम लुप्त) द्वारा भी कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है लिपि ९वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०८-९ पृ० ६६]

७०

कीरप्पाक्कम् (चिंगलपेट, मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कीरैपाक्कम्के उत्तरमें देशवल्लभ जिनालयका उल्लेख है। इसका निर्माण यापनीय संघ कुमिलिगणके महावीरगुरुके शिष्य अमरमुदलगुरु-द्वारा किया गया था। लिपि ९वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० २२ पृ० १०]

७१

चेगूर (बंगलोर, मैसूर)

९वीं सदी, कन्नड

[इस निसिधिलेखमें मोन भट्टारके शिष्य····न्दिभटारके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि ९वीं सदीकी है। यह लेख नागेश्वर मन्दिरमें लगा है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ४६]

७२

बेलगाँव (मैसूर)

९वीं-१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख नेमिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना 'राष्ट्रकूट वंशरूपी समुद्रके लिए चन्द्रके समान' मणिचन्द्रके गुरु नेमिनाथ (नेमिचन्द्र ?) द्वारा की गयी थी।]

[रि० आ० स० १९२८-२९ पृ० १२५]

७३

अलगरमलै (मदुरा, मद्रास)

वट्टेलुत्तु लिपि–९वीं-१०वीं सदी

[यह लेख एक जिनमूर्तिके समीप खुदा है]

(मूल-) १ श्री अच्चणं – २ दि शेयल्

[आर्यनन्दि आचार्यका यह नामोल्लेख है। लिपि ९वीं-१०वीं सदी-की है।

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ३९६ पृ० ६२]

७४-७५
चिक्कहनसोगे (मैसूर)
१०वीं सदी—प्रारम्भ, कन्नड

[इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-देसिगण—पनसोगे शाखाके श्रीवरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है। यह लेख १०वीं सदीके प्रारम्भका है तथा इस समय रामेश्वर मन्दिरमें लगा है।

यहींके एक अन्य निसिधिलेखमें नागकुमारकी पत्नी जक्कियव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है। समय १०वीं सदीके प्रारम्भका है।]

[ए० रि० मैं० १९१४ पृ० ३८]

७६
चिक्कहनसोगे (मैसूर)
१०वीं सदी—प्रारम्भ, कन्नड

१ पुरेय समु-
२ द्रवेष्टितधरात-
३ लमं प्रतिपालिसु
४ त्तुमित्तेरेग म-
५ हारिमण्डलिक-
६ रिं वेसकेय्ये विला-
७ सयेल्गेयं मे-
८ रेवकरूरनेन्दे-
९ निसल आलिपोरी
१० स्तितसन्ध्यरिन्दु वन्दे-
११ रग समन्तु क-
१२ लनेलेयदेवर
१३ पादपयोरुहं-
१४ गलोल् ॥ स्थावरजं-
१५ गमतीर्थं मावि-
१६ सि पेल्दागलोरदं गो-
१७ म्मटदेवर् स्थावर-
१८ तीर्थं कल्नेलेदेव-
१९ र् भूवलयदोलगे
२० जंगमतीर्थं ॥

२१ वेल्देवं वरेदं २२ इल्वेडे मल्लाचा-
२३ रि ॥

[इस लेखमें (गंग राजा) एरेयके समय एलाचार्यके समाधिमरणका तथा उनके शिष्य कल्नेलेदेव-द्वारा उनकी निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। गोम्मटदेवको स्थावरतीर्थ तथा कल्नेलेदेवको जंगमतीर्थ कहकर उनकी प्रशंसा की है। लेख १०वीं सदीके प्रारम्भका है।]

[ए० रि० मैं० १९१४ पृ० ३८]

७७

वन्दलिके (मैसूर)

शक ८२४ = सन् ९०२, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट राजा कृष्ण २ अकालवर्षके समयका है। महासामन्त वंकेयरसके पुत्र लोकटेयरसके अधीन पेर्गडे बिट्टय्य-द्वारा शक ८२४ में वन्दणिकेमें एक वसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है। लोकटेयरसने इस वसदिके लिए नागर खण्ड ७० विभागका दण्डिपल्लि ग्राम बिट्टय्यको दान दिया था।]

[ए० रि० मैं० १९११ पृ० ३८]

७८

असुण्डि (मैसूर)

शक ८४७ = सन् ९२५, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्द (चतुर्थ) नित्यवर्षके समय शक ८४७, पार्थिव संवत्सरमें लिखा गया था। इसमें नागय्य द्वारा एक जिनालयका निर्माण तथा उसके लिए कुछ भूमिदान किये जानेका उल्लेख है। यह दान वंकापुरके धोरजिनालयके प्रमुख चन्द्रप्रभ भटारके शासनकालमें दिया गया था।]

(मूल कन्नडमें मुद्रित) [सा० इ० इ० ११ पृ० २०]

७९

हलहरवि (वेल्लारी, मैसूर)

शक ८५४ = सन् ९३२, कन्नड

[यह लेख शक ८५४ पार्थिव संवत्सर (यह वर्षनाम ग़लत है) का है। इसमें राजा नित्यवर्षके राज्यकालमे कन्नरदेवकी रानी चन्दियब्बे द्वारा नन्दवरमें एक जैन वसदिका निर्माण तथा उसके लिए कुछ करोंका उत्पन्न पद्मनन्दि आचार्यको अर्पित किये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५४० पृ० ५२]

८०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

शक ८६२ = सन् ९४०, कन्नड

[यह लेख जिनशासनकी प्रशंसासे शुरू होता है। तिथि शक ८६२, विकारि संवत्सर ऐसी दी है। अन्य विवरण प्राप्त नहीं।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९६ पृ० ३७]

८१

विजापुर (उदयपुरके समीप, राजस्थान)

संवत् ९९६ = सन् ९४० तथा संवत् १०५३ = सन् ९९७

संस्कृत-नागरी

१ ....जत्रस्तवः। परिशासतु ना....परा(र्थख्या)पना जिनाः ॥१
ते वः पांतु(जिना)त्रिनामसम(ये यत्पा)दपद्मान्मुखप्रेंखासंख्य-
मयूख(शे)खरनखश्रेणीषु विम्बोदयात्। प्रायैकादशभिर्गुणं दश-
शती शक्रस्य शुंभद्दृशां कस्य स्याद् गुणकारको न यदि वा
स्वच्छात्मनां संगमः ॥२

२ ····नासत्करोलो(प)शोभितः । सुशे(खर)····लो मूर्ध्नि रूढो महीभृतां ॥३ अभिविभ्रद् रुचिं कांतां सावित्रीं चतुराननः । हरिवर्मा बभूवात्र भूविभुर्भुवनाधिकः ॥(४) सकललोकविलोकनपंकजस्फुरदनंबुदबालदिवाकरः । रिपुवधूवदनेंदुहृतद्युतिः

३ समुदपादि विदग्धनृप(स्ततः) ॥(५)स्वाचार्यैर्यो रुचिरवच(नैर्वा)सुदेवाभिधानैर्बोधं नीतो दिनकरकरैर्नीरजन्माकरो व । पूर्वं जैनं निजमिव यशो (कारयद् ह-)स्तिकुंड्यां रम्यं हर्म्यं गुरुहिमगिरेः श्रृंगश्रृंगारहारि ॥६ दानेन तुलितबलिना तुलादिदानस्य येन देवाय । भाग(द्वयं)व्यतीर्यत भागश्चा –

४ (चार्यव)र्याय ॥(७) तस्मादभू(त्क्षुद्र)सत्वो मंमटाख्यो महीपतिः। समुद्रविजयो श्लाघ्यतरवारिः सदूर्मिकः ॥८ तस्मादसमः समजनि (समस्त)जनजनितलोचनानंदः । ध(व)लो वसुधाव्यापी चंद्रादिव चंद्रिकानिकरः ॥(९) भंक्त्वाघाटं घटाभिः प्रकटमिव मदं मेदपाटे भटानां जन्ये राजन्य –

५ जन्ये जनयति जनताजं रणं मुंजराजे । (श्री)-माणे (प्र)णष्टे हरिण इव भिया गूर्जरेशे विनष्टे तत्सैन्यानां शरण्यो हरिरिव शरणे यः सुराणां बभूव ॥(१०) श्रीमद्दुर्लभराजभूभुजि भुजैर्भुंजत्यभंगां भुवं दंडैर्मण्डनशौण्डचंडसुभटैस्तस्याभिभूतं विभुः । यो दैत्यैरिव तारक –

६ प्रभृतिभिः श्रीमान् महेन्द्रं पुरा सेनानीरिव नीतिपौरुषपरोनैषीत् परां निर्वृतिं ॥(११) यं मूलादुदमूलयद् गुरुबलः श्रीमूलराजो नृपो दर्पांधो धरणीवराहनृपतिं यद्वद् द्विपः पादपं । आयातं भुवि कांदिशीकमभिको यस्तं शरण्यो दधौ दंष्ट्रायामिव रूढमूढमहिमा कोलो महीमंडलं ॥१२

७ इत्थं पृथ्वीभर्तृभिर्नाथमानैः सा····सुस्थितैरास्थितो यः । पार्थानाथो वा विपक्षान् स्वप(क्ष)रक्षाकांक्षे रक्षणे बद्धकक्षः ॥(१३) दिवा-

करस्येव करैः कठोरैः करालिता नृपकदंबकस्य । अशिश्रियंतापहृतो-
त्तापं यमुन्नतं पादपवज्जनौघाः ॥(१४) धनुर्धरशिरोमणेरमलधर्म-
मभ्यस्यता जगा –

८ म जलधेर्गुणो (गु)रुसुप्य पारं परं । समीयुरपि नंमुखाः सुमुख
मार्गणानां गणाः सतां चरितमद्भुतं सकलमेव लोकोत्तरं ॥(१५)
यात्रासु यस्य वियदीर्णविपुर्विशेषात् वल्गत्तुरंगखुरखातमहीरजांसि।
तेजोभिरूर्जितमनेन विनिर्जितत्वाद् भास्वान् विलज्जित इवातितरां
तिरोभूत् ॥१६

९ न कामनां मनो धीमान् ध····लनां दधौ । अनन्योद्धार्यसत्कार्य-
मारधुर्योर्थितोपि यः ॥(१७) यस्तेजोभिरहस्करः करुणया शौद्धो-
दनिः शुद्धया भीष्मो वंचनवंचितेन वचसा धर्मेण धर्मात्मजः ।
प्राणेन प्रलयानिलो बलभिद्रो नेत्रेण मंत्री परो रूपेण प्रमदाप्रियेण

१० मदनो दानेन क(र्णो)भवत् ॥(१८) सुनयतनयं राज्ये बालप्रसाद-
मतिष्ठिपत् परिणतवया निःसंगो यो बभूव सुधीः स्वयं कृतयुग-
कृतं कृत्वा कृत्यं कृतात्मचमत्कृतीरकृत सुकृती नो कालुष्यं
करोति कलिः सतां ॥(१९) काले कलावपि किलामलमेतदीयं
लोका विलोक्य कलनातिगतं गुणौ –

११ घं । (पार्था)दिपार्थिव(गुणा)न् गणयंतु सत्यानेकं व्यधाद् गुण-
निधिं यमितीव वेधाः ॥ २० गोचरयंति न वाचो तच्चरितं चंद्र-
चंद्रिकारुचिरं । वाचस्पतेर्वचस्वी को वान्यो वर्णयेत् पूर्णं ॥(२१)
राजधानी भुवो भर्तुस्तस्यास्ते हस्तिकुण्डिका । अलका धनदस्येव
धनाढ्यजनसेविता ॥ (२२) नीहारहारहरहास(हि)–

१२ (मां) शुहारि (ज्ञा) त्का(र) वारि (सु)चि राजविनिर्झराणां ।
वास्तव्यभव्यजनचित्तसमं (स)मंतात् संतापसंपदपहारपरं परेषां ॥
(२३) धौतकलधौतकलशाभिरामरामास्तना इव न यस्यां ।

मिवानिलांदो(लि)तं । गरिष्ठगुणगोष्ठ्यदः समुदद्दीधरद् धीरधीरु-
दारमतिसुंदरं प्रथम—

१८ तीर्थकृन्मंदिरं ॥ (२३) (रक्तं) वा रम्यरामाणां मणितारा-
वराजितं । इदं मुखमिवाभाति भासमानवरालकं ॥ (२४)
चतुरस्र (पट्टज) नघा(ङ्घ्र)निकं शुभशुक्तिकरोटकयुक्तमिदं बहु-
भाजनराजि जिनायतनं प्रविराजति भोजनधामसमं ॥ (२५)
विदग्धनृपकारिते जिनगृहे—

१९ तिजीर्णे पुनः समं कृतसमुद्धृताविह भवांबुधिरात्मनः । अति-
ष्ठिपत सोऽत्र प्रथमतीर्थनाथाकृतिं स्वकीर्तिमिव मूर्तताभुपगतां
सितांशुद्युतिं ॥ (२६) शांत्याचार्यैस्त्रिपंचाशे सहस्रे शरदामियं
माघशुक्लत्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥ (२७) विदग्धनृपतिः
पुरा यदतुलं तुलादे—

२० दंदो सुदानमवदानधीरिदमपीपलश्चाद्भुतं । यतो धवलभूपति-
र्जिनपतेः स्वयं सात्म (जो) रघट्टमय पिप्पलोपप (दृक्) पकं
प्रादिशत् ॥ (२८) यावच्छेपशिरस्थमेकरजतस्थूणास्थिताभ्युल्ल-
सत्पातालातुलमंडपामलतुलामालंबते भूतलं । तावत्ता—

२१ स्वाभिरामरमणी(गं)धर्वधीरध्वनिर्धामन्यत्र धिनोतु धार्मिकधियः-
(स)द्धूपवेलावि(धौ) ॥ (२९) सालंकारा समधिकरसा साधु-
संधानबंधा श्लाघ्यश्लेषा ललितविलसत्तद्धिताख्यातनामा । सद्-
वृत्ताढ्या रुचिरविरतिर्धुर्यमाधुर्यवर्या सूर्याचार्यैर्व्यरचि रमणीव्रा—

२२ ति(रम्या) प्रशस्तिः ॥ (४०) संवत् १०५३ माघशुक्ल १३
रविदिने पुष्यनक्षत्रे श्रीऋषभनाथदेवस्य प्रतिष्ठा कृता महाध्वज-
श्चारोपितः ॥ मूलनायकः ॥ नाहकर्जिदजसशंपपूरभद्रनागपोचि-
(स्थ)श्रावकगोष्ठिकैरशेषकर्मक्षयार्थं स्वसंतानभवाब्धितर—

२३ (णार्थं) च न्यायोपार्जितवित्तेन कारितः ॥छ॥ परवादिदर्पमथनं

हेतुनयसहस्रभंगकाकीर्णं । भव्यजनदुरितशमनं जिनेंद्रवरशासनं जयति ॥ (१) आसीद् धीधनसंमतः शुभगुणो सात्त्वत्प्रतापो-ज्वलो विस्पष्टप्रतिमः प्रभावकलितो भूपोत्तमांगार्चितः । योपित्पी—

२४ नपयोधरांतरसुखाभिष्वंगसंलालितो यः श्रीमान् हरिवर्म उत्तम-मणिः सद्वंशहारे गुरौ ॥ (२) तस्माद् बभूव भुवि भूरिगुणोपपेतो नृपग्रसूनमुकुटार्चितपादपीठः । श्रीराष्ट्रकूटकुलकाननकल्पवृक्षः श्री-मान् विदग्धनृपतिः प्रकटप्रतापः ॥ (३) तस्माद् नृप—

२५ गणा···तमा (कीर्तः) परं भाजनं संभूतः सुतनुः सुतोतिमतिमान् श्रीमंमटो विश्रुतः । येनास्मिन् निजराजवंशगगने चन्द्रायितं चारुणा तेनेदं पितृशासनं समधिकं कृत्वा पुनः पाल्यते ॥ (४) श्रीबलभद्राचार्यं विदग्धनृपपूजितं समभ्यर्च्य । आचंद्रार्कं यावद्-दत्तं भवतं मया—

२६ ····॥ (५) (श्रीहस्ति)कुण्डिकायां चैत्यगृहं जनमनोहरं भक्त्या । श्रीमद्बलभद्रगुरोर्यद्विहितं श्रीविदग्धेन ॥ (६) तस्मिन् लोकान् समाहूय नानादेशसमाग(ता)न् । आचंद्रार्कस्थितिं यावच्छासनं दत्तमक्षयं ॥ (७) (रू)पक एको देयो वहतामिह विंशतेः प्रवह-णानां । धर्म—

२७ ····क्रयविक्रये च तथा ॥ (८) संभृतगंत्र्या देयस्तथा वहंत्याश्च रूपकः श्रेष्ठः । धाणे घटे च कर्षो देयः सर्वेण परिपाट्या ॥ (९) श्री(भट्ट)लोकदत्ता पत्राणां चोल्लिका त्रयोदशिका । पेल्लकपेल्लक-मेतद् द्यूतक(रैः) शासने देयं ॥ (१०) देयं पलाशपाटकमर्यादा-वर्तिक—

२८ ···· । प्रत्यरघ(ट्टं) धान्याढकं तु गोधूमयवपूर्णं ॥ (११) पेड्डा च पंचपलिका धर्मस्य विशोपकस्तथा भारे । शासनमेतत्पूर्वं विदग्ध-

राजेन संदत्तं ॥ (१२) (कर्पा)सकांस्यकुंकुमा(पुर)मांजिष्ठादिसर्व-
भांडस्य । (द)श दश पलानि भारे देयानि विक—

२९ .... ॥ (१३) आदानादेतस्माद् भागद्वयमर्हतः कृतं गुरुणा । शेषस्तृतीयभागो विद्याधनमात्मनो विहितः ॥ (१४) राज्ञा तत्पुत्रपौत्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च । गुरुदेवधनं रक्ष्यं नोपे(क्ष्यं हितमीप्सुभिः) ॥ (१५) दत्ते दाने फलं दानात् पालिते पालनात् फलं । (भक्षितो)पेक्षिते पापं गुरुदे—

३० (वधने)धिकं ॥ (१६) गोधूममुद्गयवलवणराल(का)देस्तु मेयजातस्य । द्रोणं प्रति माणकमेकमत्र सर्वेण दातव्यं ॥ (१७) बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ (१८) रामगिरिनंदकलिते विक्रमकाले गते तु शुचिमा(से) ।

३१ (श्रीम)द्बलभद्रगुरोर्विदग्धराजेन दत्तमिदं ॥ (१९) नवसु शतेषु गतेषु तु षण्णवतीसमधिकेषु माघस्य । कृष्णैकादश्यामिह समर्थितं मंमटनृपेण ॥ (२०) यावद् भूधरभूमिभानुभरतं भागीरथी भारती भास्व(द्भा)नि भुजंगराजभव(नं) आजद्भवांभोधयः । ति(ष्ठं)—

३२ त्यत्र सुरासुरेंद्रमहितं (जै)नं च सच्छासनं श्रीमत्केशवसूरिसंततिकृते तावत् प्रभूयादिदं ॥ (२१) इदं चाक्षयधर्मसाधनं शासनं श्रीविदग्धराज्ञा दत्तं ॥ संवत् ९७३ श्रीमंमट(राज्ञा समर्थि)तं संवत् ९९६ । सूत्रधारोद्धव(शत)योगेश्वरेण उत्कीर्णेयं प्रशस्तिरिति ।

[इस बृहत् शिलालेखके दो भाग हैं । दूसरा भाग जो २३वीं पंक्तिसे शुरू होता है समयकी दृष्टिसे पहलेका है । इसमें राष्ट्रकूट कुलके राजा हरिवर्माके पुत्र विदग्धराजका वर्णन किया है । आचार्य

वासुदेवके उपदेशसे विदग्धराजने राजधानी हस्तिकुण्डिकामें ऋषभदेवका मन्दिर बनवाया था। इसने अपनी सुवर्णतुलाका दो तिहाई भाग इस मन्दिरके लिए तथा एकतिहाई भाग गुरुके लिए दान दिया था। विदग्धराजने इसी मन्दिरके लिए हस्तिकुण्डीके व्यापारियोंके कई करोंका उत्पन्न बलभद्र गुरुको दान दिया था। इस दानको तिथि आषाढ़, संवत् ९७३ थी। विदग्धराजका पुत्र मंमट हुआ। इसने उक्त दानको माघ कृष्ण ११, संवत् ९९६को पुनः सम्मति दी। मंमटका पुत्र धवल हुआ। इसकी वीरताका विस्तृत वर्णन लेखमें किया है। जब मुंजराजने मेदपाटकी राजधानी आघाटको नष्ट किया तब वहाँके राजाको धवलने आश्रय दिया था। दुर्लभराजके आक्रमणसे महेन्द्रका रक्षण इसीने किया तथा मूलराजके द्वारा पराजित धरणीवराहको भी आश्रय दिया। वृद्धावस्थामें धवलने अपने पुत्र बाल प्रसादको सिंहासनपर स्थापित किया। इसके समय संवत् १०५३ में वासुदेवके शिष्य शान्तिभद्रसूरिके उपदेशसे हस्तिकुण्डीकी गोष्ठी (व्यापारियोंके समूह) ने विदग्धराज-द्वारा निर्मित मन्दिरका जीर्णोद्धार किया। गोष्ठीके सदस्योंके नाम पंक्ति २२में गिनाये हैं। लेखके पहले भागमें जो ४० श्लोकोंकी प्रशस्ति है वह सूर्याचार्यने लिखी थी। लेखके अन्तमें केशवसूरिका उल्लेख है] [ए० इं० १० पृ० १७]

८२

विलप्पक्कम (जि. उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ९४५, तमिल

नागनाथेश्वर मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलापर

[यह लेख चोल राजा मदिरैकोण्ड परकेसरिवर्मन् (परान्तक १) के राज्यके ३८ वें वर्षमें लिखा गया था। तिरुप्पान्मलैके आचार्य अरिष्टनेमिकी एक शिष्याके द्वारा एक कुआँ बनवानेका इसमें उल्लेख है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट २१६]

८३

नरेगल (मैसूर)

शक ८७३ = सन् ९५०, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अकालवर्ष कृष्णराजदेव (तृतीय) के सामन्त गंगवंशीय बूतय्य पेर्मानडिके समयका है। इसकी रानी पद्मब्बरसि-द्वारा निर्मित बसदिके दानशालाके लिए नमयर मारसिंगय्यने एक तालाब अर्पित किया था। यह दान कोण्डकुन्दान्वय देसिग गणके महेन्द्र पण्डितके प्रशिष्य तथा वीरणन्दि पण्डितके शिष्य गुणचन्द्र पण्डितको सौंपा गया था। दानकी तिथि पौष शु० १० रविवार, उत्तरायण संक्रान्ति, शक ८७३ साधारणसंवत्सर ऐसी दी है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]　　　　[सा० इ० इ० ११ पृ० २३]

८४

वेमुलवाड (करीमनगर, आन्ध्र)

१० वीं सदी—उत्तरार्ध (लगभग सन् ९६०)

संस्कृत–कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें चालुक्य राजा वद्देग-द्वारा गौडसंघके आचार्य सोमदेव-सूरिके लिए एक जिनालय बनवाये जानेका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५८]

८५

धारवाड (मैसूर)

शक ८८४ = सन् ९६२, कन्नड

[यह ताम्रपत्र गंग राजा मारसिंह (द्वितीय) के समय पौष कृष्ण ९ मंगलवार, शक ८८४, दुन्दुभि संवत्सर, उत्तरायण संक्रान्तिके दिन दिया गया था। इसमें राजा-द्वारा मेलपाडिके स्कन्धावारसे कोंगल देशमें

स्थित कादलूरु ग्राम एलाचार्यको अर्पण किये जानेका उल्लेख है। उसकी माता कल्लब्बे-द्वारा निर्मित जिनालयके लिए यह दान दिया गया था। एलाचार्यकी गुरुपरम्परामें निम्न नाम दिये हैं—सूरस्थ गणके प्रभाचन्द्र योगीश—कल्नेलेदेव—रविचन्द्रमुनीश्वर—रविनन्दिदेव—एलाचार्य।]   [रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ए० २३ पृ० ७]

८६
कुडलूर (मैसूर)
शक ८८४ = सन् ९६२, संस्कृत-कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें गंग राजा मारसिंह-द्वारा मुंजार्य अपर नाम वादिघंघल भट्टको चैत्र शु० ५ शक ८८४, रुधिरोद्गारि संवत्सरके दिन गुरुदक्षिणाके रूपमें पूनाटु प्रदेशका वागियूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। मुंजार्य पराशर गोत्रका ब्राह्मण था तथा 'स्याद्वादोदयशैल-भास्कर–स्याद्वादरूपी उदयपर्वतके लिए सूर्यके समान था।]

[ए० रि० मै० १९२१ पृ० १८]

८७
कोकिवाड (धारवाड, मैसूर)
१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख जिनशासनकी प्रशंसासे प्रारम्भ होता है। राष्ट्रकूट राजा खोट्टिग तथा उनके सामन्त गंगवंशीय सत्यवाक्य कोंगुणिवर्म धर्म-महाराजका इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ८९ पृ० ३५]

८८
लक्ष्मेश्वर (मैसूर)
शक ८९३ = सन् ९७१, कन्नड

[यह लेख बहुत घिस गया है। गंग राजा मारसिंघदेवके समय

कार्तिक शु० (?) शक ८९३, प्रजापति संवत्सरके दिन शंखजिनालयको कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३० पृ० १६३]

८९

दालवुलपाडु (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

१०वीं सदी (लगभग सन् ९७२), संस्कृत—कन्नड

भग्न जैन मन्दिरमें स्थित मूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें राष्ट्रकूट सम्राट् नित्यवर्ष (इन्द्र ४)-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेकके लिए यह पादपीठ बनवानेका निर्देश है ।]

[इ० म० कडप्पा १४८]

९०

विडिगनवले (मैसूर)

शक ८९७ = सन् ९७५, कन्नड

पहली ओर

१ भद्रमस्तु जि-	२ नशासना-	३ य श्रीमत्
४ सकवर्ष ८-	५. ९७य यु-	६ वसंवत्सर-
७ द आषाड-	८ मासद शु-	९ द्ध दशमियु
१० सोमवार	११ वुं स्वातिन-	

दूसरी ओर

१२ क्षत्रनुमा	१३ गे अमृत्त-	१४ व्वे कन्तिय
१५ रुरटु नोन्तु	१६ समाधि	१७ यिं (मुडिपि)
१८ दूरवर म-	१९ क्कलनिमि-	२० त्तपरोप-
२१ कारिगल् प-	२२ ननन्दिभट्टा-	

तीसरी ओर

२३ रकरवगें २४ नेथ २५ ....

२६ निंलिसिदर्

[*यह लेख एक स्तम्भके तीन बाजुओंपर खुदा है। इसमें अमृतब्बे-*कन्ति नामक महिलाके समाधि-मरणका तथा उसके पुत्र पद्मनन्दिभट्टारक-द्वारा इस स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है। तिथि आषाढ़ शु० १०, सोम-वार, शक ८९७, युवसंवत्सर, इस प्रकार दी है।]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १९२]

९१

बेल्लट्टि (धारवाड, मैसूर)

(शक) ९११ = सन् ९९०, कन्नड

[जोगीवण्डि नामक पाषाणपर यह लेख है। अज्जरय्यके पेर्गडे आयतवर्मा-द्वारा निर्मित वसदिका इसमें उल्लेख है। वर्ष ९११ दिया है जो सम्भवतः शकवर्षका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० २०४ पृ० ३८]

९२

वेडल (ज़ि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ९९९, तमिल

आण्डार् मडम् नामक पहाड़ीकी एक गुहाके आगे

[यह लेख चोल राजा राजकेसरिवर्मन्के १४ वें वर्षका है। इसमें गुणकीर्तिभटारके शिष्य कनकवीर कुरट्टिका तथा मादेवी अरिन्दमंगलम्का उल्लेख है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट ७४४]

९३

खण्डगिरि—ललतेंदुकेसरि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत–नागरी

१ ओं श्री उद्योतकेसरिविजयराज्यसंवत् ५

२ श्री कुमारपर्व्वतस्थाने जिर्णवापि जिर्ण इसण
३ उद्योतित तस्मिन याने चतुर्विन्सति तीर्थंकर
४ स्थापित प्रतिष्ठा (का) ले इ (रि) ओप जसनंदिक
५ ·······श्रीपारस्यनाथस्य कर्मक्षयः

[यह लेख राजा उद्योतकेसरीके ५वें वर्षका है। कुमारपर्वतकी वापी तथा मन्दिरोंका जोर्णोद्धार करके चौबीस तीर्थंकरोंकी मूर्तियोंकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। कुमारपर्वत खण्डगिरिका पुराना नाम है। अन्तिम भागमें जसनंदि (यशोनन्दि)का उल्लेख हुआ है।]

[ए० इं० १३ पृ० १६६]

९४

खण्डगिरि—नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत—नागरी

१ ओं श्रीमदुद्योतकेसरिदेवस्य प्रवर्धमाने विजयराज्ये संवत १८
२ श्रीआर्यसंघप्रतिवद्धग्रहकुलविनिर्गतदेशीगणाचार्य श्रीकुलचन्द्र-
३ भट्टारकस्य तस्य शिष्यशुभचन्द्रस्य

[इसका सारांश जै० शि० सं० भाग २में क्रमांक २४५में दिया है। किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था। इसमें राजा उद्योतकेसरीके १८वें वर्षमें देशीगणके आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख किया है।] [ए० इं० १३ पृ० १६५]

९५

खण्डगिरि–नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत—नागरी

१ ओं श्रीआचार्यकुलचन्द्रस्य तस्य
२ शिष्य खल्लशुभचन्द्रस्य
३ छात्र विजो

[इस लेखमे आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रके शिष्य विजो (?) का निर्देश है ।] [ए० ई० १३ पृ० १९९]

९६

ईचवाडि (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

१ ····बूतुग पेर्माडि तदपत्यण् एरेयपं तत्सुत वीर

२ ····राचमल्लनहितरमल्ल । अन्ता राचमल्लनिन्देरेयंगनातन मगं

३ ····नातन पुत्रं सैगोट्ट····राचमल्ल····

४ ····मिडुकदिरलेडद कळ्योल् मदमातंगमने पिडिडु निलिसिद ।

५ ····क्काणूर्गणद आचार्यावतारमेन्तेन्दोडे । दक्षिणदेशनिवासि । गंगमहीमण्डलिक····

६ ····नन्दिभट्टारकरुं बालचन्द्रभट्टारकरुं मेघचन्द्र त्रैविद्यदेवरुं····

७ ····पेर्म्पं तलेदं गुणनन्दिदेव शब्दब्रह्म । अवरिं बलिकं अकलंक सिंहासनम····

८ ····मदमातंगरुं बौद्धवादितिमिरपतंगरुं सांख्यवादिकुलाद्रिवज्रधररुं नैयायिका····

९ सिद्धान्तवार्धिवर्धनसुधाकररुं । सकलसाहित्यप्रवीणरुं । मनोभवभयरहितरुं····

१० श्रीमतु प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु अनवद्याचार्यर माघनन्दिसिद्धान्त····

११ अवरं शिष्यरु । चतुरास्यं चतुरोक्तियिं प्रभुतेयिन्दीशं गुणव्यापकस्थितियं विष्णु सुबुद्धि वि—

१२ सिद्धान्तविभूषणंगेनिसिदं श्रीमत्प्रभाचन्द्रमं । अवर सधर्मरु । श्रुतसिद्धान्त—

१३ मप्रतिमं तानेने पेम्पुवेत्तु मुदितोदात्तर् जगद्वन्द्यर् ऊर्जितरु-
द्योतित—

१४ मनोभवविशालहरनिटिलाक्षं वादिमदरदनिविदुवं भेदिपमृग-
राज जयतु श्रुतकीर्तिबुधं ।····

१५ वादिराजं दलेनिसिदं····योलु । अवर सधर्मरु । चारित्रचक्रि
सम्यमधारि क्राणूर्गणा···

१६ शिष्यरु । वरशास्त्राम्बुधिवर्धनहरिणांकं ···· वादिमद ···· निरुतं
तानेनलेसेदं—

१७ वारणवागि कीर्ति नर्तिसुवुदु पेम्पुवेत्त····नतिमेल्गे····दलागेसेवुदु
सद्गुण···

१८ नींडि पिरिदुं निस्तेजमैदिदं····नोडदं····प्रभुतेयं ताल्दिपं····
करं···

१९ नुडिगलु सत्यसुवर्णभूपणगणं····सुरलंगलं····करण्डकं तनुतप···

२० धेनुव्रतिरूपमं तलेदुदो····मूजातवी धरयोलु तापस····

२१ मुनिपं····रत्नाकरं । इन्तेनिसि नेगल्दाचार्य····तिलकरुं जिन-
सद्म····

२२ वारिधिशीतरोचि····स्तुत्यं····जिनपदाब्जद्वयभृंगं····भुजवलगंगं··

२३ तम्म गंगान्वयदवर् पडिसलिसुत्तुं····मरवेस नागि माडिसि····

२४ दत्ति तट्टिकेरे सर्वबाधापरिहारा····केरेय केलगे तलवृत्ति····

२५ मारसिंगननुजं····सन्द नन्नियगंगक्षितिपालकं तदनुजं····

२६ वल्लि येम्बूलमं वसदि····मूडलुगद्दे····

२७ गुड्ड नन्नियगंगदेवं····एम्बूलमं····आगद्देयिं तें····

२८ सिद्धान्तदेवर गुड्डं रक्कसगंगं नन्नियगंगं····सीमेयिं तेंक····

२९ मूडणदेसे····नट्ट कल्लुगलु····

३० मुनिचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डं । भुजवलदिं शत्रुमहीभुज····
(३१ से ३६ तक पंक्तियाँ घिस गयी हैं)

३७ तळप्रहारदोळे····नूं गुटदिन्दे मीण्टुवं····कवुंगु····

३८ धर्ममहाराजाधिराजपरमेश्वरं । कोलाळपुरवरेश्वरं । नन्दगिरिनाथं मदगजेन्द्र····

३९ मण्डलिकदेवेन्द्रं दर्पोद्धताराातिवनजवनवेदण्डं···

४० देवं माडिसिद····तीर्थद वसदियं····

४१ ····चन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यर् मुख्यवागि विट्ट दत्ति····

४२ नन्नियगंगदेवनुं पट्टमहादेवि····

४३ काणिकेयं नाडूरगलोलु पणवं कोट्टरा····

[इस विस्तृत लेखकी पहली कुछ पंक्तियाँ टूट गयी हैं तथा अन्य पंक्तियोंके वहुत-से अक्षर घिसे हैं। गंगवंशके राजा रक्कसगंग तथा नन्नियगंगके समय यह लेख लिखा गया था। इनके द्वारा तट्टिकेरे ग्रामकी कुछ भूमि····चन्द्रसिद्धान्तदेवको दान दी गयी थी। लेखमें क्राणूर्गणकी आचार्य-परम्परा इस प्रकार वतलायी है — ····नन्दिभट्टारक, बालचन्द्रभट्टारक, मेघचन्द्रत्रैविद्यदेव, गुणनन्दि शब्दब्रह्म, अकलंक, प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेव, माघनन्दिसिद्धान्तदेव, प्रभाचन्द्र (द्वितीय), उनके गुरुबन्धु श्रुतकीर्ति, — (यहाँ कुछ नाम घिस गये हैं)। अन्तमें मुनिचन्द्र सिद्धान्तदेवके एक शिष्यका उल्लेख है। राजा नन्नियगंगकी वंशावलीमें बूतुग पेर्माडि, एरेयप्प, राचमल्ल, एरेयंग सैगोट्ट तथा राचमल्ल इनका उल्लेख किया है।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ११४]

९७

दानवुलपाडु स्तंभलेख (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

१०वीं सदी, संस्कृत-कन्नड़

पहला भाग

१ पतिय वेसदिंद्र— २ महितरनतिकोप—

३ दिनिक्कि गेल्दु परिपा— ४ लि(लि)दं । चतुरुदधि—

५ वलयमेल्लमन– ६ तिरथनी दण्ड(ना)थ–
७ कं श्रीविजयं ॥(१) ८ तुरगघलंगल–
९ नोल्डिद् करिघटे– १० यं पिरियनेर–
११ (वि)यं वल्लणियं । १२ धुरदेडे(योलि)रि–
१३ दु गेल्गुं कदद(लि) १४ करमरिदु रण–
१५ दोलनुपमकविय ॥(२) १६ कुपितवनि श्रीवि–
१७ जये वलिकुल्गलि– १८ लके नरेन्द्रदण्डाधि–
१९ पतौ । गिरिरगि(रि)वन– २० भवनं जलभज–
२१ लं रिपुन(नृ)हय– २२ लमवलं ॥(३)

दूसरा भाग

२३ वसुमतियोल– २४ गिलदेण्टुं (दे)सेगल
२५ कुलकुलनेग्गदि २६ माणदे सत्तं । (विस)–
२७ रुहगर्भाण्डक्कं प– २८ सरिसिडुदु (कों)तिं नं–
२९ दनुपमकविय ॥(४) ३० आश्रितजनकल्पत–
३१ रुविश्रुतरि(पु)नृप– ३२ तिनृणदवानलमूर्तिः ।
३३ श्रीवनिताम्सरपाशः ३४ पातुस्तव बाहु मे–
३५ दिनीं श्रीविजय ॥(५) ३६ चतुरुदधिवलय–
३७ वलयितवसुन्ध– ३८ रामिन्द्रशासनात् सं–
३९ रक्ष(न्) । श्रीविजय ४० दण्डनायक (जी)व
४१ चिरं दानधर्मनि– ४२ रतमनस्क ॥(६)
४३ मंगल माहाश्रीः ॥

तीसरा भाग

४४ भद्रमस्तु भगवते (जि)नशासना(य) ॥
४५ अष्टविधकर्ममेल्लमनट्ठु– ४६ अरिगोण्डु कोडिपे(नें)तुडे वगेयि ।

४७ (पु)ट्टिदनुदात्तसत्वं नेट्टने वित्तु ४८ धेन्द्रवन्द्यनरिविंगोजम् ॥(७)
४९ तानरिदु तो(र)दु नेट्टने मानि– ५० सवालावुदेंदु संन्यासनदोल्।
५१ मानसिके गिडदे कोण्डो(न)नून– ५२ सुखास्पदसनल्तियोल् श्रीविजयं ॥(८)
५३ निर्गतमय नीनर(मं)सर्ग– ५४ म नानोल्क्लेनेन्दु पेसि त्रितु–
५५ वं। सर्गद मोगमनुण्डपत्र– ५६ गंक्कडियिट्टोनरिंद्रोननुप–
५७ मकवियं ॥(९)दण्डिन साम ५८ ग्रिगे परमण्डलमल्लाडे
५९ (स)र्व्वविक्रमतुंगं। दण्डिन श्री– ६० रश्रीगोल्गण्डं श्रीदण्डनायकं
६१ श्रीविजयं ॥(१०) (च)ण्डपराक्र ६२ मनुरदरिमण्डलिकरनट्टि पि-
६३ डिदु पतिगोप्पिमुवोल्गण्ड प्रच-६४ ण्डनीमूमण्डलदोल् दण्डनायकं
६५ श्रीविजयं ॥(११) अनुपम– ६६ कवियं सेनवोवं गु–
६७ णवर्म वरेदं ॥

[यह शिलालेख दण्डनायक श्रीविजयकी प्रशंसामें लिखा गया है। अरिविंगोज, अनुपमकवि तथा सर्वविक्रमतुंग ये इसके विरुद थे। यह बलिकुलमें उत्पन्न हुआ था तथा इन्द्रराजकी सेनाका पराक्रमी सेनापति था। इन्द्रराज (तृतीय) ही सम्भवतः यहाँ उल्लिखित है जिसका राज्य सन् ९१४ से ९२२ तक था। लेखके तीसरे भागमें कहा है कि श्रीविजयने समस्त वैभव छोड़कर संन्यास धारण किया था। यह लेख श्रीविजयके सेवक गुणवर्माने लिखा था।] [ए० इं० १० पृ० १४७]

६८–६९

चोलवाण्डिपुरम् (दक्षिण अर्काट, मद्रास)

१०वीं सदी, तमिल

[यह लेख राजा गण्डरादित्य मुम्मुडि चोलके दूसरे वर्षका है। इसमें चेदि सिद्धवडवन् नामक शासककी प्रशंसा है। उसे कोवलका स्वामी तथा

मलयकुलोद्भव कहा है। स्थानीय पहाड़ीपर उत्कीर्ण मूर्तियोंकी पूजाके लिए उनने कुछ दान दिया था। कुरण्डिके गुणवीर भटारका भी इनमें उल्लेख है। उत्कीर्ण मूर्तियां महावीर, पार्श्वनाथ, गोम्मटदेव तथा पद्मावती की हैं। यहींके एक अन्य लेखमें १०वीं सदीकी लिपिमें कहा है कि इन मूर्तियों (तेवारम्) का निर्माण देलि कोंगरैयर् पुत्तडिगल्नुने किया था।]

[रि० ना० ए० १९३६-३७ क्र०२५१-५२ पृ०३४]

१००

मसुलिपट्टम ताम्रपत्र (आन्ध्र)

१०वीं सदी, संस्कृत-तेलुगु

१ व्याकृष्टरत्नखचितायतशार्ङ्गचापां यस्सेन्द्रकार्मुकविनीलपयोद-वृन्दम्। निर्भर्त्स्यन्निव विभा—

२ ति स कृष्णकान्तिर्विष्णुर्दिशत्वनिशं तु वोवधृतत्रिलोकः॥ (१) स्वस्ति श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमा—

३ नव्यसगोत्राणां हारीतिपुत्राणां कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्याना-म्मातृगणपरिपालितानां स्वामि—

४ महासेनपादानुध्यातानां भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवरवराह-लांछनेक्ष—

५ णवशीकृताराति मण्डलानामश्वमेधावभृथस्नानपवित्रीकृतवपुषां चालुक्यानां कु—

६ लमलंकरिष्णोस्सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुब्जविष्णुवर्धननृप-तिरष्टादशवर्षाणि—

७ वेंगीदेशमपालयत्। तदात्मजो जयसिंहस्त्रयस्त्रिंशतम्। तदनुजे-न्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्धनो न—

८ व। तत्सूनुर्मंगियुवराजः पंचविंशतिम्। तत्पुत्रो जयसिंहस्त्रयो-दश। तदवर—

९ जः कोकिलिष्षण्मासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्धनस्तमुच्चाट्य सप्तत्रिंशतम् । तत्पुत्रो —वि

दूसरा पत्र : पहला भाग

१० जयादित्यभट्टारकोष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्धनष्पट्त्रिंशतम् । नरेन्द्रमृगराजा (ख्यो) मृ—

११ गराज (पराक्रमः ।) विजयादित्य (भूपालः) चत्वारिं(शत्समा)- ॥(२) तत्पुत्रः कलिविष्णुवर्ध—

१२ नो (ध्यर्धवर्षम् । तत्सु)तो गुणगविजयादित्यश्चतुश्चत्वारिंशतम् । तद्भ्रातुर्यौवराज्योन्नतमहि—

१३ (मभृतो) विक्रमादित्यभूपाज्जातश्चालुक्यभीमस्सकलनृपगु (णो- त्कु) ष्टचारित्रपात्रः । दानी

१४ ·········रसकरः सार्वभौमप्रतापो राज्यं कृत्वा प्र (या) तः त्रिद- शपतिपदं

१५ (त्रिंशदब्दप्रमा) णं ॥ (३) तत्पुत्रः कलियत्तिगण्डविजयादित्य- ष्पण्मासान् । तत्सूनुरम्मराजस्स—

१६ (प्त) वर्षाणि । तत्सुतं विजयादित्यं कण्ठिकाक्रमायातपट्टाभि- षेकं बालमुच्चाट्य तालराजो राज्यम्मास—

१७ (मे) कं । चालुक्यभीमसुतो विक्रमादित्यस्तं हत्वा एकादश- मासान् । विजयादित्यो वेंगीनाथः कलियत्ति—

१८ गण्डनामा भीमा (न् ।) तस्य सती मेलांबा तज्जश्रीराजभीम- नृपतिरजेयः॥ (४) सत्यत्यागाभिमानाद्यखि—

दूसरा पत्रः दूसरा भाग

१९ लगुणयुतो राजमार्ताण्डमाजौ । जित्वोग्रम्मल्लपाख्यं ससुतमधि- बलं द्रोहि (णो) प्यन्तकाभो । द्विड्भीमो राष्ट्र

२० कूटप्रबलबलतमस्संहरो द्वादशाब्दं । राज्यं कृत्वागमत्स प्रणिहित (सुयशो) धर्मसन्तानवर्गः॥ (५) वि—

२१ ण्गोः पद्मेव शंभोरिव गिरितनया यस्य देवी सपट्टा। संशुद्धा (ईह) नाम्निजकु (लवि) पये पुण्यला (व)—

२२ ण्यगण्या। लोकांबा तत्सुतोभूद् विजितपरबलो वेंगिनाथोम्मराजो। राजद्राजाधिराजो (जितरिपु) म—

२३ कुटोद्घृष्टपादारविन्दः॥ (६) वेंगी (राज्याभिषिक्तो) निजरिपु- विजयादित्यमुद्यत्समर्थं। जित्वा (नेकाजिरंग)—

२४ प्रजितपरबलं (कण्ठिकादामकण्ठं।) दायादद्रोहिवर्गानपि सकर- बलः क्षत्रि (या) दित्यदे—

२५ वो। ध्वस्तारिध्वान्तराशिर्विलसितकमलस्सप्रतापो विभाति॥ (७) यन्निर्मातुन्निमित्तं कृतमिदमखिलं विष्टपं हि

२६ त्रिमूर्तेरात्मानं चात्मनात्मादिह सकलगुणं (राजभी)-मोद्वहो- भूत् तेजोराशिः प्रजानां पतिरधिकब—

२७ (ल) स्सप्रतापोष्टमूर्तिस्सोयन्देवोम्मराजो जनगुणजनकोन (न्य) राजाग्रचिन्हः॥ (८) स्वयाताः पूर्व—

तीसरा पत्र : पहला भाग

२८ नाथा नलनहुषहरिश्चन्द्ररामादयोपि प्रत्यक्षास्ते यशोभिर्गुणवपुर- चला स्थैरिदानी—

२९ मदृष्टाः। यस्योच्चैः कीर्तिरा (शिभं) गण इव जगत्यद्वितीयो- दयोस्मिन्। राजद्राजाधिराजस्स ज—

३० यति विजयादित्यदेवोम्मराजः॥ (९) गद्यम्। स जगतीपतिरम्म- राजो राजमहेन्द्र भोगीन्द्र सह—

३१ स्रभोगोपहासिदीर्घदक्षिणैकबाहुसान्द्रितविश्वविश्वंभराभारः । नारायण

३२ इव निरन्तरानन्तभोगास्पदः। विधुरिव सुखविराजितः। पिता- मह इव कम—

३३ लासनः । गिरिविश इव धराधरसुताराधितः । रत्नाकर इव समस्त—

३४ शरणागतमभूद्राश्रयः । सुवर्णाचल इव सुवर्णोत्तुंगोदयः । हिमाचल

३५ इव सिंहासनोल्लासितचमरीवालव्यजनविराजमानलीलः ॥ स सम—

३६ स्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरम—

तीसरा पत्र : दूसरा भाग

३७ भट्टारकः । वेलनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बि-नस्समस्त—

३८ सामन्ता(न्त):पुरमहामात्रपुरोहितामात्यश्रेष्ठिसेनापतिश्रीकरण धर्माध्यक्ष—

३९ द्वादशस्थानाधिपतीन् समाहूयेत्थमाज्ञापयति विदितमस्तु वः । श्रीमानुदपा—

४० दि महान्प्रिणयनकुलसाधु''''ग्रेव्याख्यो । गोत्रः सिंहासनतो

४१ विदितो नरवाहनश्चलुक्यं(शानाम् ॥ १०) श्रीकरणगुरुर्गुरुरिव विबुधगुरु—

४२ स्स(क)लरा(जसिद्धान्तज्ञः) । नरवाहन इत्यासीन्न्यक्कृतनरवाह-(नः)प्रकाशित—

४३ यशसा ॥(११) यस्याग्रसुतो गुणवान् मेलपराजो गुणप्रधानो दानी । मानी मा—

४४ नवचरितो मानवदेवो जिनेन्द्रपदपद्मालिः ॥(१२) तस्य सती मेण्डांबा सीतेव पति—

४५ व्रता जिनव्रतचरिता । सत्यवती (वि)नयवती सतताहारप्रदायिनी धृतधर्मा ॥ (१३)तज्जौ

चौथा पत्र : पहला भाग

४६ (सु)तौ प्रसिद्धौ बुद्धिपरौ सकलशास्त्रशस्त्रविवेकौ। भीमनरवाह-
नाम्न्यौ विख्यातौ रा—

४७ मलक्ष्मणाविव लोके ॥(१४) यौ भीमार्जुनसदृशौ बलयुतबलदेव-
वासुदेव(समा)नौ। (न)—

४८ कुलसहदेवतुल्यौ तौ जातौ जैनधर्मनिरतचरित्रौ ॥(१५) श्रीमत्-
चालुक्यभीम(क्षितिपतिकृप)—

४९ या लब्धसामन्तचिन्हौ श्रोद्वारौर्वंवरष्ठोवनपट्टविलस(च्चा)मरच्छत्र-
(लीलौ।)

५० .... रिकस्थौ शिखिरुहपटलच्छायसत्कर्करीकौ जातौ चालुक्य-
(चूलौ)

५१ ....करिहयौ काहलाद्यभ्युपेतौ ॥(१६)जैनाचार्यौ यदीयौ गुरुरखि—

५२ लगुणश्चन्द्रसेनाख्यशिष्यो शास्त्रज्ञो नायसेनो मुनिनुतजयसेनो
मुनिर्दीक्षितात्मा। सि—

५३ द्धान्तज्ञः कलाज्ञः परसमयपटुः सत्कृतोत्कृष्टवृत्तस्सत्पात्रः श्रावकाणां
क्षपणकसु(ज)—

५४ नक्षुल्लकार्ज्यार्जिकानां ॥(१७) तस्मै ताभ्यां राजभीमनरवाहनाभ्यां
विजयवाटिकायां

चौथा पत्र : दूसरा भाग

५५ जिनभवनयुगन्निर्मितमेतद्धर्मार्थमस्माभिस्सर्वकरपरिहारं देव-
भोगी—

५६ कृत्य पेद्दगालिडिपर्रु नाम ग्रामो दत्तः। अस्यावधयः। पूर्वतः
मण्ड्यु—

५७ रिपोलगल्सुन यिसु कट्टलचेरुवुन नडिमि दूव। आग्नेयतः आल-
पर्तियुं जूड्रि—

५८ युं मुय्यलकुट्टु (न) चूरुव पड्डुव । दक्षिणतः चूंट्टूरि प्रान्त(पर्ति) युत्तरंबुन कुण्डि—

५९ विड्डिगुण्ठ । नैऋत्यतः चूंट्टूरियम्मपोटग्रव्वगुडि । (पश्चिमतः) रेटि(प)ड्डमटिदरि । वा—

६० यव्यतः वलिवेरिपोलगरुसुन गारलगुण्ठ । उत्तरतः तप्पराल प(ड्डु)व । ई—

६१ शानतः कोडगालिडिपर्तियुं (वलिवेरियुं मु)य्यलकुट्टुन नड्डुपनि-गुण्ठ ।। तस्य (स्थे)याद्‌लं—

६२ घ्यं सुचिरसुरुतरं (शास)न राजकोक्तं । सत्कीर्तेर्वेगिपस्य प्रकट-गुणनिधेरम्मराजस्य पूज्यं ।

६३ तत्रेदं शा(स)नं (पालित)जिननिगमं शौर्यभीतान्यनाथव्रातो(च्चै)-मौलिमालामणिकमकरिकोमल्लि—

पाँचवाँ पत्र

६४ कोल्लासितांघ्रेः ।।(१७) अस्योपरि न केनचिद्‌बाधा कर्तव्या यः करोति स पंचमहापातकसं—

६५-६९ युक्तो भवति । तथा चोक्तं व्यासेन ।। (नित्यके शापात्मक श्लोक)

७० आज्ञप्तिः कटकराजः जयन्ताचा—

७१ र्येण लिखितम् ।।

[इस ताम्रपत्रमें मदनूर तथा कलचुम्बूरु लेखोंके समान पूर्वीय चालुक्यों-की वंशावली कुब्ज विष्णुवर्धनसे प्रारम्भ कर अम्मराज (द्वितीय) विजया-दित्य तक दी गयी है। अम्मराजके पिता चालुक्य भीम (द्वितीय) का एक सामन्त नरवाहन था जो त्रिनयनकुलमें उत्पन्न हुआ था तथा जैनधर्मीय था। उसका पुत्र मेलपराज था। इसकी पत्नी मेण्डांबाको दो पुत्र हुए — राजभीम तथा नरवाहन (द्वितीय)। जैनाचार्य चन्द्रसेनके शिष्य नाथसेन

(जयसेनके गुरु) इन दोनोंके गुरु थे। इनने विजयवाटिकामें दो जिनमन्दिर बनवाये थे। उनके लिए अम्मराजने वेलनाण्डु प्रदेशका पेद्दगालिडिपर्रु नामक ग्राम दान दिया था।] [ए० इं० २४ पृ० २६८]

१०१

वरुण (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड़

१ श्री····श्रीमत्पर····यि राजगुरु—

२ मण्डलाचार्य त्रियमकरर् अत्रिगोत्र परशुराम आचन चामुण्डरनु आ—

३ भटरकरु वारुणद सांथिनाथस्वामिय माडिसिदरु आवर प्रिय हुणहुचल—

४ दाचार्य सकलु विजय-अण बमण मडिदरु—

[इस लेखमें आचन चामुण्डर भट्टारक-द्वारा वरुण ग्राममें शान्तिनाथ-मूर्ति अर्पण किये जानेका निर्देश है। यह मूर्ति विजयण्ण और बमण्ण-द्वारा बनायी गयी थी। लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १७१]

१०२

मण्णे (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें देवेन्द्रपण्डित भट्टारकी शिष्या मारब्बेकन्तिके समाधि-मरणका तथा कलिगब्बे कन्ति-द्वारा इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। लिपि १०वीं सदीकी है।] [ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९]

१०३

उम्मत्तूर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें विमलचन्द्रके शिष्य सोत्तियूरके शासक मारम्मयके पुत्र सिन्दय्यके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९]

१०४

बूवनहल्लि (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना बालचन्द्र सिद्धान्तभटारके शिष्य क(म)लभद्रगुरु-द्वारा की गयी थी। लिपि १०वीं सदीकी है।] [ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०५

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख अंकनाथेश्वर मन्दिरके छतमें लगा है। प्रभाचन्द्र सिद्धान्त-भट्टारकी शिष्या देवियव्वेके समाधिमरणका यह स्मारक है। लिपि १०वीं सदीकी है।] [ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०६–१०७

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यहाँके सुब्रह्मण्यमन्दिरके छतमें दो निसिधि लेख लगे हैं। एकमें दडिगसेट्टि तथा देवरदासय्यकी माता चामकव्वेका उल्लेख है। दूसरेमें

महानायक रेचय्यके पुत्र अय्वसामिका उल्लेख है जो चातुर्वर्ण श्रमणसंघका सहायक था। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०८

होलेनरसीपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वीं सदीकी लिपिमें है। इसमें मुनिमुख्य महेन्द्रकीर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है।] [ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०९

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वीं सदीकी लिपिमें है। इसमें कदम्ब वंशीय बासवेके पुत्र राचयके समाधिमरणका उल्लेख है। यह लेख वलदेवने स्थापित किया था।] [ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३२]

११०

कोडिहल्लि (माण्डया, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

१ ....म– २ य्य सन्य–

३ सनं गेटदु ४ पुरद नॉ–

५ तु मुडिपि– ६ दनू आतन

७ मगलप्प ८ विडक्क कल्लु

९ निक्कसिदू(ल्)

[इस निसिधि-लेखमें किसी....मय्यके समाधिमरणका निर्देश है। उसकी पुत्री विडक्कने यह समाधि स्थापित की थी। लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है।] [ए० रि० मै० १९४० पृ० १६०]

१११

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१०वीं सदी, कन्नड़

[यह लेख रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदा है। यह श्रीनागसेनदेवका निसिदिलेख है। इसकी लिपि १०वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५१ पृ० १२६]

११२

मथुरा

१०वीं सदी, संस्कृत–नागरी

[इस लेखमें १०वीं सदीकी लिपिमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ५२७ पृ० ७७]

११३

कीलक्कुडि (जि० मदुरा, मद्रास)

१०वीं सदी, तमिल

समणरमलै पहाड़ीपर जैन मूर्तियोंके उत्तरकी ओर चट्टानपर

[इस लेखमें गुणभद्रदेव तथा चन्द्रप्रभका निर्देश है। लिपिके अनुसार यह लेख १०वीं सदीका होगा।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० २४२]

११४

वैखर (मन्दसौर, मध्यप्रदेश)

१०वीं सदी, संस्कृत–नागरी

[इस लेखमें नन्दियडसंघके जैन आचार्य शुभकीर्ति तथा विमलकीर्तिका उल्लेख है। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० २०३ पृ० ४५]

११५

कमलापुरम् (वेल्लारी, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वीं सदीकी लिपिमें है। इसमें गुणचन्द्रमुनि, इन्द्रनन्दि-मुनि तथा एक महिलाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० २२२ पृ० ४८]

११६

काशिवल (विजनोर, उत्तरप्रदेश)

संवत् १०६(१) = सन् १००५, संस्कृत–नागरी

[यह लेख एक जैन मूर्तिके पादपीठपर है। इसमें भरतका उल्लेख है तथा संवत् १०६ यह तिथि दी है। सम्भवतः संवत्का अन्तिम अंक लुप्त हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ४३६ पृ० ७१]

११७

लक्कुण्डि (मैसूर)

शक ९२९ = सन् १००७, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल (जो यहाँ सत्याश्रयका उपनाम होना चाहिए) के सामन्त वाजिकुलके नागदेवके समयका है। इसकी पत्नी अत्तियव्वेने लोक्किगुण्डिमें एक जिनालय वनवाकर उसे कुछ भूमि दान दी थी। यह दान उसके गुरु सूरस्थगण-कौरूरगच्छके अर्हणन्दि पण्डितको दिया गया था। दानकी तिथि फाल्गुन शु० ८, शक ९२९, प्लवंग संवत्सर ऐसी दी है। उस समय अत्तियव्वेका पुत्र पडेवल तैल मासवाडि प्रदेशका प्रमुख था।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ३९]

११८

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

राज्यवर्ष १ = सन् १००८, कन्नड,

[यह लेख चालुक्य राजा विक्रमादित्य ५के राज्यवर्ष १का है। इसमें सिंहनन्दि आचार्यके इंगिनीमरणका तथा उनकी स्मृतिमें कल्याणकीर्ति-द्वारा एक जिनेन्द्र चैत्यालयके निर्माणका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५–५६ क्र० १९९ पृ० ३७]

११९

उक्काल (ज़ि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १००९, तमिल

पेरुमाल मन्दिरके एक मण्डपकी उत्तरी दीवालपर

[यह लेख चोल राजा राजराजकेसरिवर्मन् (राजराज १) के २४वें वर्षका है। जो ब्राह्मण, वैखानस और जैन चोल, पाण्डल तथा तोण्ड-मण्डलके गाँवोंके अधिकारी हैं वे यदि भूमिकर दो वर्ष तक न दें तो उनकी ज़मीन ज़ब्त करानेका इसमें आदेश दिया है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट ३०८]

१२०

बेचारक बोमलापुर (मैसूर)

शक ९३५ = सन् १०१३, कन्नड

१ सकवर्ष ९३५ २ नेय प्रमादीच ३ संवत्सरद आ-
४ षाढ सु दसमि ५ सोमवारदोल् ६ माकब्बेगंतिय
७ मडिवद् बोचग- ८ वुड परोक्षवि- ९ नयं निसिधिगे-
१० य कल्लनिरि- ११ सिदं

[यह लेख माकब्बेगन्ति नामक महिलाके समाधिमरणका स्मारक है

जो वीचगवुडने स्थापित किया था। तिथि आषाढ शु० १०, सोमवार, शक ९३५, प्रमादी संवत्सर ऐसी दी है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० २०७]

१२१

तोण्डूर (द० अर्काट, मद्रास)

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[यह लेख चोल राजा परकेसरिवर्मन् (सम्भवतः राजेन्द्र १) के राज्यवर्ष ३का है। विण्णकोवरैयन् वयिरि मलैयन् नामक शासकद्वारा वर्धमान इलपेरुमानडिगल् नामक जैन आचार्यको गुणनेरिमंगलम् अपरनाम वल्लुवामोलि आरान्दमंगलम् नामक ग्राम तथा तोण्डूर ग्रामके कुछ उद्यान आदि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३४–३५ क्र० ८३ पृ० १६]

१२२

उदयपुर (राजस्थान)

संवत् १०७६ = सन् १०१९, संस्कृत-नागरी

[उदयपुरके वासुपूज्यमन्दिरकी एक मूर्ति। यह मूर्ति संवत् १०७६ में वाहिल सोडकद्वारा स्थापित की गयी थी ऐसा इस लेखमें कहा है।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२६]

१२३

मरोल (मैसूर)

शक ९४६ = सन् १०२४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (प्रथम) के समय शक ९४६, रक्ताक्षि संवत्सरके उत्तरायण-संक्रमणके अवसरपर लिखा गया था। इसमें

नोलम्बवाडि तथा करिविडि प्रदेशके सामन्त नोलम्बवंशीय घटेयंककार-द्वारा मरवोलल्की वसदिके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम उस समय सत्तिग (सत्याश्रय) की पुत्री महादेवीके शासनमें था। जैन आचार्य अनन्तवीर्य, गुणकीर्ति सिद्धान्तभट्टारक तथा उनके शिष्य देवकीर्तिपण्डितका भी इसमें उल्लेख है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ५०]

१२४

हैदराबाद म्युज़ियम (आन्ध्र)

शक ९४९ = सन् १०२७, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जयसिंह २ के राज्यकालका है। इस राजाकी कन्या सोमलदेवी-द्वारा पिरियमोसंगिके वसदिके लिए कुछ दानका इसमें उल्लेख है। तिथि शक ९४९ प्रभव संवत्सर ऐसी दी है।]

[एन्शण्ट इण्डिया १९४९ पृ० ४५]

१२५

होसूर (मैसूर)

शक ९५० = सन् १०२८, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (१) के समय शक ९५०, विभव संवत्सरकी उत्तरायणसंक्रान्तिके दिन पौष शु० १३, रविवारको लिखा गया था। केशवरसका पुत्र दण्डनायक वावणरस तथा उसका बन्धु महासामन्ताधिपति श्रीपादरस इनके शासनका इसमें उल्लेख है। वावणरस-की पत्नी रेवकब्बरसिके अधीन सिन्दरस पोसवूर नगरपर शासन कर रहा था। उस समय आयुचगावुण्डने पोसवूरमें अपनी पत्नी कंचिकब्बेके स्मरणार्थ एक बसदि बनायी और उसे कुछ भूमि तथा एक उद्यान अर्पण किया। आयुचगावुण्डके पुत्र एरकके पुत्र पोलेगने यह लेख स्थापित किया था। ये मोरक कुलमें उत्पन्न हुए थे।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ५५]

१२६

मस्की (रायचूर, मैसूर)

शक ९५३ = सन् १०३२, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके राज्यकालमें फाल्गुन शु० ९, सोमवार, शक ९५३, प्रजापति संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें देसिगणके जगदेकमल्लजिनालयके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमि आदिके दानका उल्लेख है। अष्टोपवासि कनकनन्दिभट्टारके निवेदनपर वह दान दिया गया था। स्थान राजधानि पिरियमोसंगि यह था।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २४७ पृ० ४२]

१२७

कागिनेल्लि (धारवाड, मैसूर)

(शक ९)५४ = सन् १०३२, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यमें ५४ (शक ९५४) वर्षमें लिखा गया था। इसमें जिनधर्मके भक्त कामदेवके एक पुत्र तथा आयतवर्माका उल्लेख है। इन्होंने एक मन्दिरके लिए कुछ सुवर्ण आदि दान दिया था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २३ पृ० १२०]

१२८

रायबाग (मैसूर)

शक ९६३ = सन् १०४१, कन्नड

[यह लेख आदिनाथमन्दिरके मण्डपमें लगा है। तिथि चैत्र व० १४, शक ९६३, शुक्रवार, विक्रम संवत्सर ऐसी दी है। अन्य विवरण प्राप्त नहीं है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५४ पृ० ३४]

१२९

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[इस लेखका कुछ भाग दीवालमें दवा है। इसके प्रारम्भमें राजेन्द्र-चोल प्रथमकी ऐतिहासिक प्रशस्ति है। तिरुमणंजेरि निवासी कलिमानन् विजयालयमल्लन्-द्वारा देवमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए ९६ भेड़ें दान दी जानेका इसमें उल्लेख है। यह लेख चन्द्रनाथमन्दिरके वरामदेके वाजूमें खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०० पृ० ६५]

१३०

हूलि (ज़ि० बेलगांव, म्हैसूर)

शक ९६६ तथा १०६७ = सन् १०४४ तथा ११४५, कन्नड

१-२ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ (१)

३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर-मेश्वर परमभट्टार-

४ कं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमदाहवमल्लदेवर विजयराज्य-

५ मुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्रार्कतारं सलुत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ मेले-

६ दं पगेवरं निर्मूलिसि जसमं निमिर्चि दिग्भित्तिवरं कालडिय बोलगडि तले पालिसिदं तोंवता-

७ रुमं भुजबलदिं ॥ (२) आतन पुत्रं विनयोपेतं पार्यिम्म-नृपति-गोप्पुव सति

८ विख्यातियुते हम्मिकब्बेगे सीतेगे सरि मागेणब्बे लच्छलेयोगे-
दरु ॥(३) इष्टज-

९ नक्के चट्टसमयक्के महाजनमोजनक्केयुत्कृष्टतपोधनगेयलिदायव-

१० नक्के सकंन्यकालिकाग्निष्टगेगेय्दे नाल्कुसमयक्कनुरागदे वेगर्वि-

११ तु संतुष्टते लच्छियब्बरसिगार् सरियर् सचराचरोर्वियोलु ॥(४)

१२ सकलधरित्रियोल् नेगर्द वंदिजनं सले रूपिनेल्गेयं प्रकटतेवेत्त दा-

१३ नगुणमं कुलदुंनतियं जिनांघ्रिगल्गकुटिलचित्तमं पोगलुतिर्पु-

१४ दु कूडिय लिंकदंकपालकन कुलोत्तमांगनेयनयिये लच्छलदेवियं

१५ जगं ॥ (५) शरनिधिमेखलावृतवसुंधरेयॅव विलासिनीमुखांबुरुह-
दवोल्विराजि-

१६ सुव वेल्वलनाल्के पोद्लुद् शोभेगागरमेनि(सि)पॅ पूलि तिलका-
कृतियिंदेसेदिर्पुदा पुरं सुरपु-

१७ रमं कुवेरनलकापुरमं नगुगुं विलासदिं ॥ (६) अल्लि ॥ सकल-
व्याकरणार्थशा-

१८ स्त्रचयदोलु काव्यंगलोलु संद नाटकदोलु वर्णकवित्वदोल्नेगर्द
वेदांतंगलोलु

१९ पारमार्थि(क)दोलु लौकि(क)दोलु समस्तकलेयोलु वागीशनिंदं
यशोधि-

२० करादर् पोगल्वलिगारलवे पेलु सासिर्वर ख्यातियं ॥ (७) स्वस्ति
शकनृपकालातीतसंवत्सर-

२१ शतगलु ९६६ नेय तारणसंवत्सरद पुष्य सुद्ध १० आदिवार-
मुत्तरायण-

२२ संक्रान्तियंदु ॥ यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्रतिग्रहषट्कर्म-
निरतरुं श्री-

२३ (म)चालुक्यचक्रवर्तिब्रह्मपुरिस्थानपितृपितामहमहिमास्पदरक्षणा-

२४ थंकोविदरुं　　चिदग्धकविगमकवादिवाग्मित्वरुमतिथियभ्यागत-
विशिष्ट-
२५ जनपूजनप्रियरुं हिरण्यगर्भब्रह्ममुखकमलविनिर्गतऋग्यजु-
२६ स्सामाथर्वणसमस्तवेदवेदांगोपमांगानेकशास्त्राष्टादशस्मृतिपुराण-
२७ काव्यनाटकधर्मागमप्रवीणरुं　　सप्तसोमसंस्थावभृथावगाहन-
पवित्रीकृ-
२८ तगात्ररुं कांचनक(ल)शसितपट्टछत्रचामरपंचमहाशब्दघटिकाभेरी-
रवनि-
२९ नादितरुमाश्रि(तजन)कल्पवृक्षरुमहितकालांतकरुमेकवाक्यरुं
३० शरणागतवज्रपंज(ररुं च)तुस्समयसमुद्धरणरुं श्रीकेशवादित्यदेव-
३१ लब्धवरप्रसादरुमप्प श्रीमन्महाग्रहारं पूलियूरोडेयप्रमु-
३२ ख सासिर्वर्महाजनंगल दिव्यश्रीपादपद्मंगलं (क)च्छियब्बरसि-
यरु स-
३३ हिरण्यपूर्वकमाराधिसि भूमियं पडेदु बसदियं माडिसि खं-
३४ डस्फु(टि)तर्जीर्णोद्धरणक्के पडुवण पोलदलु शिवेयगेरियारुमत्तर्व-
३५ सुगेयं मत्तरिंगङ्कचिन्नलेक्कदिंदरुवणमं मूरु पणमं तेत्तुवं-
३६ तागि श्रीयापनीयसंघद पुन्नागवृक्षमूलगणद श्रीबालचंद्रभ-
३७ ट्टारकदेवर　कालं　कर्चि　विट्टलु ॥ स्वस्ति　समस्तभुवनाश्रय
श्रीपृथ्वीवल्लभ महा-
३८ राजाधिराज　परमेश्वर　परमभट्टारकं　सत्याश्रयकुलतिलकं चालु-
क्याभरणं
३९ श्रीमत्प्रतापचक्रवर्ति जगदेकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्त-
४० राभिवृद्धिप्रवर्धमानचंद्रार्कतारंवरं सलुत्तमिरे । शकव-
४१ र्ष १०६७ नेय क्रोधनसंवत्सरदुत्तरायणसंक्रान्तियंदु यमनि-
४२ यमस्वाध्यायध्यानधारणमौनानुष्ठानजपसमाधिशीलसंपन्नरप्प

४३ श्रीमन्महाग्रहारं पूलियूरोडेयप्रमुख मासिर्वमंब्राजनंग(ल)
४४ द्विव्यश्रीपादपद्मंगल पेर्गडे नेमणं सहिरण्यपूर्वकमाराधिसि(धा)
४५ (रा)पूर्वकं माडिमि कों(डु) तम्म मुत्तव्वे लच्छियव्वरसियरु माडिसिद् वस-
४६ दियलिपं ऋषियराहारदाननिमित्तमल्लियाचार्यरु रामचंद्र-
४७ देवर काल कर्चियवरु मुन्नवालुव पडुवणपोलद शिवेयगेरियाल्लत्त-
४८ वेसुगेयि पडु(व)ण (मा)गदलु कलशवल्लिगेरिय स्या(न)द्दोल-
गाद मत्तर्कय्यं
४९ मत्तरिंगडुचिन्न(लेक्कदिंदु)वणमं मूरु पगमं वेत्तुवंतागि बिट्टरु ॥
५० पतिभक्ते वेमा····सति पायिम्मरसनप्रसुते सकलजनस्तुते ना-
५१ गियव्वेराणिगे मुत्त····ड्डो (नेम)ण्यनौदार्यगुणं ॥ (८) जिनदेवं
तनगासन-
५२ (र्थि)जनताकल्पद्रुमं····ज्यने तम्मय्यननूनदानि कलिदेवं साक्षरा-
५३ ग्रेसरं तनगण्णं गुणरत्नभूषणने-संदिर्दं नेमंगेनरक्कनवद्याच(रणं)-
५४ गे भूवलयदोलु पेल्····॥ (९)

[इस लेखके दो भाग हैं। पहला भाग चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल सोमेश्वर प्रथमके राज्यमें शक ९६६ की उत्तरायण संक्रान्तिके समयका है। इनका सामन्त कालडिय बोलगडि था। इसका पुत्र पायिम्म था जिसने हम्मिकब्बेसे विवाह किया। उसे नागिणब्बे तथा लच्छियब्बे ये दो कन्याएँ हुई। लच्छियब्बेका विवाह कूंहि प्रदेशके शासकसे हुआ था। इसने पूलि नगरमें – जहाँ एक हजार धर्मनिष्ठ ब्राह्मण रहते थे – कुछ जमीन खरीदकर एक जैन मन्दिर बनवाया और उसके लिए यापनीय संघ-पुन्नागवृक्षमूल गणके बालचन्द्रभट्टारकको कुछ दान दिया।

दूसरा भाग चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (द्वितीय) के राज्यमें शक १०६७ की उत्तरायणसंक्रान्तिके समयका है। इसमें नेमण नामक

स्थानीय अधिकारीका उल्लेख है जिसने पूलि नगरमें कुछ और ज़मीन खरीदकर उक्त मन्दिरको दान दी। उस समय रामचन्द्र वहाँके भट्टारक थे। यह नेमण उपर्युक्त लच्छियव्वेका प्रपौत्र था।]

[ए. इं० १८ पृ० १७२]

१३१

मुगद (मैसूर)

शक ९६६ = सन १०४४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल (सोमेश्वर १) के समय शक ९६६, पार्थिव संवत्सर, चैत्र शु० ५, रविवारके दिन लिखा गया था। इसमें नारगावुण्ड चावुण्ड-द्वारा मुगुन्द ग्राममें स्वनिर्मित सम्यक्त्वरत्नाकर चैत्यालयके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। चावुण्डके पौत्र महासामन्त मार्तण्डय्य-द्वारा इस मन्दिरको एक नाटकशाला अर्पण किये जानेका भी इसमें उल्लेख है। उस समय पलसिगे तथा कोंकण प्रदेशपर कदम्ब कुलके महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवका शासन चल रहा था। लेखमें कुमुदि गणके जैन आचार्योंकी विस्तृत परम्परा भी बतलायी है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ६८]

१३२

जोन्नगिरि (कुर्नूल, आन्ध्र)

११ वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके समय वेर्गडे सोवरस तथा मल्लिसेट्टिका उल्लेख है। इन्होंने जोन्नगिरिकी वसदिके लिए कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ६१७ पृ० ६०]

१३३

तिगकूर (कोइम्वतूर-मद्रास)

शक ९६७ = सन् १०४५, तमिल

१ स्वस्तिश्री
२ को नाट्टन् वि-
३ क्किरमशोल-
४ देवर्कु शे-
५ ल्लानिण्ड-
६ याण्डु ना-
७ र्पदावटु
८ थरत्तुला-
९ ण्ड्देवन्
१० पेरन् आण ना-
११ ण् कणित मा-
१२ णिक्कन्चेट्
१३ टि चन्दिरवश-
१४ तियिल् मुक-
१५ मण्डगम्
१६ पुडुपित्ते-
१७ न् (॥) शकर या
१८ ण्डु ९ १०० (६) (१०) ७ (॥)
१९ शिगला (न्तक) न्
२० पुण् पुडु मुक-
२१ मण्डगम् (॥)

[यह लेख शक ९६७ का है। इस वर्षको नाट्टन् त्रिक्रमचोल राजाके ४०वें वर्षमें चन्द्रवसतिके मुखमण्डपके निर्माणका इसमें उल्लेख है। यह कार्य अरत्तुलान् देवन्के पौत्र कणित माणिक्क सेट्टि-द्वारा किया गया था।]

[ए० इं० ३० पृ० २४३]

१३४

अरसोवीडि (जि० विजापुर, म्हैसूर)

शक ९६९ = सन् १०४७, कन्नड

१ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज-परमेश्वर प-

२ रमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत्रैलोक्यम—
३ ल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्रार्कता-
४ रंबरं सलुत्तमिरे। स्वस्ति अरिनृपमकुटघटितचरणारविंदेयर् गंगास्नान-
५ पवित्रेयर् दीनानाथचिन्तामणिगलेकवाक्यर् गुणद बेडंगियरप्प श्रीमद्-
६ क्कादेवि (य) र् गोकागेय कोटेय सुत्तिर्द बीडिनलु विक्रमपुरद गोणदबेडंगिय
७ जिनालयक्के खण्डस्फुटितसुधाकर्मक्कं गन्धधूपदीपक्कं सरुगिगं मूलसंघ-
८ व (र) सेनगणद होगरिय गच्छद नागसेनपण्डितगं अल्लिर्प ऋषियर्गं अज्जिय-
९ गं आहारदानक्कं अज्जियर कप्पडक्कं केडुव भूमि सकवर्षं ९६९ नेय
१० सर्वजित् संवत्सरद चैत्रदमास्ये आदित्यवारदंदिन सूर्यग्र-
११ हणनिमित्तं धारापूर्वकं माडि नगरदनुभवने मुख्यमागि किसु-
१२ काडेप्पत्तर वलिय सर्वनमस्यमागि बिट्ट बाडं गाणद हाळूरोंदु
१३ विक्रमपुरद यीशान्यद देसेयिं तोंटं मत्तरोंदु ऊरिं तेंक मुरुवदिन पा-
१४ ळ नैरित्यद देसेयिं पण्डितनागदेवंगे सर्वनमस्य मत्तर् पंनेरडु अल्लिं तेंक
१५ परेकार केत्तोजंगे सर्वनमस्य मत्तरिपत्तनाल्कु ऊरिं बडग रायगट्टेयिं
१६ मूड परेकार केत्तोजंगे तोंट मत्तरोंदु अल्लि पडुव कल्कुटिग सूरोजंगे स-
१७ र्वनमस्यं मत्तरु पंनेरडु तोंट मत्तरोंदु दडिगरसन कय्यलु मारुगोण्डु देवर्गे कोट्ट

१८ नूनि कप्पडिय केरेयिं तंक मन्नेयवोलडलु सर्वनमस्य मत्तल् ५० ॥

१९ ई धर्ममं स्वधर्मदिं रक्षिसिदवर् वारणासियलु ओन्दु कोटि कविलेयु-

२० मं वेदपाळरप ब्राह्मणरिगे कोट्ट फ (ल) मं पडेवर् ई धर्मनन-

ळिदव

२१ रा स्थानदोळनितु कविलेयुमननिपं (तु) ब्राह्मणर—

२२ सा ॥ सामा—

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल (सोमेश्वर प्रथम) के राज्यकालमें शक ९६९ की चैत्र अमावास्याके दिन लिखा गया था। इस समय अक्कादेवी गोकाग क्लिके समीप शिविरमें थी। उसने विक्रमपुरके गोणद वेडंगि जिनमन्दिरके लिए मूलसंघ-सेनगण-होगरि गच्छके नागसेन पण्डितको कुछ दान दिया था।]

[ए० इं० १७ पृ० १२१]

१३५

नन्दवाडिगे (नंदूर)

११वीं सदी-मध्य, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेवके समयका है। उनकी रानी मैललदेवी थी। उनके एक सामन्त नाकनगावुण्डने कई मठ, मन्दिर, तालाब आदि बनवाये थे जो निम्न स्थानोंपर थे—कल्याण, अण्णिगेरे, मुळुगुन्द, (कोल्हु) गे, नन्दापुर, कोहल्लि, मण्डलिगेरे, वेल्गलि, बनवासेपुर, करिविडि, नविले, नन्दवाडिगे, पेल्र। उसने पोन्नुगुन्दका त्रिभुवनतिलक जिनालय, महाश्रीनन्त वसदि, पुरगूरका वीरजिनालय, कुन्दरगेका जिनालय आदिका जीर्णोद्धार किया था। उसके द्वारा दिये गये

कई दानोंका उल्लेख लेखमें किया है। इसका समय उत्तरायण संक्रान्ति कहा है। वर्ष निश्चित नहीं है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ९९]

१३६

कल्याण (नासिक, महाराष्ट्र)

११वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

[यह ताम्रपत्र परमारवंशीय महाराज भोजके सामन्त यशोवर्मन्-द्वारा दिया गया है। श्वेतपद देशमें स्थित कल्कलेश्वर तीर्थके महीशवृद्धिक स्थानके मुनिसुव्रतमन्दिरके लिए कुछ जमीन, तेलघानियाँ, दूकानें, और १४ द्रम्म दान दिये जानेका इसमें निर्देश है।]

[रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११८]

१३७

हेव्वैलु (मैसूर)

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

१ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वी-
२ वल्लभ महाराजाधिराज परमे-
३ श्वर परमभट्टारक सत्याश्रयकुल-
४ तिलक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रैलोक्य-
५ मल्लदेवर विजयराज्यमुत्त-
६ रोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचं-
७ द्राकंतारं सलुत्तमिरे स्वस्ति स-
८ मधिगतपंचमहाशब्द महाम-
९ ण्डलेश्वरं पट्टिपोम्बुर्चपुरवरेश्वरं पद्मा-

१० वर्दिलब्धवरप्रसादं मृगमदामोदं
११ कन्दुकाचार्य मन्दरधैर्य सुभटसंस्तु-
१२ त्यं सान्तरादित्यं रिपुकरीन्द्रकंठीरवं रण-
१३ रंगभैरवं कीर्तिनारायणं सौर्यपा-
१४ रायणं रिपुमंडलिकगोत्रगोत्राचलवज्र-
१५ दण्डं विरुद्धमेरुडं महोग्रान्वयनभस्त-
१६ लगभस्तिमालियतुलवलसौर्य-
१७ शालि वन्दिसन्दोहानन्दीकृतसुन्दरकलल-
१८ तांकुरनरिमंडलिकपतंगदीपांकु-
१९ रं निस्त्रिसनविजयविपुलीकृतकृत-
२० प्रतिज्ञं विरुद्सर्वज्ञं नामाद्यनेका-
२१ कमालासनलंकृतर् श्रीमत्

दूसरी ओर

२२ वीरसान्तरदेवर् सान्तलिंग-
२३ सासिरमुमं निष्कंटकमा-
२४ गि प्रतिपालिसि सुखसंक-
२५ थाविनोददिं राज्यं गेय्युत्त-
२६ मिरे तत्पादपद्मोपजीवि
२७ स्वस्ति समस्तदुस्तरारा-
२८ तीनकुंभस्थलीविदारणदा-
२९ रुणकरासिधारालक्तमुक्ता-
३० फलमालालंकार वीरनारीम-
३१ गिहाराचितभुजादण्डनहि-
३२ तमहावाहिनीमहीधरव-
३३ ज्रदण्डं जिनधर्मप्राकारं
३४ निजगोत्रनिस्तारं धर्मरत्ना-
३५ करं सुभटारिभीकरं पति-
३६ हितांजनेयं सौर्यगां-
३७ गेयं स्वामिद्रोहदिशाप-
३८ ट्टं वैरिकोटिघरट्टं रण-
३९ रंगक्षेत्रपालं मच्चरिसु-
४० वरेल्ड्रेयमूलं दलदिं
४१ मुन्निरिव आयुमं मे-
४२ रेवं सुकविकोकिलसह-
४३ कारनेकांगवीरं विलासवि-
४४ द्याधरं धैर्यमहीधरन्
४५ दपायनारायणं नीतिपा-
४६ रायणं वीत्वानगल्ड-
४७ नामादिसमस्तप्रशास्तिस-

४८ हित श्रीमन् नकुलरसर्
४९ स्मररूपरुन्नतर् नकुलर-
५० सन तनयर् जनक्के रा
५१ मन् लक्ष्मीधररेन्दे-
५२ न्दुडे चावुण्डराय-
५३ नुं नागवर्मनुं कर-
५४ मेसेद्दरे ॥ मंगल

तीसरी ओर

५५ वृत्त ॥ केडेयद पे (म्) महामहिमराज-
५६ सुतप्रतिपत्तियेंविवं तडेयदे वीरसान्त-
५७ रमहीपति ता दयेगेय्दु कोलत्रोडं वि-
५८ डे निजपुत्र नीं बरिसेनिपी नेगल्त्तेयनेय्दे
५९ कोट्टनेन्दडे दोरेयार्परार् नगुलभूप-
६० नोली वसुधातलाग्रदोलु । परम-
६१ श्रीजिननिष्टदैवमेनेपोर् शास्त्राग-
६२ मांमोधिगल् गुरुगल् माविसे पु-
६३ प्पसेनमुनिपर अत्तिप्रियं वीरसा-
६४ न्तर भूमिपति तन्दे तां पडियरं
६५ श्रीकाटि ताय् पेंपलंकरिसुत्तिल्दरे-
६६ यव्वे ये (ने) नगुलभूपालं महा-
६७ धन्यनो ॥ नगुलरसन चित्तप्रिये
६८ मृगलोचने दण्डनायकोड्डम्मन
६९ ऐट्टुं मन्दिन सासि-
७० वर्कण्डु काप्प-
७१ रक्के इदनलिद क-
७२ विलेयनलिदं
७३ चित्तारिकेतोजन सगं वहु
७४ गि आय्वोजं ई शासनद
७५ गेय्दं
कल्लं

चौथी ओर

७६ पुत्रि गुणान्विते चट्ट-
७७ व्वरसिगे दोरेयार् दान-
७८ धर्मशीलोन्नतियोल्
७९ सकवर्ष ९७५ नेय दु-

८० संतिसंवत्सरं प्रवर्तिसे ८१ वैशाखमासदकृष्णाप
८२ अदेकादशि आदित्य ८३ वारदंदु श्रीमन्महा-
८४ मण्डलेश्वरं वीरमान्तर ८५ नगुलरसंगे पेर्बय-
८६ ल् पन्नेरडर किल्देरे ८७ विट्टियुमं कादु परिहा-
८८ रं विट्टंकेगेड्डु कल्नाडिन्ती ८९ मर्यादेयनलिदं वा-
९० रणासियोल् कुरुसे ९१ त्रद्रोल् सासिरकविलेयुं
९२ पार्वरुमनलिद पातकन- ९३ क्कुं । स्वदत्तां परदत्तां वा यो
९४ हरेत वसुंधरां षष्टिर्वर्ष- ९५ हस्त्राणि विष्टायां जायते क्रि-
९६ मिः । विप्रकुळांवरचंद्रं ९७ श्रीप्रतिसिय मारसिंग-
९८ तनयं विद्वद्विप्रं गंगनृपति- ९९ योगप्रभु कविराज वल्लभं गो
१०० विन्दं १०१ पेर्बयल् पन्नेरडु
१०२ पोंबुर्चनाडोळे १०३ मत्तगावे हडिंगा-
१०४ ळ कद्गोड संसेपन्नेर- १०५ डुम नेलिवयलुं पा-
१०६ ळिगारं । वीरसिनु नगुल- १०७ रसनुमंयदिवेतं सासिर-
१०८ गद्याणं ॥ मंगलं

[यह लेख एक स्तम्भके चारों बाजुओंपर लिखा है। चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके अधीन पट्टिपोंबुर्चके महामण्डलेश्वर वीरसान्तरके समयका यह लेख है। इसके मन्त्रीका नाम नकुलरस था। ये दोनों जैन कहे गये हैं। इनके गुरु पुष्पसेनदेव थे। नगुलरसके पिता पट्टियर काटि, माता अरेयब्बे तथा पत्नी चट्टरसि थीं। इनके दो पुत्र चावुण्डराय और नागवर्म थे। लेखमें वीरसान्तरद्वारा अंकेगेड्डु ग्राम और पेर्बयल् विभागके कुछ करोंका उत्पन्न नकुलरसको अर्पित किये जानेका उल्लेख है। इस लेखके पाठकी रचना गोविन्दने की थी जो मारसिंगका पुत्र था और गंगराजाओंके समयसे कवियोंमें प्रिय था। लेखको चित्तारि केतोजके पुत्र आयबोजने उकेरा था। लेखनिर्दिष्ट दानकी तिथि वैशाख व० ११, रविवार, शक

९७५ दुर्मति संवत्सर है (यह अनियमित है क्योंकि शक ९७५ विजय संवत्सर था) ।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १९०]

१३८

मुलगुन्द (मैसूर)

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

१-२ श्रीमद्भक्तिभराननतामरकिरीटानर्घ्यरत्नप्रभाजालालीढपद्मारविन्द-युगलः कन्दर्पदर्पापहः । त्रैलोक्योदरवर्तिकीर्तिविशदश्चन्द्रप्रभः सुप्रभो भव्यानां निवहं निराकुलमलं पायादपायाज्जिनः ॥ १

३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमे-श्वर परमभट्टारकं सत्या-

४ श्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत् त्रैलोक्यमल्लदेवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रव-

५ र्द्धमानचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे । तत्तनयं समधिगतपंचमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं वेंगी-

६ पुरवरेश्वरं समरप्रचण्डं कुमरमार्तण्डं परकरिमदनिवारणनम्मन गन्धवारणं परिवारनिधानं

७ दानकानीनं हयवत्सराजं रूपमनोजं रिपुनृपतिहृदयसेल्लं भुवनै-कमल्लं मण्डलिकशिरो-

८ मणि चालुक्यचूडामणि विद्विष्टसंहारं कटकप्राकारं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्लदेवपादपंकजभ्र-

९ मरं श्रीसोमेश्वरदेवं बेलुवोलमूनूरुं पुलिगेरेमूनूरुमं सुखसंक-थाविनोददिनालुत्तमि-

१० रें तत्पादपद्मोपजीवि ॥ वृत्तं । विनयक्काधारभूतं पतिहितचरितक्काश्रयं सद्विवेकक्के निवास—

११ संपत्तिगे, कुलभवनं सन्ततानूनदानक्के निधानं मान्तनक्कागरमेने नेगल्दं सद्वचोभूषणं भूविनु (तं) (वे-)

१२ ल्देवनुद्यद्विधुविशदयशोव्याप्तदिक्चक्रवालं ॥२ ईव गुणं गुणं पतिहिताचरितं चरितं परोप (का-)

१३ रावसथार्थमर्थमघभिज्जिनतत्त्वमे तत्त्वमेंत्र सद्भावने तम्मोळोन्दि नेलेवेत्तिरे कीर्तिगे नोन्तरिन्तु

१४ वेल्देवनुमोल्पनाव्द बलदेवनुमंकद शान्तिवर्मनुं ॥(३) वचनं ॥ अन्तु सकलगुणगणोत्तुंगरं जिनधर्म-

१५ निर्मलरं निखिलजनोपकारनिरतरुमुदात्तकीर्तिलतानिकेतनरुमगलदेवप्रियतनूभवरं गोज्जि-

१६ काब्बिकाकुशोदरनिविडनिबद्धपट्टरुमागि पोगल्तेवेत्त तत्सहोदरत्रयदोल् अग्रभवनप्प सन्धिविग्र-

१७ हाधिकारि ॥ वृत्तं । जिनपादांबुजभृंगनंगजनिभं गम्यार्थरत्नाकरं मनुमार्गं विनयार्णवं कलिमलप्रध्वंस-

१८ कं केशिराजन वंटिं नयसेनसूरिपदपद्माराधनारक्तचित्तनुदात्तं नेगल्दं विवेक—महीभाग—

१९ दोल् ॥ ४ आ महानुभावं धर्मप्रभावप्रकटीकृतचित्तनागे ॥ कन्दं । सिन्द—कनवलानन्दनकररु-

२० पनसमसाहसनिलयं सिन्दनृपनन्दनं लसदिन्दुकरप्रतिमकीर्तिकान्ताकान्तं ॥ ५ जिनधर्मनिर्मलं सत्यनिधा-

२१ ननूनदान—अनन्दिन कंचरसं पंचेपुनिभं मुलगुन्दसिन्ददेशललामं ॥ ६ एंव पेंपिंगं जसक्कमागरमा—

२२ द् कंचरसं तन्न सीवटदोळगे धर्मानुरागचित्तं सहिरण्यपूर्वकं कुडे कोण्डु ॥ श्रीमूलसंघवारा-

२३ शौ मणीनामिव सार्चिषां । महापुरुषरत्नानां स्थानं सेनान्वयोऽजनि ॥ ७ व । आ चन्द्रकवाटान्वयवरिष्ठ-

२४ रजितसेनभट्टारकर् तदन्तेवासिगळ् कनकसेनभट्टारकरवर शिष्यर् ॥ कन्द । चान्द्रं कातंत्रं जैनेन्द्रं श-

२५ ब्दानुशासनं पाणिनि मत्तैन्द्रं नरेन्द्रसेनमुनीन्द्रंगेकाक्षरं पेरंगिवु मोग्गे ॥ ८ अन्तु जगद्विख्यातरादर

२६ रवर शिष्यर् ॥ वृत्त । निनगेनेंबेनो शाकटायनमुनीशनन्ताने शब्दानुशासनदोळ् पाणिनि पाणिनीयदोळे चन्द्रं चा-

२७ न्द्रदोळ् तज्जिनेन्द्रने जैनेन्द्रदोळा कुमारने गडं कौमारदोळ् पोल्परेन्तेने पोलर् नयसेनपण्डितरोळन्यर् वाधि-

२८ वीतोर्वियोळ् ॥ ९ इन्तु समस्तशब्दशास्त्रपारावारपारगर् नयसेन पण्डितदेवर पादप्रक्षालनंगे-

२९ य्दु । शकवर्षमोंबयनूरेळपत्तय्दनेय विजयसंवत्सरदुत्तरायण-संक्रान्तियंदु तीर्थद ब-

३० सदिगाहारदाननिमित्तं निजांविकेयप्प गोज्जिकब्बेगे परोक्षविनयं नगरमहाजनमुं पंचमठस्था-

३१ नमुमरियै नगरेश्वरद् गडिंवद कोलोलळेदु किरुगेरेय केय्योळगे सर्वबाधापरिहारमा-

३२ गे बिट्ट केय्मत्तर् पन्नेरडु । आ केय्गे गुड्डे ईशान्यदोळ् कविलेय कल् आग्नेयदोळादित्यन कल् नैऋ-

३३ त्यदोळ् चन्द्रन कल् वायव्यदोळ् पद्मावतिय कल् असगगेरेय तेंक सासिर बळ्ळिय तोंटवोन्दु ॥ स्वदत्तां—

३४ (परदत्तां वा) यो हरेत वसुन्धरां। षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ ९०

[यह लेख चालुक्य सम्राट् सोमेश्वर (प्रथम) त्रैलोक्यमल्लके राज्य- में शक ९७५ में लिखा गया था। उस समय बेल्वोल तथा पुलिगेरे प्रदेशपर सम्राट्का पुत्र सोमेश्वर (द्वितीय) शासन कर रहा था। वहांके सन्धिविग्रहाधिकारी बेल्देव थे। ये अग्गलदेव तथा गोज्जिकव्बेके पुत्र थे। बलदेव तथा शान्तिवर्मा उनके बन्धु थे। बेल्देवकी प्रेरणासे सिन्दकुलके सरदार कंचरसने नयसेन पण्डितदेवको कुछ भूमि दान दी। नयसेनकी गुरु- परम्परा इस प्रकार थी – मूलसंघ-सेनान्वय-चन्द्रकवाट अन्वयके अजितसेन- कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन। नरेन्द्रसेन तथा नयसेन दोनों व्याकरणशास्त्रके विशेषज्ञ थे।

[ए० इं० १६ पृ० ५३]

१३९–१४०

नन्दिबेवूरु (बेल्लारी, मैसूर)

शक ९७६ = सन् १०५४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९७६, उत्तरायण संक्रान्ति, रविवार, जय संवत्सरका है। इसमें नोलम्ब पल्लव पेर्मानडिके राज्यकालमें देसिगगणके अष्टोपवासि भटारको रेच्चूरुके महाजनों-द्वारा भूमि, उद्यान आदिके दानका उल्लेख है। लेखमें जगदेकमल्ल नोलम्ब ब्रह्माधिराजका सामन्तके रूपमें उल्लेख किया है। इस लेखके पीछेकी ओर प्रायः ऐसे ही लेखमें अष्टोपवासिमुनिको वेहुरुमें दिये हुए दानका वर्णन है। इसमें वीरणन्दिसिद्धान्तिका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २०१ पृ० १६]

१४१

कोगलि (जि० वेल्लारी, मैसूर)

शक ९७७ = सन् १०५५

जैन मन्दिरके आगे एक शेडमें, कन्नड

यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालका है। इसमें कहा है कि इस मन्दिरका निर्माण गंग राजा दुर्विनीतने किया था। लेखके समय जैन आचार्य इन्द्रकीर्तिने इस मन्दिरको कुछ दान दिया था। इन्द्र-कीर्तिका वर्णन इस प्रकार किया है—

श्रीमदरुहच्चरणसरसिरुहभृंग, कोण्डकुन्दान्वयसमूहमुखमंडन, देशीयगण कुमुदवनशरच्चन्द्र, कोकलिपुरेन्द्र, त्रैलोक्यमल्लसदःसरसिकलहंस, कविजना-चार्य, पण्डितमुखाम्बुरुहचण्डमार्तण्ड, सर्वशास्त्रज्ञ, कविकुमुदराज, त्रैलोक्य-मल्लेन्द्रकीर्तिहरिमूर्ति]

[इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७४, इ० म० वेल्लारी १९६]

१४२

डम्बल (मैसूर)

शक ९८१ = सन् १०५९, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेव (सोमेश्वर १) के समय चैत्र शु० १३, रविवार शक ९८१, विकोरि संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें धर्मवोलल्के नगरजिनालयके लिए वाचय्यसेट्टिके जमात वीरय्यसेट्टि द्वारा कुछ सुवर्णदान दिये जानेका उल्लेख है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० ८९]

१४३

मोरव (धारवाड, मैसूर)

शक ९८१ = सन् १०६०, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख मार्गशिर शु० २ शक ९८१ विकारि संवत्सरका है। इसमें यापनीय संघके जयकीर्तिदेवके शिष्य नागचन्द्र सिद्धान्तदेवके समाधि-मरणका उल्लेख है। उनके शिष्य कनकशक्ति सिद्धान्तदेवने यह निसिधि स्थापित की थी। नागचन्द्रको मन्त्रचूडामणि यह विरुद दिया है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई० २३९ पृ० ५६]

१४४

छब्बि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९८२ = सन् १०६०, कन्नड

[इस लेखमें सब्बि नगरके धोरजिनालयके आचार्य कनकनन्दिके समाधिमरणका उल्लेख है। इनकी निसिधि भागियव्वे-द्वारा स्थापित की गयी। इस लेखकी रचना वज्रने की तथा नाकिगने उसे उत्कीर्ण किया। तिथि वैशाख शु० ५, रविवार शक ९८२ शर्वरी संवत्सर ऐसी थी।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० १५ पृ० २५६]

१४५

तोललु (मैसूर)

शक ९८३ = सन् १०६२, कन्नड

इस लेखकी पहली ८ पंक्तियाँ घिस गयी हैं।

९····कम्बुकन्धरे केलेयव्वरिसि वीरगंग पोयिसलगं

१० पेम्पनवद्यु···विनयार्क पो-

११ यिसलजनपं····माडि ॥ श्रीवर्धमानस्वामि-

१२ गल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवलि गौतमस्वामिगलिं भद्रबाहुस्वामि-
गलिवलि
१३ पुष्पदन्तभट्टारकरि····मेघचन्द्र
१४ ····श्रीमूलसंघ-
१५ द वेलवेय अभयचन्द्रपण्डितरगें विनयादित्यहोयिसलदेवर शक-
वर्ष ९८३ शुभकृत्संवत्सरद
१६ उत्तरायणसंक्रमणद दानार्थदेमण्ण धारापूर्वकं कोट्ट अदर्कें तेरे ह
१७ णवन्दु हणवारमत्तद्दि देवर चरुपिगे यिप्पत्तयरडु सलगेय
धारापूर्वकं माडि
१८ बिट्ट दत्ति तोल्ललहल्लिय मुद्दगौडनु तिप्पगौडनु बुरर्तंकलु
यिरभुगाम्व होर-
१९ गेरिय मूदणभूमि विग्गुड्डेय भूमिय अभयचन्द्रपण्डितरिगे धारापू-
२० र्वक माडि बिट्टरु ई धर्मवनू अवनोब्बनु····

[इस लेखमें होयसल राजा विनयादित्य-द्वारा शक ९८३ में उत्तरायणसंक्रमणके अवसर पर मूलसंघके पण्डित अभयचन्द्रको कुछ भूमिदान दिये जानेका उल्लेख है। अभयचन्द्रको पूर्वपरम्परामें गौतमस्वामी, भद्रबाहुस्वामी, पुष्पदन्तभट्टारक तथा मेघचन्द्रका उल्लेख किया है। मुद्दगौड तथा तिप्पगौड द्वारा भी कुछ भूमिदान दी गयी थी। ये दोनों तोलल्लहल्लिके निवासी थे।] [ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४३]

१४६

पालियड (गुजरात)

संवत् १११२ = सन् १०६६, संस्कृत–नागरी

१ सिद्धं विक्रम संवत् १११२ चैत्र सुदि १५ अद्येह आकाशिका-
ग्रामावासे समस्त-

२ राजावलीविराजितमहाराजाधिराजश्रीभीमदेवः ॥ वायडाधिष्ठानप्रति–

३ वद्धवो (पो) डशोत्तरग्रामशतान्तःपातिसमस्तराजपुरुषान् ब्रा(ह्म)णोत्त (रान्) ज-

४ नपदांश्च बोधयत्यस्तु वः संविदितं यथा अद्य सोमग्रहणपर्वणि चराचर-

५ गुरुं सर्वज्ञमभ्यर्च्य वायडाधिष्ठानीयवसतिकायै अत्रैव वायडा-(धि)ष्ठाने

६ (च) रौक्षेत्रान्तरितया गुड्डुलापालिसंलग्नयावणिकसादाकभूमी-सं (बध्य)-

७ मानया कलसिकाद्वयवापभुवा सहास्यैव सादाकस्य सत्का हलद्वयस्य २

८ भूः शासन (ने) नौदकपूर्वमस्माभिः प्रदत्तास्याश्च भूमेः पूर्वस्या दिशि कल्य

९ पालकेसरिसत्कं क्षेत्रं दक्षिणस्यां च राजकीया चरी । पश्चिमा

१० यां च वाणिय (ज) कमामलीयं क्षेत्रमुत्तरस्यां च पालवाढ-ग्रामसा-

११ गं इति चतुराघाटोपलक्षितां भुवमेतामवगम्य एतन्निवासि-जनपदै-

१२ र्यथा दीयमानभागभोगकरहिरण्यादि सर्वमाज्ञा(श्रव)णविधेयै–

१३ र्भूत्वास्यै वसतिकायै समुपनेतव्यं सामान्यं चैतत्पुण्यफलं मत्वास्म-

१४ द्वंशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मदायोयमनुमन्तव्यः

१५ – १६ नित्य-के शापात्मकश्लोक

१६ लिखितमिदं कायस्थ-

१७ कांचनसुतवटेश्वरेण। दूतकोत्र महासांधिविग्रहिकश्रीमोगादित्य इ (ति)

१८ श्रीभीमदेवस्य ॥

[इस ताम्रपत्रमें चौलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) द्वारा वायड अधिष्ठानकी एक वसतिका (जिनमन्दिर) के लिए चैत्र शु० १५ संवत् १११२ के दिन कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[ए० इं० ३३ पृ० २३५]

१४७

मोटे बेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

शक ९८८ = सन् १०६६, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९८८, पुष्य शु० ५, सोमवार, पराभव संवत्सरके दिनका है। इसमें महामण्डलेश्वर लक्ष्मरस-द्वारा मूलसंघ-चन्द्रिकावाटवंशके शान्तिनन्दि भट्टारकको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है। यह दान बेन्नेवुरमें आय्चिमय्य नायक-द्वारा निर्मित वसदिके लिए था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ११३ पृ० १२९]

१४८

चांदकवटे (विजापूर, मैसूर)

शक ९८९ = सन् १०६७, कन्नड

[इस लेखमें फाल्गुन व० ३ शक ९८९ प्लवंग संवत्सरके दिन सूरस्त गणके माघनन्दि भट्टारककी निसिधिका उल्लेख है। सिन्दिगे निवासी जाकिमब्बेने यह निसिधि स्थापित की थी।]

[रि० सा० इ० १९३६-३७ क्र० ई १४ पृ० १८२]

१४९

मत्तिकट्टि (जि० धारवाड़, मैसूर)

शक ९९० = सन् १०६८, कन्नड

[यह लेख टूटा हुआ है। मत्तिकट्ट ग्रामकी कुछ जमीन पेर्गडे कालि-मय्यने नन्दिसेन भट्टारकको दान दी इसका इसमें निर्देश है। (यह नाम नन्दिसेन अथवा मल्लिसेन हो सकता है)। यह दान कालिमय्य-द्वारा निर्मित एक जिनालयके लिए दिया था। कालिमय्यको (चालुक्य) सम्राट् त्रैलोक्य (मल्लदेव) का पादपद्मोपजीवी कहा है।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ४२]

१५०–१५१

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १०६८, तमिल

[इस लेखमें चोल वंशके राजा राजकेसरिवर्मन् वीरराजेन्द्रदेवके राज्य वर्ष ५ में तिरुक्कामकोट्टपुरम्के निकट करन्दै ग्रामके जिन मन्दिरके लिए कुछ भूमि ग्रामसभाके तीन सदस्यों-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है। यहींके दूसरे लेखमें इस मन्दिरमें सततदीप रखनेके लिए कुछ बकरियोंके दानका उल्लेख है। इस लेखमें मन्दिरके देवताका उल्लेख अलगर् देवर् वीर-राजेन्द्रपेरम्पल्लि आल्वार् ऐसा किया है। यह दान काल्यिूर प्रदेशके परम्बूर ग्रामके तुगिलिकिल्लान् अरयन् उडैयान्-द्वारा दिया गया था।]

[रि० सा० ए० १९३९–४० क्र० १२९-१३०]

१५२

मत्तावार (मैसूर)

शक ९९१ = सन् १०६९, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछ-

२ नं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जि-
३ नशासनं ॥
४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्व-
५ रं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलां-
६ बरद्युमणि सम्यक्तचूडामणि मल-
७ परोलुगण्डाद्यनेकनामावलीविराजितरप्प श्री-
८ मत्त्रै (लो) क्यमल्ल विनयादित्य होय्सल-
९ देवर् गंगवाडितोंभत्तरुसासिरमनाल्दु
१० सुखदिं पृथ्वीराज्यं गेय्ये सकवर्ष ९९१ ने-
११ य पिंगलसंवत्सरद् वैशाख शुद्धत्रयोदशि बृह-
१२ *वारदल् पिंदु देवसं होय्सलदेवर् मत्तवुरके*
१३ कालं तिर्विदु विजयंगेय्दंदु वसदिगे वंदि
१४ देवरं कंडि बेट्टदोळे कल्दरव विल्लियके माडि-
१५ सिदरूरोळगे माडिसिवेंदडे माणिकसेट्टि
१६ यिन्तेंदु विन्नपंगेय्दम् देवर् नीवूरोलोंदु
१७ वसदियं माडिसि भूमियं बिट्ट मा-
१८ नमहिमेगलं कोट्टडे बडवव्वर् निर्मद-
१९ डदर्थक्के प्रमाणुंटे देवरर्थमं मलेय-
२० रसुगल हडद भत्तमुं समानमदर
२१ माणिकसेट्टिय मातिं मेच्चि नक्कु करवोल्लितें-
२२ दु वसदियनूरोलगे माडिसि सामियं
२३ माणिकसेट्टि राजगावुण्ड मुद्दगावुण्डरिं बे-
२४ सायिदेन्नूरु (?) मत्तक्के बिडिसि ॥ तेरेयोल् प-
२५ डं नाडलियलि सिद्धायदल्लि मत्तनूल नेल वि-
२६ नयायितनू पम्पेल्तेरेगल मत्तवूर व-
२७ सदिगे विट्टं ॥ अंतु बिट्टु वसदियवसदलिपकव-

२८ मनेगल नाडिलि रिपिहल्लियेंदु पेसरनिट्टु
२९ मनेंद्रे माडुवेंद्रे कल्ट्टिगे वोंदे नु-
३० रंडु कवर्ते सेले ओमगे मनकरे कूट क-
३१ कन्दि वीरवण कोडतिवण कत्तरिवण अडेकलु-
३२ वण हडवलेय हड्डियराय कुंवर वि-
३३ ट्टि कंमर विट्टि यिवोलगागि हलवु महिमे-
३४ गल्लं विनयादित्यहोय्सलदेवर् आचंद्रार्क-
३५ तारंवरं सल्गे ॥ इन्ती धर्मदोछावनानुं तप्पिद-
३६ वं गंगेयलु गंगेयं कोंदु तिन्दं लिंगालि-
३७ पं गेय्द्दनिस्थानवे कट्टेगळ स्थानं नागवल्ल
३८ मत्तावुर हल्लिय गावुण्ड तानित्तुदक्के पे-
३९ न्दे नित्तुदुदक्के देवगृह
४० वहु नानवक—होलंद्दा-न्नागिपं ॥ ४०००००

[यह लेख होयसल वंशके राजा विनयादित्यके समय वैशाख शु० १३, बृहस्पतिवार, शक ९९१ पिंगल संवत्सरके दिन लिखा गया था। मत्तवूर ग्रामके लिए एक नहर बनवायी थी तब राजा विनयादित्य वहाँ गये थे। इस ग्रामकी वसदि ग्रामके बाहर एक पहाड़ीपर थी। उसे देखकर राजाने ग्रामीणोंसे पूछा कि ग्राममें वसदि क्यों नहीं है? इसपर माणिकसेट्टिने कहा कि ग्राममें वसदि बनानेकी हमारी इच्छा है किन्तु हम ग़रीब हैं। तब राजाने ग्राममें वसदि बनवाकर नाडलि ग्रामके कुछ करोंका उत्पन्न उसे दान दिया। माणिकसेट्टि, राजगावुण्ड तथा मुद्दगावुण्डने भी वसदिके लिए कुछ भूमि दान दी।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १७१]

१५३

सोरटूर (मैसूर)

शक ९९३ = सन् १०७१, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव (सोमेश्वर २) के समय माघ शु० १, रविवार, शक ९९३, विरोधकृत् संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था (यहाँ माघ स्पष्टतः ग़लत है जो पौष होना चाहिए।) उक्त समय महाप्रधान सेनाधिपति कडितवेर्गडे दण्डनायक बलदेवय्य-द्वारा सरटवुर ग्राममें स्थित बलदेवजिनालयके लिए कुछ भूमि अर्पण की गई थी। बलदेवय्यके पिता गंग कुलके अग्गलदेव थे, माता गोज्जिकव्वे थीं तथा उसके ज्येष्ठ बन्धुका नाम बेल्देव था। इस दानकी व्यवस्थापिका हुलियब्बाज्जिके सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके सिरिणंदिपण्डितकी शिष्या थीं। उक्त मन्दिरको सरटवुरके दो-सौ महाजनोंने भी कुछ भूमि, तेलघानी तथा घर अर्पण किये थे। सिरिणन्दिपण्डितकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है -चंदणंदि - दावणंदि - सकलचन्द्र - कनकनंदि - सिरिणंदि।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० १०७]

१५४

गावरवाड (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९९३-९४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं॥

२ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभं महाराजाधिराजं परमेश्वर परमभट्टारकं स-

३ त्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमद्भुवनैकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचं-

४ द्रार्कवारं सलुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजोवि समधिगतपंचमहाशब्द महामंडलेश्वरनुदारमहेश्वरं चलके वलुगंडं (शौर्यमार्तंडं) पत्तिगे-

५ कदाडं संग्रामगरुडं मनुजमान्धातं कीर्तिविख्यातं गोत्रमाणिक्यं निवेकचाणाक्यं परनारीमहोदरं वीरवृकोदरं को-

६ दंडपार्थं सौजन्यतीर्थं मंडलीककंठीरवं परचक्रभैरवं रायदंडगोपालं मलेय मंडलीकमृगशार्दूलं श्रीमद्भुव-

७ नैकमल्लदेवपादपंकजभ्रमरं श्रीमन्महामंडलेश्वरं लक्ष्मरसरु बेल्वोलमूनूरुमं पुलिगेरेमूनूरुमन्तेरडरुमू-

८ मं दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनेयिं प्रतिपालिसुत्तमिरे ॥वृ॥ अणुगाल् कार्यद शौर्यदाल् विजयदाल् चालुक्यराज्यक्के कार-

९ णमादाल् तुलिलाल्ननक्के नेरेदाल् कट्टायदाल् मिक्क मन्नणेयाल् मान्तनदाल् नेगल्तेवडेदाल् विक्रान्तदाल् मेलदाल् रणदाला-ल्दनेन-

१० तुवावेडेयोलं विश्वासदोलु लक्ष्मण ॥ कलितनमिल्ल चागिगे वदान्यते मेय्गलिगिल्ल चागि मेय्गलियेनिपंगे शौचगुणमि-

११ ल्ल करं कलि चागि शौचिगं निले नुडिवोजेयिल्ल कलि चागि महाशुचिसत्यवादि मंडलिकरोलीतनेन्दु पोगल्गुं बुधमंड-

१२ लि लक्ष्मभूपन ॥ कुठुरेय मेले विल् परसु तीरिगे सूलिगे पिंडिवालमेत्तिद करवालवार्दिडुव कर्कडे पारुव चक्रमेन्दोडेन्तो-

१३ दल्वरेन्तु पायिसुवरेन्तु तल्तुवरेन्तु निल्परेन्तोदरुवरेन्तु लक्ष्मणनोलान्तु बर्दुकुवरन्यभूभुजर् ॥ एने ने-

१४ गल्द लक्ष्मभूपति जनपतिभुवनैकमल्लदेवादेशं तनगेसदिरे माडिसिदं [जिनशा-]सनवृद्धियं प्रवर्धनमागलु ॥ आ चैत्याल-

१५ यद् पूर्वावतारमेन्तेने ॥क॥ श्रीवसुधेशन बावं रेवकनिर्मडिय वल्लभं बूतुगनात्मावगतसकलशास्त्रनिलाविश्रुतकीर्ति

१६ गंगमंडलनाथ ॥ वृ ॥ रूडिगे रूडिवेत्तेसेद बेल्वलदेशमनादद गंगपेर्माडिगलिन्दमण्णिगेरे नालकेरेवट्टेनिसित्त नाड नाडा-

१७ डिगलुंबमॅबिनेगमा पुरदोलु जयदुत्तरंग पेर्माडियिनाय्तु बूतुग-नरेंद्रनिनल्लि जि-

१८ नेंद्रमंदिर ॥ वृ ॥ संगतमागे माडि तलवृत्तियनल्लिगे मूडगेरि गुम्मुंगोलनादियागे नेगल्दिट्ट-

१९ गें गावरिवाडमॅव वाडंगल शासनं बेरसु सर्वनमस्यमिर्वेदु बिट्टु कोट्टं गुणकीर्तिपंडितगें भक्ति-

२० यिनुत्तमदानशक्तियिं ॥क॥ उदितोदितमेने विभवास्पदमेने भुवन-यवन्द्यमेने संचलमागदे गंगा-

२१ न्वयमुल्लिनमिट्टु सर्वनमस्यवागि नडेयुत्तमिरलु ॥ वृ ॥ परम-श्रीजिनशासनक्के मोदलादा मूलसंघं

२२ निरन्तरमोप्पुत्तिरे नन्दिसंघवेमरिंदादन्वयं पेंपुवेत्तिरे सन्दर् बलगारमुख्यगणदोलु गंगान्वयक्कि-

२३ न्तिवर्गुरुगलु तामेने वर्धमानमुनिनाथर् धारिणीचक्रदोलु ॥ श्रीनाथर् जैनमार्गोत्तमरेनिसि तपःख्यातियं

२४ ताल्दिदर् सज्ज्ञानात्मर् वर्धमानप्रवरवर शिष्यर् महावादिगलु विद्यानन्दस्वामिगल् तन्मुनिपतिगनुजर् तार्किका-

२५ र्कोभिधानाधीनर् माणिक्यनंदिव्रतिपतिगलवर शासनोदात्त-हस्तरु ॥ तदपत्यर् गुणकीर्तिपंडितर् अवर् तच्छास-

२६ नख्यातिकोविदरा सूरिगलात्मजर् विमलचन्द्रर् तत्पादांभोजषट्-
पदर् उद्यद्गुणचंद्ररन्तवर शिष्यरु नोडिशास्त्रा-

२७ र्थदोलु विदितरु गण्डविमुक्तरिन्नभयनन्द्याचार्यरार्योत्तमरु ॥
वृ ॥ पोले चोलं नेलेगेट्टु तन्न कुल-

२८ धर्माचारमं बिट्टु बेलवलदेशक्कडियिट्ट देवगृहसंदोहंगलं
सुट्टु कय्यले पापं बेलेदेत्ते-

२९ नल्के धुरदोलु त्रैलोक्यमल्लंगे पंदलेयं कोट्टसुवं बिसुट्टु निज-
वंशोच्छित्तियं माडिद ।।क।। श्रीपेर्मा-

३० नडि माडिसिदी परमजिनालयंगलं पोलेवदिर्दा पाण्डयचोलनंत
महापातकतिवुलनलिदघोगतिगिलि-

३१ द ॥ वृ ॥ बलिकी बेलुवलदेशमं पडेद दंडाधीशसामन्तमंडलिकर्
धर्मद बट्टेगेट्टु नडेयुत्तिर्द्दल्लि तज्जं मनं-

३२ गोले कालीयगुणेतरं कृतयुगाचारान्वितं लक्ष्ममंडलिकं निर्मल-
धर्मवत्तलेय नष्टोद्धारमं माडि-

३३ द ॥ ई नेलदोलु नेगल्तेय पोगल्तेय वाल्तेय पुण्यतीर्थ-
सन्तानदोलिन्नविल्लेनिसि संदुट्टु दक्षिणगंगे तुंगभ-

३४ द्रानदि तन्नदीतटदोलोप्पुव कक्करगोण्डमेंबधिष्ठानदोलुवराधिपति
चक्रधरं नेलसिर्द्द वीडिनोलु ॥

३५ वृ ॥ शककालं गुणलब्धिरंध्रगणनाविख्यातमागल् विरोधकृदब्दं
बरे चैत्रमागे विषुवत्संक्रान्तियोलु पु-

३६ ण्यतारके पूर्णागिरमागे चक्रधरदत्तादेशदिं देशपालकचूडामणि
धर्मवत्तलेयनत्युत्साहिर्दि

३७ माडिद् ॥ क ॥ त्रिभुवनचन्द्रमुनींद्ररनमिवंदिसि भक्तियिंदे
कालगचि जगत्प्रभुवनि वेसदिं लक्ष्मणविभु

३८ कोट्टं हस्तधारेयिं शासनम ॥ वृ ॥ एरडनूर बाडदोलगी जिन-
गेहवे पूज्यमेंदक्करसर कां-

३९ के त्रिल्दुवियमुंवलमुंवलिदायमादियागेरडरुवत्तु पोन्नरुवणं
समकट्टेने माडि शासनं ।

४० वरेयिसि कोट्टु धर्मगुणमं मेरेदं नृपमेरु लक्ष्मण ॥ जिननाथा-
वाममं वामचरितुनिममं कष्ट-

४१ कालेयदुर्भावनेयिं चांडालचोलं सुडिसि किडिसे विच्छित्तियागि-
र्दुदं नेदने नष्टोद्धारमं शाश्वतमतिशय-

४२ माय्तेंविनं माडि तच्छासनमाचंद्रार्कतारं निले निलिसिदने
धन्यनो लक्ष्मभूपं ॥ अरसगें संसेयेन्द-

४३ रसर काणिकेयेन्दु दायधर्मद तेरेयेन्दरुवणदिंदगलमेन्दरेवीसम-
नचिक कोंडवर् चांडालरु ॥

४४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्त भुजवलोपार्जित-
विजयलक्ष्मीकान्तं समस्तारिविजय-

४५ दक्षदक्षिणदोर्दण्डं कत्तलेकुलकमलमार्तण्डं मयूरावतीपुरवराधीश्वरं
ज्वालिनीलब्धवरप्रसाद क-

४६ पूर्रवर्षं जिनधर्मनिर्मलं नेरेकटियंककार नामादिसमस्तप्रशस्ति-
सहितं श्रीमन्महासामन्त वे-

४७ लवलाधिपति भुजवलकाटरसरु ॥क॥ जगमेल्लं देसेगे कयमुगि-
गेम कोट्टरियनोन्दु कागिणियुम-

४८ ना गगनदोलिर्पादित्यं वगेदुदनित्तपने वेलवलादित्यन वोलु ॥
इन्तेनिसिद वेलवलादित्य सकवर्ष ९९४ ने

४९ य परिधाविसंवत्सरद पुष्यसुद्ध पंचमि बृहस्पतिवारदंद अण्णि-
गेरेय गंगपेर्माडिय बस-

५० दिय दानसालेगल्लिगालव गावरिवाडद तम्म सिवटद मत्तर-
य्वत्तुमन् अण्डिगेरेयोलु क्रयविक्रय-

५१ दिं यल्लियाचार्यरु त्रिभुवनचन्द्रपंडितर कालं कर्चि धारापूर्वकं
माडि बिट्ट कोट्टरु ॥

५२ स्वस्ति समस्तविनमदमरमकुटतटघटितशोणमाणिक्यमौक्तिक-
मयूखकुंकुमलयजाभ्यर्चि-

५३ तश्रीमदर्हत्परमेश्वरप्रणीतपरमागमविशारदरुमनवरतपरमागमो -
पदेशप्रसंगरुमप्प श्रीमट्ट-

५४ दयचन्द्रसैद्धान्तदेवर दिव्यश्रीपादपद्माराधकरुं श्रीमत्बलात्कारग-
णांबुजसरोवरराजहंसरुमप्प श्री-

५५ मत्सकलचंद्रदेवरु श्रीमद्राजधानीवट्टणमण्णिगेरेय महास्थानं
श्रीमद्गंगपेर्माडिय बस-

५६ दिगालव ग्रामादि वाडदलु याचार्यरुं चवुंडगावुंडमुख्यवागि
हेग्गडे सहित मूवत्तु मनुष्य-

५७ देवपुत्रगें कोट्ट वृत्तिय क्रम ॥ चंडव्वेय मगं हेग्गडे मल्लय्यनु
यादिनाथस्वामिगेयल्लियाचा-

५८ रियगें बेसकेय्दुंब वृत्ति मत्तर् (प)न्नेरडु केतगावुड याचार्यगें पाद-
पूजेयं कोट्टु

५९ तम्म सेनगणद बसदिगे हूलिगोलद सीमेडिट्टु कुलुपल्लादिं
पडुवलु मत्तरेंटु यरुवणं गद्याणं

६० नाल्करिंदधिक कोंडवर् चांडालरु ॥ एम्मेय केवि सेदिय साम्यक्के
मत्तरेंटु मने वोंदु नोगवाडगे गद्याणं ना-

६१ ल्कु कणविय सेट्टिय बम्मि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंट्टु मने वोंट्टु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कत्ते-

६२ य दारि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंट्टु मने वोंट्टु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु हब्बेय देवि सेट्टिय

६३ साम्यक्के मत्तरॆंट्टु मने वोंट्टु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु गोलिय चवुडि सेट्टिय साम्यक्के मत्त-

६४ रॆंट्टु मने वोंट्टु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु रुद्दुलिय संकि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंट्टु मने

६५ वोंट्टु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कंदल मल्लि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंट्टु मने वोंट्टु मोगवाडगे गद्याणं

६६ नाल्कु मललव्वेय पुत्ररु चण्डि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंट्टु मने वोंट्टु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु माध–

६७ वसेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंट्टु मने वोंट्टु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु

[इसी तरह ८३वीं पंक्ति तक बयसर वोप्पि सेट्टि, नेमिसेट्टि, गोखर बम्मि सेट्टि, मयिलि सेट्टि, गोखर वोसि सेट्टि, चंदि सेट्टि, एम्मेयर चवुडि सेट्टि, होय्सर चवुडि सेट्टि, केल्लर गोरवि सेट्टि, तालबम्मि सेट्टि, कडवर देवि सेट्टि, मंचल वोसि सेट्टि, बेणिल मल्लि सेट्टि, वेण्णेय नालि सेट्टि, दोड्डर केति सेट्टि, मंजडिय येचि सेट्टि, गंडि सेट्टि, मुरियर कलि सेट्टि, बयिसर बसवि सेट्टि, नूति सेट्टि, चिक्कि सेट्टि, इनके बारेमें निर्देश है।]

८३ नाल्कु चिक्कि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंट्टु मने वोंट्टु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु यिन्ती देवपुत्रिकरोलगे याव-

८४ नोर्व्वनु धर्म्मक्कं याचार्य्यंगं विरोधियागि राजगामित्वं माडिदनप्पडे वृत्तिच्छेदसमयबाह्य ॥

८५ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महाप्रधानं वसुधैकबान्धवं श्रीरेचिदेवदंडनाथ वदकेरे-

८६ य श्रीकलिदेवस्वामिजिनश्रीपादार्च्चनेगे कर्पूरकुंकुमश्रीगंधसहित यष्टविधार्च्चनेगे

८७ कोट केयियरकेरेयिं मूडलु मत्तर् पन्नेरडुमं याचार्य्यरं देवपुत्रि-कर्ण सर्व्वाबाधप-

८८ रिहारवागि प्रतिपालिपरु ॥ दक्षिण ऐयावोलेयुमप्प ग्रामादि वाडक्के श्रीगंगपेर्म्माडि-

८९ य बसदिय पुरद मर्यादेय बले मूवत्तेंटु गेणु हस्त बेंगोल्लदेंगे वृत्ति सल्लुदु ॥ वर्द्धतां जिनशा-

९० सनं ॥

९१ गंगासागरयमुनासंगमदोलु बाणारसि गयेयेम्बी तीर्थगलोलात्म-कुलद्विजपुंगवगोकुलमनलिदरिन्तिदनलि-

९२ दरु ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां । षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

९३ याचार्यर येक्कटिगनागि बेसकेय्दुंब वृत्ति कुरिवर केरे····

९४ न्तु ॥ याचार्यरु चवुड गवुडन हेसरिट्टुदक्के मूगवाड रन····

९५ लद सीमेयलु कोट वृत्ति मत्तरु वोंदु यद्दु होल्गेरे ॥

[इस बृहत् शिलालेखके चार भाग हैं । पहले भागमें (पंक्ति१–४३) अण्णिगेरे नगरके गंगपेर्म्माडि जिनमन्दिरका वर्णन है । यह मन्दिर रेवकनि-र्म्मडिके पति बूतुगके स्मरणार्थ बेलुवल प्रदेशके शासक गंगपेर्म्माडिने बन-वाया था तथा उसने उसे मूडगेरी, गुम्मुंगोल, इट्टगे और गावरिवाड ये चार गाँव दान दिये थे। यह दान मूलसंघनंदिसंघ-बलगार गणके गुणकीर्ति पण्डितको दिया गया था। गुणकीर्तिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी—गंग

१. रेवकनिर्म्मडि राष्ट्रकूट सम्राट् कृष्ण (तृतीय) की बहन थीं जो गंग राजा बूतुगको ब्याही गयी थीं। गंग पेर्मांडि इनके पुत्र मारसिंह (तृतीय) (सन् ९६०–७४) अथवा पौत्र राजमल्ल (चतुर्थ) होंगे।

वंशके गुरु वर्धमान – विद्यानन्द स्वामी – उनके गुरुबन्धु तार्किकार्क माणिक्यनन्दि – गुणकीर्ति – विमलचंद्र – गुणचन्द्र – गण्डविमुक्त – उनके गुरुबन्धु अभयनन्दि। कालान्तरसे चोल राजाने बेल्वल प्रदेशपर आक्रमण किया[1] तब इस मन्दिरको नष्ट-भ्रष्ट किया किन्तु शीघ्र ही इस चोल राजाको अपने पापका प्रायश्चित्त करना पड़ा क्योंकि चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल सोमेश्वर (प्रथम) द्वारा वह युद्धमें मारा गया।[2] तदनन्तर बेल्वल प्रदेशके कई शासक हुए जिनने इस मन्दिरकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर (द्वितीय) के समय बेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशका शासन महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसको सौंपा गया। उसने इस मन्दिरका जीर्णोद्धार किया तथा उसके लिए मुनि त्रिभुवनचन्द्रको समुचित दान दिया।[3] इस दानकी अनुज्ञा देते समय सम्राट् सोमेश्वर तुंगभद्रा नदीके तीरपर कक्करगोंडके सेनाशिविरमें थे तथा शक ९९३ वर्ष चल रहा था।

इस शिलालेखके दूसरे भागमें बेल्वलके अगले शासक काटरसका उल्लेख है जो मयूरावती नगरका स्वामी था। तथा ज्वालिनी देवीका उपासक था। इसने उपर्युक्त मन्दिरको शक ९९४ में कुछ दान दिया। यह दान भी त्रिभुवनचन्द्रको दिया था।

तीसरे भागमें इस मन्दिरके व्यवस्थापक उदयचन्द्रके शिष्य सकलचन्द्रका उल्लेख है। इनने मन्दिरकी जमीन जोतनेके लिए मल्लय्य आदि तीस श्रेष्ठियोंको सौंपी थीं।

चौथे भागमें महाप्रधान रेचिदेव - द्वारा बट्टकेरे नगरके जिन तथा कलिदेवकी पूजाके लिए कुछ जमीन दान दिये जानेका उल्लेख है।

---

१. यह राजा चोल राजाधिराज होगा। (सन् १०१८–५२)

२. यह युद्ध सन् १०५२ के आरम्भमें हुआ था।

३. पूर्वोक्त गुरुपरम्परासे त्रिभुवनचन्द्रका सम्बन्ध अगले लेखमें स्पष्ट किया है।

यह शिलालेख अन्तिम रूपसे सन् ११५० के क़रीब लिखा गया होगा।]

[ए० इं० १५ पृ० ३३७]

१५५
अण्णिगेरि (मैसूर)

शक ९९३–९४ = सन् १०७१–७२, कन्नड

[यह लेख अक्षरशः गावरवाड लेखके पहले दो भागों-जैसा ही है— सिर्फ़ चार श्लोक इसमें अधिक हैं। यथा— (१) मंगलाचरणमें—जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने। नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ (२) महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसके वर्णनमें—मले यंतो (तु) ल्तुलिदं मलेयोल् मार्मलेव मलेपरं मगिसिदं मलेयेलुं कोर्पिर्तुमनलेदं जलनिवियोलें प्रतापियो लक्ष्म ॥ (३–४) गुणकीर्ति पण्डितकी शिष्य परम्पराके वर्णनमें– कृतकृत्यरभयनन्दिगल तनूजर् सकलचन्द्रसिद्धान्तिकरप्रतिमर् सर्वागमला-न्वितगण्डविमुक्तदेवरा मुनिशिष्यर् ॥ एनिसिद गण्डविमुक्तर तनूभवर् चरणकरणपदविद्यापावन मन्त्रवाददो त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररल्ते बुधजनवन्द्यर् ॥ इससे अभयनन्दि – सकलचन्द्र – गण्डविमुक्त – त्रिभुवनचन्द्र इस परम्परा का पता चलता है। इस लेखमें गावरवाड लेखके अन्तिम दो भाग नहीं हैं। अतः प्रतीत होता है कि यह शक ९९४ में ही खुदवाया गया होगा।]

[ए० इं० १५ पृ० ३४७]

१५६
हैदराबाद म्युजियम (आन्ध्र)

सं० ११ (२) ८ = सन् १०७२, संस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें वीतरागकी उपासिका रावदेवी-द्वारा देवांगना तथा क्षोणीपतिकी मूर्तियोंकी स्थापना किये जानेका उल्लेख है। समय संवत्

११ (२) ८ है। इसका तीसरा अंक कुछ अस्पष्ट है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५३]

१५७

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक ९९६ – सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लके समय चैत्र शु० ८, रविवार आनन्द संवत्सर, शक ९९६के दिन लिखा गया था। मणल कुलके महासामन्त जयकेसियरसने पुरिगेरेके पेर्माडिवसदिके दर्शन किये तथा मूलसंघ-बलात्कारगणके गण्डविमुक्त भट्टारकके शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पण्डितके निवेदनपर उसे पुरके रूपमें परिवर्तित किया ऐसा इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० २९ पृ० १६३]

१५८

हुनगुन्द (मैसूर)

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव सोमेश्वर (२) के समय पौष शु० ५, रविवार, शक ९९६, आनन्द संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था। इसमें सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके अरुहणंदि-भट्टारकके शिष्य आर्यपण्डितको पोन्नुगुन्दकी अरसर वसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान श्रीकरण देवणय्य नायक, पेर्गडे नाकिमय्य, पेर्गडे रेवणय्य, करण आय्चप्पय्य, तथा पसायित काटिमय्यने सर्व प्रधानों-द्वारा की गयी जिन पूजाके अवसरपर दिया था। उस समय वेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशोंपर महामण्डलेश्वर संग्रामगरुड लक्ष्मरस का शासन चल रहा था।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० १११]

१५९

सोमापुर (धारवाड, मैसूर)

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा भुवनैकमल्लके समय शक ९९(६), आनन्द संवत्सर, पुष्य शु० ५, बुधवारका है। इसमें किसी सेट्टि-द्वारा एक जैन बसदिको दिये गये दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३–३४ क्र० ई० ७७ पृ० १२६]

१६०

लक्ष्मेश्वर (मिरज, मैसूर)

शक ९९९-१००० = सन् १०७७-७८, कन्नड

[इस निषिधिलेखमें सूरस्थ गणके श्रीनन्दि पण्डितदेव तथा उनके बन्धु भास्करनन्दि पण्डितदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। पुरिकर नगर (लक्ष्मेश्वर) के आनेसेज्जेबसदिमें इन्होंने सल्लेखना ली थी। मृत्युतिथियाँ क्रमशः आषाढ़ शु० १२, बुधवार, पिंगल संवत्सर, शक ९९९ तथा चैत्र अमावास्या, रविवार, कालयुक्त संवत्सर, शक १००० इस प्रकार दी हैं।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई ६ पृ० १६१]

१६१

अक्कलकोट (शोलापुर, महाराष्ट्र)

चालुक्यविक्रमवर्ष ४ = सन् १०५८, कन्नड

[इस लेखमें एक जैन मठके लिए कुछ उद्यान, भूमि आदिके दानका उल्लेख है। तिथि पुष्य व० २, रविवार, उत्तरायण संक्रान्ति, सिद्धार्थि संवत्सर, चालुक्य विक्रम वर्ष ४ ऐसी दी है। (वस्तुतः उस वर्षका नाम कालयुक्त संवत्सर था।) चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य ६ के समयका यह लेख है।] [रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ९६ पृ० ३५]

१६२

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८०, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लके राज्यवर्ष ६, पुष्य व० (६) गुरुवार, दुर्मतिसंवत्सरका है। इस समय महामण्डलेश्वर जोयिमय्यरसकी पत्नी नाविकव्वेने कोण्डकुन्देयतीर्थमें चट्टजिनालयका निर्माण किया तथा उसे कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० सा० ए० १९१५–१६ क्र० ५६५ पृ० ५५]

१६३

अलनावर (धारवाड, मैसूर)

शक १००३ = सन् १०८१, कन्नड

[यह लेख शक १००३ का है। कदम्ब राजा गोवलदेवके समय अलनावरके जैन वसदिके लिए नरसिंगय्य सेट्टि द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२५–२६ क्र० ४७० पृ० ७८]

१६४

वनवासि (मैसूर)

सन् १०८१, कन्नड

[यह लेख कादम्बचक्रवर्ति वीरमके राज्यवर्ष १२, दुर्मति संवत्सरमें कार्तिक कृ० ५, सोमवारके दिन लिखा गया था। इसमें तिप्पिसेट्टि सातय्य की पत्नी भोगवेके समाधिमरणका उल्लेख है। इनके गुरु देसिगण – पुस्तक-गच्छ – कुण्डकुन्दान्वयके सकलचंद्रभट्टारक थे।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० १४३ पृ० १७२]

१६५

लक्ष्मेश्वर (नंनूर)

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८१, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं(।)जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥

२ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्या-

३ भरणं श्रीमत्त्रिभुवनमल्लदेव ॥वृत्त॥ घरेयं वाराशिपर्यन्त-मनवयदिं दुर्विनीतावनीपालर वेरं किन्तुं नीरोल् गलगलनलेदो-

४ डाडि मुन्निन्तु चक्रेश्वररार् निष्कंटकं माडिदर्रेने महि निष्कंटकं माडि चक्रेश्वररनं सन्ततं पालिसिदनतिबलं विक्रमादित्यदेवं ॥२॥ अन्तु श्रीम-

५ त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमा-चंद्रतारं सलुत्तमिरे ॥ तदनुजं स्वस्ति समस्तभुवनसंस्तूयमान लो-

६ कविख्यातं पल्लवान्वयं श्रीमहीवल्लभ युवराज राजपरमेश्वरं वीरमहेश्वरं विक्रमाभरणं जयलक्ष्मीरमणं शरणागतरक्षामणि चालु-

७ क्यचूडामणि कदनत्रिनेत्रं क्षत्रियपवित्रं मत्तगजांगरावं सहज-मनोजं रिपुरायमूरेकारनष्णनंकारं श्रीमत्त्रैलोक्यमल्ल

८ वीरनोलंब पल्लवपेर्मानडि जयसिंहदेव ॥वृत्त॥ परचक्र-कालचक्रं नलनहुषनृगाद्यादिभूपालकालोचरितं चालुक्य-चूडामणि सहजमनोजं नन्नारा-

९ तिभूमीश्वरसंवातोत्तमांगाभरणमणिगणज्योतिरुत्तंसभास्वच्चरणं सामान्यने भूपरोलपगतविद्विट्कदंबं नोलंब ॥ ३ वचन ॥ एनिसिद् पोगल्तेगं नेगल्तेगं नेलेये-

१० निसि ॥क॥ अरसुगुणंगल मेय्वेत्तिरे पगे मिगदिरे जनानुरागं पिरिदागिरे कीर्तिलतिके निमिरुत्तिरे वीरनोलंबन-वनतारिकदंबं ॥४ व॥ एरडु[मू]नूरुमं वनवासेपनिर्छासिरमु-

११ मं सान्तलिगेसासिरमुमं कंडूर् सासिरमुमं सुखसंकथाविनोददिं प्रतिपालिसुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि । समधिगतपंचमहाशब्द महासामन्ताधिपतिं महाप्र-

१२ चण्डदण्डनायकं रिपुमस्तकन्यस्तसायकं साहित्यविद्यांगनाभुजंग सरस्वतीमुखकमलभृंगनाराधितहरचरणस्मरणपरिणतान्तःकरणं । सरस्वतीकर्णाभरणं

१३ श्रीमन्महाप्रधानं मनेवेगंडे दण्डनायकनेरेयमय्यं ॥कंद॥ सकल-कलाग्रह्यं ब्रह्मकुलार्कं वत्सगोत्ररत्नाकरशीतकरं क्रियिनें भुवन-प्रकरदोल-

१४ रिमृत्युभूपनेरेगचमूपं ॥ ५ वृ ॥ एलेयोलु सादृश्यमप्पंदेरेगविभुगे विण्पिंगे गुण्पिंगे तिण्पिंगेले पारावारमिंद्राचलमचसुरणि रामनिं कृष्णनिं संचलम—

१५ श्लिष्टगंभीरमुमगुरुवुयागिल्दुवारय्ये बेरोंदले बेरोन्दब्धि बेरोन्द-निमिषनगमेत्तानुमुंटप्पो ढक्कुं ॥ ६ कंद ॥ परिकिपोडे हस्ति-मशकान्तरमेनिपुदु तन्न

१६ गुणद नेगल्द्र गुणदन्तरमेने गुणेपु को मत्सर एंब बुधोक्त एरेग-विभुगे सदुक्तं ॥ ७ सदमलकीर्तिवल्लरि दिशान्तरमं तेरपिल्ल-दन्तु पविंदुदु पराक्रमं

१७ ....ममिट्ट्रदु बिणपेपमाणबाह्यमाट्टदु चरितं शिखापदमनेय्दिदु-
द्दार्पिन सूनु मत्ते पुट्टिदनेनिपन्तुदाय्तेरिगनुन्नतियं पोगलल्
समर्थरार् ॥ ८

१८ एनिमिल्दा ख्याति विख्यातिगे सलुनिरे सन्तं वसन्तं तदीया-
वनिगॆंबुद्दानि पेर्चुत्तिरे पुल्गिगेरेमूलूर्मं स्वामिसंपत्तिन पेंपं ताल्दि
कैकोण्डनुमबि—

१९ सुत्तमॊंदार्यदिं मत्यदिं क्रणंनुमं मिक्कुन्सवंपेत्तिरलेरंगचमूपं
बलेॆंद्रराज्यस्ःरूपं ॥ ९ कंद ॥ तदनुजनपरिमित गुणास्पदनेनेद्दं
भुवनवुंमुकं सुरप—

२० तिसंपदननुलभुजबलं परसुदतीप्रकरप्रसूनबाणं दोणं ॥१०॥
कलितनदोल् कुरुकुलसंकुलमथनन तम्मननुपमानाकृतियोल्
बलदेवन तम्मं भुजबल—

२१ दोल् यमसुतन तम्मनेरंगन तम्मं ॥ ११ ॥ एरेगनडिमोदलो-
लरिनृपरेरगिदोडदनरियेनेरगदिरलॆंबोदागेरगिसुगुं नृपादि गलेरे-
गल् पतिकार्यं—

२२ नरधुरीणं द्रोणं ॥ १२ वृत्तं ॥ केणमुदारदोल् कोरटे सज्जन-
वृत्तियोलेगु शीलदोल् काणले बारदॆंदोडे पेरर् समनप्परे मार्त्य-
लोकदोल् द्रोणनो

२३ लंगनाकुसुमबाणनोलिष्टविशिष्टसंकुलत्राणनोल् अब्जसंभव-
समानसमस्तकलाप्रवीणनोल् ॥ १३ परमाप्तस्वामीदेवं पशुपति
जितविद्विट्कदंबं नोलंबं

२४ पोरेदाल्दं तंदे शुंभत्तरगुणगणदिं मिक्क तिक्कं विभास्वच्चरिता-
लंकारं कल्वंबिके जननि तदीयाग्रजं दण्डनायोत्कररत्नं रूडिवे-
त्तिल्देरकपनेने द्रोण जसक्किक्कॆंदा-

२४ णं ॥१४ (ई) कलिकालदोल् विषमकालदोल् उव्वटेयागुतु धर्म-रत्नाकरनेविर्न पलवु कालदिनीक्षिसलादुर्दितु कोल्पोकुमे धर्म-मेन्दोसेदु तन्नन कौतुकमागे मे-

२६ दिनीलोकमशेषमोंदे कोरलोल् पोगलल् पडिचंदमप्पिनं ॥१५ कमनीयक्रमविक्रमाब्दतलिपट्कं दुर्मतिप्राब्द पुण्यमशुक्लं भृगुषष्टियोप्पलवरोल् कूडलु

२७ व्यतीपातमेंत्र महायोगमुमुत्तरायणमहासंक्रान्तियुं मानवो-त्तमनन्दुज्वलकीर्ति दोणनुरुधर्मत्राणनुत्साहदिं ॥१६ कंद॥ परम-जिनसमयरत्ना-

२८ कराहिमकरमूलसंवसंभवशोभाकरसेनगणनभःस्थल- सरसिजवान्ध-वर सितयशःश्रीधवर ॥१७ वरमुनिपर विनतक्षितिपर निरवद्यर नरेंद्रसेन-

२९ त्रैविद्यर पादप्रक्षालनपुरःसर दिव्यपुरदोली पुरिकरदोल् ॥१८ चांद्रं कातंत्रं जैनेंद्रं शब्दानुशासनं पाणिनि मत्तैंद्रं नरेंद्रसेनमु-

३० नींद्रंगेकाक्षरं पेरंगिवु मोग्गे ॥१९ अवरग्रशिष्यं॥ जिनगेनेंबेनो शाकटायनमुनीशं ताने शब्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीय-दोलु चांद्रं चांद्रदोलु तज्जिनेंद्र-

३१ ने जैनेंद्रदोला कुमारने गडं कातंत्रदोल् पोल्परेन्तेने पोलर् नयसेनपण्डितरोलन्यर् वार्धिवीतोर्वियोल् ॥२० सरसतियं मनोमुदडे तालूदिदनेन्नवज्ञेगेयदनानिरेनन्नलिकें चिः-

३२ सवतियोल् पुदुवाल्वुदु कष्टमेन्दु निष्ठुरवचनंगलं नुडिदु दिक्करियं परिदेरि कीर्ति तां पुरुडिसि दूरिपल् वरतपोनिधियं नयसेनसूरियं ॥२१ अवरग्रशिष्यर् ॥ नतभू-

३३ पेंद्रकिरीटताडितपदांभोजद्वयं नूतनप्रतिमाभारवि नारहार-

हरहासाकाशनीहारविश्रुतकीर्तिप्रमदाननाब्जमुकुरं हा बाप्पु
सामान्यमे श्रुतवाराशि नरेंद्र-

३४ सेनमुनिपं त्रैविद्यचक्रेश्वरं ॥२२ जितविद्विष्टप्रतापान्वितदिनधिक-
शौर्यत्वदाटोपदिंदूर्जितमास्वजैनधर्मार्पितदृढमतियिं विप्रवंशां-
वराहर्पतियेंबोंदुद्ववतेजस्तवदिनतु-

३५ लवलैश्वर्यदिं त्यागदोंदुन्नतियिंदं सत्यदिंदं दिनकरनतिशोभाकरं
पुण्यपुंज ॥२३ दिनकरनोदयदोल् तममनितुं तूल्दोडुवन्ते
मिथ्यात्वतमं दिनकरनुदयिसे निजकुल-

३६ वनदिं तूल्दोडि किडुवुदें विस्मयमे ॥२४ आतन तनयर्
जनविख्यातर् जिनपदपयोजभृंगर् विनयान्वितरेने नेगल्दर-
खिलक्ष्मातलदोल् राजिसच्यनुं दूडमनुं ॥२५ वृत्त॥

३७ जिनपादांभोजभृंगं सुजनजनमनोरंजनं विश्वधात्रीविनुतं दिग्द-
न्तिदन्ताश्रितविशदयशोभासि शिष्टेष्टकल्पावनिजं सत्पात्रदाना-
धिकनेनुते मनोरागदिं कूर्तु विद्वज्जनमे-

३८ ल्लं बण्णिकुं राजननमलसत्तेजनं निच्चनिच्च ॥ २६ मनुमुनि-
मार्गनेम जिनपूजेयोलर्तिगनेंदु दानियेंदनुपमतेजनेंदु शुचियेंदु
दयापरनेंदु निच्चलुं मनमो(से)-

३९ दक्कर्रि विडदे बण्णिसुगुं जगमेयदें कूडे राजननिनतेजनं पसुगे
गोजननाश्रितकल्पभूजन ॥ २७ तत्प्रियानुजन शौर्यदलवं
पेल्वडे ॥ कल्डुपिन्दं

४० धर्णीश्वरं वेससे चौरासीशनं वन्दियं पिडिदं साहसदिन्दमं
सुगेयनिन्दोर्वीशनं कोपदिं पिडिदुय्दा सेरेयिट्ट सोमननत्याश्चर्यदिं
वन्दियं पिडि

४१ दं तानेने शोर्यदोन्दलवदें सामान्यमे दूडन ॥ २८ निजपतियं

सेरेविडिद्दोडे भुजवलदिं वन्दिविडिदु विडिसिदनेन्दी त्रिजगं वण्णिसुगुं सद्विजकुलनं शौर्य-

४२ शालियं दूडमन ॥ २९ इन्तेनिसिद दूडन वरकान्ते मनोभवन कान्तेगं रूपिनोलल्यन्तं मिगिलेने पोगललकेन्तुं नेरेयरियर् एचिकब्बेय रूप ॥ ३० अन्तवरगें पुट्टिदल् सुरका-

४३ न्तोपमे विचलदलिकुलालके विलसन्मान्तनसमेते बुधजनचिन्ता-मणि इम्मिकब्बे ललनारत्न ॥ ३१ आ नेगल्द इम्मिकब्बेगनून-प्रियवल्लभं मनोभवरूपं दानदेडे-

४४ गन्दिना कानीनन वोल् नेगल्दनरसिमय्यं जगदोल् ॥ ३२ अनुपमदानशीलगुणभूषणभूषितेयाद इम्मिकावनितेगमत्युदार-हरसय्यमहाविभुगं विनी-

४५ तनोल्पिन कणि वैद्यशास्त्रकुशलं सुजनाग्रणि वैद्यकन्नपं तनय-नेनल्के नोन्तनेन कन्नन वोल् कृतपुण्यनावनो ॥ ३३ जिनपद-पंकजभ्रमरनिन्दपनुद्घगुणाब्धियीश्वरं वि-

४६ नयविलासि राजि सुजनं कलिदेवनगण्यपुण्यवर्धनकरनादिनाथ-नधिकं शुचि शान्ति नेगर्तेवेत्त पार्श्वचुमिवरात्मजातरेने कन्नन वोल् कृतपुण्यनावनो ॥ ३४

[यह लेख चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) त्रिभुवनमल्लके छठवें वर्षमें अर्थात् सन् १०८१ में लिखा गया था। उस समय वेल्वोल, पुलिगेरे, वनवासि, सान्तलिगे, तथा कण्डूर प्रदेशोंपर सम्राट्के पुत्र जयसिंह शासन कर रहे थे। इन्हें त्रैलोक्यमल्ल, वीरनोलम्ब, पल्लवपेर्मानडि ये उपाधियाँ दी हैं। इनके अधीन महासामन्त एरेमय्य पुलिगेरे प्रदेशका अधिकारी था। इसे एरेग या एरेकप भी कहा है। इसका बन्धु दोण था जिसकी लेखमें बहुत प्रशंसा की है। इसने मूलसंघ-सेनगणके नरेन्द्रसेनके प्रशिष्य

तथा नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन (द्वितीय) को पौष कृष्ण ६, शुक्रवार, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर कुछ दान दिया। इसके बाद लेखमें दिनकर, उसके पुत्र राजिमय्य तथा दूडम, दूडमकी पत्नी एचिकब्बे तथा पुत्री हम्मिकब्बे, हम्मिकब्बेका पति अरमय्य तथा पुत्र वैद्य कन्नप एवं कन्नपके पुत्र इन्दप, ईश्वर, राजि, कलिदेव, आदिनाथ, शान्ति, एवं पार्श्वका वर्णन है। संभवतः इन लोगोंकी प्रार्थनापर दोणने उक्त दान दिया था।]

[ए० इ० १६ पृ० ५८]

१६६

अरसीबीडि (विजापुर, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष १० = सन् १०८५, कन्नड

[इस लेखकी तिथि आषाढ शु० १, बुधवार, क्रोधन संवत्सर, चालुक्य वर्ष १० ऐसी है। इस समय मुंकवेगंडे मन्तर वर्मणने विक्रमपुर (वर्तमान अरसीबीडि) स्थित गोणद वेडंगि जिनालयके ऋषि-अर्जिकाओं-को आहारदान देनेके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया था। सिन्द वंशके सिन्दरसके पुत्र वर्मदेवरसके अधीन प्रान्तीय शासकके रूपमें मुंकवेगंडे नियुक्त था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० २३१]

१६७

मरुत्तुवक्कुडि (तंजोर, मद्रास)

तमिल, सन् १०८६

[यह लेख ऐरावतेश्वर मन्दिरके आगे मण्डपकी दक्षिणी दीवालपर है। त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तुंग चोलदेव, जिसने मदुरा जीतकर पाण्ड्य

राजाका शिरच्छेद किया था—के १६वें वर्षमें यह लेख लिखा गया था। इसमें जननाथपुरम्के दो जैन मन्दिर चेदिकुलमाणिक्क पेरुम्बल्लि तथा गंगरुलसुंदर पेरुम्बल्लिका उल्लेख है।]

[इ० म० तंजोर १००३]

१६८

दोणि (धारवाड, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष २० = सन् १०९६, कन्नड

[यह लेख फाल्गुन शु० १३ गुरुवार, चालुक्यविक्रम वर्ष २० के दिन लिखा गया था। सम्राट् त्रिभुवनमल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ) के राज्यका यह लेख है। इस समय यापनीय संघ-वृक्षमूल गणके मुनिचन्द्र त्रैविद्य भट्टारकके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको सोविसेट्टि द्वारा एक उद्यान दान दिया गया था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १६९]

१६९–१७०

तुम्बदेवनहल्लि (मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष २१ = सन् १०९६, कन्नड

१ श्रीमद्देरेयंगदेवर असवव्वर(सि)माडिसिद बसदि मंगल महा श्री

२ स्वस्ति समस्तसुरासुरमस्तकमणिमकुटरश्मिरंजितचरणप्रस्तुत-जिनेन्द्रशासन-

३ मस्तु चिरं सकलभव्यचन्द्रजनानां ॥(१) भद्रमस्तु जिनशासनाय संभद्रतां प्रति-

४ विधानहेतवे अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटी-यसे ॥(२)

५ जयवर्म सुदड़िन्दं इल्दु नियतं पट्टलिंगयं राज्यलीलेयिनाल्-
दुल्लिर्गि सर्न-
६ गोलिसि विद्विष्ट्रजक्केयदें भीतियनित्तायमनप्पुकेय् दु चलमं
कैकोण्डु लोकमसि-
७ द्वियुतं मांडिदनावगन् निले कदम्बाम्नायविख्यातियं ॥(२)
श्रीमत्कदम्बवंशललाम-
८ वनिनाथरोलगे रणक्तिसितियं भीमपराक्रमनेनिसिदनो महियोल्
अरातिनृपलयोंद-
९ यदिदं ॥(४) आतन नगनमलगुगोपेतनतिप्रबलबलद्वनपवन-
नेनिप्पातनय-
१० शोविलासविनूतंगेंडेयागि नेगल्द कलि हट्टुवनृपं ॥(५) वत्त-
नेयनतुलबलनुद्वितरिपु-
११ क्षितिपकुवलवज्र वीरोदात्तनेने नेगल्द्नकुटिलचित्तं पोचायिनृप-
पूर्तं वृत्त ॥(६)
१२ आतंगे पुट्टि बलदद्रातिमर्हासुजर्निरिदु गेल्दुर्वितोलुर्वीवलने
पोगलें तोरिदनात-
१३ तलितकीर्ति नीललक्ष्मणं चिण्ण ॥(७) एने नेगल्द चिण्णनृपतिगं
अनवद्यलतांगि सुग्गिदव्वरसिग-
१४ मुर्विनदोसगे पुट्टे पुट्टिद तनेयनतिप्रकटविशदयशनेरेयंग अक्कर
नेगल्द नृ-
१५ परत्ननाल्वरनेबेंट्टे भीतियिं बन्दु पोगले तन्ननवर पट्टियोंडेयनं
पेरगिक्कि काद्दुनिन्दाल्दरनं वगेयद्-
१६ आन्तरिसेनेयनोडिसि गेल्दुनिनसकडि सिन्धुजनं सिगिलुद्अ-
वलावलेपनं भुजादण्डनो नान्निमार्तण्डदेव ॥(८)
१७ मलेदिद्दिरदान्त चोलिकवलमोत्तदोडान्तुमदिरदेरेयंगन दोर्वल-
दलवनेवोगलट्टुदो जक्कलदेवननेयदे

१८ कादुकलिपिद् चलमं ।।(९) अन्तु नेगल्देरेगनृपतिगनन्तसुखास्य-
द्येनिप्प येचांत्रिकेगं कन्तुवेनिप्प
१९ चिण्णं कान्तं पुट्टिदनुदारतेजोनिलय ।।(१०) पुट्टलोडं निन्नये
पेसरिट्टपरी जगद मनुजरेन्द्रोडे पेसरों-
२० दिट्टलमाद्डे कोल्गु पट्टलिगेय चिण्णनेम्ब मयरसर्दिदं ।।(११)
आतंगे वुट्टिदं विख्याततशितकीर्-
२१ तिं नेगल्द गण्डतरण्डं भूतलके कल्पवृक्षसमोपेतनेनिप्प दानि
येरेगमहीश ॥ (१२)
२१ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरं बनवासिपुर-
वराधीश्वरं कादम्ब-
२३ चक्रेश्वरं नुदारमहेश्वरं नुभयबलगण्डं नन्निमार्तंडं तनगिल्लदीवं
कर्णसहादे-
२४ वं मानिनीमनोहर हरचरणशेखरं हरिपादसरसीरुहोत्तंसं
सरस्वतीक-
२५ र्णावतंसं त्रिकलकुलनृपतिहृदयसंतापकरं विवेकविद्याधरं भृगुमता-
२६ चार्यं मन्दरधैर्यं कादम्बकुलकमलविकाशनादित्यं विजातिराजता-
रागणतरुणादि-
२७ त्यं विक्रमप्रक्रमकिशोरकण्ठीरवं कादम्बकण्ठीरवं मागधिकमा-
निनीमदहरिपपु-
२८ कक लाटवधूटीमाललीलातिलकं विरुदत्रिनेत्रं हयशालिहोत्रं तूगितु-
२९ त्तिडुव विरुदरपेण्डिरगण्डं गण्डतरण्डं अरिविरुदरवायोले सुरि-
गेयं किरिपु
३० व दोड्डकंबडिव गीतप्रगीतं गेयविनोदं निजकुलोत्तुंग श्रीमदेरे-
यंगदे-
३१ व स्थिरं जीयात् ॥ कन्द ॥ गंगेगडलगल नोरेगं तिंगल वेल्-
पिंगमोदवकडकिल्वेल्पिं

३२ संगलिसि तीविद्तेरेयंगन जसमखिलभुवनांतरदोलु। नटनिट-लेक्षणा-
३३ ग्नि नृगणंगणं उज्वलकीर्तिपाण्डुरभू····कुरुलु जडेयागे जगक्के
३४ देवनाद्रिरिविरुद्त्रिनेत्रनेमगी····कोण्डकुन्द्रान्वयो-
३५ स्पन्ने विख्याते देसिगे गणे रविचन्द्राख्यसै····यमनियम-
३६ स्वाध्यायपराणेयरप्प माचवेगन्तिय····तावरेयकेरेय केलग-
३७ ण आढणमण्णं धारापूर्वकं कोट्टर् चालुक्यविक्रमकालद २१ने धातुसंवत्सरद कार्तिक न-
३८ न्दीश्वरदष्टमियन्दु मंगलमहाश्री स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां षष्ठिवर्ष-
३९ सहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ॥

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके निर्माणके समयका है। यह वसदि एरेयंगदेवकी रानी असवव्वरसि द्वारा वनवायी गयी थी। लेखमें एरेयंगका वंशवर्णन इस प्रकार दिया है—कदम्ब कुलमें रणकि राजा—तत्पुत्र हुदुव–तत्पुत्र वूत–तत्पुत्र चिण्ण–तत्पुत्र एरेयंग–तत्पुत्र चिण्ण २–तत्पुत्र एरेयंग २। इस मन्दिरके लिए कोण्डकुन्दान्वय-देसिग गणके रविचन्द्र सैं(द्धान्तदेव)के उपदेशसे माचवेगन्ति द्वारा कुछ भूमि दान दी गयी थी। लेखकी तिथि कार्तिककी नन्दीश्वर-अष्टमी (शुक्ल ८), चालुक्य विक्रम वर्ष २१, धातु संवत्सर इस प्रकार दी है।

इसी मन्दिरकी एक प्रतिमाके पादपीठपर ११वीं सदीकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—

बस(दिगे) वासवुरदे विद् ग २ भत्त ५०

अर्थात्—इस वसदिके लिए वासवुर ग्रामके उत्पन्नसे २ गद्याण (मुद्राएँ) और ५० भत्त (चावलके परिमाण) दान दिये गये हैं।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १४५–१५२]

१७१

हुनगुन्द (विजापूर, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य षष्ठ) का उल्लेख है। तिथि शक ९····दी है। मूलसंघ–देशीय गण–पुस्तक गच्छ–कुन्दकुन्दान्वयके (इन्द्र)णंदिके शिष्य बाहुबलि आचार्य द्वारा एक जिन-मन्दिर बनवानेका तथा उस मन्दिरके लिए कुछ भूमिदान प्राप्त करनेका इसमें उल्लेख है।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १४१]

१७२

तोलल्लु (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

१ स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर····त्रिभुवनमल्ल तलका-
२ कमाडि बिट्टन्दु ३ नडसुविरि
४–७ (ये पंक्तियाँ घिस गयी हैं)
८ स्वस्तिश्रीमतु तोलल बसदिगेनाड्डु···· ९········
१० हिरिय मुद् गनुण्ड····गनुण्ड बिलग
११ वुण्ड बूलुवनड····वुण्ड बूरयन्र् ओक्कल
१२ ····उत्तराण संक्रान्तियन्दु नविल्लू-
१३ र् नेमिचन्द्रपण्डितगें धारापूर्वकं माडि कोट्टरु आ-
१४ नविल्लूरोलगे आवनागि-वद्दुकुववनु····हृण
१५ वेन्दु हिडिसिदव····हन्नोन्दु
१६ तलेयं नरकदल्लिलिवरु गंगेयतडियकि कविले-

१७ यं ब्राह्मणरं नोय्सिद् फलमन् एय्दुवरु
१८ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां प-
१९ ष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः ॥

[इस लेखमें तोललके जिनमन्दिरके लिए नेमिचन्द्र पण्डितको नविलूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान हिरियमुद्दगौण्ड, बिलिगौण्ड तथा अन्य ५२ निवासियों द्वारा दिया गया था। लेखमें प्रारम्भमें त्रिभुवन-मल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ)के किसी माण्डलिकका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४४]

१७३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

तमिल, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[इस लेखके प्रारम्भमें कुलोत्तुंग चोल (प्रथम)की ऐतिहासिक प्रशस्ति है। राजेन्द्रशोलचेदिराजन् द्वारा देवमन्दिरमें दीपके लिए कुछ धान अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है। उडैयार् मल्लिषेणका उल्लेख है जो स्पष्टतः कोई जैन आचार्य थे। लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०१ पृ० ६५]

१७४

ऊन (मध्यप्रदेश)

११वीं सदी, संस्कृत-नागरी

[इस स्थानमें कई जैन मन्दिरोंके ध्वस्त अवशेष हैं। इनमें एक मन्दिरके एक छोटे-से लेखमें मालवराज उदयादित्यका उल्लेख है। अतः यह मन्दिर ११वीं सदीका बना है यह स्पष्ट होता है।]

[रि० आ० स० १९१८-१९ पृ० १७]

१७५

सागरकट्टे (मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमद्राविळसं	२ घद आरुंगळा-
३ न्वयद नन्दिगण	४ द शान्तिमु-
५ निगळ शिष्यसन्त-	६ ति श्रीवादिरा-
७ जदेवर शिष्यरु	८ श्रीवर्धमानदे-
९ वरु होय्सळ-	१० कारालियदलु
११ अग्रगण्यरु स-	१२ न्यसनदि मुडि(पि)
१३ दरवर सध-	१४ र्मरु कमलदे-
१५ वरु निसिधियं	१६ निरिसिदर्

[इस लेखमें द्राविल संघ-अरुंगल अन्वय-नन्दिगणके शान्तिमुनिकी परम्पराके वादिराजदेवके शिष्य वर्धमानदेवके समाधिमरणका उल्लेख किया है। वर्धमानदेवके गुरुबन्धु कमलदेवने उनको यह निसिधि स्थापित की थी। वर्धमानदेवको होयसल राज्यमें प्रमुख कार्यकर्ताका स्थान प्राप्त था। लेखकी लिपि ११वीं सदी की है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०८]

१७६

वेणगि (जि० बेलगांव, मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

[इस लेखकी लिपि ११वीं सदीकी है। लेखके समय (रट्ट वंशके) कार्तवीर्य (द्वितीय)का शासन कूण्डि ३००० प्रदेश पर था। इसे जिनेन्द्रपादसरोजभृंग तथा सेननसिंग कहा है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८४ पृ० २४७]

१७७-१७८

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इसमें हनसोगेके तीर्थ-वसदिकी स्थापना रामचन्द्र-द्वारा की जानेका तथा कालान्तरमें शक, नल, विक्रमादित्य, गंग एवं चंगाल्व राजाओं-द्वारा उसकी सहायताका उल्लेख है। प्रस्तुत लेखके समय नागचन्द्रदेवके शिष्य समयाभरण भानुकीर्ति पण्डितदेवने इस वसदिका जीर्णोद्धार किया था। इसी पादपीठके दूसरे लेखमें जयकीर्ति भट्टारकके शिष्य बाहुबलिदेव-द्वारा वसदिके निर्माणका उल्लेख है। इन लेखोंका समय ११वीं सदी प्रतीत होता है। ये आचार्य मूलसंघ देसिगण-पुस्तकगच्छके प्रमुख थे।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५०]

१७९

चिकमगलूर (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

१ स्वस्ति श्रीमतु बूचव्वे-
२ गन्तियर सिप्य नेचटिम-
३ ताय····निसिधिगेय नि-
४ लि····मज वरेद ॥

[यह निषिधि लेख बूचव्वेके समाधिमरणका स्मारक है जो उसके शिष्य नेचतिमतायि-द्वारा स्थापित किया गया था। इसकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६२]

१८०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है। इसमें कोण्डकुन्द अन्वयके मलधारिदेव तथा अन्य आचार्योंका वर्णन है। एक गृहस्थ जैनका भी वर्णन है।]

[रि० इ० ए० १९५५–५६ क्र० १९८ पृ० ३७]

१८१

मद्चिलगम् (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है। किसी जैन मन्दिरके लिए दानशाला, उद्यान आदिकी व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२४–२५ क्र० ३९२ पृ० ५७]

१८२

वेलूर (हासन, मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

१ ····युतं जिनेंद्रप्रगुणि-
२ ····द द्र्पं····सले महे-
३ ········
४ नेय्द्रिवं····नें····
५ पूर्वांकमन् एरुवं····माणद····य
६ महीतलकति मुद्दि····
७ विलोक बुध वोध····माग्य····

८ न्तं द्विविजविमवमं सन्द मासावि वर्म्मं ॥ पतिहितवृत्तियो-
९ लिवन् अप्रतिमन् एनल् द्विविज पद्मं····महीपतियोडने
१० कूडि पोक्कं चतुरं मासावि वर्म्मन····आ नेगल्द भूमि-
११ य मुन्नाल्द्ंगं सले····लाक्षियं माघ्य देनेंताल्दनोडने सगम-
१२ नू आल्द····य्यन्दु वर्म्मं

[इस लेखमें मासावि वर्म्म नामक व्यक्तिके देहत्यागका वर्णन है। अपने स्वामीकी मृत्युपर खेद व्यक्त करनेके लिए उसने सम्भवतः देहत्याग किया था। यह प्रथा होयसल राजाओंके समय रूढ थी। लेखकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मैं० १९४३ पृ० ५९]

१८३

हट्टण (मैसूर)

१२वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा वल्लाल १के समय मरियाने दण्डनायक द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। आचार्य शुभचन्द्रका भी इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९१८ पृ० ४५]

१८४

चिकमगलूर (मैसूर)

शक १०२२ = सन् ११०१, कन्नड

१ सव्वत सकवर्ष १०२२ नेय
२ विक्रमसंवत्सरद फाल्गुन शु (४)
३ सोमवारदंदु द-विन····

४ सनंगेय्दु दिवक्के सुन्दरव(र)सद
५ र्मि मालेयब्बगन्तियप्परो····वि(ने)
६ यमं माडि निसिदिगेय माडि
७ अवर गुड्डु जगमणचारि ब-
८ रेद

[यह लेख फाल्गुन शु० ४, सोमवार, शक १०२२ विक्रमसंवत्सरमें लिखा गया था। एक व्यक्तिके (जिसका नाम लुप्त हुआ है) समाधि-मरणके बाद उसके सहाध्यायी मालेयब्बेगन्ति-द्वारा इस निपिधिकी स्थापना का इसमें उल्लेख है। उसके शिष्य जगमणचारिने यह लेख उत्कीर्ण किया था।]

[ए० रि० मैं० १९३२ पृ० १६१]

१८५

टोंक (राजस्थान)

संवत् ११५८ = सन् ११०२, संस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें आलाक नामक व्यक्तिका उल्लेख है। तिथि वै (शाख) शु० ७, संवत् ११५८ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० ४७२ पृ० ६९]

१८६

होसूर (जि० बेलगांव, मैसूर)

शक १०३० = सन् ११०८, कन्नड

[इस लेखकी तिथि सोमवार, पौष शु० ५, शक १०३०, सर्वधारि संवत्सर, उत्तरायण संक्रान्ति ऐसी है। (रट्ट वंशके) लक्ष्मीदेव-द्वारा एक वसदिके लिए राजधानी वेणुपुरसे कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। यह वसदि लक्ष्मीदेवने ही बनवायी थी।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ ई० क्र० १५ पृ० २४१]

१८७

मुडिगोण्डम् (मैसूर)

शक १०३ (१)=सन् ११०९, कन्नड

[इस लेखमें मुडिगोण्डचोलपुरके नगरजिनालयको हदिनाडुका एक गाँव दान दिये जानेका उल्लेख है। यहाँकी मुख्य मूर्ति चन्द्रप्रभस्वामीकी थी। तिथि शक १०३ (१)]

[रि० सा० ए० १९१० क्र० १० पृ० ५४]

१८८

श्रवणनहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछ-
२ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं स्वस्ति
३ श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल तल-
४ काडुगोण्ड भुजबलवीरगंग विष्णुवर्धन होय्स-
५ लदेवर पिरियरसि चन्तलदेवियरु त्रिभुवनतिल-
६ ....तीर्थद वीरकोंगाल्वजिनालय-
७ द देवर अंगभोगक्कं रिषियराहारदानक्कं त-
८ म्म बप्प पूर्व्वाकोंगाल्व देवर बग बलिबलि वि-
९ ट्ट मन्दगेरेय अतियोलगे कावनहल्लिय तम्म
१० तम्म दुद्दमल्लदेवनु तावुं इल्दु श्रीमूलसंघ
११ देसिगगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमेघ-
१२ चन्द्रत्रैविद्यदेवर शिष्यरु प्रभाचन्द्रसिद्धा (न्तदेव-)
१३ र कालं कर्च्चि धारापूर्वकं माडि स(र्वबाधा-)
१४ परिहारं माडि बिट्ट दत्ति मं(गल महा-

१५ श्री ॥ इद्दन् आवन् ओर्व प्रतिपालिसिद

१६ (क) विलेय कोट्टुं कोलगर्म

१७ गंगेय····

[इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी-द्वारा तथा उसके बन्धु दुद्दमल्ल-द्वारा वीरकोंगाल्व जिनालयके लिए कावनहल्लि ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मूलसंघ-देसिगगणके मेघचन्द्र-त्रैविद्यदेवके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवको दिया गया था।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० १०३]

१८६

अंकनाथपुर (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[इस लेखमें एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए राजा दुद्दमल्ल-द्वारा हेण्णेगडंग नगरसे अय्यवल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है। यह दान प्रभा-चन्द्रदेवको दिया गया था। लिपि ११वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३]

१९०

कण्णूर (मैसूर)

चालुक्यवर्ष ३७ = सन् १११२, कन्नड

[चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के समय चालुक्यविक्रम वर्ष ३७ (सन् १११२) में कालिदासदण्डनाथ-द्वारा कन्नवुरीके पार्श्वनाथ-वसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है। मूलसंघ-देशिगण- पुस्तकगच्छके आचार्य वर्धमानमुनिके प्रशिष्य तथा बालचन्द्रव्रतीके शिष्य अर्हणन्दिबेट्टदेवको यह दान दिया गया था।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २४२]

१९१

जक्कलि (बिजापूर, मैसूर)

चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ = सन् १११६, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ में उत्तरायण संक्रान्तिके समय एक जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए कुछ दानका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२६–२७ क्र० ई० १९६ पृ० १७]

१९२

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

शक १०३७ = सन् १११५, संस्कृत-कन्नड

पहला पत्र

१ स्वस्ति । जयत्याविष्कृतं विष्णोर्वाराहं क्षोभितार्णवं (।) दक्षि-णोन्नतदंष्ट्राग्रविश्रा-

२ न्तभुवनं वपुः ॥ (१) जयति जगति रुढो राजलक्ष्मीनिवासः प्रविजितरिपु–

३ वर्गैर्व्वीकृतोत्कृष्टदुर्गं (:) सकलसुकृतवासो वीरलक्ष्मीविलासो जनितसुजन-

४ रागः श्रीशिलाहारवंशः (॥२) श्रीमत्शिलाहारनरेन्द्रवंशे श्री-कीर्तिकान्ताः कमनी-

५ यरूपाः (।) विख्यातशौर्या बहवो नृपेन्द्राः संपालयामासुरिमां धरि-

६ त्रीं (॥३) तद्वंशे नृपतिर्ब्बभूव जतिगो गोमन्थदुर्गाधिपो मासः श्रीवनितापतिस्सु-

७ चरितो गंगस्य पेर्मानडेस्तस्याभूत्तनयः प्रतापनिलय (:) श्री-नायिमां-

८ को नृपः कर्णाटीकुचकुंकुमांकिततनुर्विद्याधराधीश्वरः (॥४) तस्यात्म-
९ जस्सुपरिवर्धितराज्यलक्ष्मीः प्रादुर्बभूव समुपार्जितपुण्यपुञ्जः (।)
१० चन्द्राह्वयो जगति विश्रुतकीर्तिकान्तस्त्यागार्णवो बुधनुतो नयनामि-
११ रामः (॥५) तस्यापि पुत्रो जतिगो नरेन्द्रो जातः प्रवीरो गज-यूथनाथः (।) तस्या-
१२ त्मजौ गोंकलगूवलाख्यौ जातावुभौ वैरिकुलाद्रिवज्रौ (॥६) तद्-गोंकलस्य तनुजो रिपुदन्ति-
१३ सिंहः श्रीमारसिंहनृपतिर्मरुवक्कसर्पः (।) प्रादुर्बभूव समरां-गणसूत्र-
१४ धारो विख्यातकीर्तिरिह पण्डितपारिजातः (॥७) तस्याप्रसूनुर्जग-देकवीरो वी-
१५ रांगनाबाहुलतावगूढः कीर्तिप्रियो गूवलदेवनामा बभूव भूपाल-
१६ वरो नरेन्द्रः (॥७) तस्यानुजस्सकलमंगलजन्मभूमिरासीन्नृपाल-तिलको भुवि भोज-
१७ देवः (।) प्रोत्तुंगवीरवनिताश्रयबाहुदंडश्चंडारि-मंडलशिरोगिरि-वज्रदंडः (॥९)

दूसरा पत्र : पहला भाग

१८ श्रीमत्कदंबांबरतिग्मरश्मेश्शिरस्सरोजं खलु शान्तरस्य (।) पूजां प्रचक्रे स च चक्रवर्तिश्रीविक्र-
१९ मादित्यनृपेंद्रपादे (॥१०) किं वर्ण्यते जगति वीरतरः प्रसिद्धः कोपात्तु कोंगजनृपोपि-
२० पपात यस्य (।) सूर्यान्वयांबररविस्स च बिज्जणोपि चक्रे गृहं सुरपतेर्भुवि य-
२१ स्य कोपात् (॥११) यत्प्रतापप्रदीपेस्मिन् कोक्कलश्शलभायितः (।) पलायिता न गण्यन्ते सोयं

२२ भोजनृपालकः (॥१२) वेणुग्रामद्वानलो विजयते वैरीभकण्ठीरवो गोविंदप्रलयान्त-

२३ कः शिखरिणो वज्रः कुरंजस्य च (।) भोजः स्वीकृतकोंकणो भुजबलात् तद्भिन्नमोद्बन्ध-

२४ कृत् सोयं कर्णदिशापटो रिपुकुभृद्दोर्दण्डकण्डूहरः (॥१३) तस्यानुजातो गुणराशि-

२५ रासीत् वल्लालदेवो जितवैरिभूपः (।) जीमूतवाहान्वयरत्नदीपो गंभीर-

२६ मूर्तिर्भुवि शौर्यशाली (॥१४) अजनि तदनुजातस्तिग्मरश्मि-प्रतापो दिविजयतिवि-

२७ भूतिस्सर्वलक्ष्मीनिवासः (।) कृतरिपुमदभंगो राजविद्याप्रसंगो भुवनवि-

२८ नुतमूर्तिर्गण्डरादित्यदेवः (॥१५) चक्रे चालुक्यचक्रेशो विक्रमा-दित्यवल्लभः (।) निदर्श-

२९ कमलङ्क इत्याख्यां गण्डरादित्यभूपतेः (॥१६) धन्यास्ते मान-वास्सर्वे धन्याश्च मृगजात-

३० यः (।) स देशस्सफलो यत्र गण्डरादित्यभूपतिः (॥१७) यत्-खड्गाद्भुनर्तांघ्रघा-

३१ तचकितस्तत्कूण्डिदेशाधिपो दण्डब्रह्मनृपो जगाम सदनं संसेव्य-मानं सुरै-

३२ स्त्यक्त्वा राष्ट्रमतीवरम्यमतुलां लक्ष्मीं भुजोपार्जितां सोयं गण्डर-देवम-

३३ ण्डलपतिस्संशोभते भूतले (॥१८) रत्नानि यत्नेन ददाति तस्मै रत्नाक-

३४ रो भंगभयाज्जडात्मा (।) आपूर्य सम्यक् सततं वहित्रं सूक्ष्माणि

३५ वासांसि हयाश्च तस्मै (॥१९) किमिह बहुभिरुक्तैरल्पगर्भैर्वचोभिर्भुवन-

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

३६ विदितवीरः क्रूरसंग्रामधीरः (।) अपरनृपतिकोशं देशमत्यन्तशोभं यदि स कुपितचित्तः

३७ कारयत्यात्मकीयं (॥२०) समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरः तगरपुरवरा-

३८ धीश्वरः । श्रीशिलाहारनरेंद्रः । जीमूतवाहनान्वयप्रसूतः सुवर्णगरुड-

३९ ध्वजः । मवक्कशसर्पः । अय्यनसिंहः (।) रिपुमण्डलिकभैरवः (।) विद्विष्टगजकण्ठी-

४० रवः । गणिकामनोजः । हयवत्सराजः । शौचगांगेयः । सत्यराधेयः ।

४१ इडुवरादित्यः रूपनारायणः । कलियुगविक्रमादित्यः । शनिवार-

४२ सिद्धिः । गिरिदुर्गलंघनः श्रीमन्महालक्ष्मीलब्धवरप्रसादादिसमस्तराजाव-

४३ लीविराजितः श्रीमन्महामण्डलेश्वरः श्रीगण्डरादित्यदेवः श्रीमद्वलय-

४४ वाडशिबिरे सुखसंकथाविनोदेन राज्यं कुर्वाणः । सप्तत्रिंशदुत्तरसह-

४५ स्रेषु शकवर्षेषु १०३७ अतीतेषु मन्मथसंवत्सरे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे ।

४६ अष्टम्यां बुधवारे मिरिंजदेशे । मिरिंजेगम्पणमध्ये । अंकुलगे बोप्पे-

४७ यवाड इति ग्रामद्वयं आदगेनामग्रामस्य प्रविष्टं कृत्वा तत्र

४८ मारुवण त्यक्त्वा तत्रत्यनागगावुण्डा यदि नायकत्वं शरी-

४९ रजीवितार्थं सुवर्णं न ददाति यदि नायकत्वं नेच्छन्ति स्वेच्छया तिष्ठन्ति त-
५० दा कोद्देवणं नास्ति । एवमनेन क्रमेण ० श्रीमत्पवित्रेत्र निगुंव-

तीसरा पत्र

५१ वंशे जातः पुमान् होरिमनामधेयः (।) कीर्तिप्रियः पुण्यधनः प्रसिद्धः श्री-
५२ जैनसंघांवुजतिग्मरश्मिः (॥२१) तस्यात्मजोभूदिह वीरणाख्यस्त-स्यानुजोभू-
५३ दरिकेसरीति (।) तद्वीरणस्यापि तनूभवोयं वभूव कुंदातिरिति प्रसिद्धः (॥२२)
५४ तस्यानुजस्सुपरिपालितवन्धुवर्गः श्रीनायिमो जिनमतांवुधिचं-
५५ द्र गुपः (।) त्यागान्वितस्सुचरितस्सुजनो वभूव प्रख्यातकीर्ति-रिह धर्मप-
५६ रः प्रसिद्धः (॥२३) तस्यापि वीरः सुजनोपकारी नोलंवनामा तनयो वभूव (।)
५७ श्रीगण्डरादित्यपद्माब्जभृंगो धर्मान्वितो वैरिमतंगसिंहः (॥२४) तस्मै
५८ समस्तगुणालंकृताय निगुंवकुलकमलमार्तण्डाय । सुवर्णम-
५९ स्थोरगेंद्रध्वजविराजिताय सम्यक्त्वरत्नाकराय पद्मावतीदेवी-लब्धवर-
६० प्रसादाय नोलंवसामन्ताय सर्वनमस्यं सर्ववाधापरिहारं पुत्र-
६१ पौत्रकमाचन्द्रार्कं दत्तवान् ०

[यह ताम्रपत्र चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ)के माण्डलिक शिलाहार राजा गण्डरादित्यदेव-द्वारा कार्तिक शुक्ल ८, वुधवार, शक १०३७ के दिन दिया गया था। निगुंव वंशके सामन्त नोलंवको मिरिंज

प्रदेशके अंकुलगे तथा बोप्पेयवाड इन दो ग्रामोंका अधिकार अर्पण करनेका उल्लेख इसमें किया है। नोलंबकी वंशावली इस प्रकार थी-होरिम-बीरण-कुंदाति - उसका बन्धु नायिम-नोलंब। नोलंबको सम्यक्त्वरत्नाकर तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं।]

[ए० इं० २७ पृ० १७६]

१९३

होले नरसिपुर (मैसूर)

१२वीं सदी : पूर्वार्ध (सन् १११५), कन्नड़

[इस लेखमें महामण्डलेश्वर वीर कोंगाल्वदेव-द्वारा मूलसंघ-देसिगण-के मेघचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवके उपदेशसे सत्यवाक्य जिनालयके निर्माणका तथा उसे हेण्णेगडलु ग्राम दान देनेका उल्लेख है। (समय लगभग सन् १११५।)]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३]

१९४

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १११५, तमिल

[यह लेख चोल सम्राट् कुलोत्तुंग राजकेसरिवर्मन्के ४५वें वर्षमें लिखा गया था। तिरुप्परम्बूरकी ग्रामसभा-द्वारा तिरुक्काट्टाम्पल्लि आल्वार जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि विक्रय किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३५]

१९५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् (चिंगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष ४६ = सन् १११६, तमिल

[यह लेख राजकेसरिवर्मन् कुलोत्तुंग चोलके ४६वें राज्यवर्षका है।

इसमें तिरुप्परुत्तिकुन्रुके ऋषिसमुदायके लिए एक नहर बनवानेके लिए कैवडुप्पूरकी ग्रामसभा-द्वारा कुछ भूमि करमुक्त रूपमें बेची जानेका उल्लेख है। यह लेख त्रिकूटबसदिके छतमें लगा है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८२ पृ० ३७]

१९६

पुडुप्पट्टु (चिंगलपेट, मद्रास)

११वीं-१२वीं सदी, तमिल

[स्थानीय जैन मन्दिरके मण्डपके एक स्तम्भपर यह लेख है। अस्पष्ट और अधूरा है। इसमें चोल राजा परकेसरिवर्मन्का उल्लेख हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० ७९ पृ० १२]

१९७

अनमकोंडा स्तम्भ लेख (वरंगलके समीप, आन्ध्र)

चालुक्य विक्रम वर्ष ४२ = सन् १११७, कन्नड

पूर्वकी ओर

१ श्रीमज्जिनेंद्रपदपद्मम-
२ शेषभव्यानव्यात् त्रिलोकनृ-
३ पतींद्रमुनींद्रवंद्यं निः-
४ शेषदोषपरिखंडनचंडका-
५ ण्डं रत्नत्रयप्रभवमुद्भव-
६ गुणैकवानं॥(१)स्वस्ति समस्त-
७ भुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ-
८ महाराजाधिराजपरमेश्वर-
९ परमभट्टारक सत्याश्रयकु-
१० लतिलकं चालुक्याभरणं श्रीम-
११ त्रिभुवनमल्लदेवर विजयरा-
१२ ज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धं-
१३ मानमाचंद्रार्कतारं सलुत्त-
१४ मिरे। तत्पादपद्मोपजीवि समधि
१५ गतपंचमहाशब्द महामं(ड)
१६ लेश्वरनन्मकुंडापुरवरेश्वरं
१७ परममाहेश्वरं पतिहितच-
१८ रितं विन(य)विभूषणं श्रीम-

१९ न्महामण्डलेश्वरं काकतीवेत(भू) २० पालकुलक्रमागतं तदीयरा-
२१ ज्यभरनिरूपितमहामात्यप- २२ दवीविराजमान मानोन्नत प्र-
२३ भुमंत्रोत्साहशक्तित्रयसं- २४ पन्नना(गि)॥घनशौर्याटोप(दिं)
२५ मान्तनद् महियेयिं चारुचारि- २६ त्रदिं(दो)ल्पिन तेल्पिं सत्क-
२७ लदिनो)द्विदाश्चर्य(सौं)- लाकौश-

उत्तरकी ओर

२८ दर्यदिंद(र्थि)निकायप्रार्थितार्थ-
२९ (प्र)द वितरण(वि)ख्यात- ३० (वि)नुतं श्रीकाकतीवेतरसन
नादं धरित्री सचि-
३१ वं वैज दंडाधिनाथ ॥(२)अगणितशौर्य-
३२ दिं नेगल्द काकतिवेतनरेंद्रनं जगं
३३ पोगले चलुक्यचक्रिचरणं सले का-
३४ र्णिसि तत्प्रसाददिं बगेगोले सडिवसा-
३५ यिरमनालिसि(हु)दूधयशो- ३६ धिनाथनं पोगलदरारो मंड(लि)
३७ ककाकतिवेतन मंत्रि वैज्जन ॥- ३८ तंगं विकसितकंजातानने या-
(३)आ-
३९ कमव्वेगं जनियिसिदं ख्यातं ४० धरेयोलु पेर्गडे बेतं मं-
४१ त्रिजनमकुटचूडारत्न ॥(४) ४२ आतं मां(धा)तरामोपम-
४३ नेनिसिद श्रीकाकतीप्रोलभू- ४४ पख्यातामात्यं विवेकाग्रणि
४५ सकलकलाकोविदं सच्चरित्र- ४६ प्रीतं साहित्यविद्यानिधि बु-
४७ धविबुधोर्वीरुहं सत्यधर्मो- ४८ पेतं स्वग्रामदोल् माडिदनतिमु
४९ ददिं हन्तु देवालयंगलु ॥(६) ५० अतिशयजैनधर्मसमयोचित-
५१ शासनदेवि भारतीसति शशिबिंबव(क्त्र)-
५२ दशनच्छदे शुद्धसुवर्णकुंभसन्नुतत-

५३ नुवर्णपीवरपयोधरि मैल (म या-)

५४ कमांबिकासुततद्मात्यवेतद्व-

५५ दयेश्वरि निश्चललक्ष्मि माविसलु ॥(६)

पश्चिमकी ओर

५६ पदर्द्दिदालुलितालकं वेरेग (मं) गो-

५७ पांगमं पंचरत्नद्रिनांगोचितमागे ५८ निर्मिसि सुरस्त्रीभाग्यसौभाग्य-

५९ सम्म (इ) सौंदर्यमनाय्डु तीवि ६० पदेदं कंजातसंजातनी सु(दती)-

६१ रत्नमनंतु मैलमननारार् वण्णिस-६२ लोकदोल् ॥(७) नुतरूपवति कला (व)-

६३ ति रतिरति श्रीसतिवटान्तर्की- ६४ णीसतियेंदमात्यवेतन सतियं सति वा-

६५ क्षितियेल्लमेय्दे नुतियिसुतिकुं- ६६ मुदर्द्दिदेने नेगल्द रमास्पदे मैं- ॥(८)

६७ लम सक्तिर्यिदे माडिसि तन- ६८ यकरमागिरलु वेट्टद (मं) गण गम्युद-

६९ कद्लालयबसदियनेसेयलु ॥(९)७० अदकं नित्यपूजेगं धूपदीप (नि) वेद्य-

७१ क्कं पूजारिगाहा (र) वस्त्राद्रि- ७२ श्रीमत्रिभुवमल्लमंडलिकभू- गलगं (पा)-

७३ लपुत्रनप्प काकतियपोलरसन रा- ७४ ज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्ध मानमा-

७५ गमम्मकुन्देयलाचंद्रार्कतारं स- ७६ लुत्तमिरे श्रीमच्चालुक्य- विक्रमवर्ष-

७७ द नाल्वत्तेरडेनेय हेमलंबि(सं)- ७८ वत्सर पौष्यबहुल १५ सोमवा-
७९ रदंदिनुत्तरायणसंक्रांतिनिमि- ८० त्तं धारापूर्वकमागि तन्न वल्लभनप्प
८१ वेतन-पेर्गडे तन्न पेसरिंद माडि- ८२ सिद केरेयेरिय केलगनेरडुं
८३ हासरेगल्लुगल नडुवण गर्द(य) ८४ मत्तरेरडुं मत्तमाकेरेय प-
८५ डुवण नेल दोणेय तंकलेरेय ८६ मत्तर्नाल्कुं करंवं मत्तरा-
८७ मं कोट्टु निरिसिदलीशासनगंम ॥

दक्षिणकी ओर

८८ मत्तमी धर्मक्के तेल्लटियागे ॥
८९ अ(श्वा) दन्तिसहस्त्राणि दशको- ९० टी च वाजिनामनन्तं पादसं-
९१ घातमित्येते माधववर्म- ९२ वंशोद्भवरप्प श्रीमन्महा-
९३ मण्डलेश्वरनुग्रवा (डि)- ९४ य मेलरसं तन्ना (लि) के-
९५ योलंगल्ल कूचिकेरे- ९६ येरिय केलगे कालुवेय
९७ मोदल गद्देय मत्तरोन्दा स- ९८ मीपदले करंवं मत्त-
९९ रु इत्तुमनित्त ॥ निरुतमि- १०० दनलिदवं सासिरकवि (ले)-
१०१ यनलि (द) पापमं (पो) द्दुं- १०२ गुमादरदिं रक्षि (सि) दं सा-
१०३ सिरयज्ञद फलमनेयदि १०४ शुम (मं) पडेगु॥ (१०) स्वद-
१०५ त्तां परदत्तां वा यो हरेत १०६ वसुंधरां । षष्टिर्वर्षसहस्रा-
१०७ णि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ (११) १०८ बहुभिर्वसुधा दत्ता राजभिस्स-
१०९ गरादिभिः । यस्य यस्य य- ११० दा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ (१२)
१११ अरिकु वसदिय कसंगलेव वो- ११२ यपद्दंगे पाग वोंदु ॥

[यह स्तम्भ चालुक्यविक्रमवर्ष ४२ (सन् १११७) में पौष अमावस्याको उत्तरायण संक्रान्तिके समय स्थापित किया था। उस समय

चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्ल विक्रमादित्य (षष्ठ) के माण्डलिक काकतीय वेतका पुत्र पोलरस (प्रोल) सब्बि प्रदेशपर शासन कर रहा था। वेतका महामात्य वैज था। वैजकी पत्नी याकमब्बे थी तथा पुत्र वेत पेर्गडे था। वेत पेर्गडे प्रोलका मन्त्री था। इसकी पत्नी मैलम थी। इसने अन्मकुन्द पहाड़ीपर कदललायदेवीका मन्दिर बनवाया तथा उसे उक्त तिथिको कुछ ज़मीन दान दी। इसी मन्दिरको उग्रवाडिके मेलरसने जो माधववर्माके कुलमें उत्पन्न हुआ था—भी कुछ ज़मीन दान दी। कदललायदेवी सम्भवतः पद्मावतीका नाम है। इस समय यह मन्दिर ब्राह्मणोंके अधिकारमें है तथा वे उसे पद्माक्षी देवी कहकर पूजा करते हैं।]

[ए० इं० ९ पृ० २५६]

१९८

कोविलंगुलम् (रामनाड, मद्रास)

सन् १११८, तमिल

[एक भग्न मन्दिरके दक्षिण तथा पश्चिमकी आधारशिलापर यह लेख त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तुंगचोलदेवके ४८वें वर्षका है। कुम्बनूरके २५ जैनों-द्वारा मुक्कुडैयारके लिए एक मण्डप तथा सुवर्ण विमान बनवानेका इसमें निर्देश है। कुम्बनूर गाँव वेम्बुवलनाडु प्रदेशके शेंगाट्टिरुक्कै विभागमें था। इसी लेखमें त्रिछत्राधिपति देव तथा एक यक्षीकी ताँबेकी मूर्तियोंकी स्थापनाका भी उल्लेख है। इस मन्दिरके लिए ज़मीन और प्याऊके लिए भी दान दिया गया था। इस लेखकी तमिल भाषा साहित्यिक दृष्टिसे बहुत अच्छी है।]

[इ० म० रामनाड १७]

१९९

ऐहोले (विजापुर, मैसूर)

चालुक्य विक्रमवर्ष ४४ = सन् १११९, कन्नड़

[यह लेख त्रिभुवनमल्लदेव विक्रमादित्य षष्ठके समय वैशाख शु० ३,

सोनवार, विकारी संवत्सर, चालुक्य विक्रमवर्ष ४४ के दिन लिखा गया था। इसमें जेमपार्य तथा जातियक्कके पुत्र केशवय्य सेट्टिका उल्लेख है जिसने स्थानीय जिनमन्दिरमें पूर्व और पश्चिमकी ओर वसदियाँ, एक पट्टशाला तथा कूपका निर्माण कराकर लोकपाल-मूर्तियोंकी स्थापना की थी और देवपूजाके लिए कुछ भूमि आदि दान दिया था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० २१९]

२००

कुमारवीडु (मैसूर)

शक १०४४=सन् ११२२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं (।) जीयात्

२ त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥) स्वस्ति समधिग (त) पंच-

३ महाशब्द महामण्डलेश्वरं कुलोत्तुंगचोलभुजब-

४ लवीरगंगहोय्सलदेवरु गंगवाडि तोंभत्तरु-

५ सासिरमनेकच्छत्रदिं तलकाडलिद्दु सुखसंकथावि-

६ नोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे शकवर्ष १०४४ ने-

७ य प्लवसंवत्सरद मार्गसिर सुध ५ सोमवार-

८ दंदु महाप्रधान दण्डनायक गंगपय्य-

९ गलु तम्म सोवणदण्डनायकंगे हादरिवागिल-

१० वीडिनलु परोक्षविनयक्कं माडिसिद वसदिगे

११ बिट्ट दत्ति मैसेनाड चन्द्रवनहल्लियुं वीडिद

१२ मूडण कम्माडिय केरेय गद्दे ३० सलगेयुं

१३ आ केरेयिं बडगलु एरिय बेद्दले बेलि २

१४ आ केरेय हडुवण कट्टद केलगे तोंट

१५ ५०० गुलियुं वीडिन २ गाणद एण्णेयुं

१६ मोडरिंगे सलुवुदु ॥ वसदिगे बिट्टीधर्मम-
१७ नोसदु करं सलिसुतिर्द्दगंक्कुं पुण्य असव-
१८ मद्दि कॅडिमिद्दवर्गलु पसुवुं ब्राह्मण-
१९ न कॉद्द वधे ममनिसुगु ॥ स्वदत्तां पर-
२० दत्तां वा यो हरेत वसुंधरां षष्टिर्वर्षस-
२१ हस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि (:)

[यह लेख होयसल राजा विष्णुवर्धनके राज्यमें मार्गशिर शु० ५, सोमवार, शक १०७४, प्लव संवत्सरके दिन लिखा गया था। दण्डनायक गंगपय्य-द्वारा सोवणदण्डनायककी स्मृतिमें द्वादरवागिलु ग्राममें एक जैन मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे दिये गये दानका उल्लेख इस लेखमें किया है।]

[ए० रि० मै० १३७८ पृ० १६६]

२०१

बेलूर (मैसूर)

१२वीं सदी – पूर्वार्ध, कन्नड

१ पुणिसचमूपनेम्बेसेव शासनवाचकचक्रवर्तिगिन्तेनिसलोदं पोगर्ते
ननगागिरं पुट्टिद चामराज नाकण कुमरय्यनेम्ब रत्नत्रयमू-
२ तिंगे पुत्रनोप्पिद पुणिसमदण्डनाथनुदितोदितचामचमूपसंभवं (।)
नमः सिद्धेभ्यः (॥)

[यह लेख किसी जैन मन्दिरके स्तम्भपर था। वह स्तम्भ बादमें केशवमन्दिरमें लगाया हुआ पाया गया। इसमें सेनापति पुणिस तथा उसके तीन पुत्र चामराज, नाकण तथा कुमरय्यकी प्रशंसा की है। यह पद्य अन्य लेखोंमें भी पाया गया है। पुणिस राजा विष्णुवर्धनका जैन सेनापति था।]

[ए० रि० मै० १३३४ पृ० ८३]

२०२

अरताल (जि० धारवाड़, मैसूर)

शक १०४५ = सन् ११२३, कन्नड

[यह लेख चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका है। उस समय वनवासि तथा पानुंगल प्रदेशोंपर कदम्ब कुलका महामण्डलेश्वर तैलपदेव शासन कर रहा था। मूलसंघक्राणूरगणके कनकचन्द्रके शिष्य गंगर बम्मि-सेट्टिने कोन्तकुलि विभागके प्रमुख नगर पयिट्टणमें एक मन्दिर बनवाया। बम्बिसेट्टि बट्टकेरेका निवासी था। इस लेखकी तिथि पौष अमावास्या, सूर्यग्रहण, रविवार, शक १०४५, शुभकृत् संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४३-४४ एफ् १]

२०३

हिरेसिंगनगुत्ति (विजापुर, मैसूर)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[इस खण्डित लेखका समय चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य षष्ठ) के राज्यका है। देसिगगण-पुस्तक गच्छके आचार्य बालचन्द्रका इसमें उल्लेख है। किसी मन्दिरके लिए उन्हें कुछ भूमि अर्पण की गयी थी।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० २६२]

२०४

तोगरकुण्ट (अनन्तपुर, आन्ध्र)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लके समय एक सूर्यग्रहणके अवसरपर लिखा है। इसमें तोगरकुण्टेके चन्द्रप्रभदेवबसदिके लिए दण्डनायक

कोम्मणार्य-द्वारा कुमारतैलपदेवकी पुण्यवृद्धिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मूलसंघके पद्मनन्दिदेवके शिष्यको अर्पित किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९२५–२६ क्र० ३४४ पृ० ६६]

२०५

उगरगोल (बेलगाँव, मैसूर)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख जिनशासनकी प्रशंसासे प्रारम्भ होता है। चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके किसी महाप्रधानका इसमें उल्लेख है। लेख खण्डित है।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ ई० क्र० ८२ पृ० २४७]

२०६

सिरसंगि (जि० बेलगाँव, मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

[चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका यह लेख है। तिथि पौष शु० १३, रविवार, उत्तरायण संक्रान्ति ऐसी है। ऋषिशृंगीके छह गावुण्डों-का इसमें उल्लेख है। वाचि गावुण्ड तथा अन्य व्यक्तियों-द्वारा किसी बसदिको जमीन आदिके दानका उल्लेख है। गण्डवि (मुक्त) सिद्धान्तदेव, अत्तिमब्बे, देवरस, तथा कलिदेवसेट्टिका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ ई० क्र० ७६ पृ० २४६]

२०७

हूलि (जि० बेलगाँव, मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-कन्नड

१ (श्रीमत्परमगंभी)रस्याद्वादामोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्य-

नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥(१) श्रीवीरनाथस्य गणेश्वरोभूत् सुधर्मनामा प्रविधूत····

२ यापनीये सं(घे) पुनस्तत्र च चारुमार्गे ॥(२) कण्डूरुविख्यातगणे बभूवुः पुरा मुनींद्रा बहवो महा····

३ ····दैकसिंहो मुनीश्वरो बाहुबली बभूव ॥(३) जयतु शुभचंद्रदेवः कण्डूर् गणपुंडरीकवनमार्तंडश्चंडत्रिदंड····

४ ····पारगो बुधविनुतः ॥(४) नुतयापनीयसंघप्रतीतकण्डूर् गणाब्धि-चंद्रमरेंदी क्षितिवलयं पोगल्विनमुंनतिवेत्तर् मोनि (दे-

५ वदिव्यमुनींद्र) रु ॥(५) श्रीमाघनंदिव्रतिनाथमोडे कामारिमोमो (र) गवैनतेयं । नम्रावनीपालकविद्धकीर्ति सि(द्धां)त त(त्वा)र्णवपूर्णचं(द्रं) ॥(६)

६ (स्वस्ति । समस्तभुव) नाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभं महाराजाधि-राज परमेश्वरं परमभट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-

७ (देवर विजय) राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्रार्कतारं-बरं सलुत्तमिरे । क्षितिगेल्लं तन्न तेजं तोलगि बेलगे तन्नाज्ञे चोला (वनी)-

८ ····लु नर्तिसुतिरे सले तन्नापुं लोकक्के कल्पक्षितिजातं कूडे पणुतंतिरे कलियुगदोलु पुट्टियुं राघवादिक्षितिपालानीकरोलु पा····

९ ···(विक्र)मादित्यदेव ॥(७) जलधिपरीतभूतलवधूटिगे कुंतलदंददिं मनंगोलिसुवुदेंतु नोर्पडमे कुंतलदेशमदक्के चिन्नपूगल तेरदंते रंजि····

१० ····ट्ट मौक्तिकावलिय पोदल्द हारद बोलिपुंदु नोर्पडे पूलि लीलेयिं ॥(८) मत्तं । पोंगलसंगलिंदेसेव देवगृहंगलिनोप्पुवेत्त वारांग-नेयर्कल्····

११ ····पोद) लूद वेद्गंगले मूर्तिगोंडुदेनिर्पद्दलोप्पुव विप्ररिंदे ग्रामंगल चक्रवर्तियेसेदिट्टुडु नोपडे पूलि लीलेयिं ॥(९) मत्तमल्लिय विप्रर महिमेये (न्तेंदोडे)।

१२ ····पिंठनेनिप श्रीकृष्णदेवं सविस्तरदिं तन्न सहस्रमप्प पेसरं रूपागिरलु नाडि साक्षरवेदाक्षरजीवमंत्रचयमं तीविट्ट पुलीमहापुर····

१३ ····(एलेंदर्) सासिर्वरिंतुविंयोलु ॥(१०) स्पमार्तातमेनिप्प पेंपु गुणमौदार्यं चलं साहसं जपहोमं नियमं महोन्नतिकसत्यं शौचमा····

१४ ···शास्त्रदोदविं श्रीकेशवादित्यदेवपादांभोजवरप्रसादरेंदर् सासिर्वरिंतुविंयोलु ॥(११) हरि किलेनेलेयिं चलिसिद हरिवद्वेटिं

१५ ····क्केंडु निराकरिपुदु सासिर्वरचितदे चलितवचनं ॥(१२) स्वस्त्यनवरतविनमद्रम (२) राजत्किरीटकोटिताडितजिनेंद्रचरणारविंदम—

१६ ···(चल) दुत्तरंग। वीरविद्विष्टसंहरणप्रतापकार्तिकेय। गंगगांगेय। चपलवैरिवाहिनीसंहननप्रतापलंकेश्वरं। कोलालपु(रवराधीश्वरं।)

१७ ····(पुंतें) दोडे। मंडलिकजगदलं माकोंडर जवनार्थिजनके कल्पमहीजं गंडर तीर्थं सितगर गंडं माकोंल भैरवं पिट्टनृपं ॥(१३) मत्तं····

१८ ····पुट्टिदरोप्पे पेर्मनृप विज्जनहीपति कोनिभूपनुं जेट्टिग नोर्मनुं नेगद (ल्द) नैललदेवियुनंते रूपिनिंधिट्टलवागि···

१९ ····॥(१४)····लिंकदंकदरिभूभुजरं तवे कोंडु गूर्जराष्ट्रद जयसिंहदेव धरणीश्वरनं निजराज्यलक्ष्मियोलु पडु····

२० ····पोगलुतिर्पुदु विज्जलभूमिपालनं ॥(१५) मत्तं। रेचकनिमंडि कन्हरदेवंगतक्कनंते भूनुते सिरिया (देवि)

२१ ....॥(१६)....दु दळतायवनेयेंदु बिज्जलनृपं चउवीसतीर्थरकलं मुददिं माडिसि कल्वेसं समेसि....

२२ ....दिं बिट्ट—वेळवळदोकिंतोप्पिप्प पेर्गुम्मियं ॥(१७) हरळारु-बाडकंसि....

२३ ....चालुक्यचक्रवर्ति पेर्माडिरायन् कय्योळ्....

२४ ....माडिसिद माणिक्यतीर्थ....

[यह लेख चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यकालका है। इसमें प्रथम सुधर्म गणधरकी परंपरामें यापनीय संघ – कण्डूर् गणके बाहुबली, शुभचंद्र, मौनिदेव तथा माघनंदि इन आचार्योंका उल्लेख है। इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है। अनन्तर एक पूलि नगरके पिट्ट नृपका उल्लेख है जो गंगवंशमें उत्पन्न हुआ था। इसके चार पुत्र थे – पेर्म, बिज्जल, कीर्ति, गोर्म – तथा एक कन्या थी – मैललदेवी। बिज्जलके सम्बन्धमें गूर्जराष्ट्रके जयसिंहका उल्लेख किया है किन्तु इसका ठीक अर्थ स्पष्ट नहीं क्योंकि यहांके कई अक्षर घिस गये हैं। इसी तरह कृष्णराजकी बहिन रेवकनिर्मडिकी एक श्लोकमें सिरियादेवीसे तुलना की है उसका पूर्वापर सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है। अनन्तर कहा है कि बिज्जलने एक जैन मन्दिर बनवाया तथा उसे पेर्गुमि ग्राम दान दिया। लेखके अन्तिम भागमें माणिक्यतीर्थका उल्लेख है। इसका सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है।]

[ए० इं० १८ पृ० २०१]

२०८

बेलवत्ति (धारवाड, मैसूर)

१२वीं सदी - पूर्वार्ध, कन्नड

[इस लेखमें सवणूरके बम्मिसेट्टि-द्वारा एक ब्रह्मजिनालयके निर्माणका उल्लेख है। इस जिनालयके लिए बम्मिसेट्टिने बेलवत्तिके ३०० महाजनों-

को कई दान दिये थे। इस स्थानके कुछ आचार्योंके नाम भी लेखमें दिये हैं। तिथि आषाढ़ शु० प्रतिपदा, सोमवार, उत्तरायणसंक्रान्ति, शोभकृत् संवत्सर ऐसी दी है। उस समयके चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके राज्यका उल्लेख किया है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २१६]

२०९

बैल हॉंगल (बेलगाँव, मैसूर)

११वीं - १२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लदेवके समयका है। शक वर्षके अंक अस्पष्ट हुए हैं। इसमें रट्टवंशीय महासामन्त अंक, शान्तियक्क तथा कूण्डि प्रदेशका उल्लेख है। अनन्तर यापनीयसंघ- मैलाप अन्वय-कारेयगणके मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवसूरिका उल्लेख है। यह सम्भवतः किसी जिनमन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० ३३ पृ० १२]

२१०

गोलिहल्लि (जि० बेलगाँव)

सिद्धेश्वरमन्दिरके समीप शिलापर

१२वीं सदी, कन्नड

[मैललदेवी तथा जयकेशिन्के पुत्र वीर पेर्माडि तथा विजयादित्यके शासनका इस लेखमें निर्देश है। अंगडिय मल्लिसेट्टि-द्वारा किरुसंपगाडिमें बनवाये गये जैन मन्दिरके लिए भूमिदान देनेका इसमें उल्लेख है। मूलसंघ, बलात्कारगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य वासुपूज्य भट्टारकको यह दान दिया गया। वासुपूज्यकी गुरुपरम्परा कुछ विस्तारसे दी है। लेखके समय फाल्गुन शु० १५, गुरुवार, मन्मथ संवत्सर था तथा चालुक्य भूलोकमल्ल सम्राट् थे।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५]

२११
वरांग (मैसूर)
१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[यह लेख आलुप राजा कुलशेखरके समयका है। इसमें माघवचन्द्र, प्रभाचन्द्र, तथा श्रीचन्द्र इन आचार्योंका उल्लेख किया गया है।]

[रि० आ० स० १९२८-२९ पृ० १२७]

२१२
दडग (मांड्या, मैसूर)
१२वीं सदी – पूर्वार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं (।) जी-
२ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥)
३ कुलरत्नाकरदोलु कौस्तुभादिगळ वोलु पलरुं लोकोपकारपरिणतर् एकीकृ-
४ तसकलराजगुणरु ···सकलजनोक्ति यादवकुलदोलु पुलि पायें
५ सलेयिं पुलियं पोय् सल येने पोय्सुदरिं पोय्सणवेसरवनिंद वादुद-
६ लिंलदे···नयं प्रदारण····नना····युरदिं जग-
७ नयनिसि पोरेदं विनयादित्यं समस्तभुवनस्तुत्यं आतंगतिमहिम-
८ समाख्यातकीर्ति सन्मूर्तिमनोजात मर्दितरिपुनृपजातं तनुजात-नादन् एरेयंग-
९ नृपं ॥ च····धर्मार्थकामसिद्धिवोल् अवनीवल्लभर् आतन तन-
१० यर् बल्लालं विट्टिदेवन् उदयादित्यं ॥ मूवर्- तनयरोळं तां भाविसे म····

११ य्यमनागिरुं सद्गुणसद्भावदिन् उत्तमनादं विनुतविनयद्भून-जिष्णु वि-
१२ ष्णुमहीशं । स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामंडले-
१३ श्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलांबरद्युमणि सं-
१४ म्यक्त्वचूडामणि मलपरोलुगण्डं गण्डभेरुण्ड शशकपुरनिवास
१५ वासंतिकादेवीलब्धवरप्रसाद दानसन्मानसंपादितविप्रप्रणामोद
१६ नामादिसमस्तप्रशस्ति सहितं तलकाडु कोंगु नंगलि गंगवाडि नो-
१७ णंबवाडि बनवासे हानुंगलु गोंड भुजबलवीरगंग प्रताप
१८ होय्सणदेवर् पृथ्वीराज्यं गेयुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीविगलप्प ॥ मोम अ-
१९ त्तुंनलवकुशरा माल्केयेनल् अंते पुट्टिये मेरेदर श्रीमन्नमरियाने-
२० युं बहामगुण भरतराजदण्डाधिपरु ॥ करिगति सिंहमध्ये कल-
२१ सस्तनि दोस्सजपुण्यवार्धि मित्रचिरकटाक्षे वलिमुखि वेण्यहि
२२ गेद्दविलाससक्ष्मि भासुरं सुमनोविमाने गुणरत्नयशोहारि को-
२३ तिंगोपति स्थिरसत्वे जक्कियक्कनेने पोल्वर् आर् अमलकान्त तनुवं ॥
२४ बल्लेंशनधीशं चरितार्थं नेगल्द तन्दे मारायर् ॥ तरदमजिन-देव्यमेन्दि
२५ हरियवेयन्तेन्दु नोन्न कान्तेयरोलरं ॥ श्रीमूलसंघ कुण्डकुंदान्व-
२६ य काणूरगण तिंत्रिणिगच्छद जवलिगेय मुनिभद्रसिद्धान्तदेवर शिष्य
२७ मेवचन्द्रसिद्धान्तदेवर्गें श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक मरिया-
२८ नेयुं श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक भरतिमय्यगलुं दड्डिग-
२९ नकेरेय पंचवसदियोलगे बाहुबलिकूटम धारापूर्व-
३० कं माडि कोट्टरु मरियानेसमुद्रद बयलुमं

२१ मलेहल्लिय सुंद्दण किरुकेरेयं अल्लिय होलगुत्त-
२२ गेयुं कोडियहल्लिय सुंद्दण किरुकेरेयं आवेद्दलेय
२३ हिरियकेरेय केलगण अडकेय तोटमुं ॥ अन्तु सर्व्वाय सुद्धवागि देशियगणद बसदि ४ क्कं काणूर्गणद ब-
२४ सदि वोन्दक्कं अन्तु पंच बसदिगे समानवागे इल्लि द्दुट्टि-
२५ द माचिगौडनु कसवगौडनु ॥
२६ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरा षष्टिवर्ष सह-
२७ स्राणि विष्टायां जायते क्रिमि

[इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धनके महाप्रधान दण्डनायक मरियाने तथा भरतिमय्य-द्वारा दड़िगनकेरे स्थानकी पाँच वसतियोंमें बाहुवलि-कूट नामक वसतिका दान तथा कुछ भूमिके दानका निर्देश है। यह दान काणूरगण-तिन्त्रिणिगच्छके मुनिभद्र सिद्धान्तदेवके शिष्य मेघचन्द्रदेवको दिया गया था।] [ए० रि० मैं० १९४० पृ० १५६]

२१३

कम्बदहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी – पूर्वार्ध (सन् ११३०), कन्नड

१ (द्रोह)घरट्ट दण्डनायक गंगराजन मग बोप्पदेवरिगे रूवारि
२ द्रोहघरट्टाचारि कन्नेवसदिमं माडिद ॥ मंगल महाश्री

[यह लेख स्थानीय शान्तीश्वर वसदिके भग्नावशेषोंमें है। यह वसदि दण्डनायक गंगराजके पुत्र बोप्पदेवके लिए द्रोहघरट्टाचारि नामक शिल्पकार-ने बनवायी ऐसा लेखमें कहा गया है। यह कन्नेवसदि अर्थात् निर्माता-द्वारा बनवायी पहली वसदि थी। अतः इसका समय लगभग सन् ११३० है क्योंकि बोप्प-द्वारा सन् ११३३ में हलेविडमें निर्मितआ दीश्वरवसदि विद्यमान है।]

(ए० रि० मैं० १९३९ पृ० १९३]

२१४
मालूर (मैसूर)
सन् ११३०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्य-
२ (नाथस्य शासनं जिन) शासनं ॥ स्वस्ति समस्तभुवना-
३ ····(म)हाराजाधिराजं परमेश्वर पर-
४ ····(सत्या)श्रयकुलतिलक चालुक्याभरणं
५ श्रीम(त्रिभुवनमल्ल)देवर विजयराज्यमुत्तरोत्ताभिवृ-
६ (द्धिप्रवर्धमान) माचंद्रार्कतारं सलुत्तमिरे । समधिगतपंचम-
७ (हाशब्द महामं)डलेश्वरं वनवासिपुरवराधीश्वर त्रिभुवनमा-
८ (संनव चतुराशीतिनग)राधिष्ठितल(लाटलोचन)चतुर्भुजं
९ श्रीजयंतीमधुकेश्वरदेवलब्धवरप्रसादं नामादि-
१० समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं मयू-
११ रवर्मदेव तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महामण्डलेश्वरं
१२ मगर कारगरसर् सान्तलिगेसासिरमुमं दुष्टनि-
१३ ग्रहविशिष्टप्रतिपालनदिनालुत्तिरे ॥ श्रीमूलसंघको-
१४ (ण्ड) कुन्दान्वय काणूर्गणद मेष(पा)षाणगच्छद श्रीप्रभाचं-
१५ द्रसिद्धांतदेवर शिष्य कुलचंद्रपं(डित)देवर गुड्डं(म)-
१६ द्दरायिसेट्टि श्रीमदनादिप्रग्रहार सालियूर सासिर्व-
१७ र ब्रह्मजिनालयद बसदिय निवेद्यक्के भूलोकवर्षद
१८ ५ नेय साधारणसंवत्सरद पुष्य सुद्ध ३ सोमवारद वृत्त····

[यह लेख चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लके ५वें वर्षमें पौष शु० ३ सोमवारको लिखा गया था। उस समय कदम्बवंशीय मण्डलेश्वर मयूरवर्मा-के शासनान्तर्गत सान्तलिगे प्रदेशपर मगर कारगरसर् शासन कर रहा था। उक्त तिथिको सालियूर अग्रहारमें स्थित ब्रह्मजिनालय बसदिको मद्र-

रायिसेट्टिने कुछ दान दिया था। मूलसंघ-काणूरगण-मेषपाषाणगच्छके प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य कुलचन्द्रपण्डित भद्ररायि सेट्टिके गुरु थे।]

[ए० रि० मैं० १९३० पृ० २४५]

२१५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् (चिंगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष १३ तथा १७ = सन् ११२१ तथा ११२५, तमिल

[यह लेख चोल राजा परकेसरिवर्मन् विक्रमचोलके राज्यवर्ष १३का है। इसमें विलशार्की ग्रामसभा-द्वारा त्रैलोक्यनाथजिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि करमुक्त रूपमें बेची जानेका उल्लेख है। इसीके बाद इसी राजाके १७वें वर्षमें तिरुप्परुत्तिकुण्डुकी कुछ भूमि आरम्बनन्दिको बेची जानेका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८१ पृ० ३७]

२१६

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

सन् ११३२, कन्नड

[इस लेखमें गोग्गियवसदिके इन्द्रकीर्ति पण्डितका उल्लेख है। उन्होंने तथा पेर्गडे मल्लियण्ण आदिने वसदिकी भूमिमें घर आदि बनवानेके कुछ नियम बनाये थे। हेमदेव-द्वारा वसदिके पुजारीको कुछ भूमि दान दी जानेका भी उल्लेख है। तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, परिधावि संवत्सर, भूलोक-वर्ष (चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लका राज्यवर्ष) ७, बुधवार इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ४८ पृ० १६४]

२१७

बहुरीबंद (जि० जबलपुर, मध्यप्रदेश)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

स्वस्ति···वदि ९ भौमे श्रीमद्गयाकर्णदेवविजयराज्ये राष्ट्रकूटकुलोद्-भवमहासामंताधिपतिश्रीमद्गोल्हणदेवस्य प्रवर्धमानस्य ॥ श्रीमद्गोल्ला-पूर्वाम्नाये वेल्लप्रभाटिकायामुरुकृताम्नाये तर्कताकिकचूडामणिश्रीमन्माधव-नंदिनानुगृहीतः साधुश्रीसर्वधरः तस्य पुत्रः महाभोजः धर्मदानाध्ययन-रतः । तेनेदं कारितं रम्यं शांतिनाथस्य मंदिरं ॥ स्वलात्यसंज्ञकसूत्रधारः श्रेष्ठिनामा वितानं च महाश्वेतं निर्मितमतिसुंदरं ॥ श्रीचंद्रकराचार्या-म्नायदेशीगणान्वये समस्तविद्याविनयानंदितविद्वज्जनाः प्रतिष्ठाचार्य-श्रीसुभद्राश्चिरं जयंतु ॥

[यह लेख कलचुरि राजा गयाकर्णके सामन्त राष्ट्रकूट गोल्हणदेवके राज्यकालमें लिखा गया है। वेल्लप्रभाटिका गाँवमें गोल्लापूर्व जातिका महाभोज नामक श्रावक था जो माधवनन्दिके शिष्य सर्वधरका पुत्र था। उसने शान्तिनाथका एक सुन्दर मन्दिर बनवाया। इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा चन्द्रकराचार्याम्नाय-देशीगणके आचार्य सुभद्रके हाथों हुई थी।]

[इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ दि कलचुरि-चेदि एरा पृ० ३०९]

२१८

आदिनाथमन्दिर, नाडलाई (जि० देसूरी, राजस्थान)

संवत् ११८९ = सन् ११३२, संस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् ११८९ माघसुदि पंचम्यां श्रीचाहमानान्वय श्री-महाराजाधिराज (रायपा) ल

२ देव तस्य पुत्रो रुद्रपालश्चामृतपा (लौ) ताभ्यां माता श्रीराज्ञी मा (न) लदेवी तया (नदू) ल (डा) गिका-

३ यां सतां परजतीनां (रा)ज कुलपल (म) ध्यात् पलिकाद्वयं घाण (कं) प्रति धर्माय प्रदत्त । भं० वार्गासि-

४ वप्रमुखसमस्तग्रामीणक । रा० तिमटा वि० सिरिया वणिक पोसरि । लक्ष्मण पुते सा ।

५ खिं कृत्वा दत्तं । लोपकस्य यद्दु पापं गोहत्यासरस्रेण । ब्रह्म-हत्यासतेन च । तेन

६ पापेन लिप्यते सः ॥ श्री ॥

[यह लेख संवत् ११८९ में चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था। इसके दो पुत्र थे—रुद्रपाल तथा अमृतपाल। इनकी माता मानलदेवीने नडूलडागिका आनेवाले यतियोंके लिए कुछ दान दिया था।]

[ए० इं० ११ पृ० ३४]

२१६

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

सन् ११३४, तमिल

[यह लेख परकेसरिवर्मन् विक्रम चोल राजाके १६वें वर्षमें लिखा गया था। इसमें वैगाशि मासमें उत्सवोंके अवसरपर अरुमोलिदेव (अर्हत्) तथा नित्यकल्याण देवकी पालकी-यात्राकी व्यवस्थाके लिए मलैयन् मल्लन् अर्थात् विक्रमचोलमल्लन-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१० पृ० ६६]

२२०

शेरगढ़ (कोटा, राजस्थान)

संवत् ११९१=सन् ११३४, संस्कृत-नागरी

१ नाहिरडनाम्नीमा—स्य तिलके सूर्याश्रमे प (त) ने । श्रीपालो गुणपालकश्च विपु-

२ ले खण्डि (ल्वा) ले कुले सूद (र्यो) चन्द्रमसाविवाम्बरतले प्राप्तौ क्रमान्माल्वे ॥१॥ श्रीपालादिह देवपालतनयो दानेन चिन्तामणि(ः) शा-

३ (न्ते. श्री) गुणपालठक्कुरसुताद् रूपेण कामोपमात् । पूर्णामर्य-जनेल्हुकप्रभृतयः पुत्राश्च येषां नव तैः सर्वैरपि कोशवर्धनत-

४ ले रत्नत्रयः कारित(ः) ॥२॥ वर्षैं रुद्रशतैर्गतैः शुभतमैः कोनव-त्यधिकैर्वैशाख(खे) धवले द्वितीयदिवसे देवाः प्रतिष्ठा-

५ पिताः । चन्द्रन्ते नवदेवपालतनया साल्हूसधान्वादयः पूर्ण-शान्तिसुतश्च नेमिसुताः श्रीशान्तिसत्कुन्थ्वरान् ।

६ ॥३॥ दांदिसूत्रधारेशस्य शिलार्थसूत्रधारिणा । शान्तिकुन्थ्वरना-मानो जयन्तु घटिता जिनाः ॥४॥ देवपालसु-

७ तेल्हुकः गोष्ठिवासलठल्हुकः सेकः हरिश्चन्द्रादिः गागासुपुत्र (ः) जल्हुकः ॥५॥ संवत् ११९१ वैशाख सुदि २ (मं)-

८ गलदिने प्रतिष्ठा कारापिता ॥

[यह लेख वैशाख सु० २, मंगलवार, संवत् ११९१ का है । इस समय खण्डिल्लवाल कुलके शान्तिके पुत्रोंने रत्नत्रय अर्थात् शान्ति, कुन्थु तथा अर इन तीन तीर्थंकरोंकी मूर्तियां स्थापित की थीं । इनका निर्माण सूत्रधार दांदिके पुत्र शिलार्थीने किया था ।]

[ए० इं० ३१ पृ० ८३]

२२१
कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
शक १०५८ = सन् ११३५ कन्नड़

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ (१) स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महाम-

२ ण्डलेश्वरं । तगरपुरवराधीश्वरं श्रीशिलाहारनरेंद्र । जीमूतवाहनान्वयप्रसूतं । सुवर्णगरुडध्वजं मरेवोक्कसर्पं । अय्यन

३ सिंगं । रिपुमण्डलिकभैरवं । विद्विष्टगजकण्ठीरवं । इडुवरादित्यं । रूपनारायणं । कलियुगविक्रमादित्यं । शनिवारसिद्धि गिरिदु-

४ र्गलंघनं । श्रीमहालक्ष्मीदेवीलब्धवरप्रसादादिसमस्तराजावली-विराजितरप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वरं गण्डरादित्यदेवरु वल-वाडद ने-

५ लेवीडिनल् सुखसंकथाविनोददिं राज्यंगेय्युत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपंचमहाशब्द महासामन्तं । विजयल-

६ क्ष्मीकान्तं । रिपुसामन्तसीमन्तिनीसीमन्तभंगं । वीरवरांगनाप्रियभुजंगं । वैरिसामन्तमेघविघटनसमीरणं । नागलदेविय गन्धवा-

७ रणं विद्विष्टसामन्तविलयकालं । सामन्तगण्डगोपालं । दायादसामन्ततारासुरवीरकुमारं । सामन्तकेदारं । तोण्डसामन्तपुण्डरीक-

८ षण्डप्रचण्डमदवेदण्डं । गण्डरादित्यदेवदक्षदक्षिणभुजादण्डं । याचकजनमनोभिलषितचिन्तामणि । सामन्तशिरोमणि । जिनचरणसरसिरु-

९ हमधुकरं सम्यक्त्वरत्नाकरनाहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदं पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसादं । नामादिसमस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महा ।

१० सामन्तं । निंबदेवरसरु । कवडेगोल्लद वलिय सन्तेय मुदुगोडेयल् माडिसिद वसदिय पार्श्वनाथदेवरष्टविधार्चनक्कमा वसदिय जीर्णोद्धारक्क-

११ मल्लिप्प ऋपियराहारदानक्कं । स्वस्ति । समस्तभुवनविख्यातपंचशतवीरशासनलब्धानेकगुणगणालंकृत सत्यशौचाचारचारुचारित्रनयविनय-

१२ विज्ञान वीरवलंञ्जधर्मप्रतिपालन विशुद्ध गुडुध्वजविराजमानानूनमाहसोत्तुंग कीर्त्यङ्गनालिंगित निजभुजोपार्जितविजयलक्ष्मीनिवासवक्षस्थलरुं

१३ भुवनपराक्रमोन्नत वासुदेवखण्डलीमूलभद्रवंशोद्भवरुं । भगवतीलब्धवरप्रसादरुं । ताबु काडि सोलदरुं । मरुवक्कमारिगलुं परस्त्रोपर

१४ धनवर्जितरुं चतुष्षष्टिकलेगलोल् प्रवीणरप्पुदरिं । ब्रह्मनन्नरुं । चक्रमुल्लुदरिं नारायणनन्नरुं । दृष्टियोल् नोडि कोल्वुदरिं । कालाग्निरुद्रनन्नरुं । को-

१५ न्दरनरसि कोल्वुदरिं । परशुरामनन्नरुं । तुलिदु कोल्वुदरिं । मदान्धगन्धसिन्धुरदन्नरुं । गिरिदुर्गमं मरेवोक्करं तेगेदु कोल्वेडेयोल् सिंहदन्नरु ।

१६ पातालमं पोक्करं कोल्वेडेयोल् वासुगियन्नरुं । आकाशदोलिर्दरं कोल्वेडेयोल् गरुत्मनन्नरुं । पेंपिनल् पृथ्वियन्नरुं । बिण्पिनल् कुलगि-

१७ रियन्नरुं । गुण्पिनल् महासमुद्रदन्नरुं । उद्योगदल् रामनन्नरुं ।

पराक्रमदोल् पार्थनन्नरुं। शौचदोल् गांगेयनन्नरुं। साहसदोल् भामनन्न-
१८ रुं। धर्मदोल् धर्मपुत्रनन्नरुं। ज्ञानदल् सहदेवनन्नरुं। भोगदलिं-
द्रनन्नरुं। त्यागदल् कर्णनन्नरुं। तेजदलादित्यनन्नरुं। अहिच्छत्र-
मेनिसुवय्यवोलेपुरप-
१९ रमेश्वररुमप्पय्नूर्वर्स्वामिगलुं गवरेयरुं। गात्रियरुं। सेट्टियरुं।
सेट्टिगुत्तरुं। गामण्डरुं। गामण्डस्वामिगलुं। वीर
२० रुं। वीरवणिगरुं। कोल्लापुरद त्रिल्पाणसेट्टियुं। गोविन्दसेट्टियुं।
कोमर अण्णमय्यनुं। मिरिंजेय बिज्जसेट्टियुं। बोप्पिसे-
२१ ट्टियुं। गण्डरादित्यदेवर राजश्रेष्ठि वेसपय्यसेट्टियरुं। आ मण्ड-
लेश्वरन वीडिन वम्मिसेट्टियुं। कूंडिपट्टनदादित्यगृह-
२२ द सासनिगं हेग्गडे रावसेट्टियुं। चौधोरे बोप्पिसेट्टियुं। तोरं-
बगेय प्रभु कन्नपय्यसेट्टियुं। मयिसिगेय काजगारं चौधो-
२३ रे गोरविसेट्टियुं। वलेयवट्टणद शान्तिसेट्टियुं। अय्यवोलेयय्-
नूर्वर सिंगं हालियसेट्टियुं। कवडेगोल्लद प्रभु खप्परय्यना-
२४ दियागि समस्तदेशं नेरेदु। शकवर्षद सासिरदय्वत्तेंटेनेय
राक्षससंवत्सरद कार्तिकवहुल पंचमि सोमवारदंदु श्रीमूलसंघ-
२५ देसीयगण-पुस्तकगच्छद कोल्लापुरद श्रीरूपनारायणबसदिया-
चार्यरप्प श्रीश्रुतकीर्तित्रैविद्यदेवर् कालं कर्चि। धारापू-
२६ र्वकमागि कोट्टायमेन्तेंदोडे अडके हेरिंगे अय्वत्तु। जवलक्किर्पत्तु
हसरकरय्दु। एले हेरिंगे नूरु। तलेवोरेगय्वत्तु। हसरकिर्प-
२७ त्तय्दु। तुप्पमेण्णेयेंविवु कोडक्के सोल्लगे सिद्दिगेगरवाणं संगडि-
गोर्माणं दूसिगवसरक्कमक्कसालेगं होंगे हणं। हत्ति मलवेग-
२८ यूवलं। मण्डिय करुसेय मलवेगेरडु वीसिगे। जवलक्के पलं

दन्। लंकोंकल्लिह ङाल् निगल्गे मगेनिविगे नरविर्येदिवो-
न्द्रक्कुं। वर्धक्के नं-

२९ चवोन्ड्रक्कुं। अल्लवरिल्दिनं शुण्डि देवन्नुल्लि कंवं नद्ददुल्संर्येविदु
मोदलागि लूगि नारुव मण्डंगल्गं हेरिगेयुवलं जवलक्किप्पलं
इन-

३० क्कोप्पलं आरंगे मेल्लदु मानविर्येदिदु हेरिगोल्मानं जवलक्क-
रवलं इप्परक्के मोल्ल्लगे। उप्पु मोदलागि इदिर्नेट्टु घ्यानं-

३१ गल्गं मंडिगे कोळगवोंदु हेरिंगे मानवेरडु तन्लेवोरेगोमानं वाडु
काविंदिवु मंडिगें इनु तन्लेवोरेगे नाल्कक्कुं। मण्डिगे दुण्डिगे
बोंदु।

३२ नेत्रेयल्दु हुट्टेयेडक दण्डिगं वोंदु नेवेदेरडु हूविन हेडलिगेगे
नालि वोन्दु कुंवरलि इप्परक्के मटके वोन्दु॥ इन्तीया-

३३ यमनल्दिदातंगे वागरासिकुल्लोत्रादिगलोल् पंचमहापातकर्म
माडिद फल्नक्कुं॥

[इस लेखका सारांश द्वितीय भागमें क्र० ३०२ में दिया है किन्तु उस समय मूल लेख प्रकाशित नहीं हुआ था। यह लेख शिलाहार वंशके महामण्डलेश्वर गण्डरादित्यके समय शक १०५८ में लिखा गया था। इसका सामन्त निम्बदेव था जिसने तांण्डलमण्डलके युद्धमें शूरता प्रदर्शित की थी। निम्बदेवने कवडेगोल्ल नगरमें एक जिनमन्दिर बनवाया था। इसके बाद वीरवलंज लोगोंके संघका विस्तृत वर्णन है। उनके प्रतिनिधियोंने कोल्हापुरके रूपनारायण जिनमन्दिरके व्यवस्थापक मूलसंघ-देशीय गणके श्रुतकीर्ति त्रैविद्यको कवडेगोल्ल जिनमन्दिरके लिए उक्त तिथिको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया।]

[ए० इं० १९ पृ० ३०]

२२२

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध कन्नड

महालक्ष्मी मन्दिरमें छतके खम्भोंपर

[यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके समयका है। इनके सामन्त निम्बने एक चैत्यालय बनवाया था। नाकिराजकी कन्या कर्णादेवीका भी उल्लेख है जो एक रानी थी। कोण्डकुन्दान्वयके माघनन्दि आचार्यका भी उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३५१]

२२३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

सन् ११२७, तमिल

[यह लेख कुलोत्तुंग चोलदेव (द्वितीय) के राज्यवर्ष ४ में लिखा गया था। आलप्पिरन्दान् मोगन् उपनाम कुलोत्तुंगशोलकाडवरायन्-द्वारा कच्चिनायनार् (चन्द्रप्रभ) की पूजाके लिये जननाथमंगलम् गाँवके उत्पन्न-से ४२० कलम् (नापका प्रकार) चांवल अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९–४० क्र० ३११ पृ० ६६]

२२४

गणपवरम् (गुण्टूर, आन्ध्र)

११वीं–१२वीं सदी, तेलुगु

[यह लेख श्रावण शु० ३ का है – शकवर्षके अंक लुप्त हुए हैं। कुलोत्तुंग राजेन्द्रके पुण्यवृद्धिके लिए अक्कसाल कामोजु-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। अन्तमें चन्द्रप्रभजिनालयका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ पृ० ४३ क्र० ४५८]

२२५-२२७

तिरक्कोल (उ० अर्काट, मद्रास)

११वीं-१२वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें तण्डपुरम्की पल्लि (जैनवसति) के लिए एरणन्दि उपनाम नरतोंग पल्लवरैयन्-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम पोन्नूरनाडुमें सम्मिलित था। यहींके एक अन्य लेखमें शेम्बियन् शेम्बोत्तिलाडणार्-द्वारा कनकवीर गित्तडिगल्को कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह चोल राजा परकेसरिवर्मन्के १२वें वर्षका लेख है। तीसरा लेख स्थानीय वर्धमानमन्दिरके दो स्तम्भोंपर है। ये स्तम्भ अरुमोलिदेवपुरम्के इडैयारन् आट्कोण्डान् मावीरन्-द्वारा स्थापित हुए थे।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० २७६-२८० पृ०९१]

२२८-२३०

वस्तिहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[यहाँ तीन लेख हैं। एक जिनमूर्तिके पादपीठपर मूलसंघ-देसियगणके-कुक्कुटासन-मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तिदेवके शिष्य दण्डनायक गंगपय्यका नामोल्लेख है। एक दूसरे मूर्तिके पादपीठपर मूलसंघ-देसिगणके दिनकरजिनालयमें हेग्गडे मल्लिमय्य-द्वारा मूर्तिस्थापनाका उल्लेख है। इस मन्दिरके द्वारके लेखमें इस मन्दिरकी स्थापनाका वर्ष सन् ११३८ दिया है।]

[ए० रि० मैं० १९११ पृ० ४४]

२३१

नाडलाई (जि. देसूरी, राजस्थान)

संवत् ११९५ = सन् ११३९, संस्कृत-नागरी

१ ओं नमः सर्वज्ञाय॥ संवत ११

२ ९५ आसउज वदि १५ कुजे ।
३ अद्येह श्रीन (ड्डू) लडर (गि) कायां महा–
४ राजाधिराजश्रीराय (पा) लदेवे । विज –
५ यी राज्यं कुर्वतीत्येतस्मिन् काले
६ श्रीमदुर्जिततीर्थः श्री (ने)मिनाथदेव-
७ स्य दीपधूपनैवे(द्य)पुष्पपूजाद्यर्थं गू –
८ हिलान्वयः राउ० ऊधरणसूनु
९ ना मोक्तारि ठ० राजदेवेन स्वपु-
१० ण्यार्थं स्वीयादानमध्यात् मार्गे[ग]
११ च्छतानामागतानां वृषभानांशोके (पु)
१२ यदाभाव्यं भवति तन्मध्यात् विं(श
१३ तिमो भागः चंद्रार्कं यावत् देवस्य
१४ प्रदत्तः ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा
१५ केनापि परिपंथा न करणीया
१६ अस्मद्दत्तं न केनापि लोप(नी)यं ॥
१७ स्वहस्ते परहस्ते वा यः कोपि लोप –
१८ यिष्यति तस्याहं करे लग्नो
१९ न लोप्यं मम शासनमिदं । लि०–
२० (पां)सिलेन ॥ स्वहस्तोयं सामि –
२१ ज्ञानपूर्वकं राउ० रा(ज)देवे-
२२ न मतु दत्तं ॥ अत्राहं साक्षि-(णा)-
२३ ज्योतिषिक (ड्डू)पासूनुना गूगि-
२४ ना । तथा पला० पाला० । पृथिं
२५ वा १ मांगु(ला) ॥ देपसा । रा
२६ पसा ॥ मंगलं महा (श्रीः) ॥

[उक्त लेख संवत् ११९५ में चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था। इसमें नड्डूलडागिकाके नेमिनाथमंदिरके लिए ठा० राजदेव द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है]

[ए० इं० ११ पृ० ३६]

२३२

नाडलाई, (जि. देसूरी, राजस्थान)

संवत् १२०० = सन् ११४४, संस्कृत-नागरी

१ ओं संव(त्) । १२०० जेष्ट (सु)दि ५ गुरौ श्रीमहाराजाधिराज-श्रीरायपालदेवराज्ये—हास –

२ समये रथयात्रायां आगतेन रा० राजदेवेन आत्म-याइलामव्यात् (सर्वसाउतपुत्र) विंसो–

३ पको दत्तः । आत्मीयघाणकतेलव(ल)मध्यात् । मातानिमित्तं पलिकाद्वयं । प्ली २ दत्तः ॥ म-

४. हाजनप्रमीण । जनपदसमक्षाय । धर्माय निमित्तं विंसोपको १ पलिकाद्वयं दत्तं ॥ गोह –

५ त्यानां सहस्रेण ब्रह्महत्याशतेन च । स्त्रीहत्याभ्रूणहत्या च जतु पापं तेन पापेन लिप्यते सः ॥

[यह लेख संवत् १२०० में राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था। यात्राके लिए आये हुए रा० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें निर्देश है।]

[ए० इं० ११ पृ० ४१]

२३३

कम्बदहल्लि (मैसूर)

सन् ११४५, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके दो दण्डनायक मरियाने तथा

भरतिमय्य-द्वारा शान्तीश्वरवसदिके लिए मोदलियहल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है। यह दान क्रोधनसंवत्सरका है। तदनुसार सन् ११४५ का यह लेख है। ये दण्डनायक आचार्य गण्डविमुक्तदेवके शिष्य थे।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ५१]

२३४

वालेहल्लि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ८ = सन् ११४५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लदेवके राज्यवर्ष ८, क्रोधन संवत्सरमें फाल्गुन शु० १, रविवारके दिन उत्कीर्ण किया गया था। बम्मिसेट्टिने वालेयहल्लिमें पार्श्वनाथमन्दिरका निर्माण किया तथा उसकी रक्षाके लिए देसिगण, पुस्तकगच्छ, (कोण्डकुन्द) अन्वयके मलधारिदेवको कुछ दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है। मन्दिरको दिये गये कुछ अन्य दानोंका भी इसमे उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १७६ पृ० २२]

२३५

नाडलाई (जि० देसूरी, राजस्थान)

संवत् १२०२ = सन् ११४६, संस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् १२०२ आसोज वदि ५ शुक्रे श्रीमहाराजाधिराज-श्रीरायपालदेवराज्ये प्रवर्त(माने)

२ श्रीनदूलडागिकायां रा० राजदेवठकुरेण प्रव(र्त)मानेन श्रीमहा-वीरचैत्ये साधुत-

३ पोधननि(प्तार्थे) श्रीअभिनवपुरीय वदार्या अ(त्रे)पु स(म)स्त-वणजारकेपु देसी मिलित्वा वृ –

४ (प) म (म) रित जतु पाइल्लालगमाने ततु वीसं प्रति रूआ २ किराटउआ गाडं प्रति रू १ वण –

५ जारकें धर्माय प्रदत्तं ॥ लोपकस्य जतु पापं गोहत्यासहस्रेण ब्रह्महत्याशतेन पापेन लिप्यते सः ॥

[यह लेख संवत् १२०२ में चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था। इसमें नदूलडागिकाके महावीर मन्दिरमें आये हुए साधुओं-के लिए ठ० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है ।]

[ए० इं० ११ पृ० ४२]

२३६

कुण्टन होसल्लि (जि० धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

समवशरण मन्दिरके समीप शिलापर

[यह लेख खराब हुआ है। चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय दसवें वर्ष, प्रभव संवत्सरमें यह लिखा गया था। नागिसेट्टि-द्वारा किसी जैन देवताको कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमे निर्देश है। कदम्ब-वंशीय तैल मण्डलेश तथा आचलदेवीका भी इसमें उल्लेख है।]

(रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ९८)

२३७

नीरलगि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यवर्ष १० में पुष्य शु० १२, गुरुवार, उत्तरायण संक्रान्तिके दिनका है। इसमें नेरिलगेके नाल्प्रभु मल्लगावुण्ड-द्वारा स्वनिर्मित मल्लिनाथ-जिनालयके लिए कुछ भूमि मूलसंघ-

सूरस्थ गण-चित्रकूट गच्छके हरिणन्दिदेवको अर्पित की जानेका उल्लेख है। मल्लगावुण्ड चतुर्थज्ञातिका व्यक्ति था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ६१ पृ० १२४]

२३८

करगुदरि (जि० धारवाड, मैसूर)

सन् ११४८, कन्नड

[यह लेख पौष शुक्ल १, सोमवार, प्रभव संवत्सर, के दिन लिखा गया था। महावड्डव्यवहारि कल्लिसेट्टि-द्वारा करेगुदुरेमें विजयपार्श्वजिनेन्द्र मन्दिर बनवाया गया उसे कुछ जमीन दान देनेका इसमें निर्देश है। यह दान सूरस्थ गण, चित्रकूट अन्वयके वासुपूज्यके शिष्य हरिणन्दिके शिष्य नागचन्द्र भट्टारकको दिया गया था। उस समय महाप्रचण्डदण्डनायक सोवरसका शासन हानुंगल ५०० के प्रदेशपर चल रहा था तथा उसके एक भागपर मण्डलेश कदम्बवंशीय तैलका अधिकार था। इस समय चालुक्य प्रतापचक्रवर्ती जगदेकमल्ल सम्राट् थे।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६७]

२३९

हुलगूर (जि० धारवाड, मैसूर)

१२वीं सदी – मध्य, कन्नड

[यह लेख अधूरा है। चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय पुरिगेरे तथा बेलवोल प्रदेशोंपर महाप्रचण्डदण्डनायक बावणरस शासन कर रहा था। इसका सामन्त मणलेर कुलका जयकेशी था जो पुरिगेरेके राष्ट्रकूट पदका अधिकारी था। इसके समयकी एक जैन श्राविका नीलिकब्बेका इस लेखमें निर्देश है।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ३२)

२४०

शृंगेरी (मैसूर)

शक १०७१ = सन् ११५०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलां-
२ छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं
३ स्वस्ति श्री(म)तु सकवर्षंगलु १०७१ ने प्रमोदू-
४ तसंवत्सरद वयिसाखमासद''''शुद्ध सप्तमि
५ स दन्दु श्रीकाणूर्गण मूलसंघ''''
६ पुस्तकगच्छद'''हरिय
७ मंगल

[यह लेख पार्श्वनाथवसदिके मुखमण्डपके एक पाषाणपर है। वैशाख शु० ७, शक १०७१, प्रमोदूत संवत्सर इस तिथिका तथा मूलसंघ-काणूर-गण-पुस्तकगच्छका इसमें उल्लेख है। लेख अस्पष्ट होनेसे इसका उद्देश आदि विवरण ज्ञात नहीं हो सकता।]

[ए० रि० मैं० १९३४ पृ० ११३]

२४१

अरसीवीडि (विजापूर, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष ७६ = सन् ११५१, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके सामन्त वीरचाउण्डरस तथा उसकी पत्नी देमलदेवी-द्वारा पौष व०-२, बुधवार, चालुक्य विक्रम वर्ष ७(६)के दिन मूलसंघ-देशियगणके आचार्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र पण्डितदेवको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ३३ पृ० ४३]

२४२-२४३

छतरपुर (मध्यप्रदेश)

सं० १२०८ = सन् ११५१, संस्कृत-नागरी

[ये दो लेख लखनऊ म्युजियमकी दो मूर्तियोंके पादपीठोंपर हैं। ये मूर्तियां छतरपुरसे प्राप्त हुई थीं। सुविधिनाथ तथा नेमिनाथकी इन मूर्तियोंकी स्थापनातिथि आषाढ़ शु० ५, गुरुवार, सं० १२०८ थी ऐसा लेखमें कहा है।]

[मे० आ० स० ११ (१९२२) पृ० १४]

२४४

स्टेट म्युजियम, भरतपुर (राजस्थान)

सं० ११०९ = सन् १०५३, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें ज्येष्ठ शु० (?) रविवार, संवत् ११०९ के दिन पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लेख मूर्तिके पादपीठपर उत्कीर्ण किया है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६३ पृ० २१]

२४५

शेंडवाल (बेलगांव, मैसूर)

शक १०७५ = सन् ११५३, कन्नड

[यह लेख बसवण्णमन्दिरमें लगा हुआ है। इसमें सेणिग कोत्तलि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ करोंके उत्पन्नके दानका उल्लेख किया है। तिथि चैत्र शु० ५, रविवार, श्रीमुख संवत्सर शक १०७८ ऐसी दी है। किन्तु तिथि आदिकी गणनानुसार यह शक १०७५ का लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १८७ पृ० ३६]

२४६

वेलूर (मैसूर)

शक १०७६ = सन् ११५२, कन्नड

१ निश्शेषशास्त्रवाराशिपारगैः । श्रीवर्धमानस्वामिगल धर्मतीर्थ प्र –

२ भद्रबाहुभट्टारकरिंदं । भूतवलिपुष्पदंतस्वामिगलिंदं । एकसंधि-
सु(मतिगलिंदं अ) –

३ कलंकदेवरिंदं । वक्रग्रीवाचार्यरिंदं । वज्रणंदिभट्टारकरिंदं
सिंहणं(दि कनक-)

४ सेन वादिराजदेवरिंदं । श्रीविजयदेवरिंदं । शांतिदेवरिंदं पुष्प-
सेन(देवरिंदं ।)

५ अजितसेनपंडितदेवरिंदं । कुमारसेनदेवरिंदं । मल्लिषेण मलधा-
रिदे(वरिंदं)

६ (श्रु)तकीर्ति श्रीपालं वरवाणिश्रीपालं विरुद्वादिमदविस्फालं ॥
तमगे –

७ (अ)मर्देत्ति धरंगेय्दे तम्म मुखदोल् पट्तर्कवाराशिविभ्रममापो····

८ ल्मं कील्पडिसित्तु पेंपिनेसकं श्रीपालयोगींद्रर ॥ आवन
विषयमो····

९ (ग)द्यपद्यवचोविन्यासं निसर्गविजयविलासं । कश्चिद् वाद-
विनोदकोविद····

१० दक्षः कश्चन कश्चनापि गमको वाग्मी परः कश्चन । पांडित्ये
सुचतुर्विधेपि निपुणः श्रीपालदेवः पुनस्तर्कव्याकरणागम-

११ प्रवणधीस्त्रैविद्यविद्यानिधिः । अवर सधर्मर् । वर्गत्यागद
सूचितमार्गोपन्यासदलम मार्तुडियक्कामगंगचरिदे-

१२ नक्के निरर्गलमादत्तनन्तवीर्यव्रतियोल् ॥ आ श्रीपालत्रैविद्यदेवर
शिष्यर् ॥ श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापतिपदकमलारा-

१३ धनालब्धबुद्धिः सिद्धांतांभोनिधानप्रविसरदमृतास्वादपुष्टप्रमोदः । दीक्षाशिक्षासुरक्षाक्रमकृतिनिपु-

१४ णः सन्ततं भव्यसेव्यः सोयं दाक्षिण्यमूर्तिर्जगति विजयते वासुपूज्यव्रतींद्रः ॥ सत्यशौचकरुणागुणोत्करैरत्य-

१५ क्तलोभमदमानरोपणैः । शुद्धवृत्तियुतबोधदर्शनैर्वादिराज मुनिराज राजसे ॥ श्रीपालत्रैविद्यश्रीपादप-

१६ मान्तरंगसंगलभृंगं श्रीपरिपूर्णं होय्सलभूपालकमंत्रि माचदण्डाधीशं ॥ जिननाथं पोरेद नृपालतिलकं श्री-

१७ विष्णु (भूपा)लकं जनकं सं एरेयंगवेग्गडे जगद्विख्याते राजव्वे ताय् तनगिांन्नेम्मडिदण्डनायकने तां मात्रं महामंत्रि

१८ येन्देनला माचिणदण्डनाथने वलं धन्यं पेरं धन्यने ॥ सुरगुरुमंत्रक्रमदोल् धुरदोल् सिंहप्रतापनप्र-

१९ तिमतेजं सुरतरु वितरणगुणदिं नरसिंहमहीशमंत्रि माचचमूपं ॥ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्री-

२० मन्महाप्रधानं माचियणदण्डनायकं तनगे व्रतगुरुगलुं श्रुतगुरुगलुमेनिसिद परवादिमल्ल-

२१ वादीभसिंह महामण्डलाचार्य श्रीपालत्रैविद्यदेवर् माडिसिदादिदेवर वसदिय केलसद कोरतेगं देवर्

२२ अष्टविधार्चनेगं ऋषियराहारदानक्कवागि शकवर्ष १०७६ नेय श्रीमुखसंवत्सरदुत्तरायणसंक्रमण-

२३ दंदु महादानंगलं माडु तिर्प समयदोले माचिणदण्डनायकं विन्नपं गेय्यल् होय्सलश्रीनारसिं-

२४ हदेवर् कब्बुणाड नागरहालं सर्वबाधापरिहारवागियादिदेवर्गे धारापूर्वकं माडि कोट्ट दत्तियं-

२५ तु देवदानवादा नागरहाल चतुःसीमेयप्पुदु मूडलु कल्ल दोणे संचरिवल्ल । आग्नेयदलु कडवदको

२६ लद् होरेयणि मागवागि बन्द् हेब्बट्टे । तेंकल् जालदहल्ल बल्लि हडुवलु केरेदलिरहल्ल । नैऋत्यदलु हुलियक-

२७ ल्लाल हडुवलु हुलियहल्ल । वायव्यदलु मूलद् हिरियकाणि । बडगल् मागडेय होह हेद्दारियब-

२८ डगण मोरडि । ईशान्यदोल् कोंडेयाळवल्लि तेंकलु नट्ट कल्लु । इंता चतुःसीमे वेरसु नागरहाल वल्लजिना (ल)य-

२९ क्के मवर्तनमस्यवागि पडिसलिसुववर्गे गंगेय तडियल् सासिर कविलेयं कोंडु कोलगुमं होन्नलु कट्टिसि चतु-

३० ····गुत्तरायणसंक्रमणग्रहणव्यतीपातदंदु दानं माडिद फलवी धर्ममं कि-

३१ ····यला कविलेयुमना ब्राह्मणरुमना तिथिवारदलु-

३२ ····र्मम प्रतिपालिसुवुदु ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत···

३३ ····जायते क्रिमिः ॥ मंगल महा श्री श्री पालित

३४ ····जालोलं विशदयशोलोलं गुणसेनपंडितं बुधनि····

३५ ····पुरंदरं गुणसेनपंडित····

[यह लेख केशवमन्दिरके छतमें लगा पाया गया । इसमें पहले वर्धमानस्वामी (महावीर) से प्रारम्भ कर कई आचार्योंकी परम्परामें श्रीपाल त्रैविद्यदेवका वर्णन किया है । इनके द्वारा निर्मित आदिदेवकी बसदिके लिए होयसल राजा नरसिंहके सेनापति मात्त्रियणने नागरहाल ग्राम दान दिया था । दानकी तिथि शक १०७६ की उत्तरायणसंक्रान्ति थी । लेखमें श्रीपाल त्रैविद्यके गुरुबन्धु अनन्तवीर्य तथा शिष्य वासुपूज्य एवं वादिराजका भी वर्णन है । अन्तमें गुणसेन पण्डितका भी उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १०२]

२४७

चलगेरि (बेलगाँव, मैसूर)

शक १०७८ = सन् ११५६, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालमें कलचुरि वंशके विज्जल (द्वितीय) तकके सामन्तोंकी वंशावली दी है। विज्जलके बन्धु मैलुगि तथा उसकी पत्नी लक्ष्मादेवीका शासन वेलवल ३०० प्रदेशपर चल रहा था उस समय राजाके मन्त्री कालिदास चमूपने पार्श्वनाथतीर्थ-की यात्रा कर एक मन्दिर बनवाया तथा उसके लिए कुछ दान दिया। इसकी तिथि पुष्य शु० (१२), धातु संवत्सर, शक, १०७८, उत्तरायण-संक्रान्ति ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७५ पृ० ३५]

२४८

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ११५६, तमिल

[यह लेख चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें लिखा गया था। इस मन्दिरमें सन्ध्यासमय दीप प्रज्वलित रखनेके लिए मन्दिर-अधिकारी-द्वारा ३०० काशु स्वीकार किये जानेका इसमें निर्देश है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४१]

२४९–२५०

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ११५६-५७, तमिल

[इस लेखमें जयंगोण्डशोलमण्डलम् प्रदेशके ऊरुवकाडु ग्रामके एक वेल्लाल-द्वारा करन्दैस्थित जिनमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए कुछ

गायें दान दी जानेका उल्लेख है। यह चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें दिया गया था। राजराजदेवके ११वें वर्षका एक लेख यहीं है! इसमें पर्नेयूर्नाडु प्रदेशके अरुमोलिदेवपुरम् स्थानके नगरत्तार् लोगों-द्वारा तिरुप्परम्बूरके जिनमन्दिरमें प्रवोधन समारोहके अवसरपर दिये गये दीप-दानोंका विवरण दिया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३१-१३२]

२५१

करडकल (रायचूर, मैसूर)

शक १०८१ = सन् ११५९, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा त्रिभुवनैकवीर विज्जलके राज्यकालमें आषाढ, दक्षिणायन संक्रान्ति, शक १०८१, प्रमाथि संवत्सर, गुरुवारके दिन लिखा गया था। इसमें एक सेनापति तथा पद्मलदेवीका उल्लेख है तथा मूलसंघ-देसिगण-पुस्तकगच्छके किसी आचार्यको दान दिये जानेका उल्लेख है। इस समय यह लेख वीरभद्रमन्दिरमें लगा है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २३८ पृ० ४१]

२५२

केरेसन्ते (कडूर, मैसूर)

१२वीं सदी (सन् ११५९), कन्नड

१ वहुधान्यसंवत्सरद माघ सु १५ रलु
२ श्रीमत् प्रतापचक्रवर्ति होयसण श्री
३ वीर नारसिंहदेवरसरु अडकेय पा-
४ रिशदेवन मग चिक्कमलण्णंगे केरेयसंथे-
५ य द्रविलसंघद आदिनाथदेवर पार्श्वदेवर
६ वसदिगलिगे आ केरेयसंथेय हिर्यकेरेय

७ केलगुलंनह स्थलवृत्तिय तोट गद्दे बेद्दलु म-
८ ने आ देवनगलिगुलंनह समस्ततेजस्वा-
९ म्यवनु श्री श्रीवीरनारसिंहदेवरसरु आ मल्ल-
१० णणंगे दानवागि धारापूर्वकं माडि आचंद्रार्क-
११ तारंवरं सल्वंतागि कोट्टरु मंगल महा श्री श्री

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंह-द्वारा केरेयसंथे स्थित द्रविलसंघकी आदिनाथ-पार्श्वनाथ बसदिके लिए चिक्कमल्लण्णको कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। लिपि १२वी सदीकी है तदनुसार यह लेख बहुधान्य संवत्सर = सन् ११५९ का होगा। तब नरसिंह प्रथमका राज्य चल रहा था। इस समय यह लेख जनार्दनमन्दिरमें लगा है।]

[ए० रि० मै० १९४५ पृ० ११२]

२५३
हुलियार (मैसूर)
१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंह १ के समय चान्द्रायण देवके शिष्य सामन्त गोवकी पत्नी श्रीयादेवी-द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह पादपीठ विष्णुमूर्तिके लिए उपयोगमें लाया जाता है।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

२५४
हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)
सं० १२१६ = सन् ११५९, संस्कृत-नागरी

[यह लेख पीतलकी चौबीसी-मूर्तिके पीठपर है। इसमें मूर्तिकी स्थापनातिथि आषाढ़ ९, सं० १२१६ दी है। मूर्ति इस समय लखनऊ म्युजियममें है।]

[मे० आ० स० ११ (१९२२) पृ० १५]

२५५

श्रृंगेरी (मैसूर)

शक १०८२ = सन् ११६०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं (i)
२ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (ii)
३ स्वस्ति श्रीमत् शकवर्षं द १०८२
४ विक्रमसंवत्सरद कुम्भ शु-
५ द्ध दशमि बृहवारदन्दु श्रीमल्लिगौड
६ विजयनारायण शान्तिसेट्टिय पुत्र बा-
७ सिसेट्टियर अक्क सिरियवेसेट्टियर म-
८ गलु नागवेसेट्टियर मगलु सिरिय-
९ लेसेट्टियरि हेम्माडिसेट्टिग सुपुत्रन-
१० प्प मारिसेट्टिग परोक्षविनयक्के मा-
११ डिसिद बसदिगे बिट्ट दत्ति केरेय केळग-
१२ ण हिरिय गद्देय बसदिय बडगण होस-
१३ लुं मंडियुं होलेयुं नडुवण हुडुवित्र होम्द
१४ मण्णु कण्डुग मुल्लिगौड अन्नगण्डुग मण्णु
१५ ....वणत्रमुं नालदंमियुं विट्टय
१६ ....मल्लवेगे हाग हंज हात्तिय मल
१७ ....ले मेल्लसिन मारक्के हागसुं
१८ मत्तं पोत्तोळ्यक्लुण्णु हेरियत्रनोळे अग्गिनद मल्लवेग पोम्मक्के बिट्टं
नपिद्दे नण्पिद्दवलु गंगेय-
१९ लु साइर कविलेय कोण्द पातक

[यह लेख पार्श्वनाथमन्दिरके सभागृहमें है। इसकी तिथि शक

१०८२, विक्रमसंवत्सर, कुम्भ मास शु० १० गुरुवार ऐसी है। इस दिन इस मन्दिरके लिए कुछ भूमि तथा व्यापारियों-द्वारा कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया गया था। यह मन्दिर हेम्माडिसेट्टिकी पत्नी सिरियवेके पुत्र मारिसेट्टिकी स्मृतिमें बनवाया गया था। मन्दिरके गर्भगृहकी पार्श्वनाथ-मूर्तिके पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—श्रीमत् पारिसनाथाय नमः।]

[ए० रि० मैं० १९३३ पृ० १२२, १२५]

२५६

बाबानगर (विजापूर, मैसूर)

शक १०८३ = सन् ११६१, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा विज्जणदेवके समय शक १०८३, विक्रम संवत्सरका है। इसमें मूलसंघ-देसिगणके मंगलिवेडके आचार्य माणिक्य-भट्टारकका तथा मैलुगि नामक शासकका उल्लेख है। इसने कन्नडिगेके जैन वसदिको कुछ दान दिया था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ पृ० १३० क्र० ई १२०]

२५७

गुत्तल (धारवाड, मैसूर)

शक १०(८४) = सन् ११६२, कन्नड

[यह लेख गुत्त वंशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यरसके समय पौष शु० १५, सोमवार, शक १०(८४) का है। इसमें केतिसेट्टि-द्वारा निर्मित पार्श्वदेवमन्दिरके लिए राजा-द्वारा भूमि-दान दिये जानेका उल्लेख है। पुस्तकगच्छके मलधारिदेव तथा सोमेश्वरपण्डितदेवका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई ५१ पृ० ९६]

२५८

हालुगुड्डे (मैसूर)

शक १०८४ = सन् ११६२, कन्नड

१ नमस्तुंगशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्त-म्भाय शम्भवे ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द

२ अशेषमहामण्डलेश्वरनुत्तरमधुराधीश्वरं पट्टिपोम्बुचपुरवरेश्वरं पद्मावतीलब्धवरप्रसाद मृगमदामोद सन्तत-

३ सकलजनस्तुत्यं नीतिशास्त्रज्ञ-विरदसर्वज्ञ-नामादिप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं प्रतापभुजबल

४ शान्तरदेवरु सान्तलिगेसायिरमं सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपंच-

५ महाशब्द महाप्रचण्डकुमार वेदण्डपंचानन रिपुकुमारतारक-षडाननं अरसंकगाल विजयलक्ष्मीलोल श्रीमतु-

६ होसगुन्दद बीररसरु मेलुसान्तलिगेयुमं अग्रहारमुमं सुखदि-नालुत्तमिरं शकवर्ष १०८४ नेय चित्रभानुसंवत्सरद

७ वैशाख सुद १० बड्डवारदन्दु कटद दण्डु अलिय बम्मणेयनुं पाण्ड्यरसनुम्बलिगारनुं समस्तसाधनं बेरसि''''वूरलु विट्टु

८ वत्ति वहल्लि नेल्लिवडेयलु जिनपादशेखर सन्धिविग्रहि माचि-राजन ॥ कं० तलपारिनायकंगे एलेयल् बोप्पेयब्बे नायकित्ति

९ मगं भूवलयदोल् अधिकं पुट्टिद कलिगल मुखतिलकं गोग्गि-मण्टरदेवं । रूपिनालु कामसन्निभ कूर्पिनोला नरतनूज अभिमन्यु

१० तां बेर्प जनक्कीवेडेयोलु नोर्पडे कलि गोग्गि कल्पवृक्षं जगदोल् धुरदोल् अरातिभूभुजरनन्तवर्टिदरसंकगाल वीर

११ नलूर्कॆयिं बेससे गोग्गणन्तिरिवल्लि विर्द वीरर नोरेनेत्तरिं नेणन खण्डद दिण्डेगरुलूगलिं भयंकरं एने विक्रमं कलिग'''

१२ ना जगदेकवीरन । अणियरमोड्डिदड्डणद वीररनान्तिसुतिर्प त्रिल्ल वल्लणिय तुरंग साधनमनान्तिरिवल्लि महामर्यं

१३ (ने)णमय खण्ड दिण्डि नोरेनेत्तर कार्पुरमन्दु नोर्पोडेनणक्रमो गोग्गियान्तिरिद विक्रममाहवरंगभूमियो (ल्)

१४ कलहदोलान्त वीरचतुरंगवलंगलनान्तु गोग्गि तोल्वालघटिन्दे तूल्दिरिये विद्दरिसेनेय लोहिताम्बुविं पल्वु सिरंगल····

१५ रद्द वोलोप्पिरे वीररट्टेगल् तोलतोलगेन्दु तल्तिरिव सम्भ्रम संगररंगभूलियोल्

१६ ····णमय लोहितवारि नेणद केसरुगल कुणिवट्टेगल् एन्दडिदेनणकमो विक्रमद

१७ ····वागलोन्दु तिरुविं विडुवागलु नूरु परिये सायिरवरियं नेडुवल्लि कोटियेने पोडवियोल····

१८ ····रु ॥ तरिसन्दोड्डिदरातिय मरुवक्कमनान्तु गोग्गि यिरियल् धुरदोलु परिदलेयोलु मह····

१९ ····दलव ॥ नायकतन मुम्बरिसिद नायकरिदिरागि गोग्गियोलु तागुउर्दु सायकदिनेच्चु तू····

२० ····देवरदेन पेलुवे ॥ मार्मलेदोड्डिदन्यनृपसैन्यपयोधिगे वीरभूभुजं नूर्मडि वाडबानल

२१ ····नोर्पुदुं कूर्मनखास्त्रमेम्बुरिय नालगेगल् विडेयट्टिवेदुं मुम्मलियायतु वैरिव····

२२ ···कृतास्त्रनो ॥ धुरदोलरिसेनेयं निर्भरमिरियल् गोग्गि वैरिविक्रान्तसरल् मरदिन्····तनुवनुच्चा

२३ ····दोला सिन्धुसुतनं पोल्तं ॥ सन्ततमोड्डि निन्दरिवल्लालगलनान्तिरिवल्लि वैरिविक्रान्तसरालिगल् तनुवनुच्चा

२४ ····अदोल् ॥ सन्तनसूनुवेन्तु सरसैयेयोलोप्पिदनन्ते गोग्गि विक्रान्तमनासेवट्टु सरलोट्टिदनाह···

२५ ···योल् ॥ संगरदोलिरिद् वीरमं शृंगारममेक्केवत्त गोग्गिग्र तम्मुत्संगदोल् इट्टूर्याद् निलिंपांगनेयर्

२६ ···(अ)मरावनियं ॥ अन्तु तलप्रहारिनायकन मग गोग्गिय-नायक कटकमनान्निरिदु नुसुल···

२७ ···समान्तरनेनिसिद् श्रीवल्लभदेवनग्रपुत्र प्रतापनुजवल मान्तर-मेनिसिद् तैलपदेवन् विदिय्मम्मरम्मन पुत्र श्रीमनु

२८ क तन्मरसर हेसरलु (?) गोट्टनेन्दु (?) हालुगुड्डेय त्रिभोगा-भ्यन्तरसिद्धियागि कल्लु नट्टु कान्यं गेय्दु कोट्ट हास···

२९ ···वेर मने बडि (?) इविन कैयोलने होद् कंय मक्कि (?) सहितमागि कोट्टरु ॥ मंगल महा श्री श्री

[यह लेख वैशाख शु० १०, बुधवार, शक १०८४, चित्रभानु संवत्सरके दिन लिखा गया था । पट्टिपोम्बुच्चके सान्तरवंशीय राजा श्रीवल्लभदेवके पुत्र तैलपदेव-द्वारा हालुगुड्डे ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । तलप्रहारि नायकके पुत्र सेनापति गोग्गिकी पाण्ड्यरसके विरुद्ध लड़ते हुए मृत्यु हुई थी । गोग्गिके कुटुम्बियोंको यह ग्राम दान दिया गया था । लेखमें तैलपदेवको पद्मावतीलब्धवरप्रसाद यह विशेषण दिया है तथा गोग्गिको जिनपादशेखर कहा है । तैलपदेवके अधीन मेलु-सान्तलिगे प्रदेशके शासक वीररसका भी उल्लेख किया गया है ।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ७८]

२५९

एकसम्बि (बेलगाँव, मैसूर)

शक १०८७ = सन् ११६५, कन्नड

[यह लेख सिलाहार राजा गण्डरादित्यके पुत्र विजयादित्यके समय-का है । रट्टवंशीय कत्तम (कार्तवीर्य) का सेवक मारगौड था । इनकी

वंशपरम्परा इस प्रकार दी है – मारगौड – आचगौड – होल्लिगौड – जिन्नण, कालण तथा मदुवण। इनमें जिन्नण गण्डरादित्यका सेनापति था तथा कालण विजयादित्यका। कालणकी पत्नी लच्छले थी तथा उसे तीन पुत्र थे – जिन्नण, आचण तथा रामण। कालणने एक्कसम्बुगेमें नेमिनाथवसदि बनवायी तथा उसके लिए यापनीय संघ – पुन्नागवृक्षमूलगणके महामण्डलाचार्य विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी। विजयकीर्तिकी गुरु-परम्परा यह थी – मुनिचन्द्र-विजयकीर्ति-कुमारकीर्ति त्रैविद्य-विजयकीर्ति (प्रस्तुत)। इस मन्दिरकी कीर्ति सुनकर राजा कार्तवीर्यने भी इसके दर्शन किये तथा फाल्गुन शु० १३ शक १०८७ को विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ४८]

२६०

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११६५, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा बिज्जणदेवके राज्यवर्ष १०, पार्थिव संवत्सरमें (?) मासके शु० ५, गुरुवारके दिन लिखा गया था। पान्थिपुर (वर्तमान हनगल) के कलिदेवसेट्टि-द्वारा चतुर्विंशति तीर्थंकरमूर्तिकी प्रतिष्ठा तथा मन्दिरके निर्माणका इसमें उल्लेख है। इसके लिए नागचन्द्र भट्टारकको कुछ दान दिया गया था। हानुंगल नगर तथा कलिदेवसेट्टिकी विस्तृत प्रशंसा की है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०७ पृ० २५]

२६१

अरसीवीडि (बिजापूर, मैसूर)

राज्यवर्ष १२ = सन् ११६७, कन्नड

[इस लेखमें कलचुर्य राजा भुजबलमल्लके राज्यवर्ष १२, सर्वजित

संवत्सरमें पुष्य शु० १४, सोमवारके दिन सिन्द कुलके विट्टरसके पुत्र होलरस द्वारा गुणवेडंगिय वसदिके लिए कुछ करोंके उत्पन्न दान देनेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ४० पृ० ४८]

२६२

नदिहरलहल्लि (धारवाड, मैसूर)

शक १०९० = सन् ११६८, कन्नड

[इस लेखमें कलचुर्य राजा बिज्जणदेवके समय शक १०९०, सर्वधारि संवत्सर, चैत्र पूर्णिमा, सोमवारके दिन जैन साधु-साध्वियोंके आहारदानके लिए कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५८ पृ० १५२]

२६३

हलसंगि (विजापूर, मैसूर)

शक १०९० = सन् ११६८, कन्नड

[इस लेखमें शक १०९० में चन्द्रग्रहणके समय वीरजिनालयके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८, क्र० ई० २५ पृ० २०१]

२६४

हिरेमन्नूर (धारवाड, मैसूर)

शक १०९१ = सन् ११७०, कन्नड

[यह लेख पुष्य शु० ५, गुरुवार, शक १०९१ विरोधि संवत्सरका है। इसमें सिन्द कुलके महामण्डलेश्वर चावुण्डरस-द्वारा हिरियमणियूरके जैनशालाके अधिष्ठायक दासवोवकी प्रार्थनापर कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ४ पृ० २०]

२६५

बिजोलिया (राजस्थान)

संवत् १२२६ = सन् ११७०, संस्कृत-नागरी

१ *सिद्धम् ॥ ॐ नमो वीतरागाय । चिद्रूपं सहजोदितं निरवधि* ज्ञानैकनिष्ठापितं नित्योन्मीलितमुल्लसत्परकलं स्यात्कारविस्फारितं । सुव्यक्तं परमाद्भुतं शिवसुखानन्दास्पदं शाश्वतं नौमि स्तौमि जपामि यामि शरणं तज्ज्योतिरात्मो(त्थि)तं ॥१॥ नास्तं गतः कुग्रहग्रंग्रहो न नो तीव्रतेजा···

२ ···नैव सुदुष्टदेहोऽपूर्वो रविस्तात् स मुदे वृषो वः ॥२॥ [स] भूयाच्छ्रीशांतिः शुभविभवभंगीभवभृतां विभोर्यस्याभाति स्फुरितनखरोचिः करयुगं । विनम्राणामेषामखिलकृतिनां मंगलमयीं स्थिरीकर्तुं लक्ष्मीमुपरचितरज्जुं व्रजमिव ॥३॥ नासाश्वासेन येन प्रबलबलभृता पूरितः पांचजन्यः

३ ···चरद्लमलि(नीपाद)पद्माग्रदेशैः । हस्तांगुष्ठेन शांर्गं धनुरतुलबलं कृष्टमारोप्य विष्णोरंगुल्यां दोलितोयं हलभृद्वनितं तस्य नेमेस्तनोमि ॥४॥ प्रांशुप्राकारकांतात्रिदशपरिवृढव्यूहरुद्धावकाशां वाचालां केतुकोटि(क्व)णद्नणुमणीकिंकिणीभिः समंतात् । यस्य व्याख्यानभूमामिहह किमिदमित्याकुलाः कौतुकेन प्रेक्षंते प्राणभाजः

४ (स भुवि) विजयतां तीर्थकृत् पार्श्वनाथः ॥ ५ ॥ वर्धतां वर्धमानस्य वर्धमानमहोदयः । वर्धतां वर्धमानस्य वर्धमान(महो)दयः ॥६॥ सारदां सारदां स्तौमि सारदानविसारदां । भारतीं भारतीं भक्तभुक्तिमुक्तिविशारदां ॥७॥ निःप्रत्यूहमुपास्महे जिनपतीनन्यानपि स्वामिनः श्रीनाभेयपुरःसरान् परकृपापीयूषपाथोनिधीन् । ये ज्योतिःपरमागमाज-

५ नतया मुक्तात्मतामा(श्रि)ताः श्रीमन्मुक्तिनितंबिनीस्तनतटे हारश्रियं बिभ्रति ॥८॥ भव्यानां हृदयाभिरामवसतिः सद्धर्म-(मर्म)स्थितिः कर्मोन्मूलनभंगतिः शुभततिः निर्बाध(बो)धो-द्धृतिः। जीवानामुपकारकारणरतिः श्रेयः श्रियां संसृतिः देयान्मे भवसंभूतिः शिव(म)तिं जैने चतुर्विंशतिः ॥ ९ ॥ श्रीचाहमानक्षितिराजवंशः पौर्वोप्यपूर्वो न जडावनद्धः। भिन्नो न चां-

६ (गो न च) रंध्रयुक्तो नो निःफलः सारयुतो नतो नो ॥१०॥ लावण्यनिर्मलमहोज्वलितांगयष्टिरच्छोच्छलच्छुचिपयःपरिधानधा-(त्री। उत्तुं)गपर्वतपयोधरभारभुग्ना शाकंभराजनि जनीव ततोपि विष्णोः ॥११॥ विप्रः श्रीवत्सगोत्रेभूदहिच्छत्रपुरे पुरा। सामंतोनंतसामन्तः पूर्णतल्लो नृपस्ततः ॥१२॥ तस्माच्छ्री-जयराजविग्रहनृपौ श्रीचन्द्रगोपेन्द्रकौ तस्माद्दु(र्ल)भगूवकौ शशि-

७ नृपो गूवाकसच्चंदनौ। श्रीमद्वप्पयराजविंध्यनृपती श्रीसिंह-राड्विग्रहौ। श्रीमद्दुर्लभगुंदुवाक्पतिनृपाः श्रीवीर्यरामोऽनुजः ॥१३॥ (चामुंडो) वनिपोऽतिश्च राणकवरः श्रीसिंघटो दूस-लस्तभ्राताथ ततोपि वीसलनृपः श्रीराजदेवीप्रियः। पृथ्वीराज-नृपोथ तत्तनुभवो रासल्लदेवीविभुस्तत्पुत्रो जयदेव इत्यवनिपः सोमल्लदेवीपतिः ॥१४॥ हत्वा चच्चिगसिंधलाभिधयसोराजादि-वीरत्रयं।

८ क्षिप्रं क्रूरकृतांतवक्त्रकुहरे श्रीमार्गदुर्दान्वितं। श्रीमत्सो(ल्ल)ण-दण्डनायकवरः संग्रामरंगांगणे जीवन्नेव नियंत्रितः करभके येन···(क्षि)सात् ॥१५॥ अर्णोराजोस्य सूनुर्हृतहृदयहरिः सत्व-वांशिष्टसीमो गांभीर्यौदार्यवर्यः समभवद(चि)रालब्धमध्यो न हीनः। तच्चित्रं जं न जाड्यस्थितिरवृत महापंकहेतुर्न भव्या न श्रीमुक्तो न दोपाकररचितरतिर्न द्विजिह्वाधिसेव्यः ॥१६॥

९ यद्राज्यं कुमवारणं प्रतिकृतं राजांकुशेन स्वयं येनात्रैव नु चित्रमेतत् पुनर्मन्यामहे तं प्रति । तच्चित्रं प्रतिभासते सुकृतिना निर्वाणनारायणन्यक्काराचरणेन मंगकरणं श्रीदेवराजं प्रति ॥१७॥ कुवलयविकासकर्ता विग्रहराजोजनि (स्तु) नो चित्रं । तत्तनयस्तच्चित्रं य(त्र) जडक्षीणसकलंकः ॥१८॥ मादानन्वं चक्रे मादानपत्रैः परस्य मादानः । यस्य दृधत्करवालः करतलाकलितः

१० करतलाकलितः ॥१९॥ कृतांतपथसज्जोभूत् सज्जनो सज्जनो भुवः । वैकुंतं कुंतपालोगा(द्यत) वै कुं(त)पालकः ॥२०॥ जावालिपुरं ज्वाला(पु)रं कृता पल्लिकापि पल्लीव । नड्डलतुल्यं रोपान्नड्डूल येन शौर्येण ॥२१॥ प्रतोल्यां च वलभ्यां च येन विश्रामितं यशः । ढिल्लिकाग्रहणश्रांतमाशिकालामलंभितं ॥२२॥ तज्ज्येष्ठभ्रातृपुत्रोऽभूत् पृथ्वीराजः पृथूपमः । तस्माद्जितहेमांगो हेमपर्वतदानतः ॥२३॥ अतिधर्मरतेना-

११ पि पार्श्वनाथस्वयंभुवे । दत्तं मोराझरीग्रामं भुक्तिमुक्तिश्च हेतुना ॥२४॥ स्वर्णादिदानविवहैर्दशभिर्महद्भिस्तोलानरैर्नगरदानचयैश्च विप्राः । येनाचिताश्चतुरभूपतिवस्तुपालमाक्रम्य चात्मनसिद्धिकरी गृहीतः ॥२५॥ सोमेश्वराल्लब्धराज्यस्ततः सोमेश्वरो नृपः । सोमेश्वरनतो यस्माज्जनः सोमेश्वरोभवत् ॥२६॥ प्रतापलंकेस्वर इत्यभिख्यां यः प्राप्तवान् प्रौढपृथुप्रतापः । यस्याभिमुख्ये वरवैरिमुख्याः केचिन्मृता केचिदभिद्रुताश्च ॥२७॥ येन श्रा-

१२ पार्श्वनाथाय रेवातीरे स्वयंभुवे । सासने रेवणाग्रामं दत्तं स्वर्गाय कांक्षया ॥२८॥ छ ॥ अथ कारापकवंशानुक्रमः ॥ तीर्थे श्रीनेमिनाथस्य राज्ये नारायणस्य च । अंमोधिमथनाद्देवबलिभिर्वलशालिभिः ॥२९॥ निर्गतः प्रवरो वंशो देववृंदैः समाश्रितः । श्रीमालपत्तने स्थाने स्थापितः शतमन्युना ॥३०॥ श्रीमालशैलप्र-

वरावचूलः पूर्वोत्तमत्वगुणः सुवृत्तः। प्राग्वाटवंशोस्ति बभूव तस्मिन् मुक्तोपमो वैश्रवणाभिधानः ॥२१॥ तडागपत्तने येन कारितं
१३ जिनमंदिरं। (नीत्वा) श्रीत्वा यशस्तत्वमेकत्र स्थिरतां गतं ॥२२॥ योचीकरच्चंद्रसुचिप्रभाणि ब्याघ्रेरकाद्रौ जिनमंदिराणि। कीर्तिद्रुमारामसमृद्धिहेतोर्निबिनांनि कंदा इव यान्यमंदाः ॥२३॥ कल्लोलमांसलितकीर्तिसुधासमुद्रः तद्वृद्धिवंधुरवधूवरणे ध(रेणः)। ···पाकारकरणप्रगुणांतरात्मा श्रीचच्चुलस्तनयः··· पदेभूत् ॥२४॥ शुभंकरस्तस्य सुनोजनिष्ट शिष्टैर्महिष्टैः परिकीर्त्यकीर्तिः। श्रीजामटाभून तदंगजन्मा यदंगजन्मा खलु पुण्यराशिः ॥२५॥ मंदिरं वर्ध-
१४ मानस्य श्रीनाराणकसंस्थितं। भाति यत्कारितं स्वीयपुण्यस्कंधमिवोज्वलं ॥२६॥ चत्वारश्चतुराचाराः पुत्राः पात्रं शुभश्रियः। अभुप्यामुष्यधर्माणोर्वभूवुर्भार्ययोर्द्वयोः ॥२७॥ एकस्यां द्वावजायेतां श्रीमदाम्बटपद्मटौ। अपरस्यां (सुतौ जातौ श्रीमह्ल)-स्मदेवमलौ ॥२८॥ पाकाणां नरवरं वीरवेश्मकारणपाटवं। प्रकटितं स्वीयवित्तेन धानुनेव महीतले ॥२९॥ पुत्रौ पवित्रा गुणरत्नपात्रौ विशुद्धगात्रौ समशीलसत्यौ। वभूवतुर्लक्ष्मटकस्य जैत्रौ मुनींद्रुरामेंद्रमिथौ प्रशस्तौ ॥३०॥
१५ पट्खंडागमवद्धसौहृदभराः पड्जीवरक्षेश्वराः षड्भेदेप्रियवश्यनापरिकराः षट्कर्मकृतादराः। षट्खंडावनिकीर्तिपालनपराः पाड्गुण्यचिंताकराः षडदष्टध्वंसनभास्कराः समभवः षट् देशलस्यांगजाः ॥३१॥ श्रेष्ठी दुद्धकनाथकः प्रथमकः श्रीमोसलो वीगडिर्देवस्पर्श इतोपि सीयकवरः श्रीराहको नामतः एते तु क्रमतो जिनक्रमयुगांभोजैकभृंगोपमा मान्या राजशतैर्वदान्यमतयो राजंति जंबूत्सवाः ॥३२॥ हर्म्यं श्रीवर्धमानस्याजयमेरौविभूषणं कारितं यैर्महानार्गवि-

१६ मानमिव नाकिनां ॥४३॥ तेषामंतः श्रियः पात्रं (सोय)कः श्रेष्ठिभूषणं । मंडलकरमहादुर्गं भूपयामास भूतिना ॥४४॥ यो न्यायांकुरसेचनैकजलदः कीर्तेर्निधानं परं सौजन्यांबुजिनीविकाशनरविः पापाद्रिभेदे पविः । कारुण्यामृतवारिधिर्विलसने राकाशशांकोपमो नित्यं साधुजनोपकारकरणव्यापारबद्धादरः ॥४५॥ येनाकारि जितारिनेमिभवनं देवाद्रिशृंगोद्गुरं चंचत्कांचनचारुदंडकलशश्रेणीप्रभाभास्वरं । खेलत्-खेचरसुन्दरीश्रमभरं भंजद् ध्वजोद्वीजनैर्धत्तेष्टापदशैलशृंगजिनभूत्प्रोद्दामसद्मश्रियं ॥४६॥ श्रीसीयकस्य भार्ये द्वे

१७ नागश्रीसामटाभिधे । आद्यायास्तु त्रयः पुत्राः द्वितीयायाः सुतद्वयं ॥४७॥ पंचाचारपरायणाःस्ममतयः पंचांगमंत्रोज्वलाः पंचज्ञानविचारणासुचतुराः पंचेन्द्रियार्थोजयाः । श्रीमत्पंचगुरुप्रणाममनसः पंचाणुशुद्धव्रताः पंचैते तनया गृही(तवि)नयाः श्रीसीयकश्रेष्ठिनः ॥४८॥ आद्यः श्रीनागदेवोऽभूल्लोलाकश्चोज्वलस्तथा । महीधरो देवधरो द्वावेतावन्यमातृजो ॥४९॥ उज्वलस्यांगजन्मानौ श्रीमद्दुर्लभलक्ष्मणौ । अमृतांभुवनोद्भासियशो दुर्लभलक्ष्मणौ ॥५०॥ गांभीर्यं जलधेः स्थिरत्वमचलात्तेज-

१८ स्वितां भास्वतः सौम्यं चंद्रमसः शुचित्वममरस्रोतस्विनीतः परं । एकैकं परिगृह्य विश्वविदितो यो वेधसा सादरं मन्ये बीजकृते कृतः सुकृतिना सल्लोलकश्रेष्ठिनः ॥५७॥ अथागमन्नं (द्विरमे) पकीर्तेः श्रीवि(ध्यव)ल्लीं धनधान्यवल्लीं । तत्रालु(लोके ह्यमितल्पसुप्तः) कंचिन्नरेशं पुरतः स्थितं सः ॥५२॥ उवाच कस्त्वं किमिहाभ्युपेतः कुतः स तं प्राह फणीश्वरोहं । पातालमूलात्तव देशनाय (श्री) पार्श्वनाथः स्वयमेप्यतीह ॥५३॥ प्रातस्तेन समुत्थाय न किंचन विवेचितं । स्वप्नस्यातम्मनोभावा यतो वातादिदूषिताः ॥५४॥ लोला-

१९ क(स्य) प्रियास्तिस्रो बभूवुर्मनसः प्रियाः। ललिता कमलश्रीश्च लक्ष्मीर्लक्ष्मीसनामयः ॥५५॥ ततः स भर्त्ता ललितां बभाषे गत्वा प्रियां तस्य निशि प्रसुप्तां। शृणुष्व भद्रे धरणोहमेहि श्री (पार्श्वनाथं खलु द)र्शयामि ॥५६॥ तया स चोक्तो···· (यत्त्वं न हि) सत्यमेतत्। श्रीपार्श्वनाथस्य समुद्धृतिं स प्रासादमर्चां च करिष्यतीह ॥५७॥ गत्वा पुनर्लोलिकमेवमूचे मो भक्त शक्त्यानुगतातिरिक्त। देवे घने धर्मविधौ जिनोष्टौ श्री-रेवतीतीरमिहाप पार्श्वः ॥५८॥ समुद्धरेनं कुरु धर्मकार्यं त्वं कारय श्रीजिनचै-

२० त्यगेहं। येनाप्स्यसि श्रीकुलकीर्तिपुत्रपौत्रोरुसंतान-सुखाद्धिवृद्धिं ॥५९॥ त(द्रेतश्री) माख्यं वनमिह निवासो जिनपतेस्त एते ग्रावाणः शकलमुक्ता गगनतः। सदारा(मः) (शश्वत्स) दुपचयतःकुंडसरितोस्तदत्रेतत् स्थानं···(नि)गमं प्रायपरमं॥६०॥ अत्रास्त्युत्तममुत्तमाद्रिसिखरं साधिष्ठमंचोच्छ्रितं तीर्थं श्रीवर-लाङ्कात्र परमं देवोतिमुक्तामिवः। सत्यश्चात्र वटेश्वरः सुरनतो देवः कुमारेश्वरः मौमान्येश्वरदक्षिणेश्वरसुरो मार्कंड-रिच्छेश्वरौ ॥६१॥ सत्योंबरेश्वरो देवो ब्रह्ममहेश्वरावपि कुटि-

२१ लेशः कर्करेशो यत्रास्ति कपिलेश्वरः ॥६२॥ महानाल-महा का(लम)स्येश्वरसंज्ञकाः श्रीत्रिपुष्करतां प्राप्ता(:संति) त्रिभुवना-र्चिताः ॥६३॥ कीर्तिनाथश्च (केदारः)····मिस्वामिनः। संगमेशः पुटीशश्च मुखेश्वरवटेश्वराः ॥६४॥ नित्यप्रमोदितो देवो सिद्धेश्वर-नयेश्वराः। (गंगाभेदश्च) सोमेशः गंगानाथत्रिपुरांतकाः ॥६५॥ मंस्नात्री कोटिलिंगानां यत्रास्ति कुटिला नदी। स्वर्णजालेश्वरो देवः समं कपिलधारया ॥६६॥ नाल्पमृत्युर्न वा रोगा न दुर्भिक्षमवर्षणं। यत्र देवप्रभावेन कलि-

२२ पंकप्रघर्षणं ॥६७॥ षण्मासे जायते यत्र शिवलिंगं स्वयंभुवं।

तत्र कोटीश्वरे तीर्थे का श्लाघा क्रियते मया ॥६८॥ इत्येवं···
कृत्वावतारक्रियां। कर्ता पार्श्वजिनेश्वरोत्र कृपया सोथाद्य वासः
पतेः शक्तेर्वैक्रियिकः श्रियस्त्रिभुवनप्राणिप्रवोधं प्रभुः ॥६९॥ इत्या-
कर्ण्य वचो विभाव्य मनसा तस्योरगस्वामिनः स प्रातः प्रतिबुध्य
पार्श्वमभितः क्षोणीं विदार्य क्षणात्। तावत्तत्र विभुं ददर्श
सहसा निःप्राकृताकारिणं कुंडाभ्यर्णत एव धाम दधतं स्वायंभुवं
श्रीश्रितं ॥७०॥

२३ नासीद्यत्र जिनेन्द्रपादनमनं नो धर्मकर्मार्जनं (न स्नानं) न
विलेपनं न च तपो ध्यानं न दानार्चनं। नो वा सन्मुनिदर्शनं
(न)····॥७१॥ तत्कुंडमध्यादथ निर्जगाम श्रीसीयकस्यागमनेन
पद्मा। श्रीक्षेत्रपालस्तदथांविका च (श्रीज्वा)लिनी श्रीधरणोर-
गेंद्रः ॥७२॥ यदावतारमकार्षीदत्र पार्श्वजिनेश्वरः। तदा नागहृदे
यक्षगिरिस्तंवः पपात सः ॥७३॥ यक्षोपि दत्तवान् स्वप्नं
लक्ष्मणब्रह्मचारिणः। तत्राहमपि यास्यामि यत्र पार्श्वविभुर्मम
॥७४॥ रेवतीकुण्ड-

२४ नीरेण या नारी स्नानमाचरेत्। सा पुत्रं भर्तृसौभाग्यं (लक्ष्मीं
च) लभते स्थिरं ॥७५॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यो वा शूद्र
एव वा। रेवतीस्नानकर्ता यः स प्राप्नोत्युत्तमां गतिं ॥७६॥
धनं धान्यं धरां धाम धैर्यं धौरेयतां धियं। धराधिपतिसन्मानं
लक्ष्मीं चाप्नोति पुष्कलां ॥७७॥ तीर्थाश्चर्यमिदं जनेन विदितं
यद्दर्शयते सांप्रतं कुष्टप्रेतपिशाच-कुज्वररुजाहीनांगगंडापहं,
संन्यासं च चकार निर्गतमयं घूकसृगालीद्वयं काली नाकमवाप
देवकलया किं किं न संपद्यते ॥७८॥ श्लाघ्यं जन्म कृतं धनं
च सफलं नीता प्रसिद्धिं मतिः।

२५ सद्धर्मोपि च दर्शितस्तनुरुहस्वप्नोर्पितः सत्यतां म····रदृष्टिदूषित-
मनाः सदृष्टिमार्गे कृतो जै(ने)···ना श्रीलोलकश्रेष्ठिनः ॥७९॥

किं मेरोः शृंगमेतत् किमुत हिमगिरेः कूटकोटिप्रकांडं किं वा कैलासकूटं किमथ सुरपतेः स्वर्विमानं विमानं। इत्थं यत्तर्क्यते स्म प्रतिदिनममरैर्नर्त्यराजोत्करैर्वा मन्ये श्रीलोलकस्य त्रिभुवनभरणादुच्छ्रितं कीर्तिपुंजं ॥८०॥ पवनधुतपताकापाणिनो भव्यमुख्यां पटुपटहनिनादाद्ध्वयत्येष जैनः। कलिकलुषमथोच्चैर्दूरमुत्सारयेद्वा त्रिभुवनाव-

२६ (मुला) भान्नृत्यतीवालयोयं ॥८१॥ (काश्चित् स्था) नकमाधरंति दधते काश्चिच्च गीतोत्सवं काश्चिद् बिभ्रति तालकं सुललितं कुर्वंति नृत्यं च काः। काश्चिद् वाद्यमुपानयंति निभृतं वीणास्वरं काश्चन यत्रोच्चैर्ध्वजकिंकिणीयुवतयः केषां मुदं नावहन् ॥८२॥ यः सद्वृत्तयुतः सुदीप्तिकलितस्त्रासादिदोषोज्झितश्चिंताख्यातपदार्थदानचतुरश्चिंतामणेः सोदरः। सोभूच्छ्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरुस्तत्पादपंकेरुहे यो भृंगायत एव लोलकवरस्तीर्थं चकारैष सः ॥८३॥ रेवत्याः सरितस्तटे तरुवरा यत्राह्वयंते भृशं

२७ शाखाबाहुलतोत्करैर्न (खु) रान् पुंस्कोकिलानां रुतैः। मत्पुष्पोच्चयपत्रसत्फलचयैरानि(र्मले)र्वारिभिर्मो भ्यर्चयताभिषेकयत वा श्रीपार्श्वनाथं विभुं ॥८४॥ यावत्पुष्करतीर्थमैकतकुलं यावच्च गंगाजलं यावत्तारकचंद्रभास्करकरा यावच्च दिक्कुंजराः। यावच्छ्रीजिनचंद्रशासनमदं यावन्म(हे) न्द्रं पदं तावत्तिष्ठतु तत् प्रशस्तिसहितं जैनं स्थिरं मंदिरं ॥८५॥ पूर्वतो रेवतीसिंधुर्देवस्यापि पुरं तथा। दक्षिणस्यां मठस्थानमुदीच्यां कुण्डमुत्तमं ॥८६॥ दक्षिणोत्तरतो वाटी नानावृक्षैरलंकृता। कारितं

२८ लोलिकेनैतत् सप्तायतनसंयुतं ॥८७॥ श्रीमन्मा(थु) रसंघेभूद् गुणभद्रो महामुनिः। कृता प्रशस्तिरेषा च कवि (कं) ठ (वि) भूषणा ॥८८॥ नैगमान्वयकायस्थछीतगस्य च सूनुना। लिखिता केशवेनेदं मुक्ताफलमिवोज्वला ॥ ८९ ॥ हरसिगसूत्रधाराय

तत्पुत्रो पाल्हणो भुवि । तदंगजेमाहडेनापि निर्मापितं जिनमंदिरं ॥६०॥ नानिगः पुत्रगोविंदपाल्हणसुतदेल्हणौ । उत्कीर्णा प्रशस्तिरेषा च कीर्तिस्तम्भं प्रतिष्ठितं ॥६१॥ प्रसिद्धिमगमद्देवः काले विक्रमभास्वतः षड्विंशे द्वादशशते फाल्गुने कृष्णपक्षके ॥६२॥

२९ (तृ)तीयायां तिथौ वारे गुरुस्तारे च हस्तके । धृतिनामनि योगे च करणे तैतिले तथा ॥६३॥ (सं) वत् १२२६ फाल्गुन वदि ३ कांवारेवणाग्रामयोरंतराले गुहिलपुत्र रा० दाधरमहं घणसीहाभ्यां दत्त क्षेत्र डोहली १ खडुंवराग्रामवास्तव्य गौडसोनिगवासुदेवाभ्यां दत्त डोहलिका १ आंतरीप्रतिगणके रायताग्रामीय महंतमलींवडिपोपलिभ्यां दत्त क्षेत्र डोहलिका लघुवोझोलिग्राम संगुहिलपुत्र राव्याहरूमहंतममाहवा—

३० (भ्यां द) त्त क्षे (त्र) डोहलिका १ वहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिर्भरतादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥छ॥

[इस लेखका निर्देश जै० शि० सं० के तृतीय भाग में क्र० ३७४ पर हुआ है किन्तु उस समय इसे श्वेताम्बर लेख समझकर मूल पाठ नहीं दिया गया था । इसमें पहले २८ श्लोकोंमें सांभरके चौहान राजाओंकी वंशावली चाहुमानसे सोमेश्वर तक दी है । इसमें कुल ३१ राजाओंके नाम हैं । इनमें अन्तिम दो राजाओंने इस स्थानके पार्श्वनाथ मन्दिरको दो गाँव दान दिये थे—पृथ्वीराज (द्वितीय) ने मोराझरी गाँव और सोमेश्वरने रेवणा गाँव दिया था । तदनन्तर इस मन्दिरके निर्माताकी वंशावली विस्तारसे ५१वें श्लोक तक दी है जो इस प्रकार है –

प्राग्वाटवंशीय वैश्रवण (इसने तडागपत्तन, व्याघ्रेरक आदि स्थानोंमें मन्दिर बनवाये) – उसका पुत्र चच्चुल – उसका पुत्र शुभंकर—उसका पुत्र जासट (इसने नाराणक स्थानमें वर्धमान मन्दिर बनवाया)—उसको दो स्त्रियोंसे दो दो पुत्र हुए – आम्वट, पद्मट, लक्ष्मट तथा देसल (इनने

नरवर नगरमें वीरजिनमन्दिर बनवाया) – लक्ष्मटके पुत्र मुनीन्दु तथा रामेन्दु – देसलके पुत्र दुद्यक, मोसल, बीगडि, देवस्पर्श, सीयक तथा राहक– सीयकने मण्डलकर दुर्ग विभूपित किया और नेमिनाथ मन्दिर बनवाया – उसकी स्त्रियां नागश्री तथा मामटा – नागश्रीके पुत्र नागदेव, लोलक तथा उज्वल – मामटाके पुत्र महीधर तथा देवधर – उज्वलके दो पुत्र दुर्लभ तथा लक्ष्मण। इनमें सीयकके पुत्र लोलकने यह मन्दिर बनवाया। मन्दिरके निर्माणका वर्णन ८७वें श्लोक तक किया है। कहा है कि लोलक तथा उसकी पत्नियाँ ललिता, कमलश्री और लक्ष्मी विंध्यवल्ली नगरमें थे उस समय धरणेन्द्रने स्वप्नमें लोलाक श्रेष्ठीको इस मन्दिरके निर्माणका आदेश दिया। तदनुसार जमीन खोदते हुए एक पार्श्वनाथमूर्ति मिली और उसके लिए लोलकने यह मन्दिर बनवाया। इस स्थानको वरलाइका तीर्थ कहकर यहाँके कई शिवमन्दिरोंका माहात्म्य भी इस लेखमें दिया है। यहाँके रेवतीकुण्डमें स्नान करनेसे कोढ़ आदि रोग दूर होनेका भी वर्णन है। लोलाकके गुरु जिनचन्द्रसूरि थे। इस लेखकी रचना माथुर संघके महामुनि गुणभद्रने की। इसे केशवने शिलापर लिखा और गोविन्द तथा देल्हणने उत्कीर्ण किया। यह कार्य फाल्गुन कृ० ३ संवत् १२२६ को सम्पन्न हुआ। अन्तमें इस मन्दिरको दानरूपमें प्राप्त कुछ जमीनोंका विवरण दिया है।]

(ए० इं० २६ पृ० १०२)

२६६

इन्दोर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

संवत् १२२७ = सन् ११७१, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें शंख चिह्न है जिससे प्रतीत होता है कि यह नेमिनाथकी मूर्तिका पादपीठ होगा। इसमें देशीगणके गुणचन्द्र, श्रीकीर्ति, रत्नचन्द्र तथा भावचन्द्रका उल्लेख है और गुर्जर जातिके वीन नामक व्यक्तिका भी उल्लेख है। समय संवत् १२२ (७)।]

[रि० इ० ए० क्र० (१९५०-५१) १६१]

२६७

नदिहरलहल्लि (धारवाड, मैसूर)

शक १०९(४) = सन् ११७२, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा रायमुरारि सोविदेवके समय श्रावण शु० (?) गुरुवार, शक १०९ (५), नन्दन संवत्सरका है। इसमें उल्लेख है कि दण्डनायक महेश्वरदेवके अधीन कर संग्रह करनेवाले अधिकारियोंने गोट्टगडि स्थित नागगावुण्डकी बसदिके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया। उस समय वनवासि प्रदेशपर कासिमय्य दण्डनायकका शासन चल रहा था।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई० ५९ पृ० १५२]

२६८

बोगादि (मांड्या, मैसूर)

शक १०९५ = सन् ११७३, कन्नड

१ श्रीमत् पार्थिवकुलचंद्र यदुवंशवार्धिवर्धनचंद्रं भीमभुजं ललना-जनकामाभिरामन् बल्लालं ॥ दिग्गिभंगलु मदविहलंगल मलुंकलु कूर्मनिन्तोमेयुं भोगमीयं भुजगाधिपं बहुमुखं सारल्कु यार्संग-मेन्दुगुणोद्ग्रसमग्रलक्षणलसद्दोर्दण्डदोल् संतोषं मिगे भूकामिनि यिर्दल् आपदुलर्दि बल्लालभूपालन ॥ आ नृपनगण्यपुण्यं मानसरूपादुदंबिनं भुवनजनं मानोन्नतकनकाचलन् आनतरक्षैक-दक्षरत्ननिधानं ॥ महांगमन्त्रकमनीयालंबितसुरराजपूज्यचरणा-क्यन् एनलु संचितकीर्तिपराक्रमप्रभावनन् एनिसि

२ माचिराजं नेगल्दं ॥ तनुविं कामन(न)र्थिगीव गुणदिं कल्पाद्रियं हेमाचलमं चारुचरित्रदिंदुदधियं गांभीर्यदिं स्थैर्यदिं कनकाद्रीन्द्र-

मनिंद्रनं विभवदिं गेल्दिर्दना माचिराजनन् आर्मणिण (सलापरं ई) विश्वंभरामागदोलु ॥ आ विभु माचिराजन मार्च वल्लय्यन् अय्यन् ई धरेगेल्लं काव गुणदिन् आदन् अदाव गुणगणदिन् आतन् एणेयप्पनं ॥ अधिगमसम्यग्दृष्टियन् अधिगतसकलाग-मार्थनं कविबुधमागधदीनजैनजनतानिधियं पोगललुके वल्लर् आर् वल्लय्यनं विरिदवन् ईयलु वल्लं सरणेंदडे करुणदिंदे कायलु वल्लं पुरुषांतरमं बल्ल परिकिपडन्तल्ते···

३ ल नादं वल्लं ॥ परकान्ताळकजालकवक्के पर···दाराहरलक्के···· पानतरोत्तुंगस्तनद्वन्द्वसुंदरसंगक्के परांगनाभुजलतासंश्लेषणक्रो-डिसं निरुतं श्री····वलदेव····निदं परिहृतपरदारः दीनांधनाथ··· विदितविशदकीर्तिविश्रुतोदारमूर्तिः स जयतु बलदेवः श्रीजिने-न्द्रांघ्रिसेवः ॥ अन्ता बल्लालमहीकांतन वरमन्त्रिवल्लभं बल्लय्यं सन्ततजिनपूजनेगागन्तुकमं भो(ग)वदिय बसदिगे विट ॥

नीचेकी ओर

४ होरवारु ओलवारु मग्गदेरे कालबोवनहल्लिय····यिनितर मत्तंतु मनेसुंक नेरे मलवत्तियसुंक विनितं····॥···॥ वनपालम सुंक-वनितं मनुमार्गं मदनमूर्ति विभु बल्लय्यं मनमोसदु भोगवसदि-योलु जिनपूजेगे भक्तियिंदिदा····

५ दिंदिन्तिदनेय्दे काव पुरुषंगायुं जयश्री···दं कायदे काव्य पापिगे वारणासियोल् एक्कोटिमुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाध्यरं कोन्दुदोंदयशं पोर्दुगुमेंदु सारिदपुदीशैलाक्षरं धात्रियोल् ॥ विषं न विषमित्याहुः देव-

६ स्वं विषमुच्यते विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकं ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधराः षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः ॥ मंगल

७ सामान्योयं धर्मसेतुर्नृपाणां काले-काले पालनीयो भवद्भिः सर्वानेतान् माविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो-भूयो याचते रामचंद्रः ॥ स्वस्ति श्रीमन्महामंडलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल वीरगंग वल्लालदेवरु दोरसमुद्रदलु सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेयुत्त विरलु तत्पाद-पद्मोपजीवि महाप्रधान सर्वाधिकारि हेग्गडे वल्लय्य शककाल सासिरद् तोंभत्तैदनेय विजयसंवत्सरद कार्तिक शुद्ध पंचमि सोमवारदंदु कालवोवनहल्लिसहितवागि वोगवदियलुल्ल समस्त-सुंकवं श्रीकरणजिनालयद श्रीपार्श्वदेवर् अष्टविधार्चनेगेंदु श्रीमदकलंकदेव(सिंहा-)

८ हासनस्थितरप्प श्रीपद्मप्रभस्वामिगलगे धारापूर्वकं माडि कोट्टरु

(इस लेखमें होयसल राजा वल्लालके महाप्रधान हेग्गडे वल्लय्य-द्वारा भोगवदिके पार्श्वजिनालयके लिए अकलंकदेवकी परम्पराके पद्मप्रभ स्वामी-को कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका निर्देश है। यह दान कार्तिक शु० ५, शक १०९५, विजयसंवत्सर,के दिन दिया गया था। हेग्गडे वल्लय्य महाप्रधान माचिराजका माव (ससुर या चाचा था)

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १५०]

२६९

सोगि (जि० वेल्लारी, मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड (वीरप्पके घरके आगे एक शिलाखण्डपर)

[इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धन वीरवल्लाल-द्वारा कार्तिक शु० ५, गुरुवारको किसी जैन संस्थाको भूमिदान दिये जानेका निर्देश है।]

[इ० म० वेल्लारी २३७]

२७०

चिक्कहन्दिगोल (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ८ = सन् ११७५, कन्नड

[इस लेखमें कलचुर्य राजा सोविदेवके राज्यवर्ष 'जयसंवत्सरमें शंख-जिनालयको दिये गये दानका वर्णन है। इस लेखकी रचना 'अनुपमकवि-कालिदास' हित्तिन सेनबोव-द्वारा की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२६–२७ क्र० ई० १५० पृ० १२]

२७१

कलसापुर (कडूर, मैसूर)

शक १०९८ = सन् ११७६, कन्नड

१ (घिस गयी है)

२ कैवल्यबोधेन्दिराधामं षोडशतत्त्व(तीर्थ)कर्तृं विमलज्ञानाप्तियं सत्सुखारामं माल्के विनेयसन्ततिगे नित्यं शान्ति-

३ तीर्थेश्वरं ॥ (१) श्री स्वस्ति होयिसलवंशाय प्रतापार्जितकीर्तये । यदुवंशनृपान''''भूभृ-

४ ते ॥ (२) तदन्वयावतारमेन्तेन्डोडे ॥ सरसीजोदरनाभिपद्मजनजं तत्पुत्रनन्तत्रियत्रिल्होद्भूनबु-

५ धं पुरूरवने तज्जं तत्तनूजायुवायुरपत्यं नहुषं ययातिमहिपं तत्सम्भवं नरेश्वरजा-

६ तं । यदु तत्कुलं सलनृपं लोकोत्तमं पुट्टिदं । (३) यादवरोले होयिसलवेसराद्दु सलनिन्दे हुलि-

७ य मेलेयुण्डिगेयादुदु चिह्नं वरमन्तादुदु सले शशकपुरद वासन्तिकेयिं ॥ (४) सलनृपनिं ब-

८ लिर्यि यदुकुलदोळ् पलम्बरोगेदर् अवरन्वयदोळ् । बलवद्-
विरोधिकुलिशं जनियिसिदनेसेयेवि-

९ नयादित्यं ॥ (५) घनमार्गानुगतं जगत्प्रणुतमित्रं मण्डलाग्र-
प्रतापनियुक्तं रिपुभूपसन्तम-

१० सभेदं सज्जनं····नसन्तोषकरं स्वबन्धुजनचक्राह्लादकं पुट्टिदं
विनयादित्यनृपाल-

११ कं यदुकुलोत्तुंगोदयाद्रीन्द्रदिं ॥ (६) विनयादित्यनृपालन कुल-
वधुवेनिसि सिरियोल्-

१२ वाणियोलं तनगे केलेयोलन्दु बुधजनवेने केलियब्बरसि
सरसिजाननेयेसेदल् ॥ (७) सति केलियब्बरसिगमा-

१३ विनयादित्यनृपतिगं पुट्टिदमुद्धतवैरिदर्पदलनोद्यतमयनयशौर्य-
शालियेरेयंगनृपं ॥ (८)

१४ विनयादित्यावनिपालन सुतनेरेयंगं सगर्वित भू···निरव्ये
धर्मदीक्षागुरुविनतमहीभृत्समू-

१५ हैकरक्षावनधिप्रियं समस्ताश्रितनटनटीसिन्धमू कलनिव निजतं-
सत्यवाणिसुखमणि मा-

१६ पुरनिर्मलाबोधसुतं हिमरुचियन्ते सेवादरवियं लतियं सरसिजमं
मनोरमकुसुमंगलं कद्-

१७ नयं मदनं विदियागि ताने तोयद्मृतदिनेय्दे निर्मिसिदनेन्नदे
केलदेयं····भूरमणन कान्तेयं पेरत-

१८ नेन्नदिर् एचलदेविराणियं ॥ (९) अन्तेरेयंगमहीशन कान्तेगे
जनियिसिदरेसेव बल्लालमहीकान्तं विष्णुमहिपननन्तगुणं

१९ नृपललामनुदयादित्यं । (१०) अवरोधद्रुमनागियुं बुधनिकाय-
स्तूयमानि श्री···विशेषोन्नतियिन्दसु –

२० त्तमनेनिप्पं सच्चरिताद्रि वगगाजलधौतनिर्मलकुलदृप्तारिदर्पापहं
भुव···विभवं···श –

२१ श्रीविष्णुभूपालकं ॥ (११) जनियिसिदं विष्णुमहीशन ल…
विदनुपमं नरसिंहावनिप ननरिपुभूपाल-निकायलला -

२२ टतटविघटितचरणं देवनृसिंहन प्रियमहिषीपट्टदोलरेत्तु पट्टमहि-
षियें…देचलदेवा लमल्लनांगि

२३ राजीवदलाक्षि पल्लवनिभाधरे पाटलकण्ठि कोकिलारावे…राजीव-
नल…य । यनेवे ताल्दिदल् ॥ (१२) कालनिभप्रत -

२४ जनरसिंहमहीपतिगं मदेभलीलालसयानेकम्बुनिभकन्धरे येचल-
देविगं…श्रीलक्ष्मनेगन्यानेने पुट्टिदनूर्जित -

२५ पुण्यमूर्ति बल्लालनृपालं समदवैरिमहीभुजदर्पभंजनं ॥ (१३)
क्षा…वादिधगवनिनेय चातुर्यदि नोडा (?)

२६ निरनणि रमणांगकुलमं आयोलायशनुरत्यागदि वन्दिवृन्द-
मनित्याननसत्यदिं चरितदिं सन्ततमुं तन्नोल् क्रमदिं निश्चल -

२७ मपूर्वं…तलेदं बल्लालभूपालकं ॥ (१४) निजपादानत…दित-
लक्ष्मीवल्लभ - ला…मूर्ति विबुधाराध्य

२८ जगन्नेत्र नीरजमित्र म…दे कान्तनेनिपं प्रतापदेवं समस्त-
जगद्वन्द्यपदारविन्द…रारा…नल ॥ (१५) पुरुहू (त)

२९ स्यात्रभोगं शिखिनिभवनतेजं यमावार्यशौर्यं नरवाहातोप…वायु-
मत्रं धनाधीश्वरमं -

३० वर महेशप्रकटितमहिमं लोकपालप्रभावान्तरनादं दिग्वधूमण्डन-
विशदयशं वीरवल्लालदेवं ॥ (१६) भृगुगेणि वत्सराजं

३१ हयदिनिभसमास्टग्रौढिदिन्दं मगदत्तं वेपदिन्दं दिविजपति…कं
सत्वगुण प्रभूति

३२ राघवन् इनतनयं त्यागदिं वादिभूपाल…नदिदतप्रतिमनेनिसिदं
वीरवल्लालदेवं ॥ (१७) स्वस्ति समधिगतपंच -

३३ महाशब्दमण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बर-
द्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि तलकाडुकोंगुणिव -

३४ नवामिवुच्छंगिहानुंगलगोण्ड भुजवळवीरगंगनसहायशूर निश्शं-
कप्रताप होय्सलवीरवल्लालदेवरसर् द्वारसमु –

३५ द्रदोळ् सुखदि राज्यं गेयुतिरे तत्पादपद्मोपजीविगळ् एनिसिद
श्रीमन्महावड्डव्यवहारि कवडेमय्यं नति

३६ दग्वर गुरुकुलान्वय क्रममेन्तेन्दोडे ॥ विमलश्रीजैनधर्मक्कमल-
तोऽविनन्तोप्पुगु मूलसंघं कमनीयं

३७ कोण्डकुन्दान्वयमे वरगणं देशि''' गच्छ'''क्रमदि तत''''वर्ध''''
गेसेये श्रीवधूटीरम –

३८ ण देवेन्द्रसैद्धान्तिक मुनियेसेदं महोत्साहधामं ॥ (१८) तच्छिष्यं
नाडे विश्रुतगुण वृषभनन्दि मुनि कायो –

३९ त्सर्गगोण्डुपवासदिन्द'''चतुर्मुखाख्येयनाल्दम् । (१९) अवरग्र-
शिष्यरोळग्रन्तदिं द्विजराजिकुमतवाद्मदर्पद –

४० नावर्तिकीर्तिवृक्षनुं श्रीगोपनन्दिपण्डितदेवर् ॥ (२०) जिनसमय-
यशश्चन्द्रं जिनागमाम्भोनिधिप्रवर्धनचन्द्रं जिनमुनिकु –

४१ वलयचन्द्रं जिनचन्द्रं विबुधनिकरराकाचन्द्रं ॥ (२१) निरवद्-
यबोधदर्शनचरणयुतर् माघनन्दिसैद्धान्तिकदेवरशि –

४२ ष्यरार् शमान्वितनिरुपमधर्मेन्द्र रत्ननन्दिमुनीन्द्रर् ॥ (२२)
तत्मधर्मर''''संहिताद्यखिलागमार्थनिपुणव्याख्यानसंशुद्धि –

४३ यिं''''रु सैद्धान्तिकतत्त्वनिर्णयवचोविन्यासदिं श्रुतिसम्बद्ध''''
तयनार्थशास्त्रभरतालंकारसाहित्यदिंरुद्धानूह

४४ बालचन्द्रमुनियं विद्याधर'''(२३) चक्रे श्रीमूलसंघ'''पद्माकर-
राजहंसो''''निपुणप्रवरावतंसः जीया –

४५ ज्जिनेन्द्रसमयार्णवपूर्णचन्द्रः'''कुधाः । (२४) यन्तेनिसिद
श्री''''हलाचार्यर गुड्डं देदी –

४६ ज्जयान्वयवारिधिचन्द्रमनुं''''ग् अर्हन्त्य''''चरितनुं वरजैनसमय-
कुमुदेन्दु''''अन्यायार्जितधनम –

४७ नेयद् कवडेमय्यन् अणुवन्तय्यम् ॥ (२५) वरसुगुणसमन्वित कवडेमय्य तन्न···पून्ययशःसद्गुणि केतिसेट्टियुसुदात्त –

४८ प्रणयरेचिसेट्टिगमन्ता पूणुससेट्टिगमिलासंस्तुत्य देकव्वेगं प्रियपुत्रं प्रभु दास···सम्पूर्णभव्योदय

४९ अनुपम···सेट्टि···यदा कान्ते···अनूनशौर्य निधि

५० ···नामादि···अपूर्व···जनविनुत जक्किसेट्टिय वनिते सु –

५१ ···दामे···तिय तलेदल् ॥ (२७) अवरात्मीयोद्भपुण्योद्य

५२ ···निखिलगुणक्कास्थान वसंन पुण्य···कुलवधु देक-

५३ ····दितोदात्तलक्ष्मीनिवासं ॥ (२८) नीतिलता···दानधर्मपयो-

५४ धिचन्द्रम····राद्दिमनु····वंदवानकल्पभूजं विरो-

५५ तनुजोन्नत····णिसेट्टिय ॥ (२९) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर भुजबलवीरगंगनसहायशूर निःशंकप्र-

५६ ताप····होय्सलदेवरमरु शकवर्ष १०६८ नेय दुर्मुखिसंवत्सरद उत्तरायणसक्रमणदोल् अमरदानव-

५७ माड्डवल्लि····श्रीमन्महावड्डव्यवहारि कवडमय्यन देविसेट्टिय तां माडिसिद आवीरवल्लालजिनाल-

५८ यद····यर्कआहारदानक्कं खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारक्कमेन्दु बिन्नपं गेय्यलवर

५९ ····गणद····तंद श्रीमन्महामण्डलाचार्य वालचन्द्रसिद्धान्त-देवर्गे धारा-

६० पूर्वकं····वालचन्द्र····होसनाडोलगण कोरटिकेरेयनदर कालवा-ल्लिगलो-

६१ लनार्दि···नाचहल्लि मडवद मरियहल्लियोलगाद हल्लिगल सीमासम्बन्धमेन्तेन्दोडे मू-

६२ वनाल····प्पडु - रि - वकय हलेयिलेय मोरडि तेंकलारडिगेरे नैरित्य-

६३ ····यदोल् वायव्यदोल् नेरिलकेरेयोलगण माचिनमर····देवर अरगल्लो···

६४ ····वडमुं नगर सुन्ता वायव्य····

६५ ···लाल तिगुल तेलुंग कर्नाडिग देश मुख्यमाद सु-

६६ ···न्नद नेरपुलिय चिकहरियय्य केतलदेविय गडिय वाचलेश्वरदे सम-

६७ स्तनख····श्रीशान्तिनाथदेवर····कर कैंकर्यक्के विट्टायमेन्तेन्डोडे होय्सल नाडोल

६८ ····त्ति हेरिंगे हागवेरडु कत्तेय हेरिंगे हाग ओन्दु कुदुरे

६९ ····कर्पूरपट्टनूलण्ड-क्के हणवोन्दु श्रीगन्धद मालवेगे

७० ····हणनव्व···वडिय मलवेगे हण नाल्कु येत्तिन मलवेगे हण वोण्

७१ ····हसुवेगे हाग वोन्दु पडसालेय गडिगे वरिसके हण वोन्दु आविडिव····

७२ ····रल देविय गडिगे वरिसक्के हाग वोन्दु निच्च सेडिवत्त दवसद हेरिगे मान वोन्दु

७३ ····मेलसु दड हेरिंगे मान वोन्दु····गणदोल् धारेयेर

७४ ····गेय तडियोल् शतसहस्रब्राह्मणर्गलंकारसमन्वित शतसहस्र-कविलेगलं

७५ ···क्षेत्रदोलनिवर् ब्राह्मणरुमननितुकविलेगलं कोन्द महापताक-नक्कु परिपालिपु

७६ ···गन्ते वर····निनिारे धरेगे शिलाशासनाक्षरावलियेसेगु ॥ स्वदत्तां

७७ ····हरेत वसुन्धरां षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः ॥ सामान्योयं धर्मसे –

७८ ···ळनीयां भवद्भि :। सर्वानेतान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो-भूयो याचते राम –

७९ ····य स्थळद् चतुस्सीमेय निवेशनमेन्तेन्दोडे मूडलु हिरिय राजवीडि नाडल्····

८० ···य बलेयलु पश्चिमके नीलविप्पत्तु बडगण···मोदलोल तेंकलु अ···

[यह विस्तृत लेख दुर्मुखि संवत्सर, शक १०९८ में लिखा गया था। इसके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओंका कुलवर्णन वीरबल्लालदेव (द्वितीय) तक किया है। इनके समय देविसेट्टि नामक वनिकने वीरबल्लालजिनालय नामक मन्दिर बनवाया। मूलसंघ-देसिगण-कोण्डकुन्दान्वयके आचार्य बालचन्द्रकी प्रेरणासे यह कार्य हुआ। इस मन्दिरके लिए राजा वीरबल्लाल-ने कुछ गाँव तथा कुछ करोंका उत्पन्न अर्पण किया था। बालचन्द्रकी गुरुपरम्परा देवेन्द्र सैद्धान्तिक – वृषभनन्दि-चतुर्मुख-गोपनन्दि-जिनचन्द्र-माघनन्दि-रत्ननन्दि-उनके गुरुबन्धु बालचन्द्र इस प्रकार दी है।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ३६]

२७२

कुच्चंगि (तुंकूर, मैसूर)

१२वीं सदी (सन् ११८०) कन्नड

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना मूलसंघ-देशीगण-पनसोगे शाखाके नयकीर्तिसिद्धान्त चक्रवर्तिके शिष्य अध्यात्मि बालचन्द्रके उपदेशसे बम्मिसेट्टिके पुत्र केसरिसेट्टिने बेलूरमें की थी। (समय लगभग ११८० ई०)।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८३]

२७३

पाटशीवरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

शक ११०७ = सन् ११८५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा वीर सोमेश्वरके समय शक ११०७ विश्वावसु संवत्सरका है। इसमें राजाके सामन्त भोगदेव चोल महाराजाका तथा वीरणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्ति और उनके शिष्य पद्मप्रभमलधारिदेवका उल्लेख है। [रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० २८ पृ० ७२]

२७४

लक्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ४ = सन् ११८५, कन्नड

[यह लेख त्रिभुवनमल्ल वीरसोमेश्वरके राज्यवर्ष ४, विश्वावसु संवत्सरमें पुष्य शु० २ बुधवारका है। इसमें कुछ सेट्टियों द्वारा अष्टविधार्चनके लिए नोम्पियबसदिको कुछ दान देनेका उल्लेख है। कुछ शिल्पकारों द्वारा शान्तिनाथदेवको दिये हुए दानोंका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ५५ पृ० ५]

२७५-२७६

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख कदम्ब राजा वीर कावदेवरसके राज्यकालमें चैत्र व० १, मंगलवार, श्रीमुख संवत्सरके दिन लिखा गया था। चन्द्रकीर्ति भट्टारकके शिष्य तथा वर्धमानसेट्टिके पुत्र सातिपेद्दके समाधिमरणका इसमें उल्लेख है। यहींके एक अन्य लेखमें एक सेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३८-२४० पृ० २७]

२७७-२७८

बम्बई (महाराष्ट्र)

१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख भायखलाके जैन मन्दिरमें है। कदम्ब राजा कावदेवके राज्यवर्ष ४४, ईश्वर संवत्सरमें भाद्रपद शु० १२, सोमवारके दिन नागय्य-के समाधिमरणका इसमें उल्लेख है। यहींके एक अन्य समाधिलेखमें दी हुई तिथि इस प्रकार है – भाद्रपद शु० ७, सोमवार विक्रम संवत्सर।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १९९-२०० पृ० ३७]

२७९

नागपुर म्युजियम (महाराष्ट्र)

संवत् १२४५ = सन् ११८८, संस्कृत-नागरी

[यह लेख एक मूर्तिके ऊपर है। माणिकसेनदेव, वीरसेनदेव तथा वाजसेन (?) देवका इसमें उल्लेख है जो सम्भवतः जैन आचार्य थे। तिथि संवत् १२४५ दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २६७ पृ० ५०]

२८०

बिलिगिरि रंगनबेट्ट (मैसूर)

शक १११२ = सन् ११९०, कन्नड

१ शुभमस्तु श्रीमत्परमगंभी- २ रस्याद्वादामोघलांछनं जी-
३ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं ४ जिनशासनं स्वस्ति श्रीप्र-
५ तापचक्रवर्ति होयिसल श्रीवी- ६ रबल्लाळदेवरसरु पृथुविरा-
७ ज्यं गेय्युत्तिरलु सकवरुस ८ १११२ साधारण संवरद वै-
९ साकसुद्ध पंचमि ब्रिह १० ....

[यह लेख रंगनवेट्टके समीप जंगलमें श्रवणनअरे नामक पाषाणपर खुदा है। होयसल राजा वीरवल्लाल (द्वितीय) के राज्यमे वैशाख शु० ५, गुरुवार, शक ११११, साधारण संवत्सरके दिन यह लिखा गया था। लेख टूटा होनेसे इसका उद्देश ज्ञात नहीं हो सकता। किन्तु प्रारम्भमें जिनशासनकी प्रशंसा है अतः यह किसी जैन व्यक्तिका निसिधिलेख या किसी जैन मन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख प्रतीत होता है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १९३]

२८१
होसनगर (मैसूर)
शक ११११ = सन् ११९०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं
२ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं
३ स्वस्ति श्रीवल्लालदेवरसरु-
४ ...
५ जेयं उत्तरोत्तराभिरुद्धमिरलु सक वरुष
६ ११११ एरडनेय सर्वधारिसंवत्सरद
७ ज्येष्ठ सुध एकादशि वड्डवारदलु गु-
८ णसंपन्नरप्प पुप्पसेनदेवर गुड्डि श्री-
९ मनु सर्वाधिकारि वम्माचारिय हेण्डति ह-
१० व्वक्कनु सुरलोकप्राप्तेयादलु

[इस लेखकी तिथि ज्येष्ठ शु० ११, शनिवार, शक ११११, सर्वधारि संवत्सर है (यह तिथि अनियमित है क्योंकि शक ११११ साधारण संवत्सर था)। उक्त समय होयसल राजा वल्लाल (द्वितीय) का राज्य था। सर्वाधिकारी वम्माचारिकी पत्नी हव्वक्काके समाधिमरणका इस लेखमें निर्देश है। इनके गुरु पुप्पसेनदेव थे।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १७२]

२८२

सोमपुर (मैसूर)

शक १११४ = सन् ११९२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ (१) जयति सकलविद्यादेवता -

२ रत्नपीठं हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः (।) जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत् सर्वमिथ्यासमयतिमिरघातिज्योतिरेकं नराणां (॥२)

३ ⋯द्याग्रदि सलनेम्बनाग पुलियं पोयदा सल पोय्सल योगं

४ ⋯पलम्बरं राज्यं गेयुत्तिर्पिनं । (३) विनयप्रतापसेम्बी जननाथो-चितचरित्रयुगदिं जगमं जननयनवेनिसि नेगल्दं विनया-

५ दित्यं समस्तभुवनस्तुत्यं । (४) आतंगतिमहिमं हिमसेतुसमा-

६ ख्यातकीर्ति सन्मूतिमनोजातं मर्दितरिपुनृपजातं तनुजातनादने-रेयंगनृपं । (५) वल्लिदरवनीपतिमस्यादिनधर्मार्थ-

७ कामसिद्धिवोलवनीवल्लभरातन तनयर् म्बल्लालं विष्टिदेवमुदया-दित्यं । (६) भूवररयुगलोलं तां भाविसे मध्यमनदागियुं

८ नृपगुणसद्भावदिनुत्तमनाद मानिमवद्भूतजिष्णु विष्णुनृपालं । (७) मलेयं साधिसि मागदने तलवनं कांचीपुरं कोयतू -

९ र् मलेनाडा तुलुनाडु नीलगिरिया कोलालमाकोंगु मन्गल्नियु-च्चंगि विराटराजनगरं चल्लरिवेल्लं दुर्वारदोर्वलदिं

१० लीलेयि साध्यमादुवेणेयार् विष्णुक्षमापालनोल् । (८)⋯येन-लालई⋯चूडामणि⋯ हारमेने

११ किन्नरेश्वरशिरःप्रोत्तुंग⋯फणि⋯गुणमणिः

१२ सम्यक्तचूडामणिः आ विष्णुवर्धनंगं⋯येनिसिद लक्ष्मादेविगमुद्-भविसिदनी भूविश्रुत नरसिंहनाहव-

१३ सिंहं ॥ (९) पडेमातेम्बन्दु कण्डंगमृतजलधि तां गर्वदिं गण्ड-वार्तं नुडिवार्तंगेननेम्बै प्रलयसमयदोल् मेरेयं मीरि वर्पा कडलन्-

१४ नं कालनन्नं मुलिद कुलिकनन्नं युगान्ताग्नियन्नं सिडिलन्नं सिंगदन्नं पुरहरनुरिगण्णनन्नर्ना नारसिंहं । (१०) रिपुसर्पदर्प-दावानलवहलशि-

१५ खाजालकालाम्बुवाहं रिपुभूपालप्रदीपप्रकरपटुतरस्फारझंझासमीरं रिपुनागानीकताक्ष्यं रिपुनृपलिनी-

१६ षण्डवेतण्डरूपं रिपुभूभृद्भूरिवज्रं रिपुनृपमदमातंगसिंहं नृसिंहं ॥ (११)····पोगल्द तीव्रप्रताप····गिट्टु पोगल्दुदं मा–

१७ ण्डोडं शत्रुगात्रप्रगलद्रक्तप्रवाहप्रबलगुरुध्वानमुं शत्रुभूभृद्भूरि-सन्दोहदाहप्रचुरचिटिचिटिध्वानमुं निर्विक–

१८ ल्पं पोगलुत्तिर्कुं नृसिंहप्रबल भुजबलाटोपमं धात्रिगेल्लं ॥ (१२) आ त्रिभुविन पट्टमहादेविगे सद्गुणचरित्रदिन्दं सीतादेविगे मि-

१९ गिलादेचलदेविगे बल्लालदेवनुदयंगेय्दं ॥ (१३) कलिकाल-क्षत्रपुत्रप्रबलतरदुराचारसन्दोहदिन्दं-पोले पोर्दल् पेसि बेसत्तलव-

२० लिद महाकान्तेयं रक्षिसल्का जलजाक्षं ताने बन्दिन्तवतरिसि-दवोल् वीरबल्लालदेवं कुलजात्याचारसारं नृपवरनुदयंगेय्द-

२१ नाश्चर्यशौर्यं ॥ (१४) विनयश्रीनिधियं विवेकनिधियं ब्रह्मण्यनं पूर्णपुण्यननुद्दामयशोर्थियं जितजगत्प्रत्यर्थियं सर्वसज्ज-

२२ नसंस्तुत्यननुद्भवद्वितरणश्रीविक्रमादित्यनं मनुजेशर् मलेराज-राजननदें बल्लालनं पोल्वरे । (१५) उरिगण्णिं बेन्द चण्डा तिपुर-

२३ मुरिदवोल् चुर्चुरिल्दारुगार्ग····रि दन्दर धगिल धन्धग धग चेटे चेल्चेल्चिटिलगट्टु पोर्देम्ब रवं कैगण्मे दिक्पालकर् अलवलिय-

२४ ल् वीरवल्लालनिं (दिं) दुरिदत्तुच्छंगियोडें रिपुनृपति....पेल-
लुण्टे ॥ (१६ रणरंगांगणशूद्रकं नडेदोडिन्तुच्छंगि नुचॆलित्त

२५ तत्क्षणदि नोडे विराटराजपुर वोत्तुत्तायतु सुत्तान्न सेवुणरापोश-
नमात्रकं नेरेदरिल्लेन्दन्दु बल्लालदोर्गुणवं वाण्णिसलण्ण

२६ वल्लवरदारी भूरिभूचक्रदोल् ॥ (१७) विलयाद्रि येनिप सेवुण-
वलन ··· निचयाविल मकराकुळवी यदुकुलपरितळग-

२७ तवायतु बन्दु······· ॥ (१८) कन्दनदप्तारिरक्तं कूडे हयखुर-
दिन्द्रा ··· गेलिगेत्तग्गद या ··· दोल् मुम्पेण ··· पेणन बेत्ति-

२८ ····भूतालि पुण्यराशीकृतविपुलतलं वीरवल्लालदेवं ॥ (१९)

२९ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ राजाधिराजपरमेश्वर
परमभट्टारक द्वारावतीपुरवराधीश्वरं वासन्तिकादेवीलब्ध-

३० वरप्रसाद रिपुसम्मर्दनविनोद यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-
चूडामणि शत्रुक्षत्रिय-

३१ मानमर्दनं वीररिपुदर्पशर्पझंझानिल श्रीमद्वीर्य ··· पराक्रमैक-
प्रभाव । निरुपमात-

३२ र्यप्रताप नयविनयस्वभाव । सकलजनसत्याशीर्वाद । ····मुद्गर-
समरकेलिसंस-

३३ क्त ····रिपुविजितादित्यप्रताप । सप्तांग ····विलास ····सरस्वती
···स्तम्बेरम राज-

३४ कण्ठीरव । पाण्ड्यकुल ··· दण्ड । पल्लवकुलयशोविपिनदावानल ।
···सिंहलसपालकुरंगकुलपलायनकार-

३५ ण कठोरनिजविजयदोर्दण्ड ··· । सकलरिपुनृपकुल ····इत्यादि-
नामादि-

३६ समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमत्सार्वभौम संग्रामराम मिल्लमदिशा-
पट्ट ····धरित्रोपट्ट मलेराजराज मलेपरोल्गण्ड

३७ तलकाडु-गंगवाडि-नोलम्बवाडि-बनवासे - पानुंगल्-हुलिगेरे-हल-
सिगे-बेल्वल-तलवलि-तलियूरगोण्ड भुजबलवीरगं—

३८ गनेकांगवीर सनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमल्ल चलदंकरामनसहाय-
शूर निश्शंकप्रतापचक्रवर्ति श्रीवीरबल्लालदेवनसंख्यातनिजचतु-
रंगबलं

३९ बेरसु सेवुणबलमेल्लमं वीरविलासनेम्ब पट्टमानदिं तोल्दुलदुलिये ।
सेवुणबलजलधि-बडवानलनेकांगदिं सप्तांगसा—

४० आज्यमनलवडिसि राष्ट्रकण्टकर निर्मूलमं माडि कल्याणपर्यन्त-
मागि सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे

४१ तद्राज्यपूज्यमप्प राजधानि दोरसमुद्रदोलु श्रीमद्वादीभसिंह
तार्किकचक्रवर्ति श्रीपालत्रैविद्यदेवरुमवर गुड्डगल् मा-

४२ रिसेट्टियुं कण्णिसेट्टियुं भरतिसेट्टियुमिन्ती नाल्वरुं नानादेसियुं
नगरमु श्रीमदभिनवशान्तिनाथदेवर भव्यजिनालयमेनि-

४३ प नगरजिनालयमं माडिसिद राजसेट्टियन्वयमुमाचार्यवलियु-
मेन्तेन्दोडे(।)श्रीमद्द्रमिलसंघेस्मिन् नन्दिसंघोस्त्य-

४४ रुंगलः(।)अन्वयो भाति निश्शेषशास्त्रवाराशिपारगैः(।।)श्रीवर्ध-
मानस्वामिगल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवल्लि गौतमस्वामिगलिं भद्रबा-

४५ हुस्वामिगलिं भूतबलिपुष्पदन्तस्वामिगलिं···सुमतिभटारकरिन-
कलंकदेवरिन्दं वक्रग्रीवाचार्यरिं वज्रनन्दिगलिं सिंहनन्दिगलिं
परवादिमल्लरिं

४६ श्रीपालदेवरिं श्रीहेमसेनरिं दयापालमुनीन्द्ररिं श्रीविजयदेवरिं
शान्तिदेवरिं पुष्पसेनदेवरिं चक्र-

४७ वर्ति श्रीवादिराजदेवरिं श्रीशान्तदेवरिं शब्दब्रह्मस्वामिदेवरिं
अजितसेनपण्डितदेवरिं मल्लिषेणमलधारिस्वामिगलिं

४८ श्रीपालत्रैविद्य गद्यपद्यवचोविन्यासं निसर्गं विजयविलासं । तद-
नन्तरं श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापति-पदकम-

४९ लाराधनालब्धवुद्धिः सिद्धान्ताम्भोनिधान'''मृतास्वाद'''दीक्षा-
शिक्षासुरक्षा'''क्रवाक्यविनिपुणः सन्ततं भव्यसेव्यः सोयं

५० दाक्षिण्यमूर्त्तिर्जगति विजयतेवासुपूज्यव्रतीन्द्रः (॥) तदनन्तरं
सुरगजेन्द्रमदेभदन्तचयदोल् दिग्गजि'''मन्दिरदोल् म-

५१ गंकाल वि'''लनमो हिमाद्रिकूटंगलोल् धरणीन्द्रोद्वकिरीटकूट-
तलदोल् वार्द्धवि'''येन्दुरिवल् श्रीमुनि वज्र-

५२ नन्दिय गर्भोद्दार'''वलम्पित'''जं-

५३ गल कोडिगोल् पोदल्देसेदु मन्दरमनेयदे'''यशोलतेये मुनि
वज्रनन्दिय

५४ इंगडलनलवलि'''वज्रनन्दिव्रतिया। तनम-

५५ मयदोल् कुमारतन्दु समस्तप्रभुगावुण्डगलि नाड कायु'''प्रताप-
चक्रवर्ति वीरवल्लाल

५६ देवनं कागलवेडि वन्दिर्द्दल्लि अभिनवश्रीशान्तिनाथदेव'''समष्ट-
विधार्चनेयुमं पूजेयुमं ऋषियराहारदानमुमं

५७ कण्डु पिरिदुं मन्तमं माडि देवर श्रीकार्यक्के'''नाडगौण्डुगल्
तम्मोलेकमत्यवागि प्रतापचक्र-

५८ वर्ति वीरवल्लालदेवं वन्दु'''शान्तिदेवरष्ट-विधार्चनेगं खण्डस्फु-
टितजीर्णोद्धारक्कं ऋषियराहारदानक्कवागि

५९ शकवर्ष १११४ नेय विरोधिकृत्संवत्सरद उत्तरायणसंक्रमण-
दन्दु'''वज्रनन्दिसैद्धान्त-देवरिगे धारापूर्वकं''''''नाड मैसेनाड

६० गुम्मनवृत्तियोलु'''मुद्गण्डियं कडलहल्लियं'''कडलहल्लिय ईशा-
न्यद तोरेना-

६१ ड सन्तेनाडा गङ्गिनाड'''नडदु येलुवलद सीमेय नट्ट कल्लु
अल्लि गुरविनगुण्डिये'''मरनितालेयमो -

६२ रडि'''मोरडि चंचरिवल्लद तडि कडलेयहल्लिय आग्नेयदल्लुरिद-
वालिकेय लविदल्लिय गुम्मनवृत्तिय ना-

६३ गव····य मोरडि चंचरिवल्लं मत्तवी कडलेयहल्लिय नैऋत्यद बल्लरेय कणि--

६४ यकल्लु····खडेय····कोलवूर् बल्लं मत्तिय मरन····गल्लुतट्टु मत्तवो कल्लेयहल्लिय वायव्य--

६५ द तोरेनाड हल्लियवीडिन त्रिसन्धियोलु····कगंलुमोरडि अलिं चंचरिवल्लं तेन्तट्ट वटवृक्ष अ

६६ लिं मत्तवी कडलेयहल्लिय ईशान्य गुम्मनवृत्तिय त्रिसन्धिय नड्डुगणेय कूडित्तु इन्तिट्टु सीमाक्रम। मंगल महाश्री

६७ भूमिदानात् परं दानं····।। स्वदत्तां परदत्तां वा यो

६८ हरेत वसुन्धरां षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः

[इस लेखके प्रारम्भमें होयसल राजाओंकी वंशावली वीरवल्लाल (द्वितीय) तक दी है। वीरवल्लालने मैसेनाड प्रदेशके दो ग्राम-मुच्छण्डि तथा कडलेहल्लि अभिनवशान्तिनाथमन्दिरको अर्पण किये थे। इस दानकी तिथि शक १११४ की उत्तरायणसंक्रान्ति थी। यह मन्दिर कई नाडुगौण्डोंने तथा सेट्टियोंने मिलकर बनाया था। मन्दिरके कार्यका निरीक्षण कर युवराजके प्रसन्न होनेपर राजाने यह दान दिया था। वासुपूज्य व्रतीन्द्रके शिष्य वज्रनन्दि सिद्धान्तदेव इस मन्दिरके प्रमुख थे। इनकी गुरुपरम्परामें द्रमिलसंघ-नन्दिसंघ-अरुंगलान्वयके निम्नलिखित आचार्योंके नाम दिये हैं- गौतम, भद्रबाहु, भूतबलि, पुष्पदन्त, सुमति, अकलंक, वक्रग्रीव, वज्रनन्दि, सिंहनन्दि, परवादिमल्ल, श्रीपाल, हेमसेन, दयापाल, श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेन, वादिराज, शान्तदेव, शब्दब्रह्म, अजितसेन, मल्लिषेण, श्रीपाल (द्वितीय)। श्रीपाल त्रैविद्यके शिष्य वासुपूज्यव्रतीन्द्र ही वज्रनन्दिके गुरु थे। वर्तमान समयमें यह लेख सोमपुरके निकट नंजदेवरगुड्डु नामक पहाड़ीपर है। वहाँके मन्दिरका रूपान्तर शिवमन्दिरमें हो गया है।]

[ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४७]

२८३

इंगलेश्वर (विजापूर, मैसूर)

शक १११७ = सन् ११९५, कन्नड

[इस लेखमें तीर्थ चन्द्रप्रभदेवकी शिष्या पेण्डर वाचि मुत्तव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है। शक १११७ का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १४ पृ० ८५]

२८४

ताडपत्री (जि० अनंतपुर, आन्ध्र)

शक ११२० = सन् ११९८, कन्नड

रामेश्वर मन्दिरके प्राकारके उत्तर पश्चिम कोनेपर

[इस लेखमें सोमिदेव तथा कांचेलादेवीके पुत्र उदयादित्यका उल्लेख है जो जैन था और ताटिपर ताडपत्रीमें रहता था।]

[इ० म० अनन्तपुर २०३]

२८५

वेलगामि (मैसूर)

सन् ११९९, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा वीरवल्लालके समय सन् ११९९ में महाप्रधान मल्लियण दण्डनायकके अधीन हेगडे सिरियण्ण-द्वारा मल्लिकामोदशान्तिनाथजिनालयके लिए आचार्य पद्मनन्दिको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४६]

२८६

कान्तराजपुर (मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघ-
२ लांछनं (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा-
३ सनं जिनशासनं ॥
४ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रतापचक्रवर्ति गण्डभेरुण्ड मलपरोल्
५ गण्ड शनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमल्ल चलदंकराम होयसलवी-
६ रबल्लालदेवरु सुखसंकथाविनोददिं पृ(थ्वी) राज्य गेयुतु-
७ तमिरे ॥ तत्पादसेवकरु कब्बहिनवृत्तिय अधिष्ठा-
८ यकरु महापसायतरु परमविश्वासिगल् सामिसन्-
९ तोषकरु सेवुणकटक सूरेकाररं शरणागतवज्रपंजर-
१० रुमप्प वेहूरमोतद सुग्गियनहल्लिय अरकेरेय बो-
११ केयनायक होनहल्ल मादेयनायक कलियनायक
१२ बाचिहल्लिय बोकयनायक बेल्लूर माचयनायक मोन्-
१३ गलाचार्य केसवेयनायक चलुवन माचयनाय-
१४ क अरसयनायक बरजियन माचयनायक मसणेय-
१५ नायक कोलेयादिनायक बचन मारेयनायक कोलेयत-
१६ न माचयनायक बलेयन मारेयनायकं हलवनाय-
१७ कन बचेयनायक बोम्मेर कयिदालद बंयक कसविय-
१८ नायक हेग्गडेनायक मैलेयनायक मारदेव बालना-

१९ यक काचिनायक पम्मणनायक माचियनाय (क)
२० सावुकनायक चिकयनायक मादियनायक वडचर विज्ञ-
२१ पनायक वड्डुगेयनायक सनियमनायक हे-
२२ माडिनायक हरियणनायक पूमयनाय-
२३ क जवनेयनायक मेलयनायक वैजयणनायक मा-
२४ केयनाय (क) बमेय नायवेयनायक गुडयनायक
२५ मारतमनायक मल्लेयनायक हरियबूर माचगौड सिं-
२६ गगौड सोमगौड वडियगौडन मादिगौड उत्तगौड बयचिगौड
२७ मारगौड मादिगौड अविगौड हलुवाडिगट्टद कुदरेय कें-
२८ चगौड सकरनायकर नायक मल्लिगौड केसिय-इलिय वा-
२९ हुवलिसेट्टि पारिससेट्टि विजेसेट्टि अवर पुत्रक वल्लगौड व-
३० सवगौड माचेय मरतय मादय आलय माचयउत्त-
३१ गौडन मारय पापय चिक्कम्म विरिशेट्टिय मग आलगौ-
३२ ड चिकगौड सोमगौड चिण्णयगौड मारगौड कसवगौड श्रीमन्महा(मं)ण्-
३३ डलाचार्यरु राजगुरुगलु नयकीर्तिसिद्धांतदेवर शिष्यरु नेमि-
३४ चंद्रपंडितदेवरु वालचंद्रदेवरु नयकीर्तिदेवरगुड्ड-
३५ गलु वाहुवलिसेट्टि पारिससेट्टि माडिसिद एक्कोटिजिनालय-
३६ द पद्मप्रभदेवर अष्टविधार्चनगे बूर मुन्दे आरिय मार-
३७ यनायक कट्टिसिद केरे आ कोलेरिय गद्दे आ मूडलु सुत्तलु नट्ट
३८ ....वेद्दलेय हिरियकेरेय मोदलेरि-
३९ ....गदेय श्रीमुखसंवत्सरद बयि....

४० वोम्म नातिवेय सा····सेनवोव सामन्त····

४१ पूर्वकं माडि विट्ट दत्ति यिधर्मवं प्रतिपालिसिद् गंगे

४२ ·······

[यह लेख होयसल राजा वीरवल्लालदेवके राज्यकालमें वैशाख, श्रीमुखसंवत्सरमें लिखा गया था। बाहुवलिसेट्टि तथा पारिससेट्टि-द्वारा निर्मित एक्कोटि जिनालयके पद्मप्रभदेवकी पूजाके लिए अरेय मारेयनायक-द्वारा एक तालाव तथा अन्य कई नायकों, गौडों तथा सेट्टियों-द्वारा जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। इनमें नयकीर्तिसिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र तथा वालचन्द्र पण्डित भी सम्मिलित थे।]

[ए०रि० मै० ११२७ पृ० ४५]

२८७

वेरावल (सौराष्ट्र, गुजरात)

१२वीं सदी, अन्तिम चरण संस्कृत-नागरी

१ ····श्चवम्प्रति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ १ भूयादभीष्टसंसिद्ध्यै मु-

२ ····पाटकाख्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ ३ मन्ये वेधा विधायैतद्दिधित्सुः पुनरीदृश-

३ ····रैद्रैश्वयमंत्रजैर्यत्र लक्ष्मीः स्थिरीकृता ॥५ तन्निःशेषमहीपाल-मौलिघृष्टांह्रि····

४ ····सौ नृपः। तेनोत्खातासुहृन्मूलो मूलराजः स उच्यते ॥७ एकैकाधिकभूपालाः सम --

५ ···जिव्रजखुराहतं। अतुच्छमुच्छलत्सूर्यपर्वभ्रममजीजनत् ॥६ पौरुषेण प्रतापेन पुण्येन--

६ ···रन्यूनविक्रमः। श्रीभीमभूपतिस्तेषां राज्यं प्राज्यं करोत्ययं ॥११ मालाक्षराण्यनन्त्राणां यो वभंज म--

७ न्नंदिसंघे गणेश्वराः। बभूवुः कुंदकुंदाख्याः साक्षात्कृत-जगत्त्रयाः ॥१२ येषामाकाशगामित्वं त्या--

८ ···तपंचकमुज्ज्वलं। रचयित्वाथ जल्पंति येऽन्यान्नियमपूर्वकं ॥१५ कालेऽस्मिन् भारते क्षेत्रे जाता--

९ ···रीणास्तत्त्ववर्त्मनि तेषां चारित्रिणां वंशे भूरयः सूरयोऽभवन् ॥१७ सद्वेषा अपि निर्द्वेषाः सकला अक-

१० भावस्यारुरोह तत्। श्रीकीर्तिं प्राप्य सत्कीर्तिं सूरिं सूरिगुणं ततः ॥१९ यद्गीयं देशनावारि सम्यग्वि-

११ कश्चित्रकूटाच्चचाल सः। श्रीमन्नेमिजिनाधीशतीर्थयात्रानिमित्ततः ॥२१ अणहिल्लपुरं रम्यमाजगाम-

१२ ···नींद्राय ददौ नृपः। विरुदं मंडलाचार्यः सच्छत्रं ससुखासनं ॥२२ ॥२३ श्रीमूलवसतिकाख्यं जिनभवनं तत्र

१३ ···संज्ञयैव यतीश्वरः। उच्यतेऽजितचंद्रो यस्ततोभूत्स गणीश्वरः ॥२५ चारुकीर्तियशःकीर्तौ ध-

१४ ····मुक्तो यो रत्नत्रयवानपि। यथावद् विदितार्थोभूत् क्षेमकीर्ति-स्ततो गणी ॥२७ उद्योत स्म लसज्ज्योति

१५ ····लेपि वासिते हेमसूरिणा। वस्त्रप्रावरणाय-

१६ कीर्तिर्यत्कीर्तिर्नर्तकीव नरिनर्ति। त्रिभुवनरंगे वासुकिनूपुरशशि-तिलकनेपथ्या ॥२९ ते

१७ ····ति ॥ ३२ समुद्धृतसमुच्छन्नशीर्णजीर्णजिनालयः। यः कृतारंभनिर्वाहसमुत्साहशिरोम (णिः ॥३३)

१८ ····च येरवगण्यते ॥३४ वादिनो यत्पदद्वंद्वनखचंद्रेषु विंबिताः । कुर्वते विगतश्रीकाः कलंक-

१९ ····द्रं तीर्थभूतमनादिकं ॥३६ सीतायाः स्थापना यत्र सोमेशः पक्षपातकृत् । ग्रामत्रैलोक्य-

२० तदुद्धृतं तेन जातोद्धारमनेकशः ॥३८ चैत्यमिदं ध्वजमिषतो निजभुजमुद्धृत्य सक--

२१ ····षतो मंडलगणिललितकीर्त्तिसत्कीर्तिः । चतुरधिकविंशतिलस-द्ध्वजपटपटुहस्तकं-

२२ ····मेतदीयसद्गोष्ठिकानामपि गल्लकानां ॥४१ यस्य स्नानपयो-नुलिप्तमखिलं कुष्टं दनी-

२३ चंद्रप्रभः स प्रभुस्तीरे पश्चिमसागरस्य जयताद् दिग्वाससां शासनं ॥४२ जिनपतिगृह-

१४ चार्यवर्यो व्रतविनयसमेतैः शिष्यवर्गैश्च सार्द्धं ॥४३ श्रीमद्विक्रम-भूपस्य वर्षाणां द्वाद (श)-

२५ कर्कीर्तिलघुबंधुः । चक्रे प्रशस्ति मनघा (मतिदिव्यां) प्रवरकीर्ति-रिमां ॥४५ सं १२····

[यह लेख टूटा है तथा उसका आधा भाग मिल नहीं सका है। गुजरातके चौलुक्य राजा भीमदेव (द्वितीय) के समय बारहवीं सदीके अन्तिम चरणमें यह उत्कीर्ण किया गया है। पश्चिम समुद्रके तीरपर चन्द्रप्रभ तीर्थंकरका पुरातन मन्दिर था। यहाँकी मूर्तिके गन्धोदकसे कुष्ठरोग दूर होता था। इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका इस लेखमें वर्णन है। आचार्य कुन्दकुन्दकी परम्परामें नन्दिसंघमें श्रीकीर्ति मुनि हुए। ये चित्रकूटसे नेमि-तीर्थंकरके तीर्थ (गिरनार) की यात्राके लिए जाते हुए गुजरातकी राजधानी अणहिल्लपुरमें आये। वहाँ राजाने उनका सत्कार कर उन्हें

मण्डलाचार्य यह विरुद दिया। इस नगरके मूलवसतिका नामक जिन-मन्दिरका भी यहाँ उल्लेख है। अनन्तर क्रमशः अजितचन्द्र, चारुकीर्ति, यशःकीर्ति, तथा क्षेमकीर्ति इन मुनियोंका नामोल्लेख है। किन्तु इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है। इसी तरह आगे मण्डलगणि ललितकीर्तिका उल्लेख है जिनने सम्भवतः यह जीर्णोद्धार कार्य कराया था। इस लेख की रचना प्रवरकीर्तिने की थी। इसका ४२वाँ पद्य मदनकीर्तिकृत शासन-चतुस्त्रिंशिकासे लिया गया है।]

[ए० इं० ३३ पृ० ११७]

२८८

कुमारवीड्डु (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥) जयति स-

२ कलविद्या (देवतारत्नपीठं हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः) जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत्स (र्वमिथ्या)

३ समय (तिमिरहारि ज्योतिरेकं नराणां) स्वस्ति समधिगतपंच-महाशब्द महामंडलेश्वरं द्वारावतीपु-

४ रवराधीश्वरं यादवकुलांबरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलेराजराज मलपरोलुगंडाद्यनेक-

५ नामावलीसमलंकृतरप्प श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल तलेकाडु कोंडुनंग-लेगंगवाडिनोलंबवाडिवनवासि (मुंदे बरवण्णगेयिल्ल)

[यह लेख किसी जैन सैनिककी मृत्युका स्मारक है। होयसल वंशके किसी राजाके विरुद प्रारम्भमें दिये हैं। किन्तु राजाका नाम तथा सैनिकके नामादिका विवरण नहीं मिलता क्योंकि लेख अधूरा है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० १६८]

२८९

ग्राम (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमें किसी होयसल राजाके सेवक पेर्गडे वासुदेवके पुत्र जिनभक्त उदयादित्यका वर्णन है। इसने सूरस्थगणके चन्द्रनन्दि गुरुके उपदेशसे वासुदेवजिनवसतिका निर्माण किया था। यह लेख इस समय केशवमन्दिरमें लगा है।]

[ए० रि० मै० १९१७ पृ० ४४]

२९०

ग्राम (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमे शान्तिग्रामके होन्निसेट्टि तथा अन्य भव्यों-द्वारा देसियगण-इंगलेश्वर शाखाके हरि····आचार्यके उपदेशसे सुमतिभट्टारककी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१७ पृ० ६०]

२९१

कुप्पटूर (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है। मूलसंघकाणूरगण-तिन्त्रिणीक गच्छके पर्वतमुनिका इसमें उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४०]

२९२

मावनिकेरे (कडूर, मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमूलसंघपनसोगवतीप्रसिद्धदेशीयविदितपु-
२ स्तकचारुगच्छे। यः कुण्डकुंदमुनिवं-
३ शललामभूल्ललितकीर्तिमहा-
४ मुनींद्रः॥ तत्पादयुगलांभोजशेखरी-
५ भूतमस्तकः जिनदत्तान्वयः स्वामी योभूत…
६ नन्दनः॥ स्वस्तिश्रीशकवत्सरे…
७ पृथ्वीपतिः सो-   ८ यं श्रीकलशा-
९ ख्यचारुनगरे श्रीचं-   १० द्रनाथप्रभो(:)प्रि(प्री)-
११ त्या साधयदुत्स-   १२ वेन महता बिंब-
१३ प्रतिष्ठापितं॥ श्री   १४ श्रीदेवचं-
१५ द्रदेवरु गे   १६ यि ओदु

[यह लेख स्थानीय वसदिके चन्द्रनाथमूर्तिके समीप है। मूलसंघ-देशीयगण-पनसोगा शाखाके ललितकीर्ति मुनिके शिष्य देवचन्द्र-द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी। जिनदत्तके वंशके किसी राजाका इसमें उल्लेख है। शकवर्षके अंक लुप्त हुए हैं। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४६ पृ० ३६]

२९३-२९४

निट्टूर (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख शान्तीश्वरवसदिके द्वारपर है। मालवेके पुत्र मलेय-द्वारा यहाँके मूर्तियोंके निर्माणका इसमें उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है। यहाँके एक अन्य लेखमें शिवनहसेट्टिकी निषिधिका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१९ पृ० ५१]

२९५

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाड़ीपर एक पापाणपर खुदा है। इसमें गुम्मिसेटिके पुत्र व्रमदेवका उल्लेख किया है। लिपि १२वीं सदी-की है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५७ पृ० १२६]

२९६

हूलि (जि० वेलगांव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती-के शिष्य नविलूरके गोवरिय कलिगावुण्ड, तावरे महादेविशट्टि आदिके द्वारा इस दरवाजेके वनवाये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई क्र० २४ पृ० २४२]

२९७

गोरूर (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमें मलवसेट्टि, कटकद वम्मिसेट्टि तथा केसिसेट्टि इन तीन व्यक्तियों-द्वारा गोरवूर ग्रामकी वसदिके लिए पाँच खंडुग भूमि दान दिये जानेका वर्णन है। मल्लियक्का नामक स्त्रीकी भी प्रशंसा की है। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। इसका वहुत-सा भाग घिसनेसे नष्ट हो गया है।]

(मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित)

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ७४]

२९८-३००

मनोली (जि० बेलगांव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। यापनीय संघके आचार्य मुनिवल्लिके मुनिचन्द्रदेवकी समाधि कुल्लेयकेतगावुडकी पुत्री गंगेवे-द्वारा स्थापित की गयी थी। ये मुनिचन्द्र सिरियादेवी-द्वारा स्थापित वसदिके आचार्य थे।

इसी समयके दूसरे लेखमें मुनिचन्द्रके शिष्य पाल्यकी(र्ति) देवके समाधिमरणका उल्लेख है। तिथि आश्विन कृ० ५, शुक्रवार, साधा(रण) संवत्सर, ऐसी है।

यहांके तीसरे लेखमें इसी परम्पराके एक और आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ ई० क्र० ६३-६५ पृ० २४५]

३०१

कीलक्कुडि (जि० मदुरा, मद्रास)

कन्नड, १२वीं सदी

समणरमलै पहाड़ीपर पाषाणके दीपस्तम्भके समीप

[इस लेखमें आरियदेव, बेलगुलके मूलसंघके बालचन्द्र देव, नेमिदेव, अजितसेनदेव तथा गोवर्धनदेवका निर्देश है। लिपिके अनुसार यह १२वीं सदीका लेख होगा।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० २४४]

३०२

वेहार (नरसिंहगढ़, मध्यप्रदेश)

प्राकृत-नागरी, १२वीं सदी

१ ····अं घणोमरमं सुंदरं
२ सि·····················
३ । तिहुअणतिलअं सी-
४ रीं- शावडस्स अमराल-
५ अं रम्मं ॥ श्रीआण-
६ देवेन गाथा वि-
७ रचिता

[यह लेख सोलखंभ नामक उध्वस्त जैन मन्दिरमें एक स्तम्भपर है। इसमें श्री आणदेव-द्वारा लिखित एक गाथा है जो किसी तिहुअणतिलअ (त्रिभुवनतिलक) मन्दिर तथा उसके स्थापक शावडके बारेमें है। इसी स्तम्भपर कुछ अन्य व्यक्तियोंके नाम भी खुदे हैं। गाथाकी लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १७४]

३०३

सवणूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह निसिधि लेख मलधारि आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। तिथि शुचि व० ८, सोमवार, विश्वावसु संवत्सर ऐसी दी है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५९ पृ० ३३]

३०४

अग्निनभावि (धारवाड, मैसूर)

[यह लेख वर्धमानमूर्तिके पादपीठपर है। बहुत अस्पष्ट हुआ है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ७० पृ० ३४]

३०५-६

मण्टूर (धारवाड, मैसूर)

[यहाँ १२वीं सदीकी लिपिमें दो लेख हैं जो जैनोंसे सम्बन्धित प्रतीत होते हैं।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ९४-९५ पृ० ३६]

३०७

सालिग्राम (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख अनन्तनाथकी मूर्तिके पीठपर है। मूलसंघ-बलात्कारगणके माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तिके शिष्य शम्भुदेवकी पत्नी बोम्मव्वे-द्वारा अनन्त-व्रतकी समाप्तिपर यह मूर्ति स्थापित की गयी थी। लिपि १२वीं सदी की है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३६]

३०८

गोरूर (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ ओं श्रीमतु परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं(।)जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनं(॥)

२ ओं मेलेनिसिपुंदी मलेगे धात्रियोलं किसुवल्लियन्तद पालिसि संततं सुखदिन् इर्पिनेगं सिरि
३ पुट्टे पुट्टिदं हेरियबासेवेग्गडेगवातन वलभे निजिकव्वेगं लीलेयोल् एंदे चण्णिपुद्दु पे-
४ गंडे सत्यमनं जगज्जनं ॥ स्थिरनं वाप्पमराद्रियिंदधिकगंभीरने वाप्पु सागरदिंदग्गलद-
५ न्तु दानिये सुरोर्वीजके मारण्डलं सुरराजंगेणेयेण्दे कीर्तिपुद्दु कैकोण्डकरिं संततं
६ धरेयेल्लं सले सत्यवेगंडेयोल् औदार्यमं सौर्यमं ॥ कोट्टपेनेंदोड् ईश्वरन कोट्ट वर

दूसरा

७ सरणेंदु वंदरं नेट्टने····डे वज्रि····पूण्डु कोडिट्ट विरो····
८ तरिवन् एन्दोडे ताने कृतान्त····यि···पंगंडे···
९ आतन मात्रं सकल मही····जवल्लि····वेनिसि नेगल्वं भूतल
१० दोलगेसेये कच्छवेगंडेय····प्पु····य विण्पु
११ नाडे केसरिय पोडर्पु····मनो····यनि
१२ सिर्द वीरनोल् अदेंदु करं नलि····तरिपुद्दु क···ले पलरं निरन्तरं

तीसरा भाग

१३ एने नेगल्द कच्छवेगंडेगनुपम कुल···ने धोरे
१४ यलु विनुत····तं वगे
१५ रेनिप्परु····मणिय-
१६ न्तवरीर्वरीतन यं···सन्तत जस····
१७ यल् अखिल भूमण्डलदे····ख्यातंगे सले नेगल्द गंगेगं गौरिगं वेम्म
१८ ····नो दोरेयेनिप्पर् भूतलदोलु···यं ॥···गत्यंतंवरि-
१९ य समर समयदोल····वस···मन पोललितर····आ विभुविन

२० कुलवधु ता भूविनुत श्रीगे नेलेयेनिप्प''' गनेयर् पलरुं''' पेण्डतिगेनेगे वर्परं
२१ ''''योलु ॥ आतन किरिय पेण्डति रतियं पोल्वलु तूपिपति-चरियोल् अतियव्वे
२२ प्रोल्वलनिधि तत यशोवल्लरिय मतिर्हीनर् अदेनु वण्णिपर् वाचवेय ॥ अवरीर्वर गु-
२३ (रु)गल् अवर् भुवनजनाराध्यरखिलगुणगणनिलयर् कडि'''वर नयकीर्ति-
२४ देवसिद्धान्तेशरु ॥ आ महानुभावनर्धांगियरवसान कालदोलु ॥ बोधिसुत जिनपदमं बा-
२५ '''व सिद्धपदमन् अक्षय पदमं विनुतं मुनिपदमं वाचवे वेग्गडि-तियर् सुरगतियं
२६ '''परम जिनेश्वर पद्मपंकरुहमनानंददि नेनेयुतागलु पिरिदोंदु भक्तियिं
२७ तियं वाचियक्कन् एय्र्दिदल् आगलु ॥ अवर परोक्षदोल् आदं सन्निनयदि केल''''
२८ यिन्ति कल्ल भुवनजन्वरिये निरिसिदल् अविचलमप्पन्तु चंद्रतारंबरं ॥

[इस लेखमें किसुवल्लि ग्रामके शासक सत्यवेग्गडेका उल्लेख है। यह हेरियवासेवेग्गडे तथा उनकी पत्नी निजिकव्वेका पुत्र था। इस सत्य-वेग्गडेकी पत्नी वाचवे थी। वह कच्छवेर्गडेकी पुत्री थी। इसके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव थे। लेखमें वाचवेके देहत्यागका उल्लेख है जो सम्भवतः सत्यवेग्गडेकी मृत्युके कारण किया गया था। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ७१]

३०९

हलेबीड (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ स्वस्ति श्रीमन्नयकीर्तिसिद्धांतचंद्रयतिदेवर्गे कवडेयर जकव्वेयरु माडिसि कोट्ट पट्टशालेय शान्तिनाथदेवर अष्टविधार्च(ने)गं खंडस्फुटितजीर्णोद्धारक्कं····

२ शिष्यरु सुरभिकुमुदचंद्रापरनामधेयरप्प नेमिचंद्रपंडितदेवरु जीवंगल् हिरियकेरेय बोलवगट्ट दोलगरेय हुणसेय····

३ ल्लगे मूरु गंगवुरद उत्तमवागि ? मूनूरु वेद्दलेयं सर्वबाध-परिहारवागि चंद्रार्कतारंबरं सल्वंतागि कोट्टरु ई धर्मवं अवर शिष्यसंतानगलु नडेसुवरु

[यह लेख १२वीं सदीकी लिपिमे है । कवडेयर जकव्वे-द्वारा निर्मित पट्टशालाके शान्तिनाथदेवकी पूजा आदिके लिए कुछ भूमि बोलवगट्ट तालाबके समीप और गंगवुर ग्रामके समीप दान दी गयी ऐसा इसमें निर्देश है । यह दान सुरभिकुमुदचन्द्र अपरनाम नेमिचन्द्र पण्डितदेवने दिया था । जकव्वेके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तचन्द्र थे ।]

[ए० रि० मै० १९३७ पृ० १८५]

३१०

अथनी (बेलगांव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमें बम्मण-द्वारा देसिगण-इंगलेश्वरबलिके सामन्तण बसदिसे सम्बद्ध रत्नत्रयमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है ।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७३ पृ० ३४]

३११

मरसे (मैसूर)

संस्कृत–कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमद्द्रविळसंघेस्मिन् नन्दिसंघेस्त्यरुंगलः अ-
२ न्वयो भाति योगेषशास्त्रवा-
३ राशिपारगैः

[यह लेख एक खेतमें मिली पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इसमें द्रविलसंघ-नन्दिसंघके अन्तर्गत अरुंगल अन्वलकी प्रशंसा है। यह श्लोक अन्य कई लेखोंमें पाया जाता है। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। मूर्तिके बारेमें अन्य कुछ विवरण नहीं दिया है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०६]

३१२

मावलि (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वा(द्वा)-
२ मोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्य-
३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्री (मू)-
४ लसंग कुण्डकुन्दान्वयद
५ काणूर्गण माधवचंद्रदेव(र गु)-
६ ड्डि नागव्वे गोकवेय मगलु स(मा)-
७ धिविधियिंद मुडिपि स्वर्ग-
८ स्तेयादलु मंगल महा
९ श्री श्री

[इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-कुण्डकुन्दान्वय-काणूर गणके माधवचन्द्रदेवकी शिष्या तथा गोकव्वेकी कन्या नागव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० १९२]

३१३

हम्पी (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[*यह लेख एक भग्न स्तम्भपर १२वीं सदीकी लिपिमें है।* इसमें गोल्लाचार्य, उनके शिष्य गुणचन्द्र तथा उनके शिष्य इन्द्रनन्दि, नन्दिमुनि तथा कन्तिका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० ३३५ पृ० ५०]

३१४

कलकत्ता (नाहर म्यूजियम)

कन्नड, १२वीं सदी

१ देमायपगलाणन्तियनोंपि निमित्त-

२ वागि माडिसिद प्रतिष्ठे

[यह लेख पीतलकी चौबीस तीर्थंकरमूर्तिके पिछले भागपर खुदा है। यह मूर्ति देमायप्प नामक व्यक्तिने अनन्तव्रतकी समाप्तिके समय स्थापित की थी। लिपि १२वीं सदीकी है। लिपिसे पता चलता है कि इसका निर्माण कर्नाटकमें हुआ था।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५०]

३१५

रूगि (विजापूर, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख किसी जैन आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ७९ पृ० १८८]

३१६

शेरगढ (कोटा, राजस्थान)

संस्कृत-नागरी, १२वीं सदी

[इस लेखमें आचार्य वीरसेन तथा सागरसेन पण्डितका उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४३१ पृ० ७०]

३१७

रायबाग (बेलगांव, मैसूर)

कन्नड, शक ११२४=सन् १२०१

[यह लेख रट्ट वंशके कार्तवीर्य ४ के समयका है। इस राजाने वैशाख पूर्णिमा, शक ११२४, शुक्रवारको एक जिनमन्दिरके लिए कूण्डि ३००० प्रदेशका चिचलि ग्राम दान दिया था।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५१ पृ० ३३]

३१८

बेलगाँव (क्रमांक १ ब्रिटिश म्यूज़ियम)

कन्नड, शक ११२७ = सन् १२०४

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनम् । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥

२ श्रीजिनसमयनवांबुधि राजिसुतिर्कमथनोर्जितामृतरत्न-श्रीजननगृहं सत्वदयाजीवनमपरिमितगभीरमपारं ॥ नवमौक्तिकहारं

३ श्रीयुवतिगिदेनिसिर्दे कृष्णनृपवंशजपार्थिवचयदोल् सेनरसं भुवननुतं मिसुपनेसेव नायकमणिवोल् ॥ वरकूं-

४ डिमंडलाधीश्वरनेनिपा सेनविभुगे सुतनादं दुर्धरवैरिभूप-भीकरपराक्रमं कार्तवीर्यननुपमशौर्यं ॥ आ विभुगादल् सति पद्मा-

५ वति जिनसमयवृद्धिकरणापरपद्मावति बुधाभिमतपद्मावत्ति वज्रा-युधंगे पौलोमिय वोल् ॥ अवरिर्वरगं पुट्टिदनवनीश्वरमौ-

६ लिमंडनं लक्ष्मनृपं परिमलमुक्ताफलमोसेव वार्धिगं ताम्रपर्णगं पुट्टुववोल् ॥ एनेवं लक्ष्मिदेवक्षितिभुजन भुजाटोपमं विद्विषद्धा-त्रीनाथर् संजे-

७ गंपं भटपदहतियिंदाद केंदूलियेंदालीनाभ्रध्वानमं तांनयतुरग-खुरोद्घोषमेंदंजि नानास्थानस्थायित्वमं केल्पडेयदे विडदो-

८ डुत्तमिर्दपरिन्तुं ॥ अपराधिगलने नोल्पुदु नृपालकरदंडनीति वाप्पु धनाज्ञाधिपनागे लक्ष्मभूविभुवपराधं दंडमेंबि-विल्लें कृतियो ॥

९ अमृतांभोराशियोल् पुट्टिद सिरियनणं वय्तु धात्रं स्वमायाक्रमदिं वेरोर्वलं निर्मिसि चपलेयना कृष्णनोल् कूडि मत्ता विम-

१० लोग्यद्भाग्येयं सुस्थिरेयनोलेंदु कोट्टं महाभूत्निकायोत्तनर्णा लक्ष्मिदेवंगेने मिगे तलेदल् चंद्रिकार्देवि चेल्वं ॥ प्रणुतश्रीनिधि चंद्रिका-

११ सतिय शीलख्यातमं कूडे धारिणियोल् वण्णिसलाल्मार्तपरे लक्ष्मोर्वीशिनं क्षत्रियाग्रणियं शीलदे नेच्चिसल् फणिपनं पूण्डे-

१२ त्ते तां तन्न कय्गुणमं कंडुदरिंदं पोगलल्कापं विश्वजिह्वालियिं ॥ नरपतिलक्ष्मिदेवसति चंद्रलदेवि निजोद्वहस्तदिं धरंगेसेयल्के

१३ संक्रमणदोल् कुडे कांचनमं वेरल्गलोल् वेरेसेद हेमकालिकेय कर्प-सेदिर्दुदु वाहुकल्पवल्लरिय तलप्रवालद नखप्र-

१४ सवक्केलसिर्द तुंबिवोल् ॥ श्रीवसुदेवनंतेस्व लक्ष्मनृपंगवर्निंद्य-देवकीदेविवोलोप्पुवी विनुतचंद्रलदेविगमादरात्मजर् भूवलय-

१५ प्रदद्वल्केशवरेंदेने कार्तवीर्यधात्रीवरमल्लिकार्जुनकुमारकर्लजित-शौर्यशालिगल् ॥ दृढशौर्य कार्तवीर्य नल-

१६ रे वलयुतं दिग्जयक्कन्यधात्रीपतिगल् वेन्नित्तु नीरं पुगलवर शरी-रोष्णदिं वत्ति चित्तोद्गतमौत्युत्कर्षवृत्तिप्रसरणविसरद्व-

१७ र्मतोयोर्मिगिंदि विस्तृतमागल् हानियुं वृद्धियुनद्दु निजमंभोधिगेंत्र-विंमूडर् ॥ ई कमनीयवाजिचयर्मा क-

१८ रिंमकुलर्मा विलासिनीलोकमिवेल्मवा कविय कालेगदोल् वयला-नियोल् पुराणीकद युद्धदोल् पिडिदर्निनिवनी कलिकार्तवीर्यनंदा-

१९ कुलमागि नोडुवुदु वन्धनशालेयोल् इर्दरिव्रजम् ॥ श्रीरट्टवंशमेंव सुमेरुवनाश्रयिसि कल्पकुजनमेनलें राराजि-

२० पुदुदो विवुधाधारं श्रीमत्कुलं प्रमोदनिवासं ॥ श्रा महनीय-कुलक्के शिरोमणि मव्यांवुजक्के तेजोमणि रक्षामणि वुधविततिगे

२१ चिंतामणि वेल्पर्गेनल्के रंजिपनुदयं ॥ ललितगुणौघं लक्ष्मीनिलयं संश्रितमधुव्रतं तलेदं निर्मलमप्पुदयसरोवरदोल् उदयमं पुरुष-पुंडरीकं वी-

२२ चं ॥ प्रकटधर्मनिधि वीचणं कुलगृहं शीलक्के लीलाश्रयं सुकृत-क्कुद्भवमंदिरं सिरिगे सेवास्थानकं सद्गुणक्के कलाभ्यासपदं सरस्वतिगे संचारालयं

२३ धर्मकार्यकलापक्कभिवृद्धिगेहममलाचारक्केनल् रंजिपं ॥ वीचंगे सुकवि संस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेंद्रमतश्रीलोचनसंनिभरात्महिता-

२४ चारपर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ पापापहारिजिनपश्रीपदभक्तं सुपात्रसंकुलदानव्यापारगमितदिननेनिपी पेर्मंगे पेर्मणं तवर्मनेयादं ॥

२५ स्थिरपद्मोदयमंबुजक्के कमलं पद्माकरक्कंबुजाकरमुद्यानवनक्के पूर्ण-फलिताराम पुरक्कोप्पुवंतिरे लोकोत्तमकार्तवीर्यनृपराज्यं-

२६ गोप्पुवं सद्गुणाभरणं श्रीकरणाग्रगण्यवेनिसिर्द्दप्पं जगं वाप्पेनल् ॥ अनवद्योक्ति विनूतवाणिगुरुदेशं चागमस्वप्नभूजनिकायक्कतिविस्म-

२७ यस्थितिकरं जैनक्रमांभोजपूजनमैंद्रध्वजविभ्रमश्रुतिलसत्संवादियें-दुंदनिद्यनयश्रीकरणाप्पणंगे दोरेयारी धात्रियो-

२८ क् धार्मिकर् ॥ अचलितगुणनिलयं चतुरचतुर्मुखनेनिसुवप्पण वल्लभे सुप्रचुरविवेकास्पदचारुचरिते वागदेवियेंब पेसरिंदेसेवल् ॥ वरवा-

२९ गदेविगमप्पणप्रभुगमादर् नंदनर् श्रीजिनेश्वरमार्गप्रतिभासक-प्रविलसद्रत्नत्रयंगल् विनेयर पूर्वार्जितपुण्यदिंदे निरुतं मेय्वेत्त-वेंवंते-

३० सुस्थिरलक्ष्मीपतिवीचवैजवलदेवर् सज्जनानंदकर् ॥ प्रणुतोद्यत्-
पात्रदानं व्रतगुणचरितं सज्जिनावासनिर्मापणव्रात्मोर्वी-

३१ शराज्याभ्युदयनयचयं तम्मोलोप्पुत्तिरल् धारिणियोल् विख्याति-
वेत्तिर्वरे सोगयिपरा गंडरादित्यसेनाग्रणी निंवं कार्तवीर्यक्षि-

३२ तिपतिसचिवोत्तंसनी वीचिराजं ॥ सुजनाकर्षणमात्मवल्लभ-
वशीकारं सुहृन्मोहनं कुजनोच्चाटनमन्यमंत्रिचयमानस्तंभनं
दुर्णयव्र-

३३ जविद्वेषणमेंबिवागे निजमंत्रांगंगळिं रंजिपं विजयश्रीनिधि-
कार्तवीर्यसचिवं लक्ष्मीचणं वीचणं ॥ परचधुगनुमतियं जैनरीय-
लागदु परप्र-

३४ वर्तनेयोल् जैनरोलधिकं वीचं तंदरिनृपभुजविजयलक्ष्मियं
पतिगीवं ॥ हृदयाह्लादकनादनुविंगिवनोर्वं सर्वसंपद्गुणास्पद-
वीचानुजवैजणं वि-

३५ भूतेयोल् धर्मात्मजं मूर्तियोल् मदनं चागदोल् वांधवतनूजं
जैनपूजाभिषेकदोळिंद्रं नयदोल् बृहस्पति रणोद्यत्क्रीडेयोल
राघवं ॥ विदि-

३६ तजिनागमांबुनिधिवर्धनदोल् निजवंशवारिजाभ्युदयविधानदोल्
बुधमनोमिमतार्पणदोल् कलंकमिल्लद हिमरोचि तापकृतियिल्लद
भानुविभू-

३७ दवृत्तियिल्लिद सुरभूरुहं धरेयोलप्पसुतं वलदेवनोप्पुवं ॥ स्वस्ति
समधिगतपंचमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं कार्तवीर्यदेवं निजानु-

३८ जयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदेवं वेरसु वेणुग्रामस्कन्धावारदोल्
साम्राज्यसुखमनुभविसुत्तमात्मीयश्रीकरणाग्र-

३९ गण्यनुमखिलमंत्रिजनवरेण्यनुमप्प वीचिराजं माडिसिद

रदजिनालयद श्रीशान्तिनाथदेवर नित्यपूजाभिषेकं मोदलाद धर्मकार्यनिमित्त-

४० मागि तज्जिनालयाचार्यश्रीशुभचंद्रभट्टारकदेवर्गे शकवर्षद ११२७ नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पुष्यसुद्धबिदिगे वड्डवारदोल् आद संक्रमण-

४१ समयदोल् नाल्प्रासिर्व महाजनंगल् सहितमागि धारापूर्वकं माडि वेणुग्रामेयोल् कोट्ट स्थलवृत्ति अदर तेंक देसेय बजेय खारिगेयिं प-

४२ डुवल् कोडगेय्य इप्पत्तनाल्कनेय हत्तियलिक इरिसिल्गट्टे सहितं मत्तरय्दु ॥ आ वेणुग्रामेयल्लि हिरिय मूडगेरिय पड्डवण वरियो-

४३ ल् दुग्गियर तीकणन मनेयिं वडगल् मनेयोंदु । पड्डवगेरिय पड्डवण हरियोल् मनेयोंदु । पड्डवण गवनियल्लि मनेयोंदु । साल वसदियिं मूडण-

४४ कपिलेश्वरदेवर धवलारद कट्टिदिरोल्मने मूरु । आनेयकेरेगे होद बट्टेयिं वडगल् हूदोटं आ वेणुग्रामद कोलिं मत्तरेरडु कम्मविन्नूरेल्पत्तारु । कर्णंबुरिगे-

४५ यालूरिं पड्डवण हेर्गेरेयिं पड्डवल् केय्मत्तर् हंनेरडु । पड्डवण हट्टियल्लि तेंकगेरियोल् अय्गय्यगलदिप्पत्तोंदु कय्नीलद मनेयोंदु ॥ मत्तं स्वस्त्य-

४६ नेकगुणगणालंकृतसत्यशौचाचारनयविनयसंपन्नरुमाश्रितजन-प्रसन्नरुं मघपट्टिपुरप्रतिष्ठितजिनमुनिजनोपदिष्टगुड्डशास्त्र क्रमप-

४७ रिपालितवीरबणंजुधर्मरुं समाचरितपुण्यकर्मरुं । पद्मावतीदेवी-लब्धवरप्रसादरुं विहितसकलजनाह्लादरुं । न्यायोपार्जनव्यवहार-प्रशस्तरुं

४८ मल्लुंकिर्‌डहस्तल्मप्प समयचक्रवर्ति जयपति सेट्टि मुख्यमागि वेणुग्रामद स्थलद समस्तमुम्मुरिदंडंगलुं कूंडिमूसासिरद पट्टणिग मोद्‌लाडु-

४९ मयनानादेशिमुम्मुरिदंडंगलुं परशुराम नायक पोम्मण नायक अम्मुगि नायक प्रमुखरप्प समस्तलालव्यवहारिगलुं पडप नायक कों-

५० ड नंवि सेट्टि पोरेयच सेट्टि मोद्‌लादेल्ला मलेयालव्यवहारिगलुं मत्तमा वेणुग्रामद स्थलद चिन्नगेयिकद्‌वरुं दूसिगरुं मुख्यमागुलिद परद्‌रुं । तलिगरुं । दिंक-

५१ सालिगलमितिवरेल्लं नेरेदा शान्तिनाथदेवर वसदिगे विट्टायवेर्ते-ट्टोडे वडगणिं वंद कुदुरेगे नेलमेडु हागवोंडु । तेंकल् नडेववर्के सुंक हागवोंडु । मलेयालर

५२ कुदुरेगे हागवोंडु । अल्वत्तयदेतु कोनंगलोलेनं पेरिदोडं सर्वाबाध-परिहारं । चिन्नगेयिकद चीरक्के दूसिगवसरक्के । हत्तिवसरक्के । मणिगारवसरक्के । गंधवण-

५३ वसरक्के गंधवणिगरं गडिगे । अक्कसालेगमटक्के वेरंवेरं वरिसदेरं वरिसदेरे हिरिय हागवोंडु । होरगणिं वंद सीरेय कडगेगे वीसवोंडु । होरगणिं वंद गंधवणक्के । कक्षमंडक्के । आ मं-

५४ डं गद्याणं तूकवप्पडु । हत्तिय मंडिगे तारं मूरु आ पेरिंगे काणियोंडु । मत्तद मंडिगे मत्तवोंदल्लं आ पेरिंगे मत्तवोमानं । अंकणथ मत्तं मारिदडा मत्तमोवल्लं । मत्त-

५५ वसरदंगडिगे मत्तं निच्चसोल्लगे । अक्किवसरक्के अक्कियदं । मेलसिण हेरिंगे मेलसोमानं आ जवक्के अरवानं । इंगिन पेट्टिगेगे इंगु गद्याणं तूकवात्त अल्लअरिसिनद जवलक्के आ म-

५६ ण्डं पलवय्दु आ हेरिंगे अल्लअरिसिन पलं हत्तु। गाणक्के निच्चत्वेण्णेयद्दं । अडकेय हेरिंगे अडकेयिप्पत्तय्दु आ जवलक्के अडके हंनेरडु । एलेय हेरिंगेले नूरु हो

५७ रंगेलेयय्वत्तु। तेंगिन काय हेरिंगा कायोंदु। ओलेय हेरिंगे ओलेय सूडेरडु आ होरेंगे सूडोंदु। होरगणिं बन्द बेल्लद भंडिगे वेल्लदच्चु हदिनय्दु आ

५८ होरेगे अच्चोंदु। वालेय हेरिंगा कायारु आ होरेगे काय्मूरु। नेल्लिय काय हेरिंगा काय्बल्लवोंदु। कविन हगरक्के ओंदु कर्बु। बलहद हेरिं-

५९ गे वलहवोपलं मत्तमा शान्तिनाथदेवर बसदिगे श्रीकार्त्तवीर्य-देवं कोट्ट अंगडि बडगगेरिय बडगण हरिय पडुवण कडेयोल् राजवीथियिं सूडल् नाल्कु ॥

६० बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः, यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ अपि गंगादितीर्थेषु हन्तुर्गामथवा द्विजं निष्कृतिः स्यान्न देवस्व-

६१ ब्रह्मस्वहरणे नृणां ॥ ओदविंदी धात्रियेल्लं मिगे पोगले चिरं वर्तिसुत्तिर्के नित्याभ्युदयश्रीकार्तवीर्यक्षितिपविपुलसाम्राज्य-सन्तानमुर्वीविदि-

६२ तश्रीवीचिराजप्रथितविमलशान्तीशरावासधर्मं सदलंकारस्फुटार्था-न्चितपदकविकन्दर्पसुव्यक्तसूक्तं ॥ दोषव्यतीतमर्थविशेषमिदेने पेल्दनोल्दु शासनमं पीयू-

६३ षसमसूक्ति चातुर्मापाकत्रिचक्रवर्ति कविकन्दर्पं ॥ श्रीमन्माधवचंद्र-त्रैविद्यचक्रवर्तिवाक्सुधारसनाभ्युदितनित्यसाहित्यकमलवनमरालं वालचंद्रदेवं पेल्द शासनं

[इस लेखका सारांश जै० शि० सं० भा० ३ में क्रमांक ४५३ में आ गया है। किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था। पाठकोंकी सुविधाके लिए सारांशकी मुख्य बातें यहाँ दोहरायी जाती हैं। इस लेखमें रट्ट वंशके राजा कार्तवीर्य (चतुर्थ) तथा उनके बन्धु मल्लिकार्जुनका एवं उनके मन्त्री बीचणका उनके पूर्वजोंसहित परिचय दिया है। बीचणने बेलगांवमें रट्टजिनालय स्थापित किया था। इस मन्दिरके प्रधान भट्टारक शुभचन्द्रको शक ११२७, रक्ताक्षी संवत्सरमें द्वितीय पौष शुक्ल २ को बेलगांवकी कुछ जमीन तथा कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया गया था। इस शिलालेखके पाठकी रचना माघचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य बालचन्द्र कविकन्दर्पने की थी।]

[ए० इं० १३ पृ० १५]

२१९

बेलगांव (क्रमांक २) (ब्रिटिश म्यूजियम)

शक ११२७ = सन् १२०४, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥

२ श्रीजिनसमयनदांबुधि राजिसुतिर्कमथनूर्जितान्नूनरत्नश्रीजगनगृहं मस्वदुयार्जावननपरिमितगंभीरम-

३ पारं ॥ जंबूद्वीपद भरतदांलंबुजभवसारसष्टि कूंडिमहांचक्रं दरे-गोंल्पिदुदु सकलजनांबकवनमुक्त-

४ नफलविलाससनिधानं ॥ श्रीराष्ट्रकूटवंशसरोरुहवनराजहंसनाद-नारं विस्तारियिदोंनिधि सेननर्डारमणं

५ संभूतामलोभयपक्षं ॥ निरिसं निजानुनेयनादरदिं शशियिसु राजनादं नणपं धरियिलि शिक्षंना सेनराजनो-

६ ल् सेणसि राजनेनिपव्रनार्च ॥ स्थिरतेयनुत्तंगतेयं धरियिसिदा सेननृपवरोदयदोल् भासुरतेजोनिधि पद्माभिराम-

७ नेने कार्तवीर्यरविगुदयिसिदं ॥ विनतारिपुप्रतिबिंबालि नितांतं कार्तवीर्यपदनखदोल् चेल्वेनिकुं पूर्वपदाश्रि-

८ तरनलिदु तन्मंत्रकृतिगे पदेदप्पुववोल् ॥ स्थितिकारिणि विमल-गुणान्विते पद्मलदेवि कार्तवीर्यधरित्रीपतिदयिते तां त्रिव-

९ र्गोन्नतिसाधिकेयपरनीतिविधेवोलेसेवल् ॥ जनियिसिदं समस्त-गुणसंकुलसंस्तुतलक्ष्मभूमिपं जननुतकार्तवीर्य-

१० विभुगं सतिपद्मलदेविगं सुतं जनियिपवोल् जयन्तनमरप्रभुगं शचिगं मयूरवाहनभवंगवद्रिजेगमंगभवं हरिगं

११ रमाख्येगं ॥ वनितेयरं मरुल्चुत्र समाकृतियिं सुमनोभिवृद्धियं जनियिप शीलदिं कुवलयक्के विकासमनीव मयूमेयिं जन-

१२ नयनक्के कामनो वसन्तनो चंद्रमनो दिटक्के पेलेने विभु लक्ष्मी-देवनेसेवं कविसंकुलकल्पमरूहं ॥ विजितरिपुराजराजात्म-

१३ जे चंदलदेवि लक्ष्मनृपसतियेसेवल् विजितघटसर्पमदे विश्वजन-स्तुतचारुचरितेयेने धारिणियोल् ॥ अवरिर्वगं कलिकार्तवी-

१४ र्यनुं मल्लिकार्जुननुमादर् प्रोद्भवसाम्राज्यरामाधिपयुवराज-कुमाररात्मजर् घनतेजर् ॥ जनमेल्लं पेच्चे चल्लं

१५ पेगेवहरद सेल्लं जयश्रीगे नल्लं मनुमार्ग सत्रिवर्ग तनगेसेये निसर्ग गृहीतारिदुर्ग सनयालापं

१६ सुरूपं नेगल्दनतिदिलीपं जितारातिभूपं घनशौर्य क्षत्रवर्य सुरकुजसदृशौदार्यनी कार्तवीर्य ॥

१७ श्रीमत्कुलाब्धिवर्धनसोमनेनिप्पुदयविभुविनात्मजनत्युद्दामयशो-निधि बीचं भूमहितं सौम्यवृत्तियं तळेदेसेवं ॥ बीचं-

१८ गे सुकविसंस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेंद्रमतश्रीलोचनसंनिभरात्म-हिताचरणर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ तनगं

१९ श्रह्मंगमुद्यच्चतुरते तनगं वार्धिगं गुणपु चागं तनगं कर्णंगमत्युन्नति सरि तनगं मेरुगं भूप्रियत्वं तनगं चंद्रगमर्हन्मतरु-
२० चि तनगं वारिषेणंगमेंदंतनिशं मव्यालि वण्णिप्पुदु गुणियेनि-सिर्द्प्पणं प्रीतियिंदं ॥ श्रीकरणाग्रणिगप्पंगाकलितलस-
२१ च्चरित्रे दयितेयलंकाराकीर्णे विनुते वरवर्णाकृति वागदेवियुचित-नामदिनेसेवल् ॥ घनलक्ष्मीपतिपांडुगं नेगल्द कु-
२२ न्तीदेविगं धर्मनंदनभीमार्जुनरादवोल् तनुजरादर् विश्रुतर् कार्तवीर्यनृपश्रीकरणाग्रणंगमेसेवी वागदेविगं सारशौ-
२३ र्यनिधानर् विभुवीच्चवंजवलदेवर् निर्जितारातिगल् ॥ अनुपम-विद्येगुद्घविनयं सिरिगोप्पुव चागदेल्गे जौवनके विनिर्मला-
२४ चरणमायुगे विस्तृतकीर्ति वाक्प्रवर्तनेगे ऋतोक्ति तंनेसकर्दिं सले मंडनमागे वर्तिपं जनपतिकार्तवीर्यसचिवैकशिरो-
२५ मणि वीचनुर्वियोल् ॥ इंदु तां श्रीकरणप्पणाग्रसुतसत्पुण्यप्रभा-जालमिन्तिदु रट्टक्षितिपालमंत्रिय रमास्मेरावलोकांशु-
२६ मन्तिदु दल् धार्मिकचक्रवर्तिय दयादुग्धाब्धिवीचिसमभ्युदयं तानेने वीचिराजन यशं पर्विंत्तु भूलोकमं ॥ विनुतनिज-
२७ प्रभुगालोचनदोल् नयशास्त्रदृष्टि दुर्धरसमावनियोल् निशित-जयास्त्रं विनोददोल् नर्मसचिवनेनिपं वैजं ॥ मरदिं तंनं नो-
२८ डिद तरुणीजनवेरेद वंदिवृंदं मत्तोर्वरनीक्षिसदेरेयदेनल् सुरूपन-नतिशयवितरणं वलदेवं ॥ श्रीकार्तवीर्यनृपति-
२९ श्रीकरणाधिपन वीचणन गुरुकुलदोल् लोकोत्तरसुचरित्रविवेकर् मलधारिदेवमुनिपर् नेगल्दर् ॥ आ मुनिमुख्यर् शिष्यर् भूमीश्वर-
३० वंद्यरमलतरसिद्धांतश्रीमुखतिलकर् प्रथितोद्दामगुणर् नेगल्द नेमिचंद्रमुनींद्रर् ॥ निरुपमतपोनिधानर् धरणीश्वरजालमौ-

३१ लिलालितपदरॆंदुस्मुदर्डिं कीर्तिपुदुवरॆ विभुशुभचंद्रदेवभट्टारकरं ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहामंड-

३२ लेश्वरं कार्तवीर्यदेवं निजानुजयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदेवं वेरसु वेणुग्रामस्कंधावारदोळ् साम्राज्यसुखमनु-

३३ भविसुत्तमात्मीयश्रीकरणाग्रगण्यनुमगण्यपुण्यनुमप्प बीचिराजं माडिसिद रट्टजिनालयद श्रीशान्तिनाथदेवर अंगभोग-

३४ रंगभोगनित्याभिषेकार्चनतदावासखंडस्फुटितजीर्णोद्धरणाहारादि-दाननिमित्तं श्रीमूलसंघकोंडकुंदान्वयदेशीयगणपु-

३५ स्तकगच्छहनसोगप्रतिबद्धतजिनालयाचार्यश्रीशुभचंद्रभट्टारकदेवर्गॆ शकवर्षद ११२७ नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पु-

३६ ष्यशुद्धबिदिगे वड्डवारदोलाद संक्रमणसमयदोळ् कूंडिमूसासिर-दोळगण कोरवल्लिगंपदण डंबरवाणियॆंब ग्रा-

३७ ममं सर्वाबाधपरिहारमष्टभोगतेजस्वाम्यसहितं निधिनिक्षेप-जलपाषाणरामादिसमन्वितं सर्वनमस्यं माडि स्वकीयसा-

३८ म्राज्यसंतानयशोभिवृद्ध्यर्थमागि धारापूर्वकमतिप्रीतियिं कोट्टनदर्कॆ सीमे ऐशानियकोणोळ् नस्वल मोनेय-

३९ ल्लि नट्ट कल्लल्लि तॆंक मोगदे मूडण दिक्किनोळ् नट्ट कल्लिं मुंते नट्ट कल्लिं मुंडे नगरकेरेयाल्लिं मुंटे आग्नेयियकोणोळ् मू-

४० लवल्लिबेकगोड मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लिं पडुव मोगदे तॆंकण दिक्किनोळ् बम्मणवाडकट्टकवाडद मुग्गुड्डेय इंगुणिगेरे-

४१ य केलगे नट्ट कल्लिं मुंडे कुनिकिल्गल्लल्लि नट्ट कल्लिं मुंटे निरुतियकोणोळ् कटुकवाडकरवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लिं बडग मो-

४२ गदे पडुवण दिक्किनोळ् मेलुगुंडिय करवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लिं मुंडे कॆंदरिय मोंकिनोळ् नट्ट कल्लिं मुंते वायुविन-

४३ कोणोल् मेल्गुंडिय नाविद्दिनेय मुग्गुड्डेय गॉय्टे गट्टिनल्लि नट्ट कल्लल्लि मूड मांगदे वडगण दिक्किनोल् सुणदद कोडिय मेगणा-ट्टगल्ल-

४४ ल्लि मुंडे सिंदिकेवेट्टद पडुवण मोनेयल्लि नट्ट कल्लल्लि मुंते हेरहिनकोडिय कलहुलिकेय मेल् नट्ट कल्लल्लि मुंदे मालद मेल् नट्ट कल् ॥

४५ मत्तं नाडोल् कोट्ट स्थलवृत्ति कन्नूर कालवल्लि मूलवल्लियोल्लरिं मूडल् वेलकव्वेय केय्यि तंकल् केयकम्मवेंट्टु नूरु आकन्नूरो-

४६ ल् मद्दि गावुंडन मनेयिं पडुवलरुगय्यगलद्दिप्पत्तोंदु कय्नीलद मनेयोंदु ॥ कुलियवालिगेयोल्लरिंगीशान्य-

४७ दल्लि कॅनेश्वरदेवर केय्यि मूडल् कूंडिय कोल मत्तरोंदु वसदियिं तंकल् हन्निकॅय्यगलदिपत्तोंदु कय्नीलद मनेयोंदु ॥

४८ हरिगव्वेयाल्लरोल्लरिं पडुवल् हिंगलजेय वट्टेयिं वडगला कोल मत्तरोंदु वडगण केरियल्लि हन्निकॅय्यगलदिपत्तु

४९ कय्नीलद मनेयोंदु ॥ चच्छकियल्लि मूडण प्रभुमान्यदोलगे वोच्चुलगेरॆयिं मूडल् मुद्दुगोडेय वट्टेयिं तंकल् हारुव-

५० गोल मत्तर् मूवत्तु सेट्टियुत्त नागणन मनेयिं वडगल् हन्निकॅ-य्यगलदिपत्तु कय्नीलद मनेयोंदु ॥ वेलगलेय हल्लि हद्दिगुं-

५१ तियोल्लरिं मूडणोत्ति पडुवल् कम्म नालनूरय्वत्तु ॥ उच्चुगावेय हल्लि निट्टूरोल्लरिं नैऋत्यदोल् महाजनंगल् कोट्ट-

५२ गोडगेयं अप्पेय सावन्ततुंबलियल्लि कोट कंयं सीमे कंडेय केरेयिं वडगल् हुलगन गुत्तिथिं मूडल् सावन्तन कोडगे-

५३ यिय तंकल् सेल्लसरलि पडुवल् नट्ट कल् मूडगेरियल्लि दनगर मनेय स्थलदोल् हद्दिना (ल्कु) गय्यड्डवनं मुंतेरड्डु गोद्दिगे ॥ कण्णगावेया-

५४ लूरिं नैर्ऋत्यदल्लि एलेदोंटं हारुवगोल मत्तरोंदु कम्मवेल्नूररुवत्तेंटु तेंकणिं वंद मुगुलिय हल्लवदकें तेंकण हेले प-

५५ डुवला हल्लं वडगरूंवबाविय तोंटं । मूडल् मूलस्थानदेवर तोंटं । आग्नेयकोणोरूल नडुवण देवालयद तोंटं । आ ए-

५६ लेय तोटदिं तेंकला हल्लदिं मूडल् हूदोंटं कम्मं नाल्नूरु ॥ ई सोमेगलोलेल्ल नट्ट कल्गल् ॥ ओसेदी शासनमार्गदिं नृपरदार् पालिप्परी

५७ धर्ममं निसदं तत्सुकृतात्मरात्मबलमित्रप्रेयसीगोत्रपुत्रसमृद्ध-र्त्वदोलोंदि विश्वधरेयं निष्कंटकं माडि संतोसदिं राज्यमनप्पु-केय्दु पडेव-

५८ दीर्घायुमं श्रीयुमं ॥ एनिसुं लोभदे शासनक्रममनावों मीरिदं तद्दुरात्मनसेव्याचरणान्वितं पलिगे पैशून्यक्के पापक्के भाजन-नल्पा-

५९ यु रुजाविलं रिपुहृतात्मोर्वीतलं दुर्व्वलं घनदुःखास्पदनागलुं नरकदोलोल् काड्डुगुं मूडुगुं ॥ सामान्योयं धर्मसे-

६० तुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः । सर्वानेतान् भाविनः पार्थिवेंद्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्रः ॥ स्वदत्तां परदत्तां

६१ वा यो हरेत वसुन्धरां षष्ठिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रमिः ॥ प्रहतारिव्रजकातवीर्यसचिवं श्रीवीचिराजं यशोमहि-

६२ तं पेलिमेनल्के शासनमनोल्पिं वालचंद्रं गुणाग्रहि विद्वज्जन-संमतस्फुटपदार्थालंक्रियासंकुलावहमप्पन्तिरे पेल्दनिन्तु कवि-कन्दर्पं बुधाधीश्वरं ॥

[इस लेखका सारांश जै० शि० सं० भाग ३ में क्रमांक ४५४ में दिया है। किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हो सका था। यह लेख भी पहले लेखके ही दिन अर्थात् पौष शुक्ल २ शक ११२७ को लिखा गया

था। इसमें भी रट्ट वंशके राजा कार्तवीर्य (चतुर्थ) तथा उनके मन्त्री बीचणका उनके पूर्वजोंके साथ परिचय दिया है। वेलगाँवमें बीचणके द्वारा स्थापित रट्टजिनालयके अधिष्ठाता शुभचन्द्र भट्टारक थे। ये मूलसंघ – कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छके मलधारिदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके शिष्य थे। इन्हें कूण्डि प्रदेशके कोरवल्लि विभागका उम्बरवाणि ग्राम दान दिया गया था।]

[ए० इं० १३ पृ० २७]

३२०

वालूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, राज्यवर्ष १६ = सन् १२०५

[इस लेखमें होयसल राजा वीरवल्लाल २ के समय राज्यवर्ष १६, क्रोधन संवत्सरमें आषाढ़ व० ३ बुधवारके दिन मेघचन्द्रभट्टारकके शिष्य कसप गावुण्डकी इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१९]

३२१

वालूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह निसिधिलेख बहुत घिस गया है। 'श्रीवीतराग' इतने अक्षर पढ़े जा सकते हैं।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१४]

३२२

वेलगामे (मैसूर)

कन्नड, सन् १२०६

१ स्वस्ति श्रीमत् वीरवल्लालदेववर्षद १६ नेय क्षयसंव-
२ त्सरद भाद्रपद ब ११ बृहस्पतिवारदन्दु कमलसेन-
३ देवर गुड्डि जकौव्वे समाधिविधियिं मुडिपि सुगति-
४ य प्राप्तेयादलु ॥ श्रीवीतरागाय नमः

[इस लेखमें होयसल राजा वीरवल्लालके १६वें वर्ष क्षयसंवत्सरके भाद्रपद कृष्णपक्षमें ११ को कमलसेनकी शिष्या जकौव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

३२३

हंचि (मैसूर)

सन् १२०७, कन्नड

[यह लेख सन् १२०७ का है । होयसल राजा वीरवल्लालके राज्यमें नागरखण्ड प्रदेशके वान्धवनगरमें कदम्बवंशीय सामन्त बोप्पके पुत्र ब्रह्मका शासन चल रहा था । उस समय सावन्त मुद्दने मागुण्डिमें एक वसदि बनवायी तथा उसे कुछ भूमि दान दी । यह दान मूलसंघ-काणूर गण-तिंत्रिणीक गच्छके अनन्तकीर्ति भट्टारकको दिया गया था । उनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार है – गोवर्धन सैद्धान्ति-मेघनन्दि सैद्धान्ति-दिवाकर सिद्धान्तदेव-पद्मनन्दि सैद्धान्त – मुनिचन्द्र सैद्धान्त – भानुकीर्ति सैद्धान्त – अनन्तकीर्ति भट्टारक । मुद्दकी प्रशंसा विस्तारसे की है तथा उसे रेचचमूपतिके समान कोप्पण तीर्थका रक्षक कहा है ।]

[ए. रि. मै. १९११ पृ० ४६]

३२४

आनन्दमंगलम् (चिंगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष ३८ = सन् १२१६, तमिल

[इस लेखमें विणैयाभचूर कुरवडिगलके शिष्य वर्धमानपेरियडिगल्-द्वारा जिनगिरिपल्लिमें एक श्रावकको आहारदान देनेके लिए ५ कलंजु (सुवर्णमुद्रा) अर्पण करनेका उल्लेख है। यह लेख चोल राजा (कुलोत्तुंग३) मदिरैकोण्ड परकेसरिवर्मन्के ३८वें वर्षका है।]

[रि. सा. ए. १९२२-२३ क्र. ४३० पृ. २५]

३२५

मनगुन्दि (धारवाड-मैसूर)

शक ११३८-४० = सन् १२१६-१८, कन्नड

[यह लेख कदम्ब राजा जयकेशि तथा वज्रदेवके समय चैत्र व. ७, शक ११३८ तथा कार्तिक शु. ८, शक ११४० इन तिथियोंका है। इसमें मणिगुन्दिके जिनालयके जीर्णोद्धारके लिए कई भव्य पुरुषों-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है तथा वहाँके जैन आचार्योंकी नामावली दी है।]

[रि. सा. ए. १९२५-२६ क्र. ४३९ पृ. ७५]

३२६

कंदगल (विजापूर, मैसूर)

राज्यवर्ष (२) १ = सन् १२३०, कन्नड

[यह लेख यादव राजा सिंहणदेवके राज्यवर्ष (२) १, विक्रम संवत्सर ज्येष्ठ अमावास्याका है। इसमें मूलसंघ-काणूरगणके सकलचन्द्र भट्टारककी शिष्या नागसिरियव्वे-द्वारा निर्मित पार्श्वनाथ बसदिके लिए भूमि आदिके दानका उल्लेख है।]

[रि. सा. ए. १९२८-२९ क्र. ई ५० पृ. ४५]

३२७

हलेबीड (मैसूर)

शक ११५७ = सन् १२३६, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमद्देवासुराहीन्द्रपूजितश्चांगजन्मजिद् देवः श्री-
२ वीरतीर्थेशः पायाद् भव्यजनव्रजान् ॥ (१) श्रीमल्लोकैकविख्या-
३ तमूलसंघो विराजते कोण्डकुन्दान्वयस्तत्र देशीयाख्यगणा-
४ ग्रणीः ॥ (२) श्रीवीरनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्त्यनुजो महान् श्रीमद्बा-
५ हुबली नाम मुनिः सिद्धान्तपारगः ॥ (३) सकलज्ञ-प्रतिपादितोभयनया-
६ भिज्ञानसंपन्नको मदनोद्यद्दवदावतोयदविभुः सद्धर्मरक्षामणिः द्विता-
७ द्वादशसत्पदार्थनिपुणः पड्द्रव्यवेदी जयत्यखिलोर्वीनुतचारु वाहुबलिसिद्धान्तीश्वरः-
८ सन्मुनिः ॥ (४) तस्याग्रशिष्योखिलशब्दशास्त्रपारंगमः स्वात्मसुखानुवर्ती । स्याद्वादविद्याकुश-
९ लो विभाति कामाम्बुजेन्दुः सकलेन्दुयोगी ॥ (५) अर्हणंदिमुनीन्द्राणां चारित्रं विस्मयावहं ।
१० तेषां प्रणयिनी वाणी तस्यास्तन्मुनयः प्रियाः ॥ (६) जल्पवितण्डकथासु च शब्दाग-
११ मजिनमुखोत्थपरमागमयोरुन्निद्रं यच्चित्तं स त्रैविद्यारुहोर्हणन्दि-
१२ मुनिः ॥ (७) एष श्रुतगुरुर्यस्य सकलेन्दुमहाव्रतेः । तस्य विद्यामहाप्रौढिर्मा-
१३ दृशैर्वर्ण्यते कथं ॥ (८) इत्थंभूतो यमीशो वरजिनमुनिसद्वृन्दमध्ये विराजत् षड्विंशत्यधि-

१४ वोर्ज्जितचरितपरः सप्ततत्त्वप्रवेदी । प्रायश्चित्तादिपट्कद्विगुणित-सुतपाश्चर्य-

१५ वर्यप्रसिद्धो द्वात्रिंशदागमसद्भावनयुतसकलेन्दुव्रतीन्द्रो विभाति ॥ (९) एवं कतिपय-

१६ काले प्रवर्त्तिते ग्रामनगरखेडेषु तत्र्याभव्योत्पलविकाशयन् सकलचन्द्रमु-

१७ निरायाति (॥ १०) सत्पाण्ड्यदेशमध्यस्थितविळिचाग्रामचैत्य-गृहमासाद्य ज्ञात्वा स्वान्त्यं

१८ त्रिदिनादनशनविधिना त्रिविष्टपं संप्राप्तः ॥ (११) सप्ताप्रवाणे-न्दुशशिप्रमाब्दशकाख्यके म-

१९ न्मथवत्सरे च सत्फाल्गुने शुद्धतृतीयकेन्दुवारेगमत् श्रीसकलेन्दु-देवः ॥ (१२) अर्हं नमः

२० श्रीमद्वीरणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल सधर्मरप्प वाहुवलिसिद्धान्ति-देवरं दीक्षा-

२१ गुरुगल् श्रीमदर्हणन्दित्रैविद्यदेवर् श्रुतगुरुगलुमप्प श्रीस-

२२ कलचन्द्रभट्टारकदेवर्गे श्रीमद्राजधानि दोरसमुद्रद समस्तभव्य-

२३ नगरंगल् परोक्षविनयार्थवागि माडिसिद मंगलमहाश्रीश्री

[यह निसिदिलेख राजधानी दोरसमुद्रके नागरिकोंने सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिमरणकी स्मृतिमें स्थापित किया था । वीरनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीके गुरुबन्धु वाहुबलि सिद्धान्तीसे दीक्षा लेकर अर्हणन्दि मुनीन्द्रके पास सकलचन्द्रने शास्त्राध्ययन किया था । उनकी मृत्यु पाण्ड्य देशके विलिचा ग्राममें फाल्गुन शु० ३, सोमवार शक ११५७ मन्मथ संवत्सरके दिन हुई थी । वे मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयदेशीयगणके आचार्य थे ।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७४]

३२८

हूविनसिगलि (धारवाड, मैसूर)

शक ११ (६) ७ = सन् १२४५, कन्नड

[यह लेख यादव राजा सिंघणदेवके समय चैत्र शु० ५ रविवार, विरोधकृत् संवत्सर, शक ११(६)७ के दिन लिखा गया है। इसमें एक श्राविका-द्वारा सिगलि ग्राममें चैत्यालय बनवानेका उल्लेख है। इस बसदिके शान्तिनाथदेवके लिए महाप्रधान सर्वाधिकारि प्रभाकरदेवने तथा पुलिगेरेके मन्नेय एवं आठ हिट्टुओंने कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २९६]

३२९

कलकेरि (विजापुर, मैसूर)

शक ११६७ = सन् १२४५, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा सिंघणदेवके समय भाद्रपद शु० ४ रविवार शक ११६७ क्रोधि संवत्सरके दिन महाप्रधान मल्ल, बाच तथा पायिसेट्टि-द्वारा निर्मित अनन्ततीर्थकरमन्दिरके लिए कलुकेरेके महाजनों-द्वारा भूमि आदि दान देनेका उल्लेख है। यह मन्दिर कमलसेन मुनिके उपदेशसे बनवाया गया था।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई ५३ पृ० १८६]

३३०

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक ११६९ = सन् १२४७, कन्नड

[यह लेख यादव राजा सिंहणके समय ज्येष्ठ अमावास्या, शक ११६९, प्लवंग संवत्सरके दिन लिखा गया है। इसमें महाप्रधान बीचिराजकी कन्या राजलदेवी-द्वारा पुरिकरनगरके श्रीविजयजिनालयके लिए कुछ भूमि तथा द्रव्य दान दिये जानेका उल्लेख है। इनके गुरु पद्मसेन मुनि थे।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ९ पृ० १६१]

३३१-३३२

शिगिकुलम् (तिन्नेवेली मद्रास)

सन् १२५३, तमिल

[ये दो लेख भगवती मन्दिरके दीवारोंपर खुदे हैं। पहलेकी तिथि मारवर्मन् सुन्दर पाण्ड्यदेव (द्वितीय) के राज्यवर्ष १५ का ३६०वां दिन यह दी है तथा दूसरेकी तिथि कोणेरिण्मैकोण्डान्के राज्यवर्ष १५ का ३८८वाँ दिन यह दी है। पहलेमें जो राजाज्ञा है उसीका पालन होनेका वर्णन दूसरे लेखमें है। इस आज्ञाके अनुसार राजमन्त्री अण्णन् तमिलप्पलवरैयन्की प्रार्थनापर राजा-द्वारा स्थानीय जिनमन्दिरको भूमिको करमुक्त किया गया था। यह भूमि पुगलोकरुनायनल्लूरनिवासी मदि-सागरन् आदिभट्टारकन्-द्वारा मन्दिरको अर्पित की गयी थी। मन्दिरका नाम न्यायपरिपालपेरुम्वल्लि तथा उसमें स्थित जिनमूर्तिका नाम एणक्कु-नल्लनायकर् था। मन्दिर जिस पहाडीपर था उसको जिनगिरिमलै यह नाम दिया गया था। वर्तमान समयमें इस मन्दिरकी जिनमूर्ति गौतम ऋषिके नामसे पूजी जाती है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० २६९-७० पृ० १०५]

३३३

सहेट महेट (उत्तरप्रदेश)

३३४
विजापूर (मैसूर)
शक ११७९ = सन् १२५७, कन्नड

[यह लेख करीमुद्दीनकी मसजिदमें पाया गया। यह मसजिद एक जैन मन्दिरके स्थानपर बनवायी गयी थी। इस मन्दिरके आचार्य करसिदेवके लिए यादव राजा कन्हरदेवके समय शक ११७९ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२४]

३३५
बस्तिहल्लि (मैसूर)
सन् १२५७, कन्नड

[यह मूर्तिलेख होयसल राजा नरसिंहके समय सन् १२५७ का है। इस समय श्रीकरणद मधुकण्णके पुत्र विजयण्ण तथा दोरसमुद्रके अन्य जैनोंने मूलसंघ-देसिगण हनसोगे शाखाके शान्तिनाथ मन्दिरका निर्माण किया था। इस मन्दिरके लिए हीरगुप्पे नामक ग्राम नयकीर्ति सिद्धान्तचक्रवर्तिको अर्पित किया गया था।]

[ए० रि० मैं० १९११ पृ० ४९]

३३६
कलकेरि (विजापूर, मैसूर)
राज्यवर्ष ४ = सन् १२६०, कन्नड

[यह लेख यादव राजा कन्नरदेवके राज्यवर्ष ४ साधारण संवत्सरमें लिखा गया था। इसमें अनन्ततीर्थकरमन्दिरके लिए रंगरस-द्वारा-पुत्र प्राप्तिके उपलक्ष्यमें कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। करसंग्राहक सर्वदेव नायक-द्वारा भी इस समय कुछ दान दिया गया था।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ५४ पृ० १८६]

३३७

नेगलूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष (६) = सन् १२६२, कन्नड

[यह लेख यादव राजा कन्धरदेवके राज्यवर्ष (६) विरोधी संवत्सरमें भाद्रपद शु० १४, गुरुवारको लिखा गया था। इसमें कुलचन्द्रभट्टारकके शिष्य सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२–३३ क्र० ई० १६२ पृ० १०७]

३३८

बालूर (धारवाड, मैसूर)

शक ११८४ = सन् १२६२, कन्नड

[इस निसिधि लेखमें कहा गया है कि सेंवूरके कावय्यकी माता चेकवाने यह निसिधि स्थापित की। लेखकी तिथि पौष शु० ११, सोमवार, शक ११८४, दुर्मति संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९४५–४६ क्र० २१८]

३३९

बालूर (धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा कन्धरदेवके राज्यकालमें नल संवत्सरके पौष मासमें गुरुवारके दिन इस निसिधिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। लेख बहुत घिस गया है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१७]

३४०-३४१

हत्तिमत्तूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ५ तथा ९=सन् १२६५ तथा १२६९, कन्नड

[ये दो लेख हैं। पहला लेख यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ५ में कार्तिक व० १३, बुधवार, क्रोधन संवत्सरके दिन सेवयर जक्कयकी पत्नी मादवेके समाधिमरणका स्मारक है। दूसरेमें महादेवके राज्यवर्ष ९ में हत्तियमत्तूरकी वसदिके आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है। (न) न्दिभट्टारकदेवका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ६८-६९ पृ० ९८]

३४२

हलेबीड (मैसूर)

सन् १२६५, कन्नड

[यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय सन् १२६५ का है। इस वर्षमे राजा-द्वारा त्रिकूट रत्नत्रय शान्तिनाथ जिनालयके लिए माघनन्दि सैद्धान्तिको कल्लनगेरे ग्राम दान दिया गया था। माघनन्दिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार है – मूलसंघ – नन्दिसंघ-बलात्कारगणके वर्धमानमुनि-जो होयसल राजाओंके गुरु थे, श्रीधर त्रैविद्य-पद्मनन्दि त्रैविद्य-वासुपूज्य सैद्धान्ति-शुभचन्द्र-भट्टारक-अभयनन्दिभट्टारक – अरुहणंदि सिद्धान्ति, देवचन्द्र, अष्टोपवासि कनकचन्द्र, नयकीर्ति, मासोपवासि रविचन्द्र, हरियनन्दि, श्रुतकीर्ति त्रैविद्य, वीरनन्दिसिद्धान्ति, गण्डविमुक्त, नेमिचन्द्रभट्टारक, गुणचन्द्र, जिनचन्द्र, वर्धमान, श्रीधर, वासुपूज्य, विद्यानन्द स्वामि, कटकोपाध्याय श्रुतकीर्ति, वादिविश्वासघातक मलेयालपाण्ड्यदेव, नेमिचन्द्र, मध्याह्नकल्पवृक्ष वासुपूज्य। श्रीधरदेव-वासुपूज्य – उदयेन्दु – कुमुदेन्दु – माघनन्दि। माघनन्दिके चार

ग्रन्थोंका उल्लेख किया है – सिद्धान्तसार, श्रावकाचारसार, पदार्थसार तथा शास्त्रसार समुच्चय। इनके शिष्य कुमुदचन्द्र पण्डित थे। अन्तमें इस दानके सहायकके रूपमें महाप्रधान सोमेय दण्डनायकका उल्लेख किया है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४८]

३४३

अण्णिगेरि (धारवाड, मैसूर)

शक ११८९ = सन् १२६७, कन्नड

[इस लेखमें चैत्र व० ४, मंगलवार, शक ११८९, प्रभव संवत्सरके दिन मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयके सोमदेवाचार्यकी शिष्या आकलपे अव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २०४ पृ० ५३]

३४४

संगूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ९ = सन् १२६९, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ९, विभव संवत्सरमें नन्दिभट्टारकके शिष्य नयकीर्ति भट्टारकके शिष्य नाल्प्रभु गंगर सावन्त सोवके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२–३३ क्र० ई १६८ पृ० १०७]

३४५

हुलिकेरे (मैसूर)

सन् १२७१, कन्नड

१ स्वस्ति प्रजोत्पत्तिसंवत्सरद चैत्र सु १ ब्रि दंदु श्रीमत् प्रतापवीर होय्सल श्रीवीरनारसिं·······

२ वादुनं सोमेयदण्णायकरु मेयूदुन बाचेयदण्णायकरु होंकुंदद बसदि जीर्णवा.......

३ दण्णायकरुं जीर्णोद्धारवं माडिसिके – य निडिसिदरु

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके शासनकालमें चैत्र शु. १, गुरुवार, प्रजोत्पत्ति संवत्सर, के दिन होंकुंदकी बसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। यह कार्य सोमेय दण्डनायकके बहनोई बाचेय दण्डनायक-द्वारा किया गया था। लिपि १३वीं सदीकी है। संवत्सर नामानुसार यह वर्ष सन् १२७१ होगा जब नरसिंह तृतीयका राज्य चल रहा था।)

[ए० रि० मै १९३७. पृ० १८७]

३४६

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक ११९७=सन् ११७५, कन्नड

[यह लेख वैशाख व. १ (३), गुरुवार, शक ११९७ युव संवत्सरका है तथा पार्श्वनाथबसदिके भीतरी दीवालमें लगा है। इसमें सरटूरुके तिलकरसके मन्त्री देवण्णके पुत्र अमृतैयके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६–२७ क्र० ई ९१ पृ० ८]

३४७

अमरापुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

शक १२०० = सन् १२७८, कन्नड

[यह लेख निडुगल्लुके महामण्डलेश्वर इरुगोण चोल महाराजके समय आषाढ शु० ५ सोमवार शक १२००, ईश्वर संवत्सरका है। इसमें मूलसंघ-देशियगणके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य बालेन्दु मलधारिदेवके उपदेशसे संगयन बोम्मिसेट्टि तथा मेलव्वेके पुत्र मल्लिसेट्टि-द्वारा

तेलंगेरेके प्रसन्नपार्श्वदेवके लिए २००० वृक्षोंके उद्यानके दानका वर्णन है। इस मन्दिरका उपाध्याय जैन ब्राह्मण चल्लपिल्ले था जो पाण्डयप्रदेशके भुवलोकनाथनल्लूरका निवासी था।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४० पृ० ७४]

३४८

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

संस्कृत-नागरी, सं० १३३४ = सन् १२७८

[इस लेखमें पण्डिताचार्य रत्नकीर्ति-द्वारा एक मूर्ति सं० १३३४ में स्थापित किये जानेका उल्लेख है।

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १२३]

३४९

एटा (उत्तरप्रदेश)

संवत् १३३५ = सन् १२७८, संस्कृत-नागरी

[मूलसंघके गोललतक कुलके कुछ साधुओं-द्वारा संवत् १३३५ में तीन मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं ऐसा इस लेखमें वर्णन है।]

[रि० आ० स० १९२३-२४ पृ० ९२]

३५०

कडकोल (धारवाड, मैसूर)

शक १२०१ = सन् १२८०, कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघके पद्मसेन भट्टारकके शिष्य सावन्त सिरियम गौडकी पत्नी चण्डिगौडिके समाधिमरणका तथा कई गौडों-द्वारा एक वसदिको दान दिये जानेका उल्लेख है। तिथि भाद्रपद शु० ६, सोमवार, शक १२०१, प्रमाथि संवत्सर ऐसी है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई ५१ पृ० १२३]

२५१

सणमल्लीपुर (मैसूर)

शक १२०७ = सन् १२८५, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीप्रतापचक्रवर्ति
२ होय्सल वीर नरसिं-
३ हदेवरसरु पृथिवि-
४ राज्यं गेयुत्तिरलु
५ शक वर्षिघ १२०७ नेय
६ सुभक्रितुसंवत्सरद फाल्गु-
७ ण....हे-
८ ग्गडे....
९ ...गरवेद्दलु
१० ....लवुं
११ ...मवरु....
१२ ....हि आतन तम्म....आल-
१३ ....कोडगे....आळ
१४ ....ल्दु होलवेरडु अन्तु
१५ ....तिद्दने....सा-
१६ थिर मत्तरु....विट्ट
१७ ....सिद सासन ॥
१८ ....दक्षिण तगडूरलि
१९ ....
२० (ता) यूर गुलियपुर
२१ ...थपग सल
२२ ....नागगावुड ॥ वीतराग

[यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय शक १२०७ के फाल्गुनमें लिखा गया था। किसी हेग्गडे-द्वारा नागगावुडको तगडूर, तायूर तथा गुलियपुर ग्रामकी कुछ भूमि करमुक्त दी जानेका इसमें वर्णन है। अन्तमें वीतराग यह मुद्रा है इससे दानदाता जैन प्रतीत होते हैं।]

[ए० रि० मै० १९३० पृ० १८४]

३५२-३५३

ताडकोड (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १४ = सन् १२८५, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामचन्द्रके राज्यवर्ष १४, चित्रभानु संवत्सरका है। इस समय कन्नरदेवकी रानीकी आज्ञासे सर्वाधिकारी मायदेवने एक जिनमन्दिर बनवाया था। यहींके अन्य लेखमें चन्द्रनाथको नमस्कार कर बालचन्द्रके शिष्य श्रीवासुपूज्यका उल्लेख किया है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४४-४४५ पृ० ७६]

३५४

कलकेरी (मैसूर)

राज्यवर्ष १८ = सन् १२८३, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामदेवके राज्यवर्ष १८ में पौष शु० ८, बड्डवार, (सर्व)धारि संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें नागेयिसेट्टि और मादव्वेके पुत्र मादैय्यके समाधिमरणका उल्लेख है। इनके गुरु समन्तभद्रदेव थे।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ७२ पृ० १६७]

३५५

डम्बल (जि० धारवाड, मैसूर)

शक १२११ = सन् १२९०, कन्नड

[यह लेख रामदेव (यादव) के समयका है। धर्मवोललके महानाडुके १६ प्रतिनिधि तथा नाडुके ८ प्रतिनिधि एवं साल्नवीर चवुण्डके छोटे बन्धु सप्तरस-द्वारा नगर जिनालयके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान देनेका इसमें उल्लेख है। इसी मन्दिरको अय्वत्तोक्कलु तथा उगुर ३००-द्वारा कुछ तेल वगैरहका दान भी दिया गया था। तिथि पौष शु० २, रविवार, शक १२११, सर्वधारी संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ क्र० एफ् ६३]

३५६
पोन्नूर (उ० अर्काट, मद्रास)
राज्यवर्ष ७ = सन् १२९०, तमिल

[यह लेख स्थानीय जैन मन्दिरमें है। मारवर्मन् विक्रमपाण्डयके राज्यवर्ष ७ में विडालपल्लके नाट्टवर् (ग्रामप्रमुखों)-द्वारा आदिनाथके पल्लिविलागम्में रहनेवाले लोगोंसे प्राप्त करोंका उत्पन्न इस जिनमन्दिरमें पूजा आदिके लिए अर्पण किए जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१५ पृ० ४०]

३५७
हुमच (मैसूर)
शक १२१७ = सन् १२९५, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछ-
२ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशास-
३ नं स्वस्ति श्रीमतु सकवर्ष १२१७ नेय मनु-
४ मथसंवत्सरद चैत्र सु पाडिव बृहस्प-
५ तिवारदंदु श्रीमत्सिद्धान्तयोगीं-
६ द्रपादपंकजभ्रमर बम्मगवुड म-
७ हापुरुषो...गतो सिद्धिं समाधिना।
८ नमनाण्णं...गुणसेनमुनिश्वरं
९ ...द्राविडान्वय
१० मौलिना

[इस निसिधिलेखमें श्रीमत् सिद्धान्त योगीन्द्रके शिष्य बम्मगवुडके समाधिमरणका उल्लेख है जो चैत्र शु० १, बृहस्पतिवार, शक १२१७ मन्मथसंवत्सरके दिन हुआ था। लेखके अन्तमें द्राविड अन्वयके गुणसेन मुनीश्वरका नाम भी आता है।]

[ए० रि० मैं० १९३४ पृ० १७७]

३५८

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक १२१७ = सन् १२९५, संस्कृत-कन्नड

[इस लेखमें पुरिकरके शान्तिनाथ मन्दिरके लिए सोमय-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। तिथि भाद्रपद शु० ५, सोमवार, शक १२१७ ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई २८ पृ० १६३]

३५९

मन्नेर मसलवाड (बेल्लारी, मैसूर)

शक १२१९ = सन् १२९१, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामचन्द्रदेवके समय मार्गशिर शु० ५ गुरुवार शक १२१९ हेमलम्बि संवत्सरका है। इसमें महामण्डलेश्वर भैरवदेवरस-द्वारा मूलसंघ-देसिगणके नेमिचन्द्रराउलके शिष्य विनयचन्द्रदेवको भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मोसलेवाडके जिनमन्दिरके लिए था जिसका जीर्णोद्धार महामण्डलेश्वर सालेवेय विकमदेव राणेयके मन्त्री सावन्त पण्डितके पुत्र केशव पण्डित-द्वारा किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २५६ पृ० २२]

३६०

कोगलि (बेल्लारी, मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा प्रतापचक्रवर्ति रामनाथदेव-द्वारा युव संवत्सरमें कोगलिके चेन्नपार्श्वजिनमन्दिरके लिए सुवर्णदान देनेका उल्लेख है।]

[इ० म० बेल्लारी १९२]

३६१-३६७

चिप्पगिरि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[ये छह लेख हैं। मूलसंघ-देशीयगण-कोण्डकुन्दान्वय-पोस्तकगच्छके केशणंदि भटारके शिष्योंके समाधिमरणका इनमें उल्लेख है। इन शिष्योंके नाम हैं—गोपरस, तथा उसकी पत्नी हालीवे, मादलदेवी, तिप्पयकी पत्नी जाकवे, नागलदेवी, मूलिग तिप्पय, बैंतलेय बोम्मिसेट्टि तथा उसकी पत्नी बीमवे। लिपिके अनुसार ये लेख १३वीं सदीके प्रतीत होते हैं। इसी समयके एक और लेखमें माधवचंद्र भट्टारकदेवके शिष्य परिसयके समाधिमरणका उल्लेख है।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ६३-७२)

३६८

अदरगुंचि (जि० धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख लिपिपर-से १३वीं सदीका प्रतीत होता है। यापनीय संघ-काडूरगणकी एक बसदिके लिए दी हुई जमीनकी सीमा बतलानेवाला यह पत्थर है। यह बसदि उच्छंगि नगरमें थी। यह दान अदिर्गुण्टेके गौण्ड और स्थानिकों-द्वारा दिया गया था।]

(रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० ३ पृ० २५५)

३६९

बसवपट्टण (हासन, मैसूर)

१३वीं सदी कन्नड

१ श्रीमूलसंघ देसियगण पोस्तकगच्छ

२ कोंडकुंदान्वयद इंगलेश्वरद ब-

३ लिय श्रीश्रुतकीर्तिदेवर गुड्डुगलु
४ कोंग नाड श्रीकरणद कावण्णगल मक्क-
५ लु नाकण्ण होनण्णंगलु माडिसिद श्री-
६ नेमिनाथस्वामिगल प्रतिमे मंग-
७ ल महा श्री श्री श्री

[इस लेखमें श्रीकरणद कावणके पुत्र नाकण्ण तथा होनण्ण-द्वारा, जो कोंगु प्रदेशके निवासी थे, नेमिनाथकी इस मूर्तिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। ये दोनों मूलसंघ-देसियगण-पुस्तकगच्छकी इंगलेश्वरबलिके आचार्य श्रुतकीर्तिके शिष्य थे। लेखकी लिपि १२वीं या १३वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

(ए० रि० मै० १९४४ पृ० ४२)

३७०

रत्नापुरि (मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यह दो पंक्तियोंका लेख एक मूर्तिके पाद-पीठपर है जिसमें किसी-भट्टारकदेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वीं या १३-वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित]　　[ए० रि० मै० १९४४ पृ० ७०]

३७१

बेलगोल (मांड्या, मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[इस छोटे-से मूर्ति-लेखमें द्रविल संघ-नन्दिसंघ-अरुंगल अन्वयके कुछ व्यक्तियों-द्वारा इस पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वीं या १३वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित]　　[ए० रि० मै० १९४४ पृ० ५७]

३७४
तवनन्दी (मैसूर)
१३वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ सूर-　　२ स्तगण चित्रकूटान्वयद
३ प्रतिबद्ध

[यह छोटा-सा लेख एक खण्डित जिनमूर्तिके पादपीठपर है। मूलसंघ-सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके किसी व्यक्ति-द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी। लिपि १३वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९४२ पृ० १८५]

३७५
वरुण (मैसूर)
१३वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमद् द्रविल-　　२ संगस्य नन्दिसं
३ घे ह्यरुंगले अ-　　४ न्वयेऽशेषशास्त्र-
५ ज्ञ श्रीपाल　　६ मुनिराश्रियः
७ तच्छिष्यो विदुषां　　८ श्रेष्ठः पद्मप्रभ-
९ मुनीश्वरः तस्य　　१० पुत्रः तपोत्ती-
११ धर्मसेनमहा　　१२ मुनिः ॥ सायं
१३ शुद्ध( ) स्वभावस्तो-　　१४ बाह्यां (न)रपरिग्रहा-
१५ त्यक्तो जिनपदाग्रे　　१६ त्रिदिवं गतवान् बुध-
१७ :

[इस लेखमें द्रविलसंघ-नन्दिसंघ-अरुंगल अन्वयके आचार्य श्रीपालके प्रशिष्य तथा पद्मप्रभके शिष्य धर्मसेनके समाधिमरणका उल्लेख है। लेखकी लिपि १३वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मैं० १९४० पृ० १७२]

३७२
विदिरूर (शिमोगा, मैसूर)
१३वीं सदी, कन्नड

१ श्री मैणद्रान्वयद देसियगणद नागर एक्कगृडिय सु-
२ भचंद्र देवरु माडिसिद बसदिगे ॥ श्रीजिनपद-
३ पंकजविराजितमधुकरन् एनिप्प मल्लि कोट्ट
४ पूजितवेने तीर्थंकरव्राजित प्रतिकृतिय-
५ नुचित कडितले गोत्रं ॥

[इस लेखमें विदिरूर ग्रामके बसदिमे मल्लि नामक व्यक्ति-द्वारा इस चौवीसी मूर्तिके अर्पण किये जानेका वर्णन है। यह बसदि देसियगण-मैण-दान्वय-कडितले गोत्रके सुभचन्द्रदेव-द्वारा बनवायी गयी थी। लेखकी लिपि १३वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११४]

३७३
होंगनूर (मैसूर)
१३वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ श्रीक्राण्वद श्रीसकलचंद्रभट्टा-
२ रकदेव सिष्यरु माधवचंद्रदेवर गुड्डुगलु
३ उभयनानादेसिगलु माडिसिद होंगनूर शा-
४ न्तिनाथदेवर जोगवट्टिगेय बसदि मंगल महा

[यह लेख एक शान्तिनाथ मूर्तिके पादपीठपर है जो वर्तमानमें लक्ष्मी-देवी मन्दिरके एक चबूतरेमें लगी है। इसमें होंगनूरकी बसदिका निर्माण सकलचन्द्रके शिष्य माधवचन्द्रके शिष्यों-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। ये मूलसंघ-क्राण्व (क्राणूर गण) के अन्तर्गत थे। लिपि १३वीं सदी-की है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १२६]

३७४
तवनन्दी (मैसूर)
१३वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ सुर- २ स्तगण चित्रकूटान्वयद
३ प्रतिबद्ध

[यह छोटा-सा लेख एक खण्डित जिनमूर्तिके पादपीठपर है। मूल-संघ-सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके किसी व्यक्ति-द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी। लिपि १३वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५]

३७५
वरुण (मैसूर)
१३वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमद् द्रविल- २ संगस्य नन्दिसं
३ घे ह्यरुंगले अ- ४ न्वयेऽशेषशास्त्र-
५ ज्ञ श्रीपाल ६ मुनिराश्रियः
७ तच्छिष्यो विदुषां ८ श्रेष्ठः पद्मप्रभ-
९ मुनीश्वरः तस्य १० पुत्रः तपोत्ती-
११ धर्मसेनमहा १२ मुनिः ॥ सांयं
१३ शुद्द( ) स्वभावस्तो- १४ बाह्यां (त)रपरिग्रहा-
१५ त्त्यक्तो जिनपदाग्रे १६ त्रिदिवं गतवान् बुध-
१७ :

[इस लेखमें द्रविलसंघ-नन्दिसंघ-अरुंगल अन्वयके आचार्य श्रीपालके प्रशिष्य तथा पद्मप्रभके शिष्य धर्मसेनके समाधिमरणका उल्लेख है। लेखकी लिपि १३वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १७२]

३७६

केलगेरे (मांड्या, मैसूर)

१३वीं सदी-उत्तरार्ध, कन्नड

पश्चिमकी ओर

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-
२ मोघलांछनं (।) जीयात् त्रैलोक्य-
३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ।
४ भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां
५ शासनायाघनाशिने । कुतीर्थ-
६ ध्वान्तसंघातप्रभिन्नघनभान-
७ वे । स्वस्ति समधिगतपंचमहाश-
८ ब्द महामंडलेश्वरं द्वारावतीपु-
९ रवराधीश्वरं यादवकुलांबर-
१० द्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलपरो-
११ लुगण्ड नामादिसमालंकृतरप्प
१२ श्रीविनयादित्यपोय्सलन् एरेयं-
१३ ग विट्टिदेव नारसिंह वल्लाळ नारसिं-

दक्षिणकी ओर

१४ घदेव तस्य पुत्रं नारसिं-
१५ हरसरु दोरसमुद्रदोलु पृथ्वीराज्यं गेयु-
१६ त्तमिरलु स्वस्ति श्रीमूलसंघ बलात्कारं
१७ ···यदोल् अनेकाचार्यरु न-
१८ ····प्रवर्तिसल् अवरोलु वर्धमानभटा-
१९ रकरु श्रीधराचार्यरु देवनन्दित्रैवि-

२० यरु वासुपूज्यसिद्धान्तदेवरु गु ग्चन्द्र-
२१ भट्टारकरु अभयनन्दिभट्टारकरु अर्हनं-
२२ दिसिद्धांतिगलु देवचं(द्र) सिद्धांतिगलु अष्टोप-
२३ वासि कनकचन्द्रदेवरु नयकीर्ति चान्द्रा-
२४ यणदेवरु मासोपवास रविचन्द्रसिद्धा-
२५ न्तिगलु हरियनन्दिसिद्धान्तिगलु श्रुत-
२६ कीर्तित्रैविद्यदेवरु वीरणंदिसिद्धान्तदे-
२७ वरु गण्डविमुक्त नेमिचन्द्रभट्टारकदेव

पूर्वकी ओर

२८ (वर्ध)मानमुनीन्द्ररु श्रीधराचार्यरु वा-
२९ सुपूज्यत्रैविद्यदेवरु उदयचंद्रसिद्धां-
३० तदेवरु कुमुदचन्द्रभट्टारकदेवर मा···
३१ माघनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल श्रीपादप-
३२ द्मंगलगे होय्सलभुजबल श्रीवीरनारसिंहदेवरस-
३३ रु दोरसमुद्रद त्रिकूटरत्नत्रयद श्रीशान्तिनाथ
३४ देवर अं(ग)भोग रंगभोग आहारदान मुन्ताद
३५ समस्तधर्मकार्यक्का····
३६ चिकक्कनेयनहलि
३७ ····व येनुल्लंथा अष्टमो-
३८ ग तेजस्वाम्यसहितवागि माघनं-
३९ दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल श्रीपाद-
४० पद्मंगलिगे धारापूर्वकं माडि
४१ कोट्टरु स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत
४२ वसुंधरा····

[इस लेखके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओंकी परम्परा नरसिंह (तृतीय) तक दी है। नरसिंहने राजधानी स्थित शान्तिनाथ जिनालयके लिए चिककन्नेयनहल्लि ग्राम दान दिया। यह दान मूलसंघ-बलात्कारगणके कुमुदचन्द्र भट्टारकके शिष्य माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीको दिया गया था। लेखमें कुमुदचन्द्रके पूर्ववर्ती १९ आचार्योंके नाम भी उल्लिखित हैं।]

[ए० रि० मैं० १९४० पृ० १६४]

३७७-३७८

मूगूर (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

(अ) १ श्री मूलसंघ देसियगण पुस्त २ कगच्छ कोंडकुंदान्वयक

····हुगेरे-

३ यतीर्थद प्रतिबद्धद भरतपण्डितरिगे ४ जक्किकयब्बेय मगलु····

(ब) १ मूलसंव देगसिण पुस्तकगच्छ कोंडकुंदान्वय इंगणेश्वर सं(घ)द श्रीभानुकीर्तिपं-

२ डितदेवर शिष्यरप्प कान····नंदिदेवर गुड्डुगलप्प मूगूर समस्त

३ गावुण्डुगलु····कोडेयर बसदिय जीर्णोद्धारणवमा

४ डि····सिदरु मंगलमहाश्री

[ये दो लेख मूगूरकी आदिनाथबसदि तथा पार्श्वनाथबसदिके मूर्तियोंके पादपीठोंपर है। पहलेमे मूलसंघ-देसियगणके क-हुगेरे तीर्थसे सम्बद्ध भरत पण्डितके लिए जक्किकयब्बेकी कन्या (नाम लुप्त)-द्वारा कुछ दान दिए जानेका उल्लेख है। लेख अधूरा होनेसे विवरण स्पष्ट नहीं हो सकता। दूसरेमे मूल संघ-देसिगण-इंगणेश्वर संघके भानुकीर्ति पण्डितके शिष्य —नन्दिके शिष्य गावुण्डों द्वारा मूगूरको कोडेयरवसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। लेखोंकी लिपि १३वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९३८ पृ० १८२-८३]

३७९

हलेबीड (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

१ जिननात्मीयेष्टदव्यं निजगुरु नयकीर्तिव्रतीशं लसद्भूवि-
२ नुतं तानुक्किसेट्टिप्रभु पितृ तनगेकव्वे तायेन्दोडिन्तीवन-
३ धिव्यावृतधात्रीतलदोल् अदें पुण्योद्मंवव्रातदोल् कूडि नितान्-
४ तं नामिसेट्टि स्फुटविशदयशोलक्ष्मियं ताने पेत्तं ॥
५ अन्तातं व्यवहारदि····मत्र विक्रमाक्रान्त····
६ लदेव···मान्धातं दो····
७ कोण्डु····स्त्रान्तं विश्रुत ना-
८ मिसेट्टि दिवदोल् कैवल्यमं ताल्दिदं

[इस लेखमें उक्किसेट्टि और एकव्वेके पुत्र नामिसेट्टिके समाधिमरण-का उल्लेख है। नामिसेट्टिके गुरु नयकीर्ति व्रतीश थे। लेखकी लिपि १३वीं सदीकी प्रतीत होती है। पंक्ति ५ के अस्पष्ट भागमें सम्भवत: वीरबल्लाल (द्वितीय) के राज्यका और तिथिका उल्लेख था।]

[ए० रि० मैं० १९२९ पृ० ७८]

३८०

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कहा गया है कि कुलोत्तुंग चोल राजा-द्वारा कनकच्चि-न्नगिरि अप्पर् देवको अर्पित नल्लूर यह एक धार्मिक स्थान है। यह लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके वराण्डेमें लगा है तथा १३वीं सदीकी लिपिमें है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० २९९ पृ० ६५]

३८१

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[यह लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर खुदा है। इस मूर्तिकी–जिसे कच्चिनायक्कर कहा है – स्थापना आलम्पिरन्दान् मोगन् कच्चियरायर-द्वारा की गयी ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १३वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१९ पृ० ६७]

३८२

कोट्टगेरे (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें देसियगण-इंगलेश्वर बलिके हेरगु निवासी आचार्य हरिचन्द्रके शिष्य माघनन्दि-द्वारा एक शान्तिनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लिपि १३वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१९ पृ० ३३]

३८३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[यह लेख यहांकी पहाड़ीपर चढ़नेके लिए बनी सीढ़ियोंके पास है। इन सीढ़ियोंका निर्माण गुणवीरदेवन् पण्डितदेवन्ने किया ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १३वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१६ पृ० ६७]

३८४

हुकेरी (जि० बेलगाँव, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख टूटा है। यापनीय संघके किसी गणके त्रैकीर्ति आचार्यका इसमें उल्लेख है। लिपि १३वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४२-४३ ई ६ पृ० २६१]

३८५-३८६

हले हुब्बलि (जि० धारवाड, मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यहाँके अनन्तनाथ बसदिमें दो लेख हैं। एक ब्रह्मदेवकी मूर्तिपर है। इसकी लिपि १२वीं सदीकी है। सेटि महादेवी-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना-का इसमें निर्देश है। दूसरा एक जिनमूर्तिपर है। इसकी लिपि १३वीं सदीकी है। इसमें यापनीय संघके (क)डूर गणका उल्लेख है।

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३३-३४]

३८७

मोटे बेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १३वीं सदीकी लिपिमें है। तिथि चैत्र शु० १०, गुरुवार, सौम्य संवत्सर ऐसी दी है। इसमें जिनचन्द्रदेवके शिष्य बोम्मिसेट्टिके पुत्र बाचिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १०८ पृ० १२९]

३८८-३८९

वनवासि (उत्तर कनडा, मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यहाँ दो मूर्तिलेख हैं जो १२वीं-१३वीं सदीकी लिपिमें हैं किन्तु अस्पष्ट हैं। एकमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४३-४४ पृ० २८]

३९०

विजापूर (मैसूर)

शक १२३२ = सन् १३१०, कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें मूलसंघ-निगमान्वयके कृष्णदेव-द्वारा शक १२३२, साधारण संवत्सरमें इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० १६४ पृ० १३४]

३९१

बेल्गामे (मैसूर)

सन् १३१९, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमतु यादवचक्रवर्ति भुजबलवी····बल्लाल····

२ पंद ९ नेय सिद्धार्थिसंवत्सरद आषाढ़ शु····

३ वार व्यतीपात संक्रान्ति शुभदिनद····

४ (श्री)मद् राजधानिपट्टणं बल्लिग्रामेय हिरियब-

५ सदिय मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवर अष्ट-

६ विधार्च(न)गे श्रीमनु महाप्रधानं सेनाधिपति मल्लि-

७ यणदण्डनायकरु नागरखण्ड जिड्डुलिगेयन्तेर-

८ डेप्पत्तुमं दुष्टनिग्र(ह) शिष्टप्रतिपालनं माडुत्तं

९ सु(खसं)कथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे पट्टणद अधि-

१० कारि हेग्गडे सिरियण्णं तन्नंतरालिकेय मूलेवर्तमु-

११ ख्यवागि हेजुंकडधिकारि चावुण्डरायनुं सोमय्य-

१२ नुं मन्नेयदे कोप(?)विसदधिकारि मालवेग्गडे इन्तिनि-

१३ वरुं तंतम्म सुंकमं येत्तिप्पत्तक्कं सर्वबाधा-

१४ परिहारवागि सिरियण्ण...आचार्य

१५ पद्मनन्दिदेवर कालं कर्चि धारापूर्वकं माडि कोट्टरु ई धर्म-

१६ मं प्रतिपालिसिदंगे वारणासिकुरुक्षेत्रदल्लि साविर

१७ कविलेयं वेदपालरप्प ब्राह्मणगें कोट्ट फल-

१८ मक्कु

[यह लेख होयसल राजा वीरबल्लालके राज्यवर्ष ९ सिद्धार्थिसंवत्सर-में आषाढ शुक्लपक्षमें संक्रान्तिके दिन लिखा गया था। राजधानि बल्लि-ग्रामेके मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवकी पूजाके लिए पद्मनन्दि आचार्यको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। यह दान हेग्गडे सिरियण्ण, चावुण्डराय, सोमय्य और मालवेग्गडे इन चार अधिकारियोंने दिया था। इस समय नागरखण्ड और जिड्डुलिगे प्रदेशपर महाप्रधान सेनापति मल्लियणका शासन चल रहा था। बल्लाल द्वितीय अथवा बल्लाल तृतीय इन दोनोंके ९वें वर्षमें सिद्धार्थि संवत्सर नहीं था। अतः अनुमान किया गया है कि यह बल्लाल (तृतीय) के २९वें वर्षके सिद्धार्थि संवत्सरका उल्लेख होगा। तदनुसार सन् १३१९ यह इस लेखका वर्ष होगा।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२८]

३९२

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १२६६ = सन् १३४४, कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ, देसियगणके विशालकीर्ति राउलके अग्रशिष्य नागचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। तिथि श्रावण व० ११, रविवार, शक १२६६, सुभानु संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३९ पृ० २७]

३९३

रायद्रुग (बेल्लारी, मैसूर)

शक १२७७ = सन् १३५५, कन्नड-संस्कृत

तालुक ऑफ़िसमें रखी हुई मूर्तिके पादपीठ पर

[विजयनगरके राजा हरिहरके समय शक १२७७, मन्मथ संवत्सरमें यह लेख लिखा गया। कुन्दकुन्दान्वय, सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगण, मूलसंघके अमरकीर्ति आचार्यके शिष्य माघनन्दि व्रतीके शिष्य भोगराज-द्वारा शान्तिनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका इसमें निर्देश है।]

[इ० म० बेल्लारी ४५८]

[रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १११ पृ० १२]

३९४

होसाल (द० कनडा, मैसूर)

शक १२७९ = सन् १३५७, कन्नड

[यह लेख स्थानीय भग्न जिनमन्दिरमें है। इसमें विजयनगरके राजा बुक्कण्ण महारायके जैन सेनापति बैचय दण्डनायकका उल्लेख है। तिथि शक १२७९ विलम्बि संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० २८४ पृ० ३१]

३९५

तिरुनिडंकोण्डे (मद्रास)

शक १२८३=सन् १३६१, तमिल

[इस लेखकी तिथि धनु शुक्ल १३ बुधवार, शक १२८३ शुभकृत् संवत्सर ऐसी दी है। इसमें शेम्बादि विल्लवडरैयन्के पुत्र (नाम लुप्त)-द्वारा अप्पाण्डार् मन्दिरमें दीपके लिए भूमि दान दी जानेका उल्लेख है। यह दान गोप्पण्ण उडैयार्की प्रेरणासे दिया गया था। लेख अप्पाण्डार् चन्द्रनाथमन्दिरके मण्डपकी दीवालमें लगा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०३ पृ० ६९]

३९६

साविकेरि (धारवाड, मैसूर)

शक १(२)९८=सन् १३७६, कन्नड

[इस लेखमें मार्गशिर व० १(३), बुधवार, शक १(२)९८ नल संवत्सरके दिन वालेयहल्लिके वेलप्पके समाधिमरणका उल्लेख है। उस समय विजयनगरके वीरवुक्करायका शासन चल रहा था।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३३ पृ० २७]

३९७

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३००=सन् १३७८, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (१) श्रीमद्देव-

२ जिनेन्द्राय तस्मानंतमहात्मने सर्वबोधविशिष्टाय भव्यालि-कुमुदेन्दवे (२) तं वंदे देवदेवं सुरुचि-

३ रमनघं चारुकैवल्यनेत्रं नित्यं निर्वाणरामाकुचविलिखितकाश्मीर-
रागं वरांगं तुंगं देवेन्द्रानम्रपा-

४ दं गुणविलसदनन्तं स्वबोधात्मतत्त्वं मांगल्यं भव्यसार्थं निहत-
मनसिजं नव्यधर्मस्वरूपं । (३) इदु

५ जम्बूद्वीपमंता भरतविषयदोल् पडुव मेरुसिदं''''पद्पिन्दा मेरुविं
दक्षिणदे तुलु कोंगिन्दवी शुद्ध-

६ दीपं मुददिं''''तेंगु'''वलि पनसं नदीतीरदोल् कौंगु जम्बूसदनं
चेल्वागि तोकु

७'''विडार हस्तिसमूहं । (४) आ तुलुवाधीशरमणि''''वदनमागि
तोर्पुदु नयदिं नीतियुत गेरसोप्पे सोलि-

८ सुतिर्पुदु विभवदिंदायमरावतियं । (५) अन्ता नगिरिय राज्य-
कधीश्वरनेनिसिद मरुलयरसरन्वयसंप्रदायदा-

९ यदिं बन्द कीर्तिगे जयस्तंभनेनिसिदं हैवेभूपालन प्रतापवेन्तेने
सान्द्र''''देमकुन्दोद्गमकुमुदन-

१० मलमल्लिकाफुल्लमुख्यवृन्दं गंगातरंगतरलहरहासं तारनीहारहारं
सन्दिर्दी चारुकीर्ति''''

११ प्रसवदनुनयवेंविन''''माल्पुदु श्रीहैवेभूपालन निजयशमं
बण्णिसल् वल्लना-

१२ वं दक्षिणमण्डलिक''''निजनिवास''''सल्लक्षण राजराजकटकंगल
सूरेयना-

१३ यदे तोण्डमण्डलभूपर मन्दि रक्षिसु हैवेराज वेनुतिर्पुदु-

१४ नलियदे नोल्पडं मावनियंककाररतिचक्रद हस्तपराक्रमांकनो
हैवनृपाल चिन्नय-

१५ शो''''निन्नय दुन्दुभिताडनंगर्लि जावलिशब्ददिं परिदु दूरदि
संचरिसुत्तमिपुंदा''''

१६ ····येसेव राजहृदयंगलु मिन्नगलाद वद्भुतं । श्रीमद्देव···· गुरुगुणाद्भुतमहानागेन्द्रपंचा-

१७ स्य···सन्दिर्द हासद वैहालि महाडाकिनीनामोपद्रवं पुल्लवं···· श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरा-

१८ वासमं श्रीमदनन्तपालंगीगे नित्यं दीर्घायुमं श्रीयुमं अन्ता नगिरियपुरवराधीश्वरं मासा····

१९ वनियंककार मावंगेमलेव रायरगण्ड शिवसिंहासनचक्रवर्ति परसालुवदड्डविभाड कलिगल मुखद····

२० सम्यक्त्वचूडामणि वसन्तराज्यचातुर्वर्ण्यक्के····हलुव रायरगण्ड हैवेभूपालं सुखसंकथाविनो-

२१ दर्दि राज्यं गेय्युत्तिरलु आ गेरसोप्पेय महाजनंगल गुणं-गलेन्तेन्दोडे ॥ वृ ॥ अदरोल् नानाजा-

२२ तिपरदग्रणी सम्यक्त्वराद्री जैनर् पडेवर् जैनमार्गाश्रयजलनिधि-संवर्धितपूर्णचन्द्रर् मुदमं क्रोधाद्-

२३ मू मादुद्वपेकुलनिवर् विद्दु····राद्र्····मुख्यमाद्धिपनखिल-कलावल्लभर् कीर्तिवेत्तरंताता-

२४ मादण्डाधिपगलु····सहजात कुलक्षत्रियराद्रसुगलन्वयमन्तेन्दोडे स्वस्ति समधिगतपंचमहा-

२५ महिमप्रसिद्धमाद वनवासिपुरवराधीश्वरर् वैजयन्ती-मधुकेश्वर-लब्धवरप्रसाद मृगमदामोद गोकर्ण···

२६ महाबलेश्वरदिव्यश्रीपादपद्माराधकरुं परबलसाधकरुं हरसिवरुवर-शूल निगलंकमल्ल चलदंकराम राय-

२७ रगण्ड साहसमल्ल गण्डरडावणि सत्यराधेय साहसोत्तुंग शरणागतवज्रपंजर पश्चिमसमुद्राधिपतियप्प हैवे-

२८ क्षत्रियकुलकमलवनमार्तण्ड परनृपतामरस····पूर्णचन्द्रनेनिसिद वसवदेवरसरु····देवरसर-

२९ राज्यलक्ष्मियेनिसिद चन्द्रपुरवेम्ब पट्टणदोलु राज्यं गेय्युत्त
कालदोलु आ अरसुगलिगे पट्टवर्धनवाहत्तरनियो-

३० गिगल् जिनसेव्यनुं त्रिशक्तिवलयुतनुं षड्गुणसमर्थनुं राजक्षत्रिय-
चतुर्दन्त सोमेश्वरदण्डनायक-

३१ न अन्वयद कीर्तियेन्तेन्दोडे श्रीसोमदण्डपुत्रनु भासुर कामण्ण-
दण्डनायकनेनिपं सासनचक्र-

३२ वर्ति धर्मधारक सामन्तं कीर्तिवेत्तनमलचरित्रं श्रीमत्सोमदण्ड-
नायकंगे कामार्थ····ताबु पुट्टिदर् श्रीमद्रामणनेम्ब हेग्गडेय-

३३ सुवेम्बीपुत्रसंसेव्यकं रामं पुट्टिद····दशरथसामर्थ्यदि····यपराजिता-
रमणिगं साहित्यरत्नाकरमन्ता-

३४ रामणनेम्ब हेग्गडे रामक्कंगे तां पुट्टिदं शान्तं योजणनम्बिपुत्र-
नेनिसल् कुन्तीदेवि समन्तु

३५ श्रीपाण्डुराजंगे तां शान्तं धर्मजनेन्तु पुट्टिद वोला सम्यक्त्व-
रत्नाकरमन्ता योजणसेट्टिय जननि रामक्कनन्वयमेन्तेन्दोडे-

३६ वसुधेयोलु नेगल्ते····असमैश्वर्यसम्पन्नरुं दानगुणसम्पन्नरुमप्प
नम्बिसेट्टियर तम्मसेट्टिसहोदररेनिसिद म-

३७ ल्लिसेट्टि होन्नपसेट्टि····गुणाढ्यरुं जैनजनयान्धवरुं आ सेट्टरोलगे
महाधननेनिसिद आ होन्नपसेट्टि-

३८ ········

३९ ····शककाल····साविरद मुन्नूर····

(अवशिष्ट ६ पंक्तियाँ पढ़ी नहीं जा सकतीं ।)

[यह लेख शक १३०० में लिखा गया था। गेरसोप्पेके राजा हैवेय भूपालके शासनकालमें चन्द्रपुरमें वसवदेवरस शासन कर रहे थे। उनके दो मन्त्री सोमण्ण दण्डनायक और कामण्ण दण्डनायक थे। सोमण्णका पुत्र रामण्ण था जिसकी पत्नी रामक्क थी। उनके पुत्रका नाम योजणसेट्टि

था। इनके कुलके होन्नपसेट्टि तथा नम्बिसेट्टि इन बन्धुओंने दिये हुए दानका विवरण इस लेखमें दिया था।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५]

३९८

हडजन (मैसूर)

शक १३०(६)=सन्, १३८४, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमतु शकवरिष १३०....संवत्सरद

२ ज्येष्ठ ब १ आ। श्रीमतु मैसुनाड....ह-

३ डदनद तंडेयर कुलद बम्मय्यनवर सुपुत्र हिरि-

४ य मादण्णनवरु देवरिगे। श्रीमद् रायराजगुरु मंडलाचार्य

५ सकलविद्वज्जनचक्रवर्तिगलुमप्प सैद्धांतिदेवर प्रियगुड्डि केशवदे-

६ (वि)यरु आ केशवदेवियर अक्क मारदेवियरु स्वर्गग-

७ तरादरु। अवर निसिदियं माडिसि आ निसिदिय अर्चनेगे वि-

८ ट्टं तह क्षेत्र बसदिगे पूर्वदल्लुलगद्देयिं तेंकण ब

९ त्तिन असरिसदलु हत्तु खंडुग गद्देयनु धारापू-

१० र्वकवागि नडव डांगे आ हिरिय मादण्णनवरु बिट्टदत्ति-

[यह लेख मण्डलाचार्य सैद्धान्तिकदेवकी शिष्या केशवदेवीकी बड़ी बहन मारदेवीके समाधिमरणका स्मारक है। इस निसिदिकी पूजाके लिए हिरिय मादण्णने स्थानीय बसदिको कुछ भूमि दान दी थी। लेखकी तिथि ज्येष्ठ व० १, रविवार शक १३० (चौथा अंक लुप्त है) दी है। तिथि और वारके योगसे वह शकवर्ष १३०६ निश्चित होता है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६४]

३९९

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

संवत् १४४२=सन् १३८६, संस्कृत-नागरी

[यह लेख शान्तिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इसमें संवत् १४४२ में प्रौढाचार्य श्री महाकीर्तिका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५९]

४००

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १२१४=सन् १२९२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं। जिनगिरियदेशवेम्ब ललनामु-

२ खक्के चेसेद्दिर्पी गेरसोप्पेगे वर सेज्जेकार सले दण्डिगेय छत्रसुचामरालिर्यि बगेवुगे तोर्प हैवेनृप रामकं····न्नम्मपु-

३ न्नोव्वणं नेगळे सन्नुतनाद जिनचैत्यजिनालय-मन्दिरंवरं कलियुगदोल् महापुरुष योजण तन्न मंगल····

४ मण समवेन्दु माविसि नितान्त····स्थानमं जिनालयंगलं सले माडि गोपुरसुमनोहर····विचित्र····वलयं अनन्तनाथन पति-

५ य····दें कृतार्थनो। अन्ता योजणसेट्टिय प्राणवल्लभेयाद रामक्कन गुणंगलेन्तेन्दोडे श्रीमतु सन्····

६ तनाथन पदाम्बुभृंगनु यो-

७ जणसेट्टि प्र····निनित्रव

८ लांग····रम्य····गोत्रचिं-

९ तामणि पार्थिव····सपमेने

१० दोल् सत्यर्थीरोदाच""
११ नेव रामकनोप्पिदली धरित्रियोलु
१२ पविमन्के शीलवति भूनुतचारुचारि-
१३ त्रे सकलजीवदयापरं मन्तवननुवि-
१४ घदानदोल् अतिनिपुणेयेन्देसेदलो
१५ रामक्कं । जिनमतवाक्यदोलु
१६ ""सले जिनराजपदाब्जभृंगे तां जननुत चारु-
१७ सीले गुण सुव्रत दान पूजेयि
१८ ""मुक्ति कामिनीजनशिरोमणि यो-
१९ ""याग्र निजनामदि निजकुलोन्नति रामकनोप्पुतिर्दलु । श्रीजिनराजपूजेयोलु श्रीमुनिराजपदाब्जसेवे-
२० योलु नेत्रगुणंगलि विनयदि भयदि निजभावनुष्टियिं पूजिसि भक्तियिदेरगि तां स्तुतिमाडिपुं कीर्ति-
२१ योलिन्तु वणिग""कोण्डी निजनामदि रामकनी धरित्रियोलु कमलदलायताक्षि कमलानने कमलसुगन्धि कोमल
२२ ""विमललतांगि""रत्नयुतरी जिनराजपूजेयोल् समरसभावदोल् सले मागिकसेट्टिपुत्रि राम-
२३ कं क्रमगुणहस्तिकस्तलेयं नेरे योप्पुवलो धरित्रियोलु कमला-करदोलु कमलिनि कमलदोलं
२४ कमलं पुट्टुवन्तिरे नागमनमलान्वयदोलु रामक विमलगुणाभरणे पुट्टिदल् कलियुगदोलु
२५ रामक्कन अन्वयमेन्तेन्दोडे । तुलिगेरेय पत्रवसिउय मुन्दग हिरिय अंगडिगे सुल्य-
२६ वाद् किरिय रामसेट्टि आ मदुवलिगे गंगायि अवर मक्कलु वैचसेट्टियरु आतन तंगि सोमव्वे

२७ आ सोमव्वेयनु आ हुलिगेरेय माणिकसेट्टिगे विवाहमाडी....
अवर मगलु नागव्वे

२८ आकेय तन्दे माणिकसेट्टि समस्तरु आ वैचिसेट्टि हुलिगेरेगेय्दि
इन्दिगुलदलि प्र-

२९ ....आ नागव्वेयनू सलहि हिरिय हन्दिगुलद चन्द्रनाथ-
स्वामिगल चैत्यालयदोलु पूजे

३० आदिके श्रीकार्य नडेवन्तागि वृत्तियनू बिट्टु शासनव हाकिसिदरु
आ वैचरसियु तम्म-

३१ म सोसे नागवेयनू गेरसोप्पेय सेट्टि गुत्तवागि ओजेय मग
माणिकसेट्टियनू तानु विवा-

३२ हव माडि आ माणिकसेट्टियनन्वयमेन्तेन्दोडे गुच्छत्रिकय
नागिसेट्टिय मगलु रामव्वे आकेय पु-

३३ त्र माणिकसेट्टि माणिकसेट्टिगू नागव्वेयवरिगू जनिसिद मक्कलु
हरिसेट्टि कामण-

३४ नेमण्णसेट्टि सरणसेट्टि संगप यिन्तैवरोलगे रामक्कननू गेरसोप्पेय
रामण हेग्गडेय भंगराज-

३५ णन ओजणंगे विवाहव माडि आ वोजण्णसेट्टियू रामक्कनू
सुखसंकथाविनोदर्दि-

३६ दिहल्लिगे गेरसोप्पेय अनन्ततीर्थंकरचैत्यालयनारम्भिसि महा-
प्रतिष्ठेयनू माडिसि

३७ यिरुत्तं यिरलु सक वरुस सासिरद मूनूर हदिनाल्कनेय
प्रजापतिसंवत्सर-

३८ द कार्तिक शुद्ध पंचमि आदित्यवार सन्यसनसमन्वितवागि
स्वर्गस्तरादरु....मदवलिगे

३९ रामक्कनवर तन्दे मोदलुगोण्डु चरित्रदिं नेगले विक्रमसंवत्सरद
आषाढ-

४० सुध पंचमि सुक्रवार रोहिणीनक्षत्रदल्लु तुंगमभाधि···
४१ ···आचन्द्रार्कमागि
४२ मूडे मत्तवनु बोजण-
४३ सेट्टि····रामक्क····
४४ निषधिय कल्लिगे मंगल महा श्री

[इस निषिधिलेखमें कार्तिक शु० ५, रविवार, शक १३१४, प्रजापति संवत्सरके दिन योजणसेट्टिकी पत्नी रामक्कके समाधिमरणका उल्लेख किया है। रामक्कने गेरसोप्पेमें अनन्ततीर्थकरका मन्दिर बनवाया था। उसका वंशवर्णन भी लेखमें दिया है। रामक्कके पिता माणिकसेट्टिकी मृत्यु आषाढ़ शु० ५, शुक्रवार, विक्रमसंवत्सरके दिन हुई थी।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९७]

४०१

लक्कवरपुकोट (विजगापटम्, आन्ध्र)

संवत् १४४८=सन् १२९२, संस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें संवत् १४४८ में जिनचन्द्र भट्टारक-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह मूर्ति वीरभद्र मन्दिरमें है।]

[रि० सा० ए० १९११-१२ क्र० ४७ पृ० ५०]

४०२

संगूर (धारवाड, मैसूर)

शक १३१७=सन् १३९५, कन्नड

[इस लेखमें जैन मल्लप्पके पौत्र तथा संगमदेवके पुत्र नेमण्ण-द्वारा संगूरके पार्श्वनाथ मन्दिरको भूमि दान देनेका उल्लेख है। विजयनगरके सम्राट् हरिहरके समय गोवाके शासक माधवका यह सेनापति था। नेमण्ण-

के पिताका समाधिमरण पुष्य शु० ११, गुरुवार, युव संवत्सर, शक १३१७ में तथा पितामहका समाधिमरण फाल्गुन व० १४, सोमवार, नल संवत्सर-में हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६७ पृ० १०७]

४०३

गूटी (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१४वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

[इस लेखमें विजयनगरके राजा हरिहरके समय इरुग दण्डनायक-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है। कोण्डकुन्दान्वयकी परम्परामें वक्रग्रीव, एलाचार्य, अमरकीर्ति, सिंहनन्दि तथा वर्धमानदेशिकका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२०-२१ क्र० ३२६ पृ० १८]

४०४

हम्पी (वेल्लारी, मैसूर)

शक १३१७ = सन् १३९५, संस्कृत-तेलुगु

[यह लेख एक जिनमूर्तिके खण्डित पादपीठपर है। तिथि फाल्गुन व० १, सोमवार, भावसंवत्सर ऐसी दी है। शक वर्षके अंक लुप्त हुए हैं। मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके धर्मभूषण भट्टारकके उपदेशसे इम्म-डिबुक्क मन्त्रीश्वर-द्वारा कुन्दनबोलु नगरमें कुन्थुतीर्थंकरका चैत्यालय बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है। यह मन्त्री बैचय दण्डनाथके पुत्र थे। संवत्सरनामानुसार यह शक १३१७ का लेख प्रतीत होता है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ३३६ पृ० ४१]

४०५

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

१४वीं सदी, तमिळ

[यह लेख विजयगण्डगोपालदेवके २०वें वर्षमें लिखा गया था। पोन्नूरके निवासी अल्वन्दै आण्डाल् तिरुच्छोत्तुरै उडैयार्-द्वारा इस जिन-मन्दिरमें सन्ध्यासमय छह दीप प्रज्वलित रखनेके लिए तीन पलवन्नमाडै तथा कुछ चावलके दानका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३८]

४०६

हिरेचौटि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ नमो वीतरागाय। श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलां-
२ छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं। सागरवारि-
वेष्टितसमस्त-
३ धरारमणीघनस्तनाभोगविदेम्बिनं विदितविस्तृतसारतराग्रहारदिं
४ नागरखण्डपत्रपरिवेष्टनदिं जननेत्रपुत्रिकारागमनित्तु माणुदे
मनस्सु-
५ खदं वनवासिमण्डलं। नागरखण्डं वनवासेगागिर्कुं भूषणं-बोलु
६ ....गिरेवागि मेरेगुं नागलतापूगवनदिनेसेव तवे सों
७ ....नागरखण्ड....सागरमागे तोर्पु
८ ....सुखकिम्बागि....गे मेरेवुदी....ननुजना....सेणिसेट्टि
९ ....वसदिय माडिसिदरु-इन्तणणतम्मंदिरिन्वरु शान्तिजिनेश्वर-
१० वसदियं माडिसि सन्तोषदिं....सन्तसदिं पडेददं धराचन्द्र
११ ....गुणवार्धिय....पडेदु बालुत्तिरे पलकालं पुरुषनिधि नाग-

१२ सेट्टि तन्नय पेर्म्पि देसेवल्लरसियक्कनुमत मतं
१३ पडेट्टु सुखर्दि बाल्वुट्टु स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर अरिराय-
१४ विभाड अगलि····भापेगे तप्पुवरायरगण्ड चतुस्समु-
१५ द्राधिपति श्रीवीरवुक्करायमहारायरु राज्यं गेय्युत्तुमि····वि-
१६ रोधिसंवत्सर कार्तिकशुद्धतदिगे····वर देवर नि-
१७ ····चन्द्रगुड्डिगलुमप्प····सान्तिना-
१८ नाथदेवर अमृतपडि नन्दादीप····
१९ केरेय केलगे गद्दे ख ४····
२० ····यी धर्ममं प्रतिपालिसु····
२१ वारणासि कुरुक्षेत्र····
२२ कविलेय-
२३ पातकनक्कु श्रीशान्तिनाथ,

[यह लेख कार्तिक शु० ३, विरोधिसंवत्सरके दिन वीरवुक्करायके राज्यकालमें लिखा गया था। वनवासि प्रदेशके नागसेट्टि तथा सेणिसेट्टि-द्वारा शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका तथा उसमें दीपादि पूजाके लिए ४ खण्डुग भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ८३]

४०७

हले सोरब (मैसूर)

१४वीं सदी उत्तरार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रै-
२ लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं। अमरावतियलकावति स-
३ ममेनिसुव सोरब तवनिधियुमेंबेरडं समनागि वि-
४ पाकिसिदं सुमनसतरु सद्वंस तवनिधिय ब्रह्माख्यं॥

५ ····तिंगलवेन्तिर्दडे नाक····

६ ····युविळ····

७ ···वार्धि

[यह निसिधिलेख बहुत खण्डित है। सोरब और तवनिधिके शासक कृष्णके समय किसी व्यक्तिके समाधिमरणका यह स्मारक है। मृत व्यक्ति कोई महिला थी क्योंकि लेखके पाषाणपर एक स्त्रीमूर्ति उत्कीर्ण है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १७१]

४०८

तवनन्दी (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ जिनदं जिनमुनिगलु मसनु-
२ यम प्राणीश हरियनं-
३ दन नेनदुं वनजाक्षि महा-
४ लक्ष्मुयु वनतर शौर्य-
५ दोलुमग्नियोल् स-
६ ले पायिदल्
७ महालक्ष्मिय सद्गुण-
८ समुद्रोपमान ॥ मं-
९ गलमहा श्री श्री

[इस लेखमें महालक्ष्मी नामक किसी महिलाके अग्निप्रवेश-द्वारा मरणका उल्लेख है। जिन, मुनि और अपने पति हरियनंदनका स्मरण करते हुए उसने धैर्यपूर्वक प्राणत्याग किया था। लिपि १४वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५]

४०९

तलकाड (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

[यह लेख द्रविल संघ-नन्दिगणके कमलदेवके शिष्य लोकाचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १४वीं सदीकी है। यह लेख वैकुण्ठ-नारायणमन्दिरकी दीवालमें लगा है।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ६२]

४१०

मत्तावार (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ मरुलजिन जकवेहट्टि चटवे-

२ गन्ति मत्तवूर वसदि तपसु

३ माडि सिद्धि आदलु अवेय मा-

४ चरन मग मार कल्लु निलिसि-

५ द

[यह निषिधिलेख मरुलजिन-जकवेहट्टि नामक ग्रामकी निवासी चट-वेगन्तिके समाधिमरणका स्मारक है। उसका मृत्यु मत्तवूरकी बसदिमें हुआ था। अवेय माचरके पुत्र मारने यह स्मारक स्थापित किया था। लेखकी लिपि १४वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मैं० ९९३२ पृ० १७१]

४११

हुलेकल (उत्तर कनडा, मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १४वीं सदीकी लिपिमें है और बहुत घिसा है। इसके प्रारम्भमें जिनशासनकी प्रशंसा है तथा बादमें किसी मठमें आहारदान आदिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० २१ पृ० २२९]

४१२-४१३

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१४वीं सदी, कन्नड

[ये दो लेख १४वीं सदीकी लिपिमें रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाड़ीपर पाषाणोंपर खुदे हैं। इनमें चिप्पगिरिके श्रीविद्यानन्दस्वामी तथा बोलय नागका उल्लेख हुआ है। अक्षर कुछ अस्पष्ट हुए हैं।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५२-५३]

४१४

उद्दरि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-
२ मोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्यना-
३ थस्य शासनं जिनशासनं ॥ स्वस्ति श्रीमतु
४ ········विजयकीर्तिभटारर···

[यह लेख खण्डित है इसलिए विजयकीर्तिभटार इस नामके अतिरिक्त अन्य विवरण इससे प्राप्त नहीं होता। लिपि १४वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १४२]

४१५

सक्करेपट्टण (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, १४वीं सदी

१ ···;
२ तस्मिन् सेनगणान्तरिक्षतरणिः श्रीवीरसेनो भुवि संसाराम्बु-
धितारणैकतरणिः श्रेयोवर्नीसारणी। तच्छिष्यः प्रचुर-

३ प्रबन्धरचनाचातुर्यपद्मासनः पायाद् वो जिनसेन इत्यभिधया ख्यातो मुनिग्रामणीः । (१) श्रीमत्पुस्तक-

४ गच्छसूरसदृशो विश्वप्रकाशात्मकस्त्रैविद्यो गुणभद्रदेवयतिपः श्रीसूरसेनस्ततः (१) शिष्यः श्रीकमलादिभद्रगणभृद् दे-

५ वेन्द्रसेनस्ततः । तेनाकारि कुमारसेनमुनिपो वादीन्द्र-चूडामणिः (२) तच्छिष्याः हरिसेनदेवादयः । मा-

६ धुर्यं वाचि कारुण्यं हृदि तीव्रं तपस्ततः । श्रीप्रभाकरसेनाख्य-गुरुश्रेयो विराजते । (।३) तत्पद्मोदय-

७ शैलतिग्मकिरणस्त्रैविद्यपारंगतो भूपालार्चितपादपंकजयुगः श्रीलक्ष्मिसेनो मुनिः (।) लोके सत्त-

८ पसां निधानमनघं कारुण्यवारांनिधिः दाने कल्पकुजोपमो विजयते कामेभकण्ठीरवः । (४)

९ श्रीमदनसेपमुनिपो सज्ज्ञानामृतपयोधिपूर्णेन्दुः (।) सुदृढतपोगुण-युक्तो भाति श्रीमत्प्रभा-

१० करार्यसुतः । (५) द्वीपितटाकनामनगरीपति शंखजिनेन्द्रचन्द्र-मश्रीपादपंकजालिरमलाम-

११ रकीर्तिमुनीन्द्रपादसेवापरिपक्वबुद्धि बलगारसमाह्वयवंशपद्म-तारापति रंजिपं स्वजनकं-

१२ जनमोमणि वैश्य मायणं । (६) गुणतुंगं होल्लराजं पितृ गुणवति देवमास्वेतन्नस्वेयु-

१३ द्यद्गुणरत्नं नागराजं परिकिपोडे पितृव्यं गुणैकाश्रयं माकणन् आत्मीयानुजं तानेनिपगाखित-

१४ सौभाग्यदिं भाग्यदिं धारिणियोल् विख्यातिवेत्तं जिनसमय-सरस्सारसं मायणार्य । (७) मतं लोकै-

१५ कमित्रं प्रचुरतरकलावल्लभं वन्दिवृन्दोत्करपुण्यत्-कल्पभूजं बुधनुतचरितं वावपरं

१६ काव्यगोष्ठि-सरमं विद्विष्टगैलाशनि सुरपुरमोदलान्तगल मीन-
केतूद्वर रूपं मद्गुणोद्ग्र-

१७ हनयन् पुनल् आश्चर्यमें मायणार्यं। (८) इन्तु होय्सल-
भूविभुलक्ष्मीलपनमुं

१८ श्रीवीरबुक्कराजसाम्राज्यरमारमणीयविलासदर्पणोपमं एनिसि
सोगयिसुव होसपट्टणदोलु प्रसिद्धिवडेद् वै-

१९ श्य मायण्ण माकण्णगलु न····दवागि माडिद् श्रीलक्ष्मीसेन-
भट्टारकर् निषधिय प्रतिष्टे शासन मंगल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[यह् निषिधिलेख सेनगणके लक्ष्मीसेनभट्टारककी मृत्युका स्मारक है। इनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी – वीरसेन – जिनसेन – गुणभद्र त्रैविद्य-देव – सूरसेन – कमलभद्र – देवेन्द्रसेन – कुमारसेन – हरिसेन – प्रभाकरसेन – लक्ष्मीसेन। लक्ष्मीसेनके गुरुबन्धु मदनसेन थे। यह निषिधि दलगार वंशके मायण तथा माकण नामक दो वैश्यों-द्वारा स्थापित की गयी थी। ये होसपट्टणके निवासी थे। यह नगर होयसल प्रदेशमें था तथा वीरबुक्कराजके राज्यके अन्तर्गत था।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६१]

४१६

तेरकणांबि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ देशियगण पुस्तक-
२ गच्छ कोंडकुंदान्वय हनसोगेय बलि-
३ य राजगुरु (मंड) लाचार्यरुमप्प (सम)-
४ यामरण ललितकीर्तिभट्टारकरु माडिसिद्
५ (प्रतिमे) मंगळ महा श्री श्री श्री

[यह लेख पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना मूलसंघ-हनसोगे बलिके ललितकीर्ति भट्टारकने की थी। लिपि १४वीं सदी की है।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १६९]

४१७

तगडूर (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ (कों)डकुन्दान्वय
२ (मू)लसंघ नागनन्दि
३ (अन)न्तभट्टारकशिष्य
४ नन्दिभट्टारकरशि-
५ ····यन्तगडू
६ ····यिल्लेकन्तिय(र्)
७ (स)न्यसनंगेय्दु सुर-
८ (लोकक्के) सन्दर्

[इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयके नागनन्दि भट्टारकके शिष्य नन्दिभट्टारककी शिष्या···यिल्लेकन्तिके समाधिमरणका उल्लेख है। पाषाण टूटा होनेसे कुछ अक्षर नष्ट हुए हैं। लिपि १४वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १७३]

४१८

चामराजनगर (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमूलद संगद का-
२ णूर्गणद अन-
३ न्तकीर्तिदेवर गुड्ड
४ बोप्पय सन्य-
५ सनविधियिं
६ ····(स्व)र्गस्त

[इस लेखमें मूलसंघ-काणूर गणके अनन्तकीर्तिदेवके शिष्य बोप्पयके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि १४वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११२]

४१९

माचिनकेरे (कडूर, मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमतु मन्मथसंवत्सर प्रथम श्रावण शु । गुरुवार पुष्य- नक्षत्रदल्लु श्रीचंद्रनाथन चैत्यालयदल्लु

२ तोलहरवलिय अनतकसेट्टितिय मग आदिसेट्टिय येरगिसिद चतुर्विंशतितीर्थंकरप्रतुमेयनु यिरिसि कृ-

३ तार्थं नादेनु मद्र शुभं मंगलं भूयात् पुनद्दर्शनं शुभं मंगल महा श्री श्री श्री

[इस लेखमें चतुर्विंशति तीर्थंकर मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। अनंतकसेट्टितिके पुत्र आदिसेट्टिने यह मूर्ति स्थापित की थी। तिथि प्रथम श्रावण शु० (?) मन्मथ संवत्सर ऐसी दी है। लिपि १४वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४६ पृ० ३७]

४२०

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३२३=सन् १४०१, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जी-

२ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं

३ नगिरिय कुलचक्रवर्ति····राजनिर्जित····

४ ला सामन्तर वलियं यिन्ता होन्नभूपनलियं····आ साम-

५ न्तन पुत्रनर्थिकामं कोमल····मरसं अरिनृपालनातन····

६ दे····धर चारुकीर्तिपण्डित····सद्गुरुप्रभु आ कामनृपालन मान

७ योजि राज्यमं नगिरियुमनितुं तनगागे वैचणभूपति म····

८ नेगल्दं रिपुसैन्य····नवर····न पद्सरसि····जिनमुनिपादांबुजात ····नृपाल

९ वैचणसेट्टि परिणतान्तस्करणमन्तप्प हैवेरायन प्रतापवेनू-
१० तेन्ड़ोडे स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर······नियमीसरगण्ड······ प्रताप····
११ सूरेकार सिवसिंहासनचक्रवर्ति निर्लिपपुरवरा-
१२ धीश्वरनेनिप वैचिराजं राज्यं गयिवलि शकवरुष
१३ १३२३ नेय विक्रमसंवत्सर माग शु १ मन्दवारद
१४ रात्रियोलु हैवेराजन अलिय मंगराजनु स्वर्गस्थनाद श्रीजि-
१५ नराजराजितपदाम्बुजभृंग···कीर्तियिन्द्री जगदोलो-
१६ ···बलमोप्पुव दानियु हैवभूपन राजिय पट्टदानेयं···
१७ ····गोविजनरह विक्रमसं····नगिर मंगनृपं सुरलोक-
१८ केयदिदं····विसुद्धरप्प मत्त····राजं जिनमतांबुधिहिमकि-
१९ रणं नगिरपुराधीश मंगरसंगं राजसन्नुत
२० ····रतिपंचबाणनस····श्रीमंगभूपालकं हिमरुक्
२१ ····श्री····विक्रमसंवत्सरद् माघमासद····
२२ लु····सुरांगनारमण····
२३ जीयेम्बिनं····
२४ ····ससिमिते श्रीविक्रमा····
२५ काल्यस्थे देवप्प····सूभे पक्षे वल-
२६ क्षे मन्दवार···· २७ सुरपदमं···

[यह लेख गेरसोप्पेके राजा हैवेयरायके जामात नगिरपुरके प्रमुख मंगरसकी मृत्युकी स्मृतिमें लिखा गया था। इसकी तिथि माघ शु० १, शनिवार, शक १३२३ विक्रम संवत्सर यह थी। लेखका बहुत-सा भाग घिस गया है। इसके पूर्वभागमें होन्न राजा तथा वैचणसेट्टिका उल्लेख है। उनका मंगरससे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० १००]

४२१

सक्करेपट्टण (मैसूर)

शक १३२८=सन् १४०५, कन्नड

१ श्रीमत् परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥)
२ श्रीमद् रायराजगुरु मण्डलाचार्य····पुरविक्रमादित्य मध्याह्न-
३ कल्पवृक्ष सेनगणाग्रगण्यरप्प श्रीमल्लक्ष्मीसेनभट्टारकरवर श्रीमन श्रीमानसेनदेवर निषिधि शकव-
४ र्ष····१३२८ नेय पार्थिव सवत्सर १० लु
५ श्रीमुत्तद् होसऊर वैचसेट्टिय मक्कलु मायसेट्टि बोम्मिसेट्टि नागणसेट्टि अवर मोम्मक्कलु वैच-
६ सेट्टिय तम्मसेट्टि कोवरिसेट्टि चिक्कवैचसेट्टि मादिसेट्टियर मक्कलु कोवरिसेट्टियरु

[यह लेख सेनगणके भट्टारक लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनदेवकी समाधिका स्मारक है। यह निषिधि मुत्तदहोसऊरके वैचसेट्टिके पुत्र मायसेट्टि, बोम्मिसेट्टि आदिने शक १३२७ में स्थापित की थी।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६२]

४२२

कोरग (द० कनडा, मैसूर)

शक १३३१=सन् १४१०, कन्नड

[यह लेख केरवसेके राजा सान्तर वंशीय वीरभैरवके पुत्र पाण्डयनृपालके समय पुष्य शु० १०, गुरुवार, शक १३३१, सर्वधारि संवत्सरका है। इसमें बलात्कारगणके वसन्तकीर्तिराउलकी प्रार्थनापर वारकूरकी बसदिके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५३० पृ० ४१]

४२३-४२४

भटकल (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १३३२=सन् १४१०, कन्नड

[ये दो लेख हैं। कार्तिक शु० १०, सोमवार, शक १३३२ सर्वधारी संवत्सर, यह इनकी तिथि है। एकमें संगिराव ओडेय-द्वारा उनके किसी सम्बन्धित मल्लिराय नामक व्यक्तिके समाधिमरणपर निसिधिकी स्थापना-का उल्लेख है। दूसरेमें किसी राजकन्याके समाधिमरणपर निसिधिस्थापना-का उल्लेख है। इसमें हैवभूप, भैरादेवी तथा संगिरायका भी नामोल्लेख हैं।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३३९-४०]

४२५

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक १३३४=सन् १४१२, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके देवराय महारायके समय मार्गशिर शु० २, रविवार, नन्दन संवत्सर, शक १३३४ को लिखा गया था। शंखवसतिके आचार्य हेमदेव तथा सौम्यदेव (शिवमन्दिर) के शिवरामय्य-द्वारा दोनों मन्दिरोंकी भूमिकी सीमाके बारेमें कुछ विवादका समझौता किये जानेका इसमें उल्लेख है। यह कार्य नागण्ण दण्डनायक-द्वारा सम्पन्न हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३३ पृ० १६३]

४२६-४३०

टोंक (राजस्थान)

संवत् १४७०=सन् १४१३, संस्कृत-नागरी

[ये ५ मूर्तिलेख हैं। मूलसंघके आचार्य प्रभाचन्द्रके शिष्य पद्मनन्दिके उपदेशसे खण्डिल्लवाल कुलके कुछ व्यक्तियों-द्वारा ज्येष्ठ शु० ११, गुरुवार, संवत् १४७० को ये मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४६६-७० पृ० ६९]

४३१

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १३४२=सन् १४२०, कन्नड

[यह लेख वैशाख शु० १४, रविवार, शक १३४२, शार्वरी संवत्सर-का है। इस समय रायराजगुरु हेमसेनके शिष्य वुलिसेट्टिका समाधिमरण हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९५ पृ० ८]

४३२

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १३४३=सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख चन्द्रनाथबसदिमें है। इसकी तिथि भाद्रपद शु० ९, शुक्रवार शक १३४३ प्लव संवत्सर है। इस समय स्वरटौरके तिलकरसके मन्त्री हेग्गडे मदुवरसके पुत्र नागरसकी मृत्यु हुई थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९४ पृ० ८]

४३३

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३४३=सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्रीजम्बूद्वी-

२ पमध्यस्थितजनसर'''रमणरवाभ्यंकृतश्रोयर्''''तद्धर''''जिनपद-पद्मभृंग''''स्तंभित''''जायातं पत्तनं त्यक्तपंकं

३ ....त्रैविद्यवल्ली....मुक सुलमरारम्य....स्थितजिनेन्द्रपादयुगपद्म-भृंगा संसा-

४ र...माब्धि....तेसेद....द्दुदुभूत्नरें-

५ न्द्रः तदीयवंशोद्भवमंगभूपो साहित्यलक्ष्मी...भाभाति लक्ष्मी जिनमंदिरेषु कामं कामितदायकः कन-

६ स्ट् कन्दर्पसर्वप्रियः कल्याणकलनानन्न....श्रीमंगभूपस्य जिनेन्द्र-पादद्वयपद्मगन्धमिलद्भृंगोभवत् सन्ततं

७ तदीयवंशसंभूतः केशवाख्यः क्षितीश्वरः वशीकरोति सहसा वन्दिगेहेषु सम्पदं....मुपासितुं भवतु ते गात्रं हि-

८ मार्द्रीकृतं । श्रीमत्केशवभूमिपालचरितं श्रुत्वा स्तुवन् किन्नरैः तोपाकम्पितशंभुमौलिविलसद्गंगातरंगास्पदं आश्रयाशो दह-त्याशु स्वाश्रयं स्वतनाथ सा (? स्वीयतेजसा)

९ केशवेन्द्रप्रतापाग्निः नाश्रयं तापयत्यहो । केशवेन्द्रगुणान् वक्तुं को वा शक्नोति पण्डितः आकाशस्थितनक्षत्रगणना केन मुच्यते ॥ वर्धमानान्वयोद्भवे निर्धूताश्रित-

१० दरिद्रे निजपतिनियमांतर्धियुते होन्नबरसि विशुद्धात्मिके आने-वलिगे तिलकमेनिक्कुं १ आ होन्नबरसियरसं श्रीहैवनृपं जिनक्रमांबुजभृंगं बाहुबलनिर्जितरि-

११ पुभूपं साहससमुद्रनभिनवकामं । तयोरभून्निर्मलजक्कवरसी सुता सुशीला जिनभक्तियुक्ता तं चोपयेमे वरमंगभूपो जामातृवर्यो भुवि है-

१२ वराजः अनिन्द्रादपि निर्गन्तुं भीरवः खलु योषितः मंगभूपाल-कीर्तिस्तु कामिनीवातिलंघिनी तयोरभूतां जिननाथनम्रौ मात्रा पुनीताखिलजैनल....

१३ धात्रीव हैवणश्री⋯मावलरसी समूर्जिताह्वानयुता सुशीला श्रीमन्नत्रनिलिम्र – मौलिविलमन्माणिक्य⋯रसपंद्युतिपादपद्म - नखर श्रीपार्श्वना-

१४ थेन तु कामं मंगरसात्मजो गुरुगुणश्रीहैवणाख्योभवत्⋯ जैनयोगिनिकरर् साहित्यरत्नाकरर् श्रीमद्वानुनिनम्बिर्नीव नितरां⋯नृपालंकृता भू-

१५ मौ भूरिगुणोजभास्करलसत्प्रत्यग्रभासान्विता कामं मंगनृपा⋯ गुरुद्या देवी⋯श्रीमावलांबा⋯सुधामृतिद्युति प्रत्यहं १ कं।

१६ ला मावलरसियरसं भूमीशविनत्रपाद केशवभूपं कामारिभसित-मस्तकसोमद्युतिकीर्ति को⋯सुरलोकद सुरतरुविन गुरुफ-

१७ लमं मेट्टु तृप्तियिल्लदे सुररं धरेयोल् भूसुररादरु वरकेशवभूप-कल्पभूजदृहेर्यि माति⋯कीर्त्या श्रीकेशवक्ष्मापतिरप-

१८ रांबुधितीरगा जिनपतिश्रीपादपद्मानता भूनौ भाविजिनेन्द्रचन्द्र-विलसच्चारित्रनु⋯रागोदया मंसारसारोदया।

१९ त्र्यब्ध्यग्न्यैकसमन्विते शककृते श्राशार्वरीवत्सरे माघे मानित-पंचमीतिथियुते श्रीसौम्यवारे सिते पक्षे⋯आद्रिराजवनिता धर्माभिधाने पुरे कामं कारयति स्म

२० जक्ययरसी पार्श्वप्रतिष्ठां मुदा। अनन्तरं। नगिरद राज ह्रोन्नरसनन्वयवार्धिगे चन्द्रं सले तां सोगयिप हैवेभूपनलियं कलिकालद

२१ कर्णनेम्बरी बगदलु मंगभूवरन वान्वये तंगलेदेविनन्दनं नगेमोगदा कल्पभूज केशवरायनु कीर्तिवल्लभं। कं। अन्ता नगिरद राज-

२२ र सन्तानाब्धियोलु लक्ष्मीमाणिकदेवीकान्तनू एनिपर्वाशयंगे कन्तुविनन्तुदयिसिदं संगनृपालं संगविदूर क्षेमपुरतीर्थजिनेन्द्र पाद-

२३ पन्नकं शंगणजीयनालजनु अम्बमहीशन पुत्र संगमं····तन्न मनमोलचन्तीधर्मवं माडि पूर्वदोल् पिंगिद धर्मवेल्ल-

२४ वनु पालिसिदं रविचन्द्ररुल्लिनं । अन्ताधर्मप्रतिपालकनेनिप श्रीसंगभूपालं सुखदिं राज्यं गेयुत्तिरल् यिलेयोलु कुन्तलनाडु करं रंजि-

२५ से पश्चिमनाडु देशदोल् कलवे वापी कूप नदी मामरर्नि पनसीले बालेयिं बालेयिं चलसिकोण्डु कोकमिथुनमोदलागिर-कल्लियारवेगल नडवोप्पु

२६ वी पुरवनालुवन् अन्ननृपालनेम्बवं । यिरून्दूरधिपति तां करमोप्पुव अडियरवलियिं करमेसेवनु तम्मरस····यलियं कीर्ति-

२७ वेत्तना तम्मरसं । आ तम्मरसनग्रजेय तनूजं धरेयोल् इरून्दूर भूसुरनुत कल्लरसननुजे तंगदेविगे वरनेनिप हैवेयरसन वरपुत्रं प-

२८ न्नणरस जैनपदभक्तं । आ पन्नणरसनू आतनग्रजे जक्कल-देविय···तन्दे हैवण्णरसरु पार्श्वतीर्थेश्वर····माडिद नित्यपूजे-

२९ आहारदानमोदलाद (वु) मेल्लवं पुरो···दिगे सलिसि मुन्निन धर्मवेल्लवं नेरेमाडि बक्किक तन्नोलु सन्नुतबुद्धि पुट्टे जिनेन्द्र-नमिणेकनु नित्यपू-

३० जनं मुन्नेसेवन्नदानमोदलादवनुं पिरिदागि माडि···तृप्तियिन्दो-किदु पन्नरसं मिगे कोट्ट वृत्तियं । श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरद श्रीकार्य-

३१ वकेयू अंगभोगचैत्यालयद जीर्णोद्धारक्के धारापूर्वकवागि कोहन्ता वृत्तिय विवर हैवण्णरसरु तावु मूलवागि आकुतिर्द कोणुवणिय-

३२ लि कुंगन कुलिय हन्नेरडु मूडे सुनिगे सीमे मूडलु अभिन-सेट्टितं हित्तल गदे तेंकलु हरिदु कोडि गाडि पडुवलु तम्मरसर होसगद्देयलु यिक्किद कल्लुगडि

३३ वडगलु हालेयसागे गडियिन्ती चतुस्सीमेयिदोलगुल्ल कलवेय समस्तवृत्ति पन्नरसरु तावु मूलवागि आलुत्तैद होन्नमन केरेय

२४ ''''मेले येत्ति होन्नावरद नाल्कुवरे होन्नन् तम्म अम्म तंगल-
देवियरिगे पुण्यार्थं परिहारमागे यिट्टु हैवण्णरसर त-
२५ म्म मनःपूर्वकवागि कोट्टु सर्वमान्यवागि मूलस्थलवागि तावु
आलुत्तं यिर्दु''''यडेय मज्जन वृत्तिगे गड्डि मूडलु होले तंकलु
होले गड्डि पडुवलु
२६ ....
२७ ''''समस्तवृत्तियन् आहारदानक्कवागि याचन्द्रार्कवागि
२८ धारापूर्वकं माड्डि कोट्टर मत्तु आहारदानक्के या चित्यालयद''''
गृह

[इस लेखमें पद्मण्णरस-द्वारा पार्श्वतीर्थंकरमन्दिरके लिए ४ होन्नु क्रीमतकी भूमि दान दिये जानेका निर्देश है। पद्मण्णरसकी माता तंगलदेवी तथा पिता हैवण्णरस थे। उसकी बड़ी बहिन जक्कलदेवी थी। तंगलदेवी-का बन्धु कल्लरस था जो इववुन्दूरके शासक तम्मरसका भानजा था। यह कुन्तलनाडुके राजा अज्जका जामाता था। अज्जका समकालीन राजा संग था जो अम्बराजाका पुत्र था। अम्बका पिता संग था जो अम्बीराय और माणिकदेवीका पुत्र था तथा राजा केशवका वंशज था। केशवकी पत्नी माचलरसि मंग राजाकी कन्या थी। मंगकी पत्नी जक्कब्बरसि हैवण और होन्नबरसिकी कन्या थी। इस दानकी तिथि माघ शु० ५ बुधवार, शक १३४३, शार्वरी संवत्सर ऐसी दी है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९३]

४३५

उडिपि (द० कनडा, मैसूर)

शक १३४६=सन् १४२४, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख (ताम्रपत्र) विजयनगरके देवरायमहाराजके राज्यकालमें पुष्य शु० ६, बुधवार, शक १३४६ क्रोधि संवत्सरके दिनका है। इसमें

मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके वर्धमान भट्टारकको प्रार्थनापर राजा-द्वारा वरांग नामक ग्राम नेमिनाथमन्दिरको अर्पित किये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ए १२ पृ० ५]

[इस ताम्रपत्रकी प्रतिलिपि वरांग ग्रामस्थित नेमिनाथवसदिमें एक पाषाणपर उत्कीर्ण है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२५ पृ० ४९]

४३५

माण्डू (धार, मध्यप्रदेश)

(संवत्) १४८३=सन् १४२६, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें सम्भवनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। तिथि (संवत्) १४८३, वैशाख (चैत्र) शु० ५, गुरुवार ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १८२ पृ० ४४]

४३६

बसरूर (दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १३५३=सन् १४३१

[यह लेख देवराय २ के राज्यमें शक १३५३ में लिखा गया था। इसमें जैन मन्दिरके लिए बसरूरके चेट्टियों-द्वारा वहाँके बाजारमें आनेवाली चावलकी हर गाड़ीपर एक 'कोलग' दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[इ० म० दक्षिण कनडा २७]

४३७

कुण्णत्तूर (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १३६३=सन् १४४१, तमिळ

[यह लेख ऋषभनाथवसदिके पूर्वी दीवारपर खुदा है। कुण्रै (कुण्णत्तूर) के अर्हत्-मन्दिरका निर्माण शक १३६३ में होनेका इसमें वर्णन है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १०३ पृ० १४०]

४३८

वद्नोर (भीलवाडा, राजस्थान)

संवत् १(४)९७=सन् १४४२, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें संवत् १(४)९७ में शान्तिनाथका उल्लेख किया गया है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४५० पृ० ६७]

४३९

कुण्डघाट (जि० मोंघीर, बिहार)

संवत् १५०५=सन् १४४९, संस्कृत-नागरी

भग्न मन्दिरमें एक महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें संवत् १५०५ फाल्गुन शु० ९ को महावीरमूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है।]

[रि० इं० ए० क्र० ८ (१९५०-५१)]

४४०-४४१

वैन्दुरु (द० कनडा, मैसूर)

शक १३(७)१ = सन् १४५०, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके मल्लिकार्जुन महारायके समय चैत्र शु० १०, गुरुवार, शक १३(७)१ शुक्ल संवत्सरका है। इस समय वैंदूरके पार्श्वनाथ बसदिके लिए कुछ लोगों-द्वारा दिये हुए दानोंका विवरण इसमें दिया है। देवप्प दण्डनायकका भी उल्लेख है। इसी समयका दूसरा लेख यहीं है। इसमें हाडुवलिय राज्यके शासक संगिराय ओडेयके पुत्र इंगरस ओडेयके समय पार्श्वनाथवसदिको प्राप्त दानोंका विवरण है।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ५३६-३७ पृ० ५३]

४४२

चितलद्रुग (मैसूर)

शक १३८५ = सन् १४६३, कन्नड

१ सखवरुस १३८५ सोभकृति सं-

२ वछरद कतिकसुध १५ आकिय मं-

३ गिसेट्टिय मग गुम्मिसेट्टियर नि-

४ सिंदगे श्रीवीतराग

[यह एक निसिधिलेख है। आकिय मंगिसेट्टिके पुत्र गुम्मिसेट्टिके समाधिमरणका यह स्मारक है। तिथि कातिक शु० १५, शक १३८५, शोभकृत् संवत्सर इस प्रकार दी है।

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४]

४४३-४४४

चितलदुर्ग (मैसूर)

१५वीं सदी (सन् १४७२), कन्नड

१ नंदन सं २ बाचण्णगल ३ निसिदिगे

[यह निसिधिलेख बाचण्णके समाधिमरणका स्मारक है। १५वीं सदीकी लिपिमें नन्दन संवत्सरका उल्लेख है अतः सन् १४७२ का यह लेख होगा। यहींका एक अन्य लेख इसी समयकी लिपिमें है जिसमें गुम्मटदेवकी निसिधिका उल्लेख है। यथा-

१ सखवरु - २ आमादसु ३ (गु) मटदेव

इसमें तिथिके अंक लुप्त हो चुके हैं।]

[ए० रि० मैं० १९३९ पृ० १०४-५]

४४५

गुरुवयनकेरे (द० कनडा, मैसूर)

शक १४०६ = सन् १४८४, कन्नड

[इस लेखमें शक १४०६ में नरसिंह बंग-द्वारा कन्नडिवसदि नामक जिनमन्दिरको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८१ पृ० ४५]

४४६

विदिरूर (शिमोगा, मैसूर)

शक १४१० = सन् १४८८, कन्नड

१ स्वस्ति स (क) वरिष १४१० नेय प्लवंग संचरद जेष्ट सुद्द

पंचमि आदिवारदलु अदियर् वलिय गण्डलिकेय उटेकोंड राम-
नायकनु विदिरूरलि तनगे स्वर्गापवर्गसुखक्के का-

२ (र)णवागि चैत्यालयव कट्टिसि आदीश्वरन प्रतिष्टेयन माडिसि-
दनु श्री

[इस लेखमें रामनायक-द्वारा विदिरूर ग्राममें चैत्यालय बनवानेका तथा आदिनाथकी इस मूर्तिकी स्थापना करवानेका वर्णन है। यह कार्य ज्येष्ठ शु० ५, शक १४१० के दिन सम्पन्न हुआ था।]

[ए० रि० मैं० १९४३ पृ० ११३]

४४७

जबलपुर (मध्यप्रदेश)

संवत् १५४९=सन् १४९२, संस्कृत-नागरी

[यह लेख पार्श्वनाथकी भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। तिथि वैशाख शु० ३, संवत् १५४९ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १२३ पृ० २१]

४४८

शिवडूंगर (राजस्थान)

सं० १५५६=सन् १५००, संस्कृत-नागरी

[यह लेख मूलसंघ-बलात्कारगण – सरस्वतीगच्छके आचार्य रत्नकीर्तिके समय सं० १५५६ में लिखा गया था। इनकी गुरुपरम्परा पद्मनन्दि-शुभचन्द्र-जिनचन्द्र-रत्नकीर्ति इस प्रकार बतलायी है।]

[रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३२]

४४६

हुमच (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्या- २ द्वादामोघलांछनं
३ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा- ४ सनं जिनशासनं
५ विरोधिकृत् संवत्सरद आश्वी- ६ ज बहुल दसमि सोमवा-
७ रदलु । श्री मद्रायराज- ८ गुरु मंडलाचार्यरु
९ महावादवादीश्वर रा- १० यवादिपितामह सकल-
११ विद्वज्जनचक्रवर्तिगलुं श्रीम- १२ द्वादींद्रविशालकीर्तिम-
१३ -स्वरकुलकमलमार्तंडरु १४ श्रीमदमरकीर्तियतीश्वरप्रि-
१५ याग्रशिष्यरु मूलसंघ ब- १६ लात्कारगणाग्रगण्यरुमप्प
१७ श्रीधर्मभूषणभट्टारकदे- १८ वर प्रियगुड्डु श्रीमद्म-
१९ रेंद्रवंदितजिनेंद्रपादार- २० विंदमधुकरनुं चतुर्विधदा-
२१ नचिंतामणियुं खंडस्फुटि- २२ तजीर्णजिनालयोद्धारकनुम
२३ प्प विटिसेट्टिय मग चोकिसेट्टि-२४ य निसिधि ॥

[इस लेखमें विटिसेट्टिके पुत्र चोकिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है जो आश्विन व० १० सोमवार, विरोधकृत् संवत्सरके दिन हुआ था। चोकिसेट्टिके गुरु धर्मभूषण भट्टारक थे जो मूलसंघ-बलात्कारगणके अमरकीर्ति यतीश्वरके शिष्य थे। लिपि १५वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९३४ पृ० १७५]

४५०-४५१

आद्वनी (वेल्लारी, मैसूर)

१५वीं सदी, तेलुगु

[ये लेख पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदे हुए तीर्थकरमूर्तिके पास और चरणपादुकाओंके पास हैं। ये बहुत घिसे हुए हैं। मूर्तिके पास एक शकवर्षकी संख्या खुदी है तथा पादुकाओंके पास किसी आचार्यका नाम है। दोनों अच्छी तरह पढ़ना सम्भव नहीं है। लिपि १५वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० ७४–७५ पृ० १३७]

४५२-४५३

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

[यहांके दो मूर्तिलेख १५वीं सदीके लिपिके हैं। इनपर देविसेट्टिके पुत्र दोडणसेट्टि तथा नेमिसेट्टिके पुत्र गुम्मणसेट्टिके नाम उत्कीर्ण हैं।]

[ए० रि० मैं० १९१६ पृ० ८४]

४५४

हनसोगे (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

१ हनसोगेय हिरियबसदिय

२ कोण्डिय कल्ल ओरसेय बोम्मि-

३ सेट्टियरु इक्किसिदरु

[यह लेख स्थानीय आदीश्वरवसदिके सभामण्डपके छतके पाषाणपर खुदा है। यह पाषाण (कोण्डियकल्लु) बोम्मिसेट्टि-द्वारा स्थापित किया गया था ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १५वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९३९ पृ० १९४]

४५५

मूडबिद्रुरे (मैसूर)

शक १४२६ = सन् १५०४, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि कदंब कुलके शासक लक्ष्मप्परस अपरनाम भैररसने जैनोंके ७२ संस्थानोंके प्रधान आचार्य चारुकीर्ति पंडिताचार्यके एक शिष्यको अपने राज्यके एक हिस्सेके धार्मिक अधिकार प्रदान किये। तिथि-आश्विन कृ० ५, शक १४२६, क्रोधि संवत्सर।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ५)

४५६

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १४३१ = सन् १५०९, तमिल

[यह लेख मकर शु० १०, गुरुवार, शक १४३१ को लिखा गया था। विजयनगरके शासक नरसिंहरायके समय रामप्प नायकने मन्दिरोंकी भूमिपर जोडि संज्ञक कर लगाया था जिससे मन्दिरोंकी हानि हुई थी। कृष्णदेवराय सिंहासनारूढ़ हुए तब उन्होंने मन्दिरोंकी भूमिको करमुक्त घोषित किया। इस घोषणाका लाभ पडैवीट्टु तथा चन्द्रगिरि प्रदेशके जैन और बौद्ध मन्दिरोंको भी हुआ। करन्दै स्थित जिनमन्दिर भी इससे लाभान्वित हुआ ऐसा लेखमें कहा गया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४४]

४५७

गुरुवयनकेरे (द० कनडा, मैसूर)

शक १४३१ = सन् १५१०, कन्नड

[यह लेख स्थानीय शान्तीश्वरवसदिके मण्डपमें है। इसमें माघ व० १०, सोमवार शक १४३१ को वेलतंगडीके कुछ लोगों-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८० पृ० ४५]

४५८

वरांग (द० कनडा, मैसूर)

शक १४३७ = सन् १५१५, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके कृष्णदेवमहारायके समय माघ शु० ५, शुक्रवार, शक १४३७ भावसंवत्सरका है। इसमें तुलुराज्यके शासक रत्नप्पोडेयका उल्लेख किया है। देवेन्द्रकीर्तिकी प्रार्थनापर इस वसदिके लिए देवराय-द्वारा पहले दी हुई भूमिके पुनः खेतीयोग्य बनानेका इसमें उल्लेख है। यह कार्य अक्कम्म हेग्गिडिति तथा उनके सहयोगियों-द्वारा सम्पन्न हुआ था]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ पृ० ४९ क्र० ५२८]

४५९

चामराजनगर (मैसूर)

सन् १५१८, कन्नड

[इस लेखमें अरिकुठारके महाप्रभु कामैय नायकके पुत्र वीरैय नायक-द्वारा विजय (पार्श्व) नाथ मन्दिरके लिए सन् १५१८ में कुछ दानका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५१]

४६०

कोह्न नगोरी (जयपुर, राजस्थान)

संवत् १५७७=सन् १५२१, संस्कृत-नागरी

[इस लेखकी तिथि माघ शु० ५, संवत् १५७७ यह है। इसमें मूल-संघ-वलात्कारगणके आचार्योंकी परम्परा दी है तथा खण्डुलवाल अन्वयके राय रामचन्द्रके शासनका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१६ पृ० ६९]

४६१

वरांग (द० कनडा, मैसूर)

शक १४४४=सन् १५२२, कन्नड

[यह लेख पोंबुच्चके राजा इम्मडि भैरवरसके समय चैत्र व० १२, सोमवार शक १४४४ चित्रभानु संवत्सरका है। इसमें राजा-द्वारा वरांगके नेमिनाथ वसदिके लिए भैरवपुर नामक ग्रामके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२९ पृ० ४९]

४६२

सोदे (उ० कनडा, मैसूर)

शक १४४५=सन् १५२२, संस्कृत-कन्नड

[यह ताम्रपत्र आषाढ़ पूर्णिमा शक १४४५ चित्रभानु संवत्सरका है। तौलव प्रदेशके क्षेमपुर (गेरसोप्पे) नगरसे इम्मडि देवराय ओडेयर्ने वण्डुवाल ग्रामकी कुछ भूमि लक्ष्मणेश्वरके शंखजिनवसतिके लिए दान दी थी। यह दान देशीगणके चन्द्रप्रभदेवके लिए था।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ६९]

४६३

सोंड (जि० उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १४४४ = सन् १५२२, कन्नड

[यह ताम्रपत्र यहाँके भट्टाकलंक मठमें प्राप्त हुआ। हुलिगेरेकी शंख-जिनर वसतिके लिए मल्लिसेट्टिने मासूरु मोसलेयकुरुवु विभागमें इम्मडि देवराज ओडेयरुसे कुछ ज़मीन खरीदकर दान दी। इसकी प्रेरणा देसिगणके विजयकीर्तिदेवके शिष्य चन्द्रप्रभदेवने दी थी। श्रावण शु० ५, गुरुवार, शक १४४४, विपु संवत्सर यह इसकी तिथि है।]

(रि० सा० ए० १९३९-४० ए० क्र० १५ पृ० २२)

४६४-४६५

श्रृंगेरी (मैसूर)

१६वीं सदी (सन् १५२३), कन्नड

[ये दो लेख हैं। पहला अनन्तनाथमूर्तिके पादपीठपर है। चैत्र कृ० ५, रविवार, स्वभानु संवत्सरके दिन यह मूर्ति अर्पित की गयी थी। इसका स्थापक हलुमिडि निवासी देविसेटिका पुत्र देवणसेटि था। मूर्तिका वजन १८० हल कहा गया है। दूसरा लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर है। यह मूर्ति आदिसेट्टिके पुत्र बोम्मरसेट्टि-द्वारा वैशाख शु० १, गुरुवार, स्वभानु संवत्सरके दिन अर्पित की गयी थी। दोनों लेखोंकी लिपि १६वीं सदीकी है अतः संवत्सरनामानुसार ये शक १४४५ अर्थात् सन् १५२३ के प्रतीत होते हैं।]
(मूल लेख कन्नडमें मुद्रित)

[ए० रि० मै० १९३३ पृ० १२४]

४६६

नेल्लिकर (द० कनडा, मैसूर)

शक १४४७=सन् १५२५, कन्नड

[यह लेख स्थानीय अनन्तनाथवसदिके प्राकारमें है। देवण्णरस उपनाम कोन्नकी वहन शंकरदेवी-द्वारा कीयरवुरकी वसदिके लिए घनु १५, रविवार, शक १४४७, तारण संवत्सरके दिन कुछ भूमिके उत्पन्नके दानका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२२ पृ० ४९]

४६७

पल्लिच्चन्दल् (द० अर्काट, मद्रास)

शक १४५२=सन् १५३०, तमिल

[यह लेख एक भग्न जैनमन्दिरके स्थानपर है जिसे शैनियम्मण् कोयिल् कहा जाता है। विजयनगरके राजा अच्युतदेवमहारायने वैयप्प नायकके निवेदनपर शर्णवैके नायनार् विजयनायकर् नामक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए जोडि और शालुवरि करोंका उत्पन्न अर्पण किया था। यह राजाज्ञा वेलूर वोम्मुनायकके समय उत्कीर्ण की गयी ऐसा लेखमें कहा है। तिथि मिथुन शु० १०, बुधवार, शक १४५२, नन्दन संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ४४९ पृ० ५१]

४६८

पटना म्युजियम (विहार)

संवत् १५९३=सन् १५३१, संस्कृत-नागरी

[यह लेख एक पीतलकी जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना मूलसंघ-कुन्दकुन्दाचार्यान्वयके मण्डलाचार्य धर्मचन्द्रके उपदेशसे खंडेलवाल

अन्वयके कुछ सज्जनोंने की थी। प्रतिष्ठा तिथि ज्येष्ठ शु० ३, सोमवार, संवत् १५९३ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १६२ पृ० ३३]

४६९

हनुमंतगुडि (रामनाड, मद्रास)

शक १४५५ = सन् १५३३, तमिल

मल्लवनाथ जैन मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलाओंपर

[इसमें शक १४५५ के लेखके खण्ड हैं। एकमें जिनेन्द्रमंगलम् अथवा कुरुवडिमिदिका निर्देश है जो मुत्तोरु कूरम् विभागमें था।]

(इ० म० रामनाड २७९)

४७०

नीलत्तनहल्लि (मैसूर)

सन् १५३४, कन्नड

[इस लेखमें सन् १५३४ में मदवणसेट्टिके पुत्र पदुमणसेट्टि-द्वारा अनन्तनाथचैत्यालयमें किसी व्रतके पालनका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८]

४७१

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक १४(६१) = सन् १५३९, कन्नड

[इस लेखमें, जैन और शैवोंके एक विवादके समझौतेका उल्लेख है। यह विवाद जिनमूर्तियोंके सम्मानके सम्बन्धमें था। जैनोंकी ओरसे शंख-वसतिके शंखणाचार्य तथा हेमणाचार्यने और शैवोंकी ओरसे दक्षिणसोमेश्वर

मन्दिरके कालहस्ति और शिवरामने यह समझौता किया था। तिथि ज्येष्ठ शु० १ सोमवार, शक १४(६१), विलंबि संवत्सर ऐसी दी है। (शकवर्षकी संख्याके अन्तिम अंक लुप्त हैं जो संवत्सरनामानुसार दिये गये हैं)।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई १८ पृ० १६२]

४७२.

कारकल (द० कनडा, मैसूर)

शक १४६५=सन् १५४३, कन्नड

[यह लेख (ताम्रपत्र) चैत्र शु० ४ शक १४६५ शोभकृत् संवत्सर-का है। इसमें चन्दलदेवीके पुत्र पाण्डयप्परस तथा तिरुमलरस चौटर इनमें अनाक्रमण सन्धिका उल्लेख किया है। इसके साक्षीके रूपमें जैन आचार्य ललितकीर्ति भट्टारकका उल्लेख हुआ है।]

[रि० सा० ए० १९२१-२२ पृ० ९ क्र० ए ५]

४७३

कुरुगोड्डु (बेल्लारी, मैसूर)

शक १४६७=सन् १५४५, कन्नड

एक भग्न मन्दिरके दक्षिणी दीवालपर

[विजयनगरके राजा वीरप्रताप सदाशिव महारायके समय शक १४६७, विश्वावसु संवत्सरमें यह लेख लिखा गया। रामराज्य-द्वारा जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमिदान देनेका इसमें निर्देश है।]

(इ० म० बेल्लारी ११३)

४७६

काप ताम्रपत्र (जि० दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १४७९ = सन् १५५६, संस्कृत-कन्नड

१ श्री धर्मनाथ (ने) शरणु ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलांछनं । जीया-

२ त्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ स्वस्तिश्रीसकलज्ञान-साम्राज्यपदराजितः । व-

३ र्धमानजिनाधीशः स्याद्वादमठभासुरः ॥ तिन्त्रिणीगच्छवाराशेः-सुधांशुर्ज्ञानदी-

४ धितिः । सद्धर्मसरसीहंसः प्रवादिगजकेसरी ॥ काणूर्गण-नमोभागे भासाति मुनि-

५ कुं (ज) रः । अज्ञानतिमिरोद्धतिः श्रीमान् भानुमुनी(श्व)रः ॥ पंचाचारशरध्वस्तपंच-

६ बाणशरव्रजः । अखण्डश्रीतपोलक्ष्मीनायको भानुसंयमी ॥ श्रीमद्भानुमु-

७ नीश्व(रो) विजयते स्याद्वादधर्माम्बरे श्रीमद्ज्ञानविनूत्नदीधिति (श)तध्वस्तान्धका-

८ रव्रजः । श्रीमूलामलसंघनीरजमहाषण्डेष्वखण्डश्रियं व्यात (न्व) न् मुनि-

९ कोकचारुनिकरं सौख्यार्णवे मग्नयन् ॥ तुलुदेशवेम्बभूपन पोलेव महाप-

१० दकदंद्रे येसगं (से) गुं निच्कं । धरेयोलगे कापिन नगरद नेलन-नाल्व भूप मद्दहेग्गडेयेम्बं ॥

११ पंगुलवलि अधिपतियनु पोगलसदे नेलके तानु नृपकुलतिलकं । संगतसभेयोलु

१२ पो (गलुं) अंगजजयजिनपदाब्जमधुकरनेंवं ॥ भूदेविय मुखकंनडि वाडॆं हेल्व-

१३ गॆं कापुवेनिसिद नगरं । आदरदिंन्नदरो (ल्गा) मेदिनिमतधर्म-नाथनेन (से) गुं जिनपं ॥ आ नगर-

१४ क्कधिपतियुं श्रीपति तिरु (म) रस नृप (अ)वनीतिलकं । वोमनदल्लि आतानुं वोतुकरं मुक्तिल-

१५ क्ष्मिगित्तं मनमं ॥ येनेम्बे मद्दहेग्गडे दानचतुर्विधक्के ताने चिंतारत्नं । सन्नुतगुणगण-

१६ निलेयं उन्नतशीलवनु तात्द (नृ) परिपुसंहारं ॥ धर्मदोलं (दृढ) चित्तनु निर्मल-

१७ गुरुभक्तियल्लि तिरुमरसनृपं । धर्मजिनजैनशासनमं वोम्मन्दि तानु माडि क्रिति (य)

१८ नित्तं ॥ स्वस्ति श्री जयाभ्युदय शालिवाहनशकवर्ष १४७९ नेय संद नलसंवत्सर-

१९ द कार्तिक शुद्ध १ आदित्यवारदलु श्रीमन्महाराजाधिराजराजपर-मेश्वर सत्यरत्नाकर

२० शरणागतवज्रपंजर चतुःसमुद्राधीश्वर कलियुगचक्रवर्ति श्रीवीर-प्रताप सदाशिव-

२१ राय राजराजेंद्र दक्षिणभागभाग्यदेवतासंनिभरुमप्प रामराजय्य-नवरु ये-

२२ क (च्छ) त्रदिं राज्यवनु प्रजिपालिसुतिर्द कालदलु बारकूरु मंगलूरलु सदा(शि)वनायकरु

२३ राज्यवं गे(य्वि)तिर्द कालदलु तुलु(व)देशकामिनीमुखकमलतिल-कायमानानादिसि-

२४ द्धप्रसिद्धकापिसिंहासनोदयाचलालंकरणतरुणतरणीप्रकाशरुं-अनन्यराजन्यसौ(ज)-

२५ न्य (औ)दार्यवीर्यधैर्य(मा)धुर्यगांभीर्यनयविनयसत्यशौचाद्यनं-
तगुण-
२६ गणनूत्नरत्नाभरणगणकिरणोद्योतितभरतादिसकल (पु)राणपुरुष-
रूमप्प
२७ तिरुमलरसराद मद्दहेग्गडेयरु अवर नालिनवरु गणपणसावंतरु
कापिन राज्यव-
२८ नु प्रतिपालिसुतिर्दं कालदलु ॥ स्वस्ति श्रीमद्रायराजगुरु मंडला-
चार्य महा-
२९ वादवादीश्वर राज्यवादिपितामह सकलविद्व(ज्ज)नचक्रवर्तिगलुं
इत्याद्यनेकवि-
३० रुदावलीविराजमानरुं काणूर्गणाग्रण्यरुगलुमप्प श्रीमदभिनव-
३१ देवकीर्तिदेवरुगल शिष्यरु मुनिचंद्रदेवरुगलु (अ)वरुगल शिष्यरु
देवचंद्रदे-
३२ वरुगलु तम्म गुरु मुनिचंद्रदेवरुगलिगे स्वर्गापवर्गक्के कारणवागि
कापिन-
३३ लु धर्मवनु मादवेकेंत्र चित्तदिंद तिरुमलरसराद मद्दहेग्गडेयरु
कूं (कू)-
३४ डेयु अवर नालिनवरु गण(प)णसामंतर कूडेयु कापिन हलर
सहायदिं-
३५ द धर्मक्के वोंदु क्षेत्रवनु कोडवेकु येंदु चित्तैसलागि अवरुगलु धर्म-
३६ परिणामस्वरूपवने वुल्लवराद कारण गुरुभक्तियिंद तम्म सीमेय-
३७ लुम(ह्रा)रेम्ब (चू)रोलगे पडु(व)ण दिक्किनलु कलंतोपतिना
वाल्केयलु अगलि-
३८ द वोलगे वेट्टिन गद्देल्कं वीज वल्ल मूवत्तर लेक्कद वत्त मूडे २
मत्तम-

३९ गालिंदं होरगे पापिनादियेंव गद्देल्कं वीज वल्ल मूवत्तर लेकद वीज
४० मूडे ४ मत्तं वागिल गद्देल्कं वीज वल्ल मूवत्तर लेक्कद मूडे ४ गद्दे मू-

पिछला भाग

४१ रकं वीज मूडे १० ई भूमिगलिगे वुल्ल करे मुरे मने बावि हलसु माबु सुं-
४२ वे निक्लिलक्कंदें कदिरु जल पाषाण सह मूलधारेयनु एरडु को-
४३ ट्टु यिसिकोंद दोड्डवराहग ८० अक्षरदलु यंमट्टु वराह यी हों-
४४ न्निगे येरडु वेलेयलु सह वर्षल्के वह अक्कि अंगडिय होरिगेय
४५ वल्ल ऐवत्तर लेक्कद अक्कि मूडे २४ ई अक्किगे नडव धर्मद विवर कापिन वस्ति-
४६ य केलगण नेलेयलु धर्मतीर्थकरसन्निधियलु मध्याह्नकालदलु नित्यद -
४७ लु दिन वोंदक्के वोंडुवल्ल अक्कि नैवेद्यक्कु (मु) निचंद्रदेवरुगल हेस-
४८ रिनलु नड(व) हालधारेगु सह अक्कि मूडे १० तिंगलु तिंगलु तप्पदे तिं-
४९ गललिल १७ होहाग नडव वार १ मत्तं इप्पत्तैदु २५ होहाग नडव
५० वार १ अंतु तिंगलल्लि येरडु वार समदाय नडवुदक्के अक्कि मूडेवु
५१ १२ई वारंगलल्लि मंगलत्रयोदशी वहाग आ मंगलत्रयोदशी नडव-

५२ (दँट्टु) विशेषवागि यिरिसिद अक्कि मूडे २ अंतु अक्कि मूडे यिप्पत्तनाल्कु
५३ यी धर्मद स्थलदल्लि वल्लारिगे अनाय सनाय सल्लद्दु इल्ल आ स्थ(ल)गदल्लु इद्द
५४ चोक्कलिगे बिट्टि बिडार सल्लद्दु काणिके देसे अप्पणे पददल्लि येत्तु सल्लद्दु येँट्टु
५५ सर्वमान्यवागि तिरुमलरसराद मद्दहेग्गडेयरु अवर नालिनवरु ग-
५६ णपणसामंतरु सह तम्म धर्मपरिणामनिमित्तवागि तम्म स्वरुचि-
५७ यिंद गुरुभक्तियिंद बोडंबट्टु बरसि कोट्ट तांम्रशासन इंत-
५८ प्पुदक्के साक्षिगलु अधिकारि कांतसेट्टि चटं विक्रसेट्टि सामणि संकर-
५९ सेट्टि राजसेट्टि बग्गे(से)ट्टिय अलिय केसण मूल्लर बेलिले विरुमाल
६० दुग्ग वंडारि विरुसामणि यिंतिनवर बुमथान्म(त)दिं मं-
६१ गल्लूरु संकै सेनबोवन बरह। यिंती धर्मशास(न)क्के मंगल-
६२ महा श्री श्री श्री ॥ स्वदत्ताद् द्विगुणं पुण्यं परदत्तानुपालनं।
६३ परदत्तापहारेण स्वदत्तं निष्फलं भवेत्॥ दानपालनयोर्मध्ये
६४ दानाच्छ्रेयोनुपालनं। दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं
६५ पदं॥ यी धर्मशासनक्के आवनानोब्व जैननादव तप्पिदरे बेलुगु-
६६ लद गुम्मटनाथ कोपणद चंद्रनाथ ऊर्ज्जंतगिरिय नेमीश्वर-
६७ मोदलाद जिनबिंबगलनोडद पापक्के होहरु शैवनादरे प-
६८ र्वतगोकर्णमोदलादवरल्लि कोटिलिंगवनोडद पापक्के होहरु
६९ वैष्णवनादरे तिरुमलेमोदलादवरल्लि कोटिविष्णुमूर्तियनोड-
७० द पापक्के होहरु ॥ भद्रं भूयाज्जिनशासनस्य ॥ श्री

[यह ताम्रपत्र शक १४७९ में लिखा गया था। उस समय विजय-नगरसाम्राज्यके अधिपति सदाशिवराय थे तथा रामराज उनके प्रधान सेनापति थे। इस साम्राज्यके बारकूरु तथा मंगलूरु प्रदेशपर केलडि सदाशिव नायककी नियुक्ति की गयी थी। इस प्रदेशमें काप नगरका अधिकारी मद्द हेग्गडे था। इसने धर्म्मनाथ तीर्थंकरकी पूजा आदिके लिए मल्लारु गाँवमें कुछ जमीन दान दी जिसकी आय ८० वराह थी (वराह उस समयकी रौप्यमुद्राकी संज्ञा थी)। यह दान अभिनव देवकीर्तिके प्रशिष्य तथा मुनिचन्द्रके शिष्य देवचन्द्रके उपदेशसे दिया गया था। इसके पहले मूलसंघ-काणूरगण-तिन्त्रिणीगच्छके भानुमुनीश्वरकी प्रशंसा की गयी है। देवचन्द्र भी काणूरगणके ही थे। अन्तमें दानकी रक्षाके लिए जो शाप दिये हैं उनमें श्रवणबेलगोलके गोम्मटेश्वर, कोपणके चन्द्रनाथ तथा गिरनारके नेमिनाथकी मूर्तियोंका उल्लेख किया है]

[ए० इं० २० पृ० ८९]

४७७

चिप्पगिरि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

शक १४८२=सन् १५६०, कन्नड

[इस लेखमें आदवानीके विशालकीर्तिगुरु तथा चिप्पगिरिके श्रावकों-द्वारा चतुर्थमुनीश्वरकी वन्दनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ७४]

४७८

मूडबिदुरे (जि० दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १४८५=सन् १५६३, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें बिदुरे नगरकी चण्डोग्र पारिश्वतीर्थंकर बसतिके लिए शंकरसेट्टि ऊर्फ विरणन्तर-द्वारा उसकी बहन शंकरदेवीके आग्रहसे कुछ

धन दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान अभिनव चारुकीर्ति पण्डितके आज्ञावर्ती सेट्टिकारोंको सौंपा गया था। १२५० वराह मुद्राओंके एक और दानका भी इसमें उल्लेख है। तिथि मेष (त्रयोदशी), शुक्रवार, शक १४८५, रुधिरोद्गारी संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० १ ए]

४७९

प्रिन्स आफ़ वेल्स म्युज़ियम, बम्बई

शक १४८५ = सन् १५६३, शिलालेख क्र० B.B. २०७, कन्नड

[यह लेख चैत्र शुक्ल १२, सोमवार, शक १४८५, दुन्दुभि संवत्सर, के दिन लिखा गया था। विट्ठप्प नायक तथा हेम्मरसि नायिकितिके पुत्र सालुव नायक-द्वारा गेरसोप्पेमें शान्तिनाथका मन्दिर बनवाये जानेका तथा इस मन्दिरको कुछ ज़मीन दान देनेका इसमें निर्देश है। इसमें नगिरे, हैवे, तुलु तथा कोंकण इन पश्चिम समुद्रतटके प्रदेशोंपर रानी चेन्न भैरा-देवीके शासनका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० (१९५०-५१) क्र० २४]

४८०

मूडबिदुरे (मैसूर)

शक १४९३ = सन् १५७१, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें मीचारमागाणे विभागके मरकत ग्रामकी कुछ ज़मीन बिदुरेकी बसतिमें आहारदानके लिए अर्पित करनेका उल्लेख है। यह दान चौट कुलकी अब्बक्कदेवीने उसकी बहन पदुमलदेवीकी पुण्यवृद्धिके लिए दिया था। पुत्तिगेके शासक इस दानका भंग न करें ऐसी सूचना अन्तमें दी है। तिथि पौष शु० ८, रविवार, शक १४९३ प्रजोत्पत्ति संवत्सर, इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० ए ३]

४८१

महेश्वर (मध्यप्रदेश)

सं० १६२७=सन् १५७१, संस्कृत-नागरी

[यह लेख सम्राट् अकबरके राज्यकालमें संवत् १६२७ में लिखा गया था। मालवामें उस समय ख्वाजा अजीज़ बेग प्रान्तीय शासक नियुक्त था। इस समय मण्डलोई सुजानरायने महेश्वरस्थित आदिनाथ-मन्दिरका जीर्णोद्धार किया।

अकबरके शासनकालके अन्य दो लेख यहीं प्राप्त हुए हैं। इनमें मण्डलोई देवदास (सुजानरायके बन्धु) द्वारा संवत् १६२२ में महेश्वर मन्दिरका तथा संवत् १६२६ में कालेश्वर मन्दिरका जीर्णोद्धार किये जानेका उल्लेख है। इस तरह जैन सज्जनों-द्वारा जैनेतर मन्दिरोंकी सहायता-का यह उदाहरण है।]

[इ० हि० का० १९४७ पृ० ३९२]

४८२

कुच्चंगि (तुंकूर, मैसूर)

सन् १५७३, कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें कहा है कि नाल्कुवागिलु निवासी बोम्मिसेट्टिके पुत्र दानप्पने यह मूर्ति तथा प्रभावलि सन् १५७३में स्थापित की।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

४८३

चित्तामूर (द० अर्काट, मद्रास)

शक १५००=सन् १५७८, कन्नड-तमिल-संस्कृत

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके मानस्तम्भपर है। इस स्तम्भकी

स्थापना जगतापिगुत्ति निवासी वायिसेट्टिके पुत्र बुद्दशेट्टिने शक १५००, दहुधान्य संवत्सरमें की ऐसा इसमें उल्लेख है। स्तम्भके दूसरी ओर संस्कृत भाषा और कन्नड लिपिमें इसी वर्णनका लेख है। इसमें बुद्दशेट्टिको महा-नागकुलका कहा गया है।]

[रि० सा० ए १९३७-३८ क्र० ५१७-१८ पृ० ५७-५८]

४८४

कारकल (द० कनडा, मैसूर)

शक १(५)०१ = सन् १५८०, कन्नड

[इस लेखकी तिथि कार्तिक शु० १, शक १(५)०१ है। प्रारम्भ श्रीमत्परमगम्भीर.... आदि श्लोकसे है। अन्य विवरण लुप्त हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३७ पृ० ५२]

४८५

सेतु (शिमोगा, मैसूर)

शक १५०५ = सन् १५८३, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशक वरुष १५०५ चित्रभानु-संवत्सरद भाद्रपद सुद्ध १० शुक्रवारदंदु करूरु नाड चेंपल्लिय तिम्म गौडरु यिवल्लिय नायक्क गौडरु जट्टिगौडर मग सेट्टि-गौडरु आ समस्त श्रावकरु सह मुंतागि सेतुविन वसदि श्री आदितीर्थेश्वररिंगे माडिस्त लोहद

२ प्रभावलिगे आ समस्त जनंगलिगे मंगल महा श्री श्री श्री विरपयनु माडिदुदु

[यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना भाद्रपद शु० १० शक १५०५ के दिन हुई थी। स्थापक चैपल्लि ग्रामके तिम्मगौड तथा यिवल्लि ग्रामके सेट्टिगौड थे।]

[ए० रि० मै० १९४४ पृ० १६७]

४८६

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०६ = सन् १५८४, कन्नड

१ शुभमस्तु नमस्तुंगशिरश्चुंबिचंद्रचामर (चार)वे
२ त्रैलोक्यनगरारंभमू(ल) स्तंभाय शंभवे ॥ स्वस्ति श्री-
३ विजयाभ्युदय सासिवाहसकवरुष १५०६ नेय संद वर्तमान।
४ तारण सं। आश्विजा शु १० मि आदिवारदलु श्रीमतु। दानिवा-
५ सद चेन्नरायवडेर। मक्कलु चिक्कवीरप्पवाडेरु मक्कलु चेन्नवि-
६ रवाडेरु गेरसोप्पे समंतभद्रदेवर सिष्यरु गुणभद्रदेवरु सिष्य-
७ रु। वीरसेनदेवरिगे। कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेन्तेन्दरे मालेपा(ल)
८ बन्दप्पन मग लिंगण्णनु। नष्टसन्तनवा(गि)होद सम्मंद। आतन भू-
९ मि नागलपुरद ग्रामद वलगे तेंगिनहितलगद्दे ख ६ कंडुग वंभ-
१० त्तु बीजवरि। आ भूमि नम्म आरमनिगे हरवरियागि बन्द
११ सम्मंद। यी वीरसेनदेवरिगे क्रेयावागि कोट्टेवागि आ भूमि-
१२ गे सलुव क्रय द्रव्य। लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरि- कल्पित उ-
१३ भयवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव पियसाहेनिजग-
१४ हि वरह ग ३२ अक्षरदलु मूवत्तु येरडु वरहनु। तरविस उलि-
१५ यदे। सले-साकल्यवागि सल्लिसि कोण्डेवागि। आ भूमिगे सलुव चत्तु-
१६ सीमेय विवर। मूडलु। ई गद्देय नीरएरंकल आगलिंदं पडुलु

१७ तंकलु केरेएरियिदं व(ड)गलु ॥ पडुवलु गुरुवप्प हेबरुवन तो-
१८ टर्दिदं मूडलु । वडगलु हानम्बियिंद तेंकलु । यिंती चतुस्सि-
१९ मेवलगुल्ल । निधि । निक्षेपजल । पासण अक्षीणि । आगमि । सिद्धसां-
२० ध्यंगलॅव । अष्टामोग तेजसाम्यवलु नीउ निम्म शिष्यरु पा-
२१ रम्पर्यंवागि सुखदिं वोगिसि वहिरि यन्दं वरसि कोट क्रय शा-
२२ सन पटे यिद्क्के अविलासे विटवरु देवलोक मर्त्यलोकक्के विर-
२३ हितरू । श्रीहत्य । गोहत्यक्क वजिनरहरू । विरपव-
२४ डेरु श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

[यह लेख आश्विन शु० १०, रविवार, शक १५०६, तारण संवत्सरके दिन लिखा है। इसमें दानिवासके शासक चेन्नरायके पौत्र तथा चिक्क-वीरप्पके पुत्र चेन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है। वीरसेनके गुरु गुणभद्र तथा प्रगुरु समंतभद्र थे। उन्होंने ३२ वराह मूल्य देकर यह भूमि खरीदी थी जो पहले भालेपाल वन्दप्पके पुत्र लिंगण्णकी थी और उसके सन्तानरहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी। यह भूमि नागलापुर गांवके क्षेत्रमें थी।]

[ए० रि० मैं० १९३१ पृ० १०४]

४८७

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०७ = सन् १५८५, कन्नड

१ सुभमस्तु । नमस्तुंगशिरश्चुंबिचंद्रचामरचा-
२ रवे त्रैलोक्यनगरारंभमूलस्तंभाय शंभवे (।) स्व-
३ स्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरुष १५०७
४ संद वर्तमान पार्थिवसंवत्सरद चयित्र व ७ मि आदि-

५ वारदलु श्रीमत्तु । दानिवासद चेन्नरायवोडेयर म-
६ क्कलु । चिक्कवीरप्पवोडेयर मक्कलु । चेन्नवीरप्पोडेयरु । गेरसो-
७ प्पे समंतभद्रदेवर सिप्यरु । गुणभद्रदेवर सिप्य-
८ वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेंत्तें-
९ दरे । वालेपाल तम्मयन मग नरसप्पनु नष्टसं-
१० तानवागि होद सम्मंद आतन भूमि यीचलदाल ग्रामदकि ।
११ एण्टु खण्डुग बिजवरि भूमि नम्म अरमनिगे हरवरियागि
१२ वन्द सम्मंद आ भूमिनू दानिवासद चेन्नरायवोडेय-
१३ र मक्कलु । चिक्कवीरवोडेयर मक्कलु चेन्नवीरवोडेयरु ।
१४ गेरसोप्पेय समंतभद्रदेवर शिप्यरु गुणभद्रदेवर शिप्यरु
१५ वीरसेनदेवरिगे । क्रेयवागि कोटवागि । आ भूमिगे । सलुव । क्र-
१६ यद्रव्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरिकलित उभे-
१७ यवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव प्रिय-
१८ सूहे । निजगति वरह गद्याण ग ३० अक्षरदलु मू-
१९ वत्तु वरहंनु तारविस उलियदे सल्लिसि कोण्डेवागि । आ एण्टु
२० खण्डुग भूमिगे सलुव चतुसीमेय विवर मूडलु नन्दिगाव ।
२१ तिम्मरसैयन गदेयिंदल पडुवलु । पडुवलु नरसोपुरदं-
२२ हलदिं वलु(?) मूडल । वडगल दरेयिंदल । तेंकल । तें-
२३ कलु अरमनेगदेयिंदलु वडगल । यिंति चतुसीमेयोलगु-
२४ ल निधि निक्षेप जल पाषाण अक्षीणि आगमि सिध साध्यंगलेंब
२५ अष्टभोग तेजसाम्यवनु आगुमादिकोण्डु निवु निम्म शिष्य-
२६ रु पारम्परेयागि आचंद्रार्कस्तायियागि सुखदिं भोगिसि
२७ वहिरि येंदुवरसि कोट क्रयस्यासनपटे यिदक्के अभिला-
२८ से वटवरु देवलोक मर्त्यलोकक्के विरहितरु । ओहत्य
२९ गोहत्यक्के वजनरहरु चेन्नवीरवोडेरु श्री
३० श्री श्री श्री

[यह लेख चैत्र व० ७, रविवार, शक १५०७, पार्थिव संवत्सरके दिन लिखा है। इसमें दानिवासके शासक चेन्नवीरप्प वोडेयर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है। इस भूमिके लिए ३० वराह क़ीमत दी गयी थी। यह पहले वालेपाल तम्मयके पुत्र नरसप्पकी थी जो पुत्ररहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी। भूमि यीचलदाल ग्रामके क्षेत्रमें थी।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०८]

४८८

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

सन् १५८५, कन्नड

[यह लेख आदिनाथबसदिके गोमुखपर है। चारुकीर्ति पण्डितदेवके शिष्य तथा ब्राह्मणप्रमुख चिक्कणय्यके पुत्र पण्डितय्य द्वारा आदीश्वर, चन्द्रनाथ तथा शान्तीश्वरकी मूर्तियोंकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। समय सन् १५८५ है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५१]

४८९

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०९=सन् १५८७, कन्नड

१ शुभमस्तु। नमस्तुंगशिरश्चुंबिचंद्रचामर-
२ चारवे त्रैलोक्यनगरारंभमू(ल)स्तंभाय शंभवे।
३ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहन शक वरुष १५०९
४ नेय सर्व्व वर्तमान। सर्वजित्तु सं। वयिशाक शु ५ मि
५ यु आदिवारदलु श्रीमत्तु। दानिवासद चेन्नरा-

६ यवडेर मकलु । चिक्कवीरप्पवाडेर मक्कलु चेन्नविरवा-
७ डेरु । गेरसोप्पे समंतभद्रदेवर शिष्यरु । गुणभद्रदेव-
८ र सिप्यरु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रम-
९ वेंतेंदरे नाल्पुरद ग्रामदोलगे संकण्णन मग मल-
१० यन डोंकिन कोड्डिगे खिजवरि ख १० हत्तु खण्डुग भूमि
११ यु । सलविट्टु नम्म आरमनिगे हरवरियागि मंद सं-
१२ मंद । यी वीरसेनदेवरिगे क्रेयक्के कोटेवागि । आ भूमिगे सलु-
१३ व क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित । तत्कालोचितमध्यस्तपरिकल्पित
१४ उभयवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव प्रियसा-
१५ हे । निजगटि वरह ग ४० अक्षरदलु नाल्वत्तु वरहनु । तर
१६ विस उल्लियदे साकल्यवागि । सलिसि कोण्डेवागि आ भूमिगे सलु-
१७ व चतुसिमेय विवर । मुडलु यिगद्देय नीरेरकलगलिं-
१८ द पडुवलु । वडगलु केरेयेरियिंदं तेंकलु तेंकलू नं-
१९ म गद्देयिंदं वडगलु । यिंती चतुरसीमेयोलगुल नि-
२० धि निक्षेप जल पासण अक्षीणि आगमि सिध सांध्यंग-
२१ लेंव आष्टभोग तेजसाम्यवंनु निडनिम्म शि-
२२ ष्यरु पारम्परियवागि सुखदिं बोगिसि बहिरि
२३ येंदु वरसि कोट क्रयशासनपटे । यिद्दक्के अविला(पे) वटवरु दे-
२४ वलोक मर्त्यलोकक्के विरहितरु श्रीहत्य गोहत्यक्के वजनरह-
२५ रु । चेन्नवीरवडेरु श्री श्री श्री श्री श्री

[यह लेख वैशाख शु० ५, रविवार, शक १५०९ सर्वजित संवत्सर इस तिथिका है । दानिवासके शासक चेन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका इसमें उल्लेख है । नालपुर ग्रामकी यह भूमि ४० वराह क़ीमत देकर ख़रीदी गयी थी ।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११०]

४९०

रत्नत्रयवसदि बीलिगि, (उत्तर कनडा, मैसूर)

१६वीं सदी (सन् १५८७)

[इस लेखमें मूलसंघ-देसिगण-पुस्तकगच्छके श्रवणवेलगुल मठके चारु-कीर्ति पण्डितका उल्लेख किया है। इन्हें रायराजगुरु, मण्डलाचार्य, वल्लाल-रायजीवरक्षापालक आदि उपाधियाँ प्राप्त थीं। इनकी परम्परामें श्रुतकीर्ति पण्डित हुए। इनकी शिष्यपरम्परा इस प्रकार थी–श्रुतकीर्ति–विजयकीर्ति–श्रुतकीर्ति (द्वितीय) – विजयकीर्ति (द्वितीय) अकलंक – विजयकीर्ति (तृतीय) – अकलंक (द्वितीय) – भट्टाकलंक। भट्टाकलंकदेवका समय शक १५१० = सन् १५८७ दिया है। संगीतपुरका लोकप्रयुक्त नाम हाडुवल्लि है। यहाँके राजा इन्द्रभूपालको विजयकीर्ति (प्रथम) की कृपासे सिंहासन प्राप्त हुआ ऐसा कहा गया है। विजयकीर्ति (द्वितीय) की प्रेरणासे पश्चिम समुद्र तटपर भट्टकल नगरकी स्थापना हुई थी।]

[ए० इं० २८ पृ० २९२]

४९१

जि० दक्षिण कनडा (स्थान नाम अज्ञात)

शक १५१३ = सन् १५९१, कन्नड

[यह ताम्रपत्र शक १५१३ खर संवत्सरमें किन्निग भूपालने दिया था। इसमें एक जैन मन्दिरके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है।]

(इ० म० दक्षिण कनडा २)

४९२-४९३

रायबाग (मैसूर)

शक १५१९ = सन् १५९७, संस्कृत-कन्नड

[ये दो लेख स्थानीय आदिनाथमन्दिरके दो स्तम्भोंपर हैं – एक कन्नडमें है तथा दूसरा उसीका संस्कृत रूपान्तर है। इसमें ज्येष्ठ व० १४, शक १५१९ के दिन मूलसंघ-सेनगणके सोमसेन भट्टारक-द्वारा इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५२-५३ पृ० २३]

४९४-४९५

मारूरु (दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १५२० = सन् १५९८, कन्नड

[ये दो लेख हैं। मारूरुके पार्श्वनाथवसतिमें स्थित तीर्थंकरमूर्तियोंकी पूजाके लिए पार्श्वदेवी विन्नाणि-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका इनमें उल्लेख है। पहला लेख चैत्र शु० ३, सोमवार, शक १५२० का है तथा दूसरा लेख पौष शु० २ शुक्रवार, शक १५२० का है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ७४-७५]

४९६-४९७

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

संस्कृत-ग्रन्थ, १६वीं सदी

[यह लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है। पुष्पसेन योगीन्द्रके गुरु समन्तभद्रकी अक्षय कीर्तिका इसमें वर्णन है।

यहींके एक अन्य लेखमें मुनिभद्रस्वामीका नामोल्लेख किया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३४, १४५]

४९८

हुमच (मैसूर)

१६वीं सदी, कन्नड

१ श्रीबोम्मरसनु रूपवतिदिदनू

[यह लेख पार्श्वनाथबसदिमें स्थित क्षेत्रपालमूर्तिके पादपीठपर १६वीं सदीकी लिपिमें हैं। इसमें मूर्तिके निर्माताका नाम बोम्मरस दिया है।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७]

४९९

सेतु (शिमोगा, मैसूर)

१६वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीगुम्मैय सेट्टियर बस्तिय श्रीवर्धमानस्वामिय संनिधानदल्लि गणपणसेट्टियर मग संघय्यसेट्टियरु तमगे पुंण्यार्तवागि प्रतिष्टे माडिसिद अभिनन्दनतीर्थेश्वरनिगे मं-

२ गल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[इस लेखमें संघय्य सेट्टि-द्वारा अभिनन्दन तीर्थंकरकी इस प्रतिमा की स्थापनाका निर्देश है। इस समय गुम्मैयसेट्टिकी बसतिके वर्धमानस्वामी उपस्थित थे। लिपि १६वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मैं० १९४४ पृ० १६६]

५००-५०१

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१६वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें एक पद्यमें कोण्डैमलै निवासी गुणवद्दिरमुनिवन् (गुणभद्रमुनि) की प्रशंसा की गयी है जो दक्षिणप्रदेशमें तमिल और संस्कृतके

सुप्रसिद्ध विद्वान् थे। लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है तथा चन्द्रनाथमन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है। मन्दिरके मण्डपकी दीवालपर खुदे एक अन्य लेखमें इन्हीं आचार्यको वीरसंघप्रतिष्ठाचार्य यह विशेषण दिया है।

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र०, ३०२ पृ० ६५]

५०२

सोंदा (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १५३० = सन् १६०७, कन्नड

पहली ओर

१ श्री (।) स्वस्ति (।) श्रीजयाभ्युदय शालिवाह-

२ नशकवरुष १५३० नेय प्लवंगसंवत्सर-

३ द कार्तिक शु १० बुधवारदलि श्रीमद् राय-

दूसरी ओर

४ (राजगुरुमं) डलाचार्य महावाद-

५ (वादीश्वर रा) यवादिपितामह सकलविद्वज्ज-

६ (नचक्रवर्ति च) ल्लालरायजीवरक्षापा-

तीसरी ओर

७ लक देशिगणाग्रगण्य संगीतपुरसिंहा (सन)-

८ पट्टाचार्य श्रीमदकलंकदेवरुगलु

९ श्रीपंचगुरुचरणस्मरणियिंद स्वर्गस्थरा-

चौथी ओर

१० (द्रु) (।) अवर निषिधिमंटपक्के मंगल महाश्री (।)

११ भट्टाकलंकदेवेन स्याद्वादन्यायवादिना(।)

निषि-

१२ धीमंटपो ह्यधः स्थेयादाचंद्रमा (स्क) रं (॥)

[इस लेखमें देशिगणके प्रमुख संगीतपुरके पट्टाचार्य अकलंकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक शु० १० शक १५३० के दिन हुआ था। उनकी यह निपिधि उनके शिष्य भट्टाकलंकदेव-द्वारा स्थापित की गयी थी।]

[ए० इं० २८ पृ० २९२]

५०३

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १५४१ = सन् १६१९

[यह लेख विजयनगरके महामण्डलेश्वर रामदेव महारायके समय शक १५४१, कालयुक्ति, चैत्र ३ के दिन लिखा गया था। वाल नागम नायक और तलत्तार् लोगों-द्वारा कयिलायप्पुलवर् (नामक जैन विद्वान्) को कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३७]

५०४

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १५४४ = सन् १६२२, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें निर्देश है कि सेनगणके समन्तभद्रदेवने इक्केरिमें केलडि वेंकटप्प नायकसे मिलकर तथा उसके अधीन अधिकारी चिन्नभंडार देवप्पसे साहाय्य पाकर बिदुरे नगरकी त्रिभुवनतिलक वसतिका जीर्णोद्धार कराया। तिथि-वैशाख, शक १५४४, रुधिरोद्गारी संवत्सर।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ४]

५०५

कलकत्ता (नाहर म्युजियम)

शक १५४८ = सन् १६२६, कन्नड

१ सक १५४८ श्रीमूलसंघ भट्टारक
२ श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् प्रणम
३ श्रीमतिर्वार

[यह लेख पीतलकी चौवीसतीर्थंकरमूर्तिके पादपीठ पर है। मूलसंघके धर्मचन्द्र भट्टारकके उपदेशसे श्रीमतिवीर-द्वारा इस प्रतिमाकी स्थापना शक १५४८ में की गयी थी। लिपिसे पता चलता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित है।]

[ए० रि० मैं० १९४१ पृ० २४९]

५०६

कोलारस (शिवपुरी, मध्यप्रदेश)

संवत् १६८४ = सन् १६२८, हिन्दी-नागरी

[इस लेखमें शाहजहाँके अधीन शासक अमरसिंहके समयमें एक जैन चैत्यालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। तिथि आषाढ़ शु० ९, गुरुवार, संवत् १६०॥८४ इस प्रकार दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २४१ पृ० ४८]

५०७

मूडबिदुरे (मैसूर)

शक १५५४ = सन् १६३२, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि बिदुरेके दो विभाग बेट्टकेरी तथा मादलंगडिकेरीमें रहनेवाले श्रावक पहले दीवालीका त्योहार मनाते वक्त

एक दूसरोंसे पत्थर, लाठी आदिसे लड़ते थे। सेनगणके समन्तभद्रदेवने उन्हें इस कार्यसे रोककर दीपाराधना और अन्य पूजाओंसे यह त्यौहार मनानेका आदेश दिया। तदनुसार देवण्ण तथा अन्य शिष्योंके प्रभावसे उसका पालन भी कराया। तिथि-दीपावली, आंगिरस संवत्सर, शक १५५४।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए० ४ पृ० २३]

५०८

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १५६२=सन् १६४१, कन्नड

[इस ताम्रपत्र-लेखकी तिथि शक १५६२ विक्रम, मार्गशिर कृ० २ शुक्रवार, ऐसी है। मंगलूर तथा वारकूरके शासक केलडि वीरभद्र नायकके समयका यह लेख है। पुत्तिगे निवासी चौटवंशके चिक्कराय ओडेयद्वारा अभिनव चारुकीर्ति पण्डितदेव तथा मूडबिद्रेके अन्य श्रेष्ठियोंको संरक्षणका आश्वासन दिये जानेका इसमें निर्देश है। इसके पूर्व अधिकारियोंद्वारा धार्मिक तथा वैयक्तिक सम्पत्तिका अपहरण किया गया था अतः यह आश्वासन जरूरी हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ८]

५०९-५१०

शिवपुरी (मध्यप्रदेश)

संवत् १७०३=सन् १६४७, हिन्दी-नागरी

[इस लेखमें महाराज संग्रामके पोतदार जैन मोहनदास-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यहींके एक अन्य लेखमें गंगादास और गिरधर-

दास-द्वारा मालवदेशस्थित शिवपुरी ग्राममें एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। प्रथम लेखकी तिथि वैशाख शु० ३, शक १५६८, संवत् १७०३ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २५०-५२ पृ० ४८-४९]

५११

सोंदा (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १५७७=सन् १६५५, कन्नड

१ स्वस्ति (i) श्रीजयाभ्यु(द)य शालिवाहनसकव(र्ष)
२ १५७७ जय सं(वत्सर)द कार्तिक सुध्ध दशमि
३ सू(र्यो)दयवाद यरडने घलिगेय-
४ ल्लि देसि श्रीमद् रायराजगुरु मंड-
५ लाचार्यरुं महावादवादीश्वर रा-
६ यवादिपितामह सकलविद्वज्जनच-
७ (क्र) वर्तिग(ळुं) वल्लालरायजीवरक्षापा-
८ लकरुमप्प श्रीमद् भट्टाकलंकर्जीय्य(दे)-
९ वरु
१० (श्री)पंचगुरुचरणस्मर(णेयिंद)
११ चतुसंघ(समक्ष) दल्लि स्व-
१२ र्गवनैदिदरु (i) इं-
१३ ती श्री श्री श्री (ii)

[इस लेखमें देसिगणके श्रीमद् भट्टाकलंकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक शु० १० शक १५७७ के दिन हुआ था। उनकी समाधि पर यह लेख है।]

[ए० इ० २८ पृ० २९२]

५१२

टोडा रायसिंह (जयपुर, राजस्थान)

संवत् १७१८=सन् १६६२, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें अम्बावतीके कछवाह वंशके राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदास-द्वारा विमलनाथ मन्दिरके निर्माणका वर्णन है। तिथि फाल्गुन व० १०, बुधवार, संवत् १७१८ ऐसी दी है। उस समय मुग़ल बादशाह शाहजहाँका राज्य चल रहा था।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१४ पृ० ६९]

५१३

श्रीरंगपट्टम् (मैसूर)

सन् १६६६, कन्नड

[यहाँके आदीश्वरमन्दिरमें सन् १६६६ का एक लेख है। इसमें चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य पायण्ण-द्वारा अष्टाह्निकामहोत्सवके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९१२ पृ० ५६]

५१४

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १५९७=सन् १६७५, कन्नड

[यह लेख भाद्रपद व० ५, रविवार, शक १५९७ राक्षस संवत्सरका है। इसमें नागभूपकी पत्नी वनदाम्बिके द्वारा अर्हत् आदिनाथकी मूर्तिकी पुनः स्थापनाका वर्णन है। यह मूर्ति मुसलमानों-द्वारा भ्रष्ट की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९३ पृ० ८]

५१५

; बेल्लूर (मैसूर)

शक १६०२ = सन् १६८०, कन्नड

१ ॥शुभमस्तु॥ नमस्तुंगशिरश्चुम्बिचंद्रचामर-

२ चारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्तंभाय शम्भ-

३ वे ॥ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरुषंग-

४ लु १६०२ ने रवुद्रि सं । भाद्रपद व १० ल्लु दिल्लिकोल्ला-पुरजि-

५ नकंचिपेनुगोंडेसिंहासनद समंतभद्रस्वामिगळ शि-

६ ष्यराद वीरसेनभट्टारकरवर प्रियशिष्यराद लक्ष्मीसेनभ-

७ ट्टारकरवरिगे आत्रेयगोत्रद आपस्तंभसूत्रद य-

८ जुःशारवाध्यायिगळाद श्रीमन्महाराजश्रीहरति सम्मेटरंग-

९ प्पराजरवर पौत्रराद कृष्णप्पराजरवर पुत्रराद राय

१० प्पराजरवरु रत्नगिरिवस्ति देवस्थानदल्लि यी जिनेश्वर-स्वामिप्रतिष्ठा-

११ कालदल्लि दारागृहीतवागि कोट्ट भूदानद धर्मशासनदान-

१२ पट्टे क्रम वेंतेंदरे

(पंक्ति ३ से १२ तकका पाठ पंक्ति २६ तक दो वार दोहराया है ।)

२७ क्रम वेंतेंदरे यी रत्नगिरि स्थळदल्लि अनादियागियिद्दंथाव-

२८ स्ति देवस्थानदल्लि जिनेश्वरस्वामिगे आराधने नडेयदे यिद्द-

पिछला भाग

२९ थादरल्लि नीवु मत संरक्षण्यकर्तरागि वुद्भविसिदंथा यो—
३० गनिष्टरादरिंद यी देवस्थानवनू पुनः जीर्णोद्धारव माडि
३१ संप्रोक्षणे प्रतिष्टेयनू माडि देवता नित्य वैभववु सार्व-
३२ कालवु नडदु आ सुकृत नमगु वुंतागुव रीतिगे नडसिधिरागि
३३ अदु निमित्य आ महोत्सवाकालदल्लि निगमे नम्म सिरंहद सीमे-
३४ योलगण संते दोड्डेरि होवलि गूडिद वडुवन हल्लिस्थ-
३५ लदोलगण आपिनहल्लियनू सहिरण्योदकदानधारा-
३६ गृहीतवागि त्रिवाचवु त्रिकरणयुक्तवागि धारेयने-
३७ रदु कोट्टेवागि श्रा ग्रामक्के सलुवंता यरेनेल कॅनेलका-
३८ डारम्भ नीरारम्भ अणे अच्चुकट्टु यात कपिले गूडेगू-
३९ यिलु केरे कुंटे कालुवे मोदलागि आ ग्रामक्के सलुवंता परिस्तरण-
४० दोलगागि वुत्पत्ति श्रादंता सकल सुवर्णादाय सकलमत्ता-
४१ दायवनू निम्म सिप्यपारम्पर्यवु अनुभविसि कोंडुसु-
४२ खदल्लि यिहुदेंदु वरसि कोट्ट दानपट्टे । स्वदत्ताद्द्वि-
४३ गुणं पुण्यं परदत्तानुपालनं । परदत्तापहारेण
४४ स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ श्रीरामा

[इस दानपत्रकी तिथि भाद्रपद कृ० १०, शक १६०२ रौद्रि संवत्सर, ऐसी है : इसमें रंगप्पराजके पौत्र तथा कृष्णप्पराजके पुत्र रायप्पराज-द्वारा लक्ष्मीसेन भट्टारकको रत्नगिरिवस्तिके लिए आपिनहल्लि नामक ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । लक्ष्मीसेनको दिल्लो, कोल्लापुर, जिनकंचि तथा पेनुगोंडे के सिंहासनाधीश कहा है । वे समंतभद्र स्वामीके प्रशिष्य तथा वीरसेन भट्टारकके शिष्य थे । दानदाता रायप्प राजा हरति नगरके प्रमुख थे । उन्हें आत्रेय गोत्रके आपस्तंबसूत्रानुयायी कहा है ।

[ए. रि. मै. १९३९ पृ. १८७]

५१६

चेल्लूर (मैसूर)

कन्नड (सन् १६८०)

[यह लेख विमलनाथमूर्तिके पादपीठपर है। पद्मकुलके शर्कर-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी। यह हूलिकल निवासी था तथा समन्तभद्राचार्य के शिष्य लक्ष्मीसेनाचार्यका शिष्य था। समय लगभग सन् १६८० का है।]

[ए० रि० मैं० १९१५ पृ० ६८]

५१७-५१८

पोन्नूर (उ० अर्काट, मद्रास)

शक १६५५ = सन् १७३३, तमिल

[स्थानीय जिनमन्दिरके छतमें लगे स्तम्भपर यह लेख है। तिथि वैगाशि २७, प्रमादी संवत्सर, शक १६५५, कलिवर्ष ४८३४ यह है। इसमें कहा है कि स्वर्णपुर-कनकगिरिके जैन हेलाचार्यकी साप्ताहिक पूजाके लिए प्रति रविवारको पार्श्वनाथ तथा ज्वालामालिनीकी मूर्तियाँ नीलगिरिपर्वतपर ले जाते हैं। यहींके अन्य लेखमें पार्श्वनाथकी स्तुतिमें कुछ मन्त्र लिखे हैं।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१६-१८ पृ०४०]

मूललेख

१ स्वस्ति श्री शालिवाहनशकाब्द: १६५५ कल्यब्द: ४८३४ क्कु मेळ् चेल्ला निण्रा प्रभवादि ग (श) काब्द: वरुषं ४६ क्कु प्रमादिच वरुषं वैगाशिमादं १७ (उ) एलुदिय शासनमावदु (।) स्वस्ति श्रीस्व (र्ण) पु (र) कनकगिरि आदीश्वरस्वामिचैत्यालय सम्वन्दमान वायुमूलैयिलि-

२ रुक्कुं नीलगिरि हेलाचार्यपादपूजै आदिवाररुन् तोरुम् मेर्पाडि आळयत्तिन् श्रीपार्श्वनाथस्वामियुं ज्वालामा (लि) निअम्मणैयुं मेर्पाडि स्वर्णपुरजैनर्गल् एडुत्तुकोण्डु पोय् पूजिप्पदु (।) इन्द शासनमनन्तसेनदेव (नाले) लुदपट्टदु (॥)

[ए० इं० २९ पृ० २०२]

५१९

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १६६९ = सन् १७४८, तमिल

[यह लेख ज्येष्ठ शु० ५, शुक्रवार, शक १६६९ को लिखा गया था। मुनिगिरि स्थित कुन्थुनाथस्वामीके मन्दिरके गोपुरका जीर्णोद्धार अगस्तियप्प नायिनार्ने किया ऐसा इसमें कहा गया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३६]

५२०

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १६७९ = सन् १७५७, कन्नड

[विद्यानगर (विजयनगर) के राजा विजय सदाशिव महारायके अधीन सोदे प्रदेशके शासक अरसप्पोडेयके पुत्र इम्मडि अरसप्पोडेयने वेण्णेगावे ग्रामकी कुछ ज़मीन अपने गुरु चारुकीर्ति पण्डितदेवको अर्पित की ऐसा इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है। तिथि-मार्गशिर शु. १ शक १६७९, राक्षस संवत्सर ।]

[रि. सा. ए. १९४०-४१ पृ. २४ क्र. ए ६]

५२१

वालूर (धारवाड, मैसूर)

शक १(६)८५ = सन् १७६३, कन्नड

[जैन मन्दिरके सन्मुख दीपमाला स्तम्भपर यह लेख है। देवण्ण और उसके पुत्रोंका इसमें उल्लेख है। तिथि कार्तिक शु. १०, सोमवार, विक्रम, शक १६८५ ऐसी दी है।]

[रि. इ. ए. १९४५-४६ क्र. २१३]

५२२

तिलिवल्लि (धारवाड, मैसूर)

१८वीं सदी, कन्नड

[इस निसिधि लेखमें वैशाख शु. ५ सोमवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिन पुजारी पेवय्यके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि. इ. ए. १९४५-४६ क्र. २५३]

५२३

काकन (जि० मोंघीर, बिहार)

संवत् १८२२ = सन् १७६६, संस्कृत – नागरी

जैन मन्दिरमें चरणपादुकाओंके चारों ओर

[इस लेखमें काकन्दीके जैन संघ-द्वारा संवत् १८२२ वैशाख शु० ६ को जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा सुविधिनाथके चरणोंकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ३]

५२४
मैसूर
कन्नड

शान्तीश्वर वसतिमें दीपस्तम्भोंपर

[इस लेखमें चामराजकी रानी देवीरम्मण्णि-द्वारा उक्त दीपस्तम्भ शान्तीश्वर वसतिको अर्पित किये जानेका उल्लेख है। ये चामराज मैसूरके राजा चामराज वोडेयर (नवम) (सन् १७७६–९६) होंगे।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२५
मैसूर
कन्नड

उपर्युक्त वसतिमें चार कलशोंपर

[इस लेखमें उपर्युक्त रानी देवीरम्मण्णि-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेक-के लिए इन चार कलशोंके दानका निर्देश है।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२६–५२७
नरसिंहराजपुर (मैसूर)
सन् १७७८–७९, कन्नड

[यहांके दो लेख सन् १७७८ तथा १७७९ के हैं। पहलेमें वियंग वरमैयके पुत्र नागप्प-जो काम्वोदि वैश्य था तथा निघंडेवृक्षसंघका था –

द्वारा एक मण्डपकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें इसी व्यक्ति-द्वारा मूर्तिका पादपीठ अर्पित करनेका उल्लेख है। रविवारव्रतकी समाप्तिपर यह दान दिये गये थे।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

५२८

मैसूर

शक १७३६=सन् १८१४, कन्नड

शान्तीश्वर वसति–गर्भगृहके द्वारके पीतलके आवरणपर

[इस लेखमें दनिकार पद्मैयके पुत्र नागैय-द्वारा ३९¾ (सेर) वजनके इस पीतलके गन्धकुटी (द्वार) के आवरण दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान आश्विन शु० १, शक १७३६, भाव संवत्सरके दिन दिया गया था।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२९

मैसूर

(शक १७३६=सन् १८१४) संस्कृत-कन्नड

शान्तीश्वर वसति-सुखनासि द्वारके आवरणपर

श्रीमच्छांतिजिनेन्द्रस्य पंचकल्याणसंपदः।
श्रिया मेरुजिनागारं हसतश्चैक्यवेश्मनः ॥१॥
परार्ध्यरचनोपेतं कवाटमिदमद्भुतं।
कारयामास सद्भक्त्या श्रावको जैनमार्गतः ॥२॥
नागनामा पितुः स्वस्य मरिनागाह्वयस्य च।
धनिकारपदाढ्यस्य स्वर्मोक्षसुखलब्धये ॥३॥

[इस लेखमें निर्देश किया है कि प्रस्तुत द्वारका निर्माण वनिकार मरिनागके पुत्र नाग-द्वारा किया गया। इस लेखमें समयनिर्देश नहीं है किन्तु पिछले लेखका ही समय इसका भी होगा ऐसा अनुमान होता है।]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०३]

५३०

मैसूर

शक १७५४=सन् १८३२, संस्कृत-कन्नड

अनन्ततीर्थंकरकी मूर्ति – शान्तीश्वर वसति

१ श्रीमत्कश्यपगोत्रजो जिनपद्मांभोजे लसं षट्पदः क्षात्रीयोत्तम-
  देवराजनृपतिः सद्धर्म-
२ पत्न्या सह (।) कॆंपम्मण्यभिधानया व्रतयुजा स्वर्गापवर्गप्रदं
  कृत्वानंतव्रतं तदा-
३ रचितवान् बिंबं मुदंतच्छुभं ॥ अंबुधींद्रियशैलेंदु-प्रमितेस्मिन्
  शकाब्दके।
४ नन्दने वत्सरे भाद्रमासे शुक्लाष्टमीतिथौ। अनंतनाथबिंबस्य
  प्रतिष्ठां जग-
५ दुत्तरां (।) कारयामास पूर्वोक्तदेवराजनृपोत्तमः ॥

[इस लेखमें कश्यप गोत्रके उत्तम क्षत्रिय राजा देवराज तथा उनकी धर्मपत्नी कॆंपम्मणि-द्वारा अनन्तव्रतकी पूर्णताका उल्लेख है। उक्त दम्पतिने इस अवसरपर भाद्र शुक्ल अष्टमी, शक १७५४, नन्दन संवत्सर, के दिन अनन्तनाथकी यह मूर्ति स्थापित की। इस समय मैसूरमें कृष्णराज वडेयर (तृतीय) का राज्य चल रहा था। अतः लेखोक्त देवराज नृपति मैसूरकी अरसु जातिके प्रमुखोंमें-से एक थे ऐसा अनुमान होता है।]

(ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०१)

५३१

हुले हुव्वलि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक १७८४ = सन् १८६२, कन्नड

[यह लेख शक १७८४ का है। कहा गया है कि इस वर्ष एक नया जगट बनवाया गया। यह उस पुराने जगटसे बनवाया था जो यहांके अनन्तनाथबसदिमें पिछले ११०० वर्षोंसे था।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३५ पृ० २५७]

५३२

चित्तामूर (द० अर्काट, मद्रास)

शक १७८७ = सन् १८६५, संस्कृत-ग्रन्थ

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके गोपुरकी दीवालपर है। इस गोपुरका निर्माण अभिनव आदिसेन भट्टारकने सार्वजनिक सहायतासे किया ऐसा उल्लेख है। तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, शुक्रवार, शक १७८७ क्रोधन संवत्सर ऐसी दी है। इसी दीवालपर एक अन्य लेखमें जिनालयनिर्माणसे प्राप्त पुण्यकी प्राप्त पुण्यकी प्रशंसाके कुछ श्लोक है।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५१९-२० पृ० ५८]

५३३

मैसूर

१९वीं सदी, कन्नड

शान्तीश्वर बसतिमें सर्वाण्ह यक्षकी मूर्तिके पादपीठपर

इस लेखमें मरिनागैय नामक व्यक्ति-द्वारा महिसूरके शान्तीश्वर बसतिमें सर्वाण्हयक्षकी मूर्तिके पादपीठपर पीतलका आवरण लगानेका

उल्लेख किया है। मरिनागैय दनिकार पद्मैयका पुत्र था। लिपि १९वीं सदीकी है।

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १००]

५३४

मैसूर

१९वीं सदी, कन्नड

उपर्युक्त बसतिमें घण्टापर

[इस लेखमें शिरसैयके छोटे भाई पुट्टैय-द्वारा इस घण्टेके दानका उल्लेख है। लिपि १९वीं सदीकी है।

(मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित)

[उपर्युक्त पृ० १००]

५३५

मत्तावार (मैसूर)

१९ वीं सदी, कन्नड

मत्तवूर् वस्ति पार्श्वनाथस्वामिचैत्यालयक्कं

ऐवर अंवणनुव

[यह लेख एक घण्टेपर खुदा है। ऐवर अंवण-द्वारा यह घण्टा मत्तवूरके पार्श्वनाथस्वामी चैत्यालयमें अर्पण किया गया था। लिपि १९वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १७५]

५३६

कन्नुपर्तिपाडु (नेलोर, आन्ध्र)

तमिल

[इस लेखमें करिकालचोल जिनमन्दिरके लिए मतिसागरदेवके उपदेशसे प्रमलदेवी-द्वारा सीढ़ियाँ बनवानेका निर्देश है। यह लेख सम्राट् राजराजदेवके ३७वें वर्षका है।

नोट—चोल राजराज नामक किसी भी राजाका राज्य ३७ वर्षकी दीर्घ सीमा तक नहीं पाया जाता। अतः इस लेखकी तिथि ग़लत प्रतीत होती है।]

(इ० म० नेलोर ५०२)

५३७

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

तमिल

[यह लेख पल्लव राजा सकल भुवनचक्रवर्ति पेरुंजिगदेवके तीसरे राज्यवर्षका है। इसमें इस देव-मन्दिरकी प्रदक्षिणामालिकाका निर्माण पालैयूर निवासी····शिगन्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। लेख चन्द्रनाथ-मन्दिरके प्राकारके पश्चिमी दीवारपर खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१४ पृ० ६६]

५३८

गेरसोप्पे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड

१ वनशोकवलीमंजुलदेशीगणललितकीर्तिमुनिसूनोः (।) श्रीदेव-चन्द्रसूरेरुपदेशान्नेमिजिनबिम्बं ॥

२ श्लोकः ॥ ओजणश्रेष्ठिपुत्रोसौ कल्लपश्रेष्ठिपुंगवः (।) अकारयत् सुतो यस्य मावाम्बागर्भजोजणः ॥

[यह नेमिनाथ मूर्ति ओजणश्रेष्ठिके प्रपौत्र तथा कल्लपश्रेष्ठि एवं मावाम्बाके पुत्र अजणश्रेष्ठिने देशीगण-पनशोकवलीके आचार्य ललितकीर्तिके शिष्य देवचन्द्रसूरिके उपदेशसे स्थापित की ।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५]

५३६

गेरसोप्पे (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥)

२ श्रीजिनराजराजितपदाम्बुजराजमराल नगिरिय राजशिरो-

३ मणि प्रचुरकीर्तिदिशावलयप्रकाशनुं तेजभुजप्रतापरिपुराजमुखां-

४ बुजं हस्तवीरनुं भूजनवन्द्य होन्ननृपनर्थिजनावन कल्पवृक्षनुं होन्-

५ नमहीशनात्मजेयु मालियब्बरसिगे कामराजगं सन्नुतमूर्ति होन्ननृपनात्मसवान्-

६ धव मंगराजनुं मन्मथरूप हरिहरनृपालकनातन पुत्र हैवणरसंगे मनःप्रियान्-

७ गनेयु सान्तलदेवि समाधिकालदोलु आकेय गुणगलु लोकख्यातियनान्तिद् अनन्-

८ तवीर्यर रतिसंकाशसोवगेनिसि सन्दिर्द्दा कान्तेगे हैवणरस वल्लभनाद् । स्मररूपं

९ सूद्रकंगी पुरदोलु कीर्तिवेत्त बोम्मणसेट्टिय वरवनिते बोम्मकंगं वरसुगु-

१० णि सान्तलरसि पुट्टिदलागल्। अरसप्पोडेयर तनूजे वरगुणि बोम्मकनाकेयात्मजे सान्तकरसि-

११ यु परमन पदमं स्मरियिसि सुरलोकवेय्दि सुखदिन्दिर्द्दलु अर्हन्तन पादाम्बुजमं

१२ स्मरयिसुतं नम्त्रि(?) पदम नालगेयोलु उच्चरिसुत्त सान्तकरसि शरीरमं पत्तेण्टुदिन-

१३ दोलु सन्दलु वरवत्सर तारणदोलु सुरुचिर-फाल्गुणद शुद्ध पाडिवतिथियोलु हरिदश्व-

१४ दिनदि सान्तकरसियु स्वर्गस्थलादल् आकेनिमित्तं माडिसिद निषिधिय कल्लिगे मंगल महाश्री-

[यह निषिधि-लेख रानी सान्तलदेवीके समाधिमरणका स्मारक है। इसकी तिथि फाल्गुन शु० १, रविवार, तारण संवत्सर ऐसी थी। यह देवी बोम्मणसेट्टिकी कन्या तथा हैवणरसकी पत्नी थी। हैवणरसका पिता मंगराज था जो कामराज और मालियब्बरसिका पुत्र था। मालियब्बरसिके पिता गेरसोप्पेके राजा होन्न थे। उसका एक और पुत्र हरिहर नृपाल था। सान्तलदेवीकी माता बोम्मवका अरसोप्पोडेयकी कन्या थी।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९९]

५४०

सालूर (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-

२ मोघलांछनं।...

३ ...शासनं जिनशा...

४ सनं श्री...चन्द्रनाथदेव-

५ र गुड्डि नादोव्वेय···
६ ···नागय्यंगलु निलि-
७ सिद कल्लु···सालियूर
८ ····महाजनं····

[इस निषिधिलेखमें चन्द्रनाथदेवकी शिष्या नादोव्वेके समाधिमरण तथा नागय्य-द्वारा इस निषिधिकी स्थापनाका उल्लेख किया है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० १२९]

५४१

सक्करेपट्टण (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं । जीया-
२ त् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं । श्रीमद् राजगुरु
३ ····मौनपाचार्य श्री होसूर शिष्य नूलवागि-
४ सेट्टिय मग नूलवन्दिसेट्टिय निषिधि
५ शार्वरि संवत्सरद ६ आषाढ सुध १४ आदि

[यह निषिधिलेख होसूरके राजगुरु मौनपाचार्यके शिष्य नूलवागि-सेट्टिके पुत्र नूलवन्दिसेट्टिका स्मारक है। तिथि आषाढ शु० १४, रविवार, शार्वरी संवत्सर, इस प्रकार बतलायी है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६३]

५४२

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें अप्पाण्डार (चन्द्रप्रभ) मन्दिरके इस गोपुरका निर्माण परमजिनदेवजीयर्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। लेखकी तिथि पंगुणि

द्वितीया, रेवती नक्षत्र, रविवार, युव संवत्सर इस प्रकार दी है। लिपि आधुनिक है।

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१५ पृ० ६७]

५४३

मुत्तगदहोसूर (मैसूर)

कन्नड

१ सिद्धजिनालय

२ सान्तेऔवेय वसदि

३ वगे माडिसिदनु

[इस छोटे-से लेखमें सान्तेऔवे नामक महिला-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२४ पृ० २३]

५४४

उम्मत्तूर (मैसूर)

१ स्वस्ति श्री....राज- २ भटाररु....नोन्तु

३ सन्यसनं गेय्दु मुडि ४ पिदर् कल्ल निलिसिद ज्ञा-

५ न....पण्डितं....

[इस लेखमें...राज भट्टारकके समाधिमरण तथा ज्ञान...पण्डित-द्वारा इस निषिधिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ४७]

५४५

कम्मनहल्लि (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जि····

२ ····श्रीमति मूलसंघ····संघोद्भवे····शुभे देशीगणे

३ ····स्याद्वादारिनिगाशनि····कैवल्यजन्मावनिः

४ ····भयचन्द्रकरुणा····कलियुगे····

५ ····बुल्लप····शोभते····

६ ····जिनपदसेवेयोलुचितदानदोलु····यिन्तु सुख····

७ जिनेश्वरनाम····मनदोल्····बुल्लपं

८ ····प्रभवसंवत्सर····देवाल····

९ माडिसि····(।) हारदानक्कं

[यह लेख बहुत घिस गया है। प्रभवसंवत्सरमें बुल्लप-द्वारा किसी मन्दिर-निर्माणका तथा उसमें आहारदानके लिए कुछ व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है। मूलसंघ-देशीगणके अभयचन्द्र आचार्यका भी उल्लेख हुआ है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ८७]

५४६

गोणिबीड (मैसूर)

कन्नड

१ स्वस्ति श्री-　　　　२ मतु अ-

३ नन्तन उ-　　　　४ द्यापनेय

५ चउवीस तीर्थंक ६ र प्रति-

७ मे मंगल

[यह चौवीसतीर्थंकरमूर्ति अनन्तव्रतके उद्यापनके समय स्थापित की गयी थी। इस समय वन्नि महाकाली मन्दिरमें सुनारों-द्वारा इसकी पूजा की जाती है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ७४]

५४७

कल्लहल्लि (मैसूर)

कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंग देसिगण पुस्तकगत्स कुण्डकुन्दान्ववायं.... श्रीजयदेवभ-

२ ट्टारकदेवर प्रियसिस्यरु श्रीअनन्तवीर्यदेवर प्रियगुड्डगलु जीय-

३ गौड मल्लिगौडन मग मुद्दिगौडन मग राय-

४ गौड माडिसिद आदिपरमेश्वरप्रतिमेश्वररु मंगल म-

५ हाश्री श्री श्री रूवारि बूपोजन मग रूवारि नागोज माडिद

[इस लेखमें देसिगणके जयदेवभट्टारकके शिष्य अनन्तवीर्यदेवके शिष्य रायगौड-द्वारा आदितीर्थंकरकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। यह मूर्ति रूवारि बूपोजके पुत्र रूवारि नागोजने उत्कीर्ण की थी।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३]

५४८-५५६

तंगले (मैसूर)

कन्नड

[यहाँ एक शिलाखण्डपर कुछ मुनियोंकी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं तथा उनके नीचे इस प्रकार नाम दिये हैं – १ नमोर्हते अजितकीर्तिगलु २

देवनन्दिव्रतिगलु ३ गुणसागरभटारकरु ४ कीर्तिसागरभटाररु ५ अजितसेन-भटारकरु ६ प्रभाचन्द्रदेवरु ७ त्रिमलगुणव्रतिगलु ८ अजितसेनभटाररु ९ शुभचन्द्ररु ।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ५१]

५५७

कनकरायनगुड्ड (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीकोण्डय्यसेट्टियर् २ मूलस्थानवसदिय स्था-

३ नक्के''''कन्तियर मगल् ४ विजयक्कं कोट्ट मण्णु

५ मू-

[इस लेखमें कोण्डय्य सेट्टि-द्वारा निर्मित मूलस्थान जिनालयके लिए विजयक्का-द्वारा कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ३८]

५५८

हुलदेनहल्लि (मैसूर)

कन्नड

१ परमेश्वर पृथ्वीराज्य--

२ रसारपुर बूरवेल्लिय--

३ योल्कट्टि किलगणकेरे--

४ नन्दियडिगल् पडेद्दराताद--

५ रु साक्षि सिडिलवडु तोरेदे--

६ पालु अरुगोल केरेय केलग--

७ ण देसे एलु मने तार इदके सा--

८ वसरु तेकल्नाड एल्पत्तारु द--

[इस लेखका ऊपरका और दाहिना भाग टूटा है। नन्दियडिगल् आचार्यको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९२६ पृ० ८३]

५५६

तोललु (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-
२ मोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यना-
३ *थस्य शासनं जिनशासनं । स्वस्ति यमनि-*
४ यमस्वाध्यायगुणसम्पन्नरप्प अभयच-
५ न्द्रदेवरु सर्गगामिगलाद परोक्ष-
६ यमभागल् पद्मावतियक्क माडिसिद सास-
७ नं ॥ अरेवेसनागिरद् वसदियं माडि-
८ सिदरु देवर मनेय परिसूत्रद गट्टुं कट्टि-
९ यिसिदरु मनेयं माडि नडुम्मरनुमं नट-
१० रु इनिसक्कं यिक्कि पूजिसिद गद्याणवेप्प-
११ त्तु । इन्तप्पुदक्के साक्षि मुद्दगवुण्डनु भास-
१२ गवुण्डनुं तम्मडिय····रंरु । विट्टियणनुं ने-
१३ मणनुं ईस्तानकोडेयरु ।

[इस लेखमें कहा है कि आचार्य अभयचन्द्रकी मृत्यु होनेपर उनकी शिष्या पद्मावतियक्काने एक अधूरे जिनमन्दिरको पूर्ण किया। इस कार्यमें ७० गद्याण खर्च हुए। इस मन्दिरके व्यवस्थापक विट्टियण तथा नेमण थे। मुद्दगवुण्ड तथा भासगवुण्ड इसके साक्षी थे।]

[ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४२]

५६०–५६१

यलवट्टि (जि० धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यहाँ दो लेख हैं। एकमें मूलसंघ-देशीयगणके सकलचन्द्रदेवके गृहस्थ शिष्य सेनबोव केतय्यकी मृत्युका उल्लेख है। इसकी तिथि मार्गशिर शु० ८ शुक्रवार, आनन्द संवत्सर ऐसी दी है।

दूसरे लेखमें मूलसंघ-देशीगण-पोस्तक गच्छ – कोण्डकुन्दान्वयके देवकीर्ति भट्टारकके एक शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है। इसकी तिथि श्रावण कृ० ९ रविवार, साधारण संवत्सर ऐसी है।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ६०-६१)

५६२

शावल (जि० धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें देशीयगणके वालचन्द्र त्रैविद्यदेवके एक गृहस्थ शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है। मार्गशिर कृ० ३, व्यय संवत्सर ऐसी तिथि दी है।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ५४)

५६३

दानवुलपाडु (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें कनककीर्तिदेवके शिष्यकी – जो पेनुगोण्डका एक व्यापारी था – निसिधिका उल्लेख है।]

(इ० म० कडप्पा १४९)

५६४

मुल्कि (दक्षिण कनडा, मैसूर)

कन्नड

[जैन बसदिके आगे मानस्तम्भकी दक्षिण बाजूपर । इसमें तीर्थकरों-की प्रशंसामें पांच श्लोक लिखे गये हैं ।]

(इ० म० दक्षिण कनडा ९३)

५६५

मद्रास (म्यूजियम)

कन्नड

[यह लेख शान्तिनाथकी मूर्तिके पादपीठपर है । महाप्रधान ब्रह्देवण-द्वारा स्थापित किये हुए येरग जिनालयमें ,यह मूर्ति थी । मूलसंघ, कुण्ड-कुन्दान्वय, काणूरगण, तिन्त्रिणि गच्छके महामण्डलाचार्य सकलभद्र भट्टारक ब्रह्देवणके गुरु थे ।]

(इ० म० मद्रास ३२४)

५६६

मद्रास (म्युजियम)

कन्नड व संस्कृत

[इस लेखमें साहित्यप्रिय साल्व-राजा द्वारा शास्त्रोक्त रीतिसे शान्ति-नाथकी मूर्तिके निर्माणका तथा स्थापनाका निर्देश है ।]

(इ० म० मद्रास ३२५)

५६७

कोगलि (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

जैन मन्दिरमें एक मूर्तिके पादपीठपर

[चैत्र शु० १४, रविवार, परिधावि संवत्सरमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओवेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका इस लेखमें निर्देश है।]

(इ० म० वेल्लारी १९०)

५६८

कीलक्कुडि (मदुरा, मद्रास)

तमिल

[गुहामें जैन मूर्तिके पादपीठपर।

गुणसेनदेवके शिष्य वर्धमानव पण्डितके शिष्य गुणसेनपेरियडिगल-द्वारा यह मूर्ति खुदवायी गयी ऐसा इस लेखमें निर्देश है। यहाँकी अन्य दो मूर्तियोंके लेखोंमें भी गुणसेनदेवका उल्लेख है।]

[इ० म० मदुरा ३९]

५६९

कुण्डघाट (जि० मोंघीर, विहार)

संस्कृत–गौडीय

जैन मन्दिरमें महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें वीरेश्वरक-द्वारा इस मूर्तिके दिये जानेका निर्देश है।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० ९]

५७०

पेनुकोण्ड (जि० अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

पार्श्वनाथमन्दिरके समीप एक कुँएके पास शिलापर

[यह जिनभूषणभट्टारकदेवके शिष्य नागय्यका समाधि लेख है ।]

[इ० म० अनन्तपुर १६७]

५७१

कायाम्पट्टि (मद्रास)

तमिल

[यह लेख शमणर् तिडल् नामक भग्न जिनमन्दिरके पास है । जयवीर पेरिलमैयान्-द्वारा तिरुवेण्णायिल् स्थित ऐन्नूरुवपेरुम्पल्लि (जिन-मन्दिर) के आगे फ़र्श बनवानेका इसमें उल्लेख है ।]

[इ० पु० क्र० १०८३ पृ० १५१]

५७२-५७३

मलैयकोविल् (मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें जैन आचार्य गुणसेनका नाम दिया है । साथमें परवा-दिनिदा यह उपाधि है । स्थानीय गुहामन्दिरके पास पाषाणपर यह लेख उत्कीर्ण है । ऐसा ही लेख तिरुमय्यम्के सत्यगिरीश्वरमन्दिरके एक पाषाण-पर भी है ।]

[इ० पु० क्र० ४-५ पृ० १]

५७४

तेणिमलै (मद्रास)

तमिल

[यह लेख एक पाषाणपर उत्कीर्ण जिनमूर्तिके नीचे है। यह मूर्ति (तिरुमेणि) थिवल्ल उदण सेल्वोट्टि-द्वारा उत्कीर्ण थी ऐसा लेखमें कहा है।]

[इ० पु० क्र० १० पृ० १]

५७५

पूण्डि (जि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

तमिल

पोन्निनाथ जैन मन्दिरके पश्चिमी दीवालपर

[इस लेखमें शम्बुवरायका उल्लेख है। वीरवीरजिनालय नामक मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे एक गाँव दान देनेका उल्लेख इस लेखमें है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट २१०]

५७६

मूडबिद्रे (मैसूर)

कन्नड

[इस ताम्रपत्रके तीन भाग हैं। पहला भाग वृषभ २२, गुरुवार, तारण संवत्सरके दिनका है। इसमें चन्द्रकीर्तिदेव-द्वारा २४ तीर्थंकरोंको पूजाके लिए २०० होन्नु अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह रकम विष्णु कलुम्बरको कर्ज दी गयी थी। उसने अपनी कुछ जमीन गिरवी रखकर इस रकमके व्याजके रूपमें १६ मन चावल देना स्वीकार किया था। दूसरा भाग कर्क ९, बुधवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिनका है। इसमें श्रीवर पडि-

कोदि-द्वारा ज़मीन गिरवी रखकर २१०० वीररायफण क़र्ज़ प्राप्त करनेका उल्लेख है। इसके व्याजके रूपमें २८ मुडे चावल देना स्वीकार किया था। इसका उपयोग गेरुसोप्पेकी ललितादेवी-द्वारा स्थापित वसदिमें पूजाके लिए होना था। तीसरा भाग मेष १, रविवार, नन्दन संवत्सरके दिनका है। इसमें तीन बन्धुओं-द्वारा पार्श्वनाथवस्तिसे कुछ क़र्ज़ लेनेका तथा उस-पर कुछ निश्चित रक़म व्याज देनेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ९]

५७७

मूडविदुरे (मैसूर)

कन्नड

[इस ताम्रपत्र-लेखमें चारुकीर्ति पण्डितदेव-द्वारा निर्मित चण्डोग्र पार्श्वनाथवसदिके लिए कर्वरवलिके वर्मनन्द तथा उनके बन्धु कुंगिय वर्मिसेट्टि-द्वारा ७०१ गद्याण दान दिये जानेका निर्देश है। लेखकी तिथि वृषभ १५, रविवार, दुर्मुखि संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ७]

५७८

निट्टूर (मैसूर)

कन्नड

१ चित्रभानु २ संवत्सर ३ द फाल्गुण
४ द शुद्ध ८ ५ यु सोम ६ वार बोम्मण्ण
७ गलु स्वर्गस्त ८ राद निषिधि

[इस निषिधिलेखमें फाल्गुन शु० ८, चित्रभानु संवत्सरके दिन बोम्मण्णके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९३० पृ० २५७]

५७९

तल्लूर (मैसूर)

कन्नड

१ भावसंवत्सरद श्राव-　　२ ण शुद्ध त्रयोदसि आ-
३ दित्यवारदंदु स्वस्ति　　४ श्रीमद्......अजितेश्व-
५ रदेवर......महाजनं...　　६ ......वागि...
७ ...केशवदेवर बम्म-　　८ व्वे तोटदि...
९ ......वागि म्कम२...　　१० कोण्डु......
११ ......येनुल्ल

[यह लेख काफी अस्पष्ट हुआ है। श्रावण शु० १३, रविवार, भावसंवत्सरके दिन किसी ग्रामके महाजनों द्वारा अजितेश्वर देवके मन्दिरके लिए कुछ भूमि दान दी गयी ऐसा इसमें उल्लेख है। केशवदेवकी कन्या बम्मव्वेके उद्यानके समीपकी २ कम्म जमीन भी इस दानमें सम्मिलित थी।]

[ए० रि० मैं० १९३० पृ० ११३]

५८०

अंबले (मैसूर)

कन्नड

१ जिनचंद्रदेवरु　　२ ......मुडि(पि)...

[इस छोटे-से लेखमें जिनचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९३० पृ० १३३]

५८१-५८४

हैदराबाद (म्युजियम) (आन्ध्र)

संस्कृत-कन्नड

[ये चार मूर्तिलेख हैं जो घिसनेसे अस्पष्ट हुए हैं। एकमें मूलसंघके किसी व्यक्तिका उल्लेख है। दूसरेमें एक मूर्तिकी स्थापना फाल्गुन शु० १५, बुधवार, शर्वरी संवत्सरके दिन किये जानेका उल्लेख है। तीसरेमें पण्डित मल्लिसेनका उल्लेख है। चौथेमें नेमिचन्द्रदेवके शिष्य कुमार मायिदेव महामण्डलेश्वर-द्वारा पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इन लेखोंका समय निश्चित नहीं है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १४९, १५०, १५२, १५४]

५८५

भोसे (सातारा, महाराष्ट्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगणके वामनन्दि व्रतीश्वरका उल्लेख है। लेख बहुत घिस गया है। समय निश्चित नहीं है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २४३]

५८६

वेलगामे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड

१ गणप्राच्यमहीभृदर्कः श्री-

२ भव्याब्धिवर्धिष्णुशशांकमूर्तिः

६०९

तोरनगल्लु (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख अकलंकदेवके शिष्य वयिचिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० सा० ए० १९२२-२३ क्र० ७२९ पृ० ५१]

६१०

लोकिकेरे (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख श्री रत्नभूषण भट्टारकके प्रिय शिष्य लोकेयकेरे निवासी मरगोण्डके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० २९९ पृ० ४९]

६११-६१२

गरग (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख यापनीय संघ-कुमुदिगणके शान्तिवीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है। तिथि श्रावण व० ४, गुरुवार, विकृति संवत्सर ऐसी दी है। यहींके एक अन्य लेखमें भी यापनीय संघ-कुमुदिगणका उल्लेख है। अन्य विवरण लुप्त हुआ है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४१-४४२ पृ० ७६]

५९०

वालेहल्लि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मार्गशिर व० १०, शुक्रवार, शुभकृत् संवत्सरके दिन माधवचन्द्रदेवके शिष्य नागगौडकी पत्नी सायिगवुडिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १९१ पृ० २३]

५९१

गुडुगुडि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख सरस्त (सूरस्त) गणके किसी आचार्यकी शिष्या नागवेके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०० पृ० २४]

५९२

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख टूटा है। हरिकेसरिदेव, हरिकान्तदेव तथा तोयिमरस द्वारा विभिन्न वसदियोंको दिये गये भूमिदानोंका इसमें उल्लेख है। इनमें बंकापुरकी उम्पंटाय्चण वसदि तथा कोन्तिमहादेविय वसदिका भी समावेश है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०८ पृ० २५]

५९३

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें फाल्गुन – ? – वड्डुवार, सर्वधारि संवत्सरके दिन सूरस्तगणके सहस्रकीर्तिदेवके शिष्य तथा मल्लिगुण्डके महाप्रभु विठगौडके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २१० पृ० २५]

५९४

चेलवगि (रायचूर, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। इसमें मूलसंघ, सूरस्तगण तथा कन्निसेट्टिका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० २२५ पृ० ३९]

५९५

तिरुप्परंकुण्डम् (मदुरै, मद्रास)

तमिल (?) – ब्राह्मी

[यहाँ पहाड़ीपर दो गुहाओंमें निम्न पंक्तियाँ खुदी हैं। ये गुहाएँ जैन श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थीं –

(१) न य   (२) मा ता ये व

(३) अ न तु वा ण को टु पि ता वा ण]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १४०-४२ पृ० २२]

५९६

देवत्तूर (मदुरा, मद्रास)

वट्टेलुत्तु

[यह लेख वहुत अस्पष्ट है। इसमें किसी पल्लि (जैन वसति) तथा तुंग पल्लवरैयन्का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० ५९ पृ० १२]

५९७

अक्कूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख वीरभद्र मन्दिरकी एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। इसमें शान्तिनाथ, सोमदेव तथा वसुधाकरदेवकी स्तुति की है। सातोज-रामोज-द्वारा इस वसदिके निर्माणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ७ पृ० ९२]

५९८

हावेरी (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मादरस-द्वारा जिनमन्दिरकी सीढ़ियाँ वनवाये जानेका उल्लेख है। इस समय यह लेख वीरभद्र मन्दिरमें लगा है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ९६ पृ० १०१]

५९९-६०२

इंगलेश्वर (विजापूर, मैसूर)

कन्नड

[ये चार समाधिलेख हैं। पहलेकी तिथि तारण, अमावास्या, शुक्रवार यह है। यह सत्यण्णकी समाधि है। दूसरा लेख अग्गलसेट्टिके पुत्र शान्ति-

सेट्टिकी समाधिपर है। तिथि आंगिर संवत्सर, चैत्र १, सोमवार यह है। तीसरी समाधि शान्तिदेव मुनिकी है। तिथि प्रमादि संवत्सर, ...मास व ६, शुक्रवार यह है। चौथी समाधि माघनन्दि मुनिपकी है। तिथि श्रावण शु० ११, शुक्रवार, युव संवत्सर है।]

[रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १५-१८ पृ० ८५]

६०३

कागिनोह्लि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक स्तम्भपर है। इसमें दानविनोद वैरिनारायण लेंकनसण आदित्यवर्माकी स्तुति की है तथा उसके द्वारा कालूगण, मेषपाषाणगच्छकी वसदिमें एक स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २८ पृ० १२१]

६०४

माकनूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें खर संवत्सर, कार्तिक शु० (?), शुक्रवारके दिन मूल संघ-सूरस्थगणके नन्दिभट्टारकके शिष्य बोम्मगौडके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५० पृ० १५१]

६०५

लक्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक नग्न जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना त्रैविद्य नरेन्द्रसेनके शिष्य वैश्य सेनिसेट्टिकी कन्या राजब्बेने की थी।]

[रि० सा० इ० १९३४-३५ क्र० ई ७५ पृ० १५४]

६०६

देवूर (विजापूर, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-देसिगण-इंगलेश्वर बलिके नेमिदेव आचार्यके शिष्य सिंगिसेट्टि, देविसेट्टि, पदुमव्वे तथा सिंगेयके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई २२ पृ० १८३]

६०७

शिरूर (जमखंडी, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें यापनीय संघ-वृक्षमूलगणके कुसुमजिनालयमें कालिसेट्टि-द्वारा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है।]

[रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ई ९८ पृ० २१९]

६०८

इडैयालम् (द० अर्काट, मद्रास)

तमिल

[यहाँ जैन मन्दिरके समीप पाषाणोंपर चरणपादुकाएँ उत्कीर्ण हैं तथा निम्न नाम खुदे हैं –

(१) मल्लिषेणमुनीश्वर (२) विमलजिनदेव
(३) अप्पाण्डार् नायिनार् (४) इडैयालम्के जिनदेवर्]

[रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ३११-१४ पृ० ४२]

६०९

तोरनगल्लु (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख अकलंकदेवके शिष्य वयिचिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० सा० ए० १९२२-२३ क्र० ७२९ पृ० ५१]

६१०

लोकिकेरे (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख श्री रत्नभूषण भट्टारकके प्रिय शिष्य लोकेयकेरे निवासी मरगोण्डके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० २९९ पृ० ४९]

६११-६१२

गरग (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख यापनीय संघ-कुमुदिगणके शान्तिवीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है। तिथि श्रावण व० ४, गुरुवार, विकृति संवत्सर ऐसी दी है। यहींकि एक अन्य लेखमें भी यापनीय संघ-कुमुदिगणका उल्लेख है। अन्य विवरण लुप्त हुआ है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४१-४४२ पृ० ७६]

६१३

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

कन्नड

[स्थानीय जैन वसदिमें पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर यह लेख है। मूलसंघ, सूरस्तगण, चित्रकूट गच्छके मुकुन्ददेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना की गयी थी।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३७ पृ० २७]

६१४

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें पुष्य शु० (?) क्रोधन संवत्सरके दिन क्राणूरगणके गंजिय मलधारिदेवकी शिष्या कंचलदेवीके समाधिमरणका उल्लेख है। इसके पतिका नाम त्रिभुवनवीर था तथा कदम्ब राजाओंकी उपाधियाँ उसे दी गयी हैं।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४२ पृ० २८]

६१५

रायद्रुग (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यहाँके निसिधि लेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम हैं – मूलसंघके चन्द्रभूति, आपनीय संघके चन्द्रेन्द्र, वादय्य तथा तम्मण। एक लेखपर माघ शु० १ सोमवार, प्रमाथि संवत्सर यह तिथि दी है।]

[रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १०९ पृ० १२]

६१६-६१७

कोगलि (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओडेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। यहांके एक स्तम्भपर जिनमूर्तियोंके अभिषेकके लिए कई व्यक्तियों-द्वारा दिये गये दानोंका उल्लेख है। प्रथम लेखकी तिथि चैत्र शु० १४ रविवार, परिधावि संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९१४-१५ क्र० ५२०-२१ पृ० ५३]

६१८

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें देसिगण-हनसोगे अन्वयके ललितकीर्ति भट्टारकके शिष्य सहस्रकीर्तिकी मृत्युका उल्लेख है। मुस्लिमों-द्वारा पार्श्वनाथबसदिपर आक्रमणके समय उनकी मृत्यु हुई थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९२ पृ० ८]

६१९

कलकेरि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगण-तिन्त्रिणी गच्छके भानुकीर्ति सिद्धान्तदेवके शिष्य हलिगावुण्ड-द्वारा कलिकेरेके अकलंकचन्द्रभट्टारकके लिए एक बसदिके निर्माण तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ५१ पृ० २४]

६२०

कम्मरचोडु (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें पद्मप्रभमलधारिदेवके प्रियशिष्य महावड्डव्यवहारि रायरसेट्टिकी पत्नी चन्दव्वे-द्वारा इस जिनमूर्तिके जीर्णोद्धारका वर्णन है। इस समय यह मूर्ति हिन्दू देवताके रूपमें पूजी जाती है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६० पृ० ५५]

६२१-६२२

कोट्टशीवरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[यह लेख एक स्तम्भपर है। काणूर गणके पुष्पनन्दि मलधारिदेवके शिष्य दावणन्दि आचार्य-द्वारा एक वसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है। यहींके एक अन्य लेखमें काणूरगणके (?) आचार्यकी शिष्या इरुंगोल राजाकी रानी आलपदेवी-द्वारा इस बसदिकी रक्षाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० २०-२१ पृ० ७२]

६२३-६२९

अमरापुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[यहांके निसिधिलेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम हैं—(१) प्रभाचन्द्रदेवके शिष्य कोम्मसेट्टि (२) पोतोज तथा उसका पुत्र सयवि मारय (३) मूलसंघ-देसियगणके बालेन्दु मलधारिदेवके शिष्य विरूपय तथा मारय (४) मूलसंघ-सेनगणके प्रसिद्ध वादि भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्ति (५) इंगलेश्वरके प्रभाचन्द्र भट्टारकके शिष्य बोम्मिसेट्टियर वाचय्य (६) वेरिसेट्टिके पुत्र सम्बिसेट्टि। यहांके एक अन्य लेखमें इंगलेश्वरके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य देशियगणके बालेन्दु मलधारिदेव-द्वारा एक वसदिके निर्माणका उल्लेख है।] [रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४१-४७ पृ० ७४]

६३०

तम्मदहल्लि (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-देसियगणके चारुकीर्ति भट्टारकके शिष्य चन्द्रांक भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४८ पृ० ७४]

६३१

रामपुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-देसियगणके देवचन्द्रदेवके शिष्य वेट्टिसेट्टिके पुत्र कृष्णसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ७१४ पृ० ७४]

६३२

रामतीर्थम् (विजगापटम्, आन्ध्र)

तेलुगु

[यह लेख एक भग्नजिनमूर्तिके पादपीठपर है । ओंगेरुमार्गस्थित चनुद (व्रो) लु निवासी प्र (मि) सेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी ।]

[रि० सा० ए० १९१७–१८ क्र० ८३२ पृ० ८५]

६३३

वेलूर (द० अर्काट, मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें जयसेन-द्वारा इस जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लिपि उत्तरकालीन है ।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० १२४ पृ०५९]

६३४
निडुगल (मैसूर)
कन्नड

[इस लेखमें वेल्लुम्बट्टेके भव्यों-द्वारा—जो मूलसंघदेसिगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य थे—पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

६३५-६३६
नेल्लिकर (द० कनडा, मैसूर)
संस्कृत-कन्नड

[यह लेख स्थानीय अनन्तनाथवसदिमें है। इसके मण्डपका निर्माण मंजण कोन्नभूप-द्वारा किया गया ऐसा कहा है। यहींके दूसरे लेखमें इस मन्दिरका निर्माण ललितकीर्ति भट्टारकदेवके शिष्य कल्याणकीर्तिदेवकी सम्पत्तिसे देवचन्द्र-द्वारा किये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२०-५२१ पृ० ४८-४९]

६३७
मुनुगोडु (गुण्टूर, आन्ध्र)
तेलुगु

[इस लेखमें विल्लम नायक-द्वारा पृथिवीतिलकवसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १९ पृ० ६]

६३८-६३९
लक्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)
कन्नड

[ये दो लेख हैं। एकमें मूलसंघ—देवगणके शंखदेव-द्वारा एक जिन-

मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें वनुवंकवान्ववजिनालयके त्रिभुवन-तिलक शान्तिनाथदेवके लिए एक दानशालाके समर्पणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ३१, ३४ पृ० ३]

६४०

जावूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें बीचिसेट्टि-द्वारा सकलचन्द्र भट्टारकको जावूर ग्रामके पुनः दानका उल्लेख है। नविलगुन्दमें जयकीर्तिदेव-द्वारा निर्मित ज्वालामालिनीबसदिके लिए मल्लिदेवने पहले यह गाँव अर्पण किया था।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २२८ पृ० ५५]

६४१

कोमरगोप (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें त्रिभुवनतिलक जिनालयमें आहारदानादिके लिए बालचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य पेर्गडे शान्तियण्णकी पत्नी चामिकब्बे-द्वारा सुवर्णदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २३० पृ० ५५]

६४२-६५०

गुण्डकेर्जिगि (बिजापूर मैसूर)

कन्नड

[यहाँ नग्न मूर्ति-पाषाणोंपर निम्न नाम खुदे हैं । (१) देसियगण-इंगलेश्वर (बलि) के चन्द्रकीर्तिदेव तथा जयकीर्तिदेव (२) अपराजिता देवी (३) वृषभयक्ष (४) धाताल्यक्ष (५) कुबेरयक्ष (६) महामानसी (७) अनन्तमती (८) चक्रेश्वरी (९) (आ) ग्तनाथस्वामी]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई १९-२७ पृ० ६६]

६५१
हुलूर (विजापूर)
कन्नड

[इस लेखमें कण्डूर गणकी एक वसदिके लिए पुलुवरणिके महाजनों-द्वारा भूमिदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२९–३० पृ० ६७ क्र० ई २९]

६५२
तम्मदहद्दि (विजापूर, मैसूर)
कन्नड

[इस निसिधि लेखमें इंगलेश्वरतीर्थकी वसदिके आचार्य देवचन्द्र भट्टारकके शिष्य बोगगावुण्डके समाधिमरणका उल्लेख है।

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ७० पृ० ६९]

६५३
तुम्बिगि (बिजापूर, मैसूर)
कन्नड

[यह लेख पुष्य शु० १०, सोमवार, ईश्वरसंवत्सर, राज्यवर्ष ८ का है। राजाका नाम लुप्त हुआ है। इस समय बोचुवनायककी निसिधिकी स्थापना की गयी थी तथा तदर्थ पार्श्वदेवको कुछ भूमि अर्पित की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई० ७४ पृ० ६९]

६५४
हूविन हिप्पर्गि (बिजापूर, मैसूर)
कन्नड

[इस लेखमें हवु रेमरस तथा रेचरस-द्वारा ऋषियोंके आहारदानके लिए देवचन्द्र भट्टारकको कुछ भूमि दान देनेका उल्लेख है। इंगलेश्वरके देवकीर्ति भट्टारकका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ९१ पृ० ७१]

परिशिष्ट १

श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना

[पहले संग्रहको पद्धतिके अनुसार हम यहाँ श्वेताम्बर सम्प्रदायसे सम्बद्ध लेखोंकी सूचना दे रहे हैं। इस सूचीमें सरकारी प्रकाशनों-में प्रकाशित लेखोंका अन्तर्भाव है। श्री० पूरणचन्द नाहरका प्राचीन जैनलेखसंग्रह, श्री० अगरचन्द नाहटाका बीकानेर जैन-लेखसंग्रह, आदि ग्रन्थोंमें प्रायः श्वेताम्बर सम्प्रदायके ही लेख हैं। इन लेखोंकी संख्या ३५००से ऊपर है। इनका प्रस्तुत सूचीमें उल्लेख आवश्यक नहीं समझा गया।]

१ अकोटा (वडोदा, गुजरात) – ८वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० १६–१९

२ अकोटा – ९ वीं–१०वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० २०–३५ तथा ३९–४८

३ वडोदा (गुजरात)–सं०१०९३=सन् १०३७

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० १६९–७१

४ भरतपुर (राजस्थान)–सं० ११०९=सन् १०५२

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ३८८, ३९४

५ आबू (राजस्थान)–सं० १११९=सन् १०६३

ए० इं० ९ पृ० १४८

६ सिरोही (राजस्थान) सं० ११३५=सन् १०७९

रि० आ० स० १९२१–२२ पृ० ११९

७ लाडोल (गुजरात) –सं० ११४०=सन् १०८४

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ए २

८ लाडोल–सं० ११५६ = सन् ११००

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ए ३

९ उदयपुर (राजस्थान)–सं० ११७६ = सन् ११२०

रि० आ० स० १९३०–३४ पृ० २३७

१० नाडोल (राजस्थान)–सं० १२१२ = सन् ११५७

इ० ए० ४१ पृ० २०२

११ लखनऊ (उत्तरप्रदेश)–सं० १२१६ = सन् ११६०

रि० आ० स० १९१३–१४ पृ० २९

१२ जालोर (राजस्थान)–सं० १२२१ = सन् ११६५

ए० इं० ११ पृ० ५४

१३ मथुरा (उत्तरप्रदेश) सं० १२३४ = सन् ११७८

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ५२६

१४ भद्रेशर (गुजरात)–सं० १३१५ = सन् १२५९

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० १६९

१५ भद्रेशर–सं० १३२३ = सन् १२६७

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० १७०

१६ जालोर (राजस्थान)–सं० १३३१ = सन् १२७५

ए० इं० ३३ पृ० ४६

१७ आमरण (राजस्थान)–सं० १३३३ = सन् १२७७

पूना ओरिएण्टलिस्ट ३ पृ० २५

१८ चितोड (राजस्थान)–सं० १३३४ = सन् १२७८

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० २३२–२३३

१९ उदयपुर (राजस्थान)–सं० १३३५ = सन् १२७९

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० ४८५

२० बम्बई—सं० १३५६ = सन् १३००

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० २०१–३

२१ उदयपुर—१२वीं सदी

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५०७

२२ खंभात (गुजरात)-सं० १४२०से सं० १४६८=सन् १३६४से सन् १४१२

रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५९-१९५

२३ आंतरी (राजस्थान) स० १४६८=सन् १४१२

रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १८७

२४ मेढता (राजस्थान)-सं० १५०७से १६८७ =सन् १४५१से १६३१

रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३३

२५ ब्रिटिश म्यूजियम-सं०१५१५से १५८३ =सन् १४५८से सन् १५२७

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५३०-५३८

२६ सिरोही (राजस्थान)-सं० १५२४=सन् १४६८

रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११९

२७ बम्बई—सं० १५२५=सन् १४६९

रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २४९

२८ उदयपुर—सं० १५५६=सन् १५००

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४८६

२९ मौगामा (राजस्थान)-सं० १५७१=सन् १५१५

रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १८८

३० अलवर (राजस्थान)-सं० १५७३=सन् १५१७

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३८६

३१ अलवर—सं० १६२६=सन् १५७०

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३७८

२ वैराट (राजस्थान)–शक १५०९ = सन् १५८७

रि० आ० स० १९०९–१० पृ० १३२

३३ अलवर—सं० १६४५ = सन् १५८९

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ३७६

३४ लखनऊ—सं० १६५२ = सन् १५९६

रि० आ० स० १९१३–१४ पृ० २९

३५ भद्रेशर (गुजरात)–सं० १६५९ = सन् १६०३

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० १७०

३६ उदयपुर—सं० १६६२ = सन् १६०६

रि० आ० स० १९३०–३४ पृ० २३७

३७ भद्रेशर—सं० १९०५–१९३४ = सन् १८४९–१८७८

रि० इ० ए० १९५४–५५ पृ० ४२

परिशिष्ट २

जैनेतर लेखोंमें जैन व्यक्ति आदिके उल्लेख।

(१) बेलगामे

कन्नड

सन् १२९४

[इस लेखमें यादव राजा रामचन्द्रके समय वल्लिगावेके भेरुण्डस्वामी-मन्दिरका उल्लेख है। इस मन्दिरके हेग्गडे पदपर वैद्य दासण्णकी स्थापना कर उसे कुछ भूमि अर्पित की गयी थी। इस भूमिमें प्रथमसेनवसदि (जिनमन्दिर) की कुछ भूमि भी शामिल कर दी गयी थी।]

[ए० रि० मैं० १९२९ पृ० १२४]

(२-६) देवगेरी तथा कोल्लूर (जि० धारवाड, मैसूर)

(११वीं-१२वीं सदी)-कन्नड

पहला लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल (सोमेश्वर प्रथम) के राज्यकालका है। इनके अधीन वासवूर १४० प्रदेशमें जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ कलियम्मरस शासन कर रहा था। इसे सम्यक्त्व-चूडामणि तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं। इसने कोल्लूरके कलिदेवेश्वरके मन्दिरमें दीपदानके लिए कुछ दान दिया था। इस दानकी तिथि पौष शु० ५, शक ९६७, उत्तरायण संक्रान्ति थी।

दूसरे लेखकी तिथि शक ९९७, पौष शु० १४, उत्तरायण संक्रान्ति थी। इस समय चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर द्वितीयका राज्य चल रहा था। इसमें भी कलियम्मरसके शासनका उल्लेख है तथा देवगेरी-के कांकलेश्वर मन्दिरके लिए दण्डनायक वणमय्य-द्वारा कुछ दान दिये

जानेका निर्देश है। इसी लेखके दूसरे भागमें उसी कुलके एक दूसरे कलियम्मरसका उल्लेख है जो चालुक्य सम्राट् भूलोकमल्ल सोमेश्वर तृतीय-का सामन्त था। इसने सम्राट्के राज्यके ९वें वर्ष अर्थात् शक १०५६ में उक्त मन्दिरको कुछ दान दिया था। इस कलियम्मरसने माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

तीसरे लेखमें उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का उल्लेख सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके दसवें वर्ष (सन् १०८५) में किया है जब उसने कोलूरमें कुछ धार्मिक दान दिया था।

चौथा लेख सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके ४६वें वर्ष (स० ११२१) का है। इसका सामन्त हेर्माडियरस था जो उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का पुत्र था। इसने कोलूरमें त्रिभुवनेश्वर तथा भैरवके मन्दिरों-को कुछ दान दिया था। तथा माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

पाँचवाँ लेख यादव राजा सिंघण (तेरहवीं सदीका पूर्वार्ध) के राज्यकालका है। इसका सामन्त मल्लिदेवरस था जो उक्त जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ था। इसने कोल्लूरके क्षेत्रपाल मन्दिरको कुछ दान दिया था।

यहाँ द्रष्टव्य है कि कलियम्मरस (द्वितीय), हेर्माडियरस तथा मल्लि-देवरस शैव थे फिर भी उन्हें पद्मावतीलब्धवरप्रसाद यह पुराना विशेषण दिया है।

छठा लेख विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके ४थे वर्ष (सन् १०७९) का है। इसके अधीन नोलम्बवाडि तथा सान्तलिगे प्रदेशपर त्रैलोक्यमल्ल (जयसिंह तृतीय) शासन कर रहा था तथा बनवासि प्रदेशपर बलदेवय्य-का शासन था। बलदेवय्यको जिनचरणकमलभृंग यह विशेषण दिया है। इसके अधीन कुछ करोंका उत्पन्न कोलूरके ग्रामेश्वर मन्दिरके लिए किसी कन्नडाचार्यको दान दिया था।]

[ए० इं० १९ पृ० १७९-१९७]

(७) शिवमन्दिर, नीडूर (जि० तंजोर, मद्रास)

तमिल – सन् १११६

[यह लेख कुलोत्तुंग चोलके राज्यके ४६वें वर्षमें लिखा गया था। इसमें कण्डन् माधवन्-द्वारा शोण्णवाररिवार (गणपति) देवका मन्दिर बनवानेका निर्देश है। यह माधवन् कुलत्तूर स्थानका शासक था जहाँ अमिदसागर (अमृतसागर) मुनिने कारिगै (याप्परुंगलक्कारिगै) नामक छन्दःशास्त्र तमिल भाषामें लिखा था। इस रचनाके लिए जिनने प्रेरणा की वे सज्जन माधवन्के चाचा (अथवा ससुर) थे।

इस छन्दःशास्त्रमें ४४ कारिकाएँ हैं तथा उरुप्पियल्, शेय्युलियल् एवं ओलिवियल् ये तीन प्रकरण हैं। इसपर गुणसागरने टीका लिखी है।]

[ए० इं० १८ पृ० ६४]

(८) कमलापुर और हंपीके बीच

कृष्णमन्दिरके समीप एक मण्डपमें

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[यह लेख मधुर नामक जैन कविने लिखा है जो वाजि कुलमें उत्पन्न हुआ था। लेखमें देवरायके मन्त्री लक्ष्मीधर-द्वारा महागणनाथ (शिव) की स्थापनाका वर्णन है। मधुरने धर्मनाथपुराण तथा गुम्मटाष्टक लिखा है। यह हरिहररायके मन्त्री मुद्दण्डेश्वरका आश्रित था। इस लेखमें लक्ष्मीधर-द्वारा मधुरको हाथी, घोड़े, रत्न, जमीन आदि दान देनेका उल्लेख है।]

[इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७७]

(९) गोकर्ण (उत्तर कनडा)

१५वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें महाबलेश्वर मन्दिरमें अन्नसत्र तथा अन्यपूजाके लिए कुछ

दान दिये जानेका उल्लेख है। दानकी रक्षाके लिए कहे गये शापात्मक वर्णनमें गेरसोप्पेकी हिरियबस्तिके चण्डोग्र पार्श्वनाथका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० १०८ पृ० २३७]

(१०) वीराम्बुधि ताम्रपत्र (मैसूर)

शक १४८६ = सन् १५६७, कन्नड

[जिनशासनकी प्रशंसासे इस ताम्रपत्रका प्रारम्भ होता है। कुलोत्तुंग विक्रमरायके पुत्र चंगालराय-द्वारा भारद्वाजगोत्रके ब्राह्मण नरसीभट्टको वीराम्बुधि नामक ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। दानकी तिथि माघ शु० १०, शक १४८९, सर्वजित् संवत्सर ऐसी दी है।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३]

परिशिष्ट ३

नागपुर-प्रतिमा लेखसंग्रह

इस परिशिष्टमें हम नागपुरके समस्त प्रतिमालेखोंका संकलन दे रहे हैं। इन लेखोंका संग्रह श्री शान्तिकुमारजी ठवली (वर्तमान निवास–देवलगाँव राजा, जि० बुलडाणा, महाराष्ट्र) ने कोई २७ वर्ष पहले सन् १९३५ में किया था। आपने यह संग्रह नागपुरके लोकप्रिय जैन श्रीमान् स्व० सवाई सिंगई श्री० नेमलालजी पासूसावजीकी स्मृतिमें अर्पित किया था। इस संग्रहके लिए स्व० पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजीने भूमिका लिखी थी जा इस प्रकार थी – "जैनधर्मके इतिहासके निर्माणके लिए इस बातकी परम आवश्यकता है कि सर्व जैन स्मारकोंके लेख संग्रहीत किये जावें – इन स्मारकोंमें प्रतिमाओंके लेख, यन्त्रोंके लेख, अन्य शिलालेख तथा शास्त्रोंकी प्रशस्तियाँ आवश्यक हैं – श्री शान्तिकुमार ठवली नागपुरने नागपुरके सर्व दिगम्बर जैन मन्दिर व चैत्यालयोंके लेखोंको लिखकर पुस्तकाकार सम्पादन करनेमें जो परिश्रम उठाया है वह सराहनीय है। अच्छा हो यदि इन मूर्तियोंके लेखोंके साथ यंत्रोंके लेख और शास्त्रकी प्रशस्तियोंका विवरण प्रकट किया जावे। एक संक्षिप्त तालिका ऐसी दी जावे कि लेख-रहित प्रतिमाएँ इतनी व अमुक संवत्की इतनी – जिससे पाठकको प्राचीनता व अर्वाचीनताका पता तुरत लग जावे। ऐसी पुस्तकोंसे भविष्यमें बहुत काम निकलेगा – आशा है ठवली महोदय मध्यप्रान्त व वरारके सर्व स्थानोंके लेखोंके संग्रहका प्रयत्न करेंगे। अन्य उत्साही युवकोंको अपने-अपने प्रान्तों-के लेखोंको प्रकट करना चाहिए जिससे किसी समय भारतीय दि० जैन लेख संग्रह पुस्तक निर्माण हो सके।

ब्र० सीतल

९–३–१९३६ नागपुर"

इस पुस्तिकाका प्रकाशन अन्यान्य कारणोंसे अबतक नहीं हो सका था। अतः हमने इस परिशिष्टमें इसका पुनः संपादन किया है। संग्राहकने मूल लेख मन्दिरोंके क्रमसे अलग-अलग संग्रहीत किये थे तथा यन्त्रोंके लेखोंके परिशिष्ट अन्तमे दिये थे। हमने मन्दिरों तथा मूर्तियोंका विवरण अलग दिया है तथा लेख समयक्रमसे अलग दिये हैं। इन लेखोंके विशेष नामोंका समावेश सूचीमें कर दिया है तथा वहाँ लेखांकके साथ (ना०) यह संकेत दिया है।

नागपुर नगरका अस्तित्व यद्यपि राष्ट्रकूट साम्राज्यके समयसे ज्ञात होता है तथापि इसे भोंसला राजा रघूजी१ के समयसे – सन् १७३४ से प्रधान स्थान प्राप्त हुआ है। तबसे १९५६ तक यह मध्यप्रदेशकी राजधानी रही है। नागपुरके सभी मन्दिर प्रायः भोंसला राजाओंके राज्यमें ही बने हैं किन्तु इनमें कई प्रतिमाएँ अन्य स्थानोंसे भी लायी गयी हैं। इस नगरमें कुल ९ मन्दिर हैं। विदर्भकी रीतिके अनुसार यहाँके प्रमुख जैन व्यक्तियों-के घरोंमे भी छोटे-छोटे चैत्यालय हैं। ऐसे गृहचैत्यालयोंकी संख्या ३७ है। इन सब स्थानोंमें कुल मिलाकर ६४६ मूर्तियाँ आदि हैं जिनमें धातुकी ४४० तथा पाषाणकी २०६ हैं। इन मूर्तियों आदिके ४१ प्रकार हैं जिनकी संख्या इस प्रकार है – (१) आदिनाथ ४३ (२) अजितनाथ १३ (३) सम्भवनाथ १ (४) सुमतिनाथ २ (५) पद्मप्रभ ७ (६) सुपार्श्वनाथ १२ (७) चन्द्रप्रभ ४३ (८) पुष्पदन्त ३ (९) शीतलनाथ ५ (१०) श्रेयांस ३ (११) वासुपूज्य ६ (१२) अनन्तनाथ २ (१३) धर्मनाथ ३ (१४) शान्तिनाथ १० (१५) अरनाथ ६ (१६) मुनिसुव्रत १३ (१७) नेमिनाथ १४ (१८) पार्श्वनाथ १३३ (१९) महावीर १० (२०) चौबीसी ३४ (२१) पंचमेरु ९ (२२) नन्दीश्वर ७ (२३) सिद्ध ४ (२४) बाहुबली ६ (२५) रत्नत्रयमूर्ति ३ (२६) पंचपरमेष्ठि १ (२७) यक्षिणी २७ (२८) सरस्वती ३ (२९) क्षेत्रपाल १ (३०) सप्त ऋषि १ (३१) चौसठ ऋषि १ (३२) गुरुपादुका २ (३३) रत्नत्रय यन्त्र ५ (३४) सम्यग्दर्शन यन्त्र ४ (३५) सम्यक्चारित्र

यन्त्र ६ (३६) दशलक्षण यन्त्र ६ (३७) षोडशकारण यन्त्र २ (३८) कलि-कुण्ड यन्त्र १ (३९) सिद्ध यन्त्र १ (४०) नवग्रह यन्त्र १ (४१) जलयात्रा यन्त्र १। इन मूर्तियों आदिमें ५२१ के पादपीठों अथवा किनारोंपर लेख हैं। ऐसे लेखोंकी संख्या ३२४ है (जहाँ दो अथवा अधिक मूर्तियोंपर एक ही लेख है वहाँ हमने उस लेखको एक लेखके रूपमें ही गिना है।)

समयकी दृष्टिसे ये लेख आठ सदियोंमें इस प्रकार विभक्त हैं – विक्रम तेरहवीं सदी ४, पन्द्रहवीं सदी ३, सोलहवीं सदी २२, सत्रहवीं सदी ५१, अठारहवीं सदी ७२, उन्नीसवीं सदी ६१ तथा बीसवीं सदी १००।

इन सब लेखोंकी भाषा अशुद्ध संस्कृत है। कुछ लेखोंमें नागपुरकी स्थानीय भाषाओं–हिन्दी तथा मराठीका अंशतः प्रयोग हुआ है (लेख क्र० २०६,२६३,२६७,२६९,२७८,२८५) किन्तु शुद्ध हिन्दी या मराठीमें कोई लेख नहीं है। एक लेख (क्र० ७३) कन्नडमें तथा एक (क्र० ३११) उर्दूमें है किन्तु इनका वाचन प्राप्त नहीं हो सका।

मूर्तिप्रतिष्ठाके स्थानोंके सोलह नाम उल्लिखित हैं – नागपुर (क्र० १५२,१९०-२,२१२,२१५,२१६,२२०-१,२२७,२२९,२३१,२३३, २३५, २४२,२४७,२४९,२५०,२५५-७,२५९,२६१,२७९,२८२,२९५). कारंजा (क्र० ८१,१२५,१५७-८,२१०), शिरपग्राम (क्र० २०२,२०४), रामटेक (क्र० ७३,२५३) भांसी (क्र० १४३), तजेगांव (क्र० १०६) उमरावती (क्र० १९९), इंगोली (क्र० २३२), मंजालपुर (क्र० ७०) बहादरपुर (क्र० ६५), अवडनगर (क्र० १३०) सिवनी (क्र० २८०) छतारा (क्र० २८८), कामठी (क्र० १५४), सावरगाँव (क्र० २९३), सवाई जयनगर (क्र० १९३)।

प्रतिष्ठाकर्ता व्यक्तियोंकी पन्द्रह जातियोंका उल्लेख मिलता है – खंडेलवाल (क्र० ९), अगरवाल (क्र० ५३), बघेरवाल (क्र० १०), गोलसिंघारा (क्र० ७३), पल्लीवाल (क्र० ५१), गुजरपल्लीवाल (क्र० २१), पद्मावती पल्लीवाल (क्र० ११८), उज्जैनीपल्लीवाल

(क्र० १०८,१२०,१४३), ओश्रीमाल (क्र० ४९-५०) हुंबड (क्र० ८, २०,३०,३९,८६), गोलापूर्व (क्र० ६८,२९१), परवार (क्र० ६९,१८८, १९१-९२,२५०,२५४,२६३,२७२,२८५), खंडेलवाल (क्र० १०७,२८२) सैतवाल (क्र० ९५,२७९,२८६,२८७), बघेरवाल (क्र० १४, २९,३८, ४४,४६,५५-६,६६,८०-८२,८८-९०,९२,९४,९६,१२२, १२५, १३०-१, १३५,१५७,१८२,१९८,२०१,२०२,२०४,२२७) ।

प्रतिष्ठापक आचार्य अधिकांश मूलसंघके सेनगण तथा बलात्कारगणके थे, काष्ठासंघके नन्दीतटगच्छके कुछ आचार्योंके उल्लेख भी हैं। इन उल्लेखोंका उपयोग हमारे ग्रन्थ 'भट्टारक सम्प्रदाय' में किया गया है। उससे इन भट्टारकोंके बारेमें अन्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

संवत् १५४८ के दो लेख (क्र० १८,१९) विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं। इनमे पहला लेख कोई ७७ मूर्तियोंपर है। ये मूर्तियाँ मुडासा शहरमें शिवसिंहके राज्यकालमें सेठ जीवराज पापडीवालने प्रतिष्ठित करवायी थीं। इस समारोहके प्रमुख भट्टारक जिनचन्द्र थे। इस समारोहमें प्रतिष्ठित मूर्तियाँ प्रायः प्रत्येक दिगम्बर जैन मन्दिरमें पायी जाती हैं।

मूल लेख

१ संमत १२०१ वैशाख वदी तीन । (विवरण क्र० १४०)

२ सं० १२३४ म तु हा ले (?)···· (विवरण क्र० १६६)

३ संमत १२६२ साल····। (विवरण क्र० ११५)

४ संमत १२६९ वर्ष आषाढ़ सुदी ३····। (विवरण क्र० ११४)

५ संमत १४५७ वर्षे वैसाख सुदी ६ श्रीमूलसंघ भ०····आजिनदेव साह माणिकचंद···। (विवरण क्र० २३१,२३२)

६ मूलसंघ भ० धर्मभूषणोपदेशात् संमत १४६५ वर्षे····। (विवरण क्र० ३०२)

७ संवत १४८५···। (विवरण क्र० ४०)

८ संवत १५१० वर्षे माहमासे शुक्लपक्षे ५ रवौ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मनंदि तत्पट्टे भ० श्रीसकलकीर्ति तत्शिष्य ब्र० जिनदास हुंबडज्ञातिय सा० वेजु भा० मलाई सुत हरिचंद भा० नागाई सुत गोविंद भा० बजाई । (विवरण क्र० १६७)

९ सं० १५२१ वर्षे वैसाख वदि २ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीविद्यानंदिगुरूपदेशात् श्रीराइकवालज्ञातिय···भार्या अहिवदे सुत वेणा भार्या वनादे कारितं आचंद्रप्रभचतुर्विंशति नित्यं प्रणमंति ॥ श्रीशुभं ॥ (विवरण क्र० १५७)

१० संमत १५२४ मूलसंग सेनगणो भा.णकसेनगुरु गगराडा माललेटा भार्या तानाइ । (विवरण क्र० ८०)

११ संमत १५२१ फागुण वदी ५ सू०····। (विवरण क्र० १८८)

१२ संमत १५२५ श्रीमू० भ० भुवनकीर्तिस्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषणस्तदुपदेशात् सं० दि० समाज । (विवरण क्र० ११३)

१३ सं० १५३५ वर्षे पौस वदी ३ श्रीमूलसंघे भ० सकलकीर्तिस्त० भ० श्रीभुवनकीर्तिस्त० भ० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् चांगा भार्या भूसनदे वदासा भा० तानो....जी वासपूज्य ।

(विवरण क्र० १६०)

१४ [सक] १४०२ व० श्रीक....श....ज्ञात बघेरवाल....गोत्र सं० पासधन....सं० जेनराज मातापुत्र प्रणमंति (विवरण क्र० ४१३)

१५ सं० १५४३ श्रीमूलसंग भ० श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात्....दिवसी भा० गुणा सुत....भा० नामलाई ।

(विवरण क्र० ३८०)

१६ सं. १५४३....पद्मसी....दन....।(विवरण क्र० ४३३)

१७ संमत १५४५ का ज्येष्ठ....। (विवरण क्र० ३४३)

१८ संवत १५४८ वर्षे वैसाख सुदी ३ श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीजिनचंद्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्यं प्रणमंति शहर मुडासा राजा स्योसिंघ । (विवरण क्र० १-३,१०-२६,४६-४८,८७,९१-१०२,१४६-१५६,२३८-२६४,३६७-६९)

१९ संमत १५४८ वरषे वैसाखसुदी ३ श्रीमूलसंघे भट्टारकजी श्रीभानुचंद्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्यं प्रणमंति सहर मुडासा श्रीराजा सोसिंघ । (विवरण क्र० २१८,२१९)

२० ॐ नमः सं० १५५२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शुक्रे श्रीमूलसंघे भ० भुवनकीर्तिस्त० भ० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् हुं० श्रे० पर्वत भा० देऊ सु० राजा भा० शलदे सुत कर्मसी प्रणमंति श्रीसुमतिनाथ प्रणमंति । (विवरण क्र० १६५)

२१ सके १४२४ मूलसंघे सेनगणे भ० माणिकसेन उपदेशात् गुजरपल्लिवालज्ञाति संघवी नेमा....। (विवरण क्र० १३७)

२२ सं० १५६१ वर्षे वैसाख सुदि १० बुधौ श्रीमूलसघे भ० श्रीज्ञानभूषण त० भ० श्रीविजयकीर्तिगुरूपदेशात् व० लाडण स०

क० राजा भा० माणिकी सु० कान्हा भा० रूपी भ्रा० गोईया भा० नरगादि भ्रा०....श्रीरत्नत्रय नमंति । (विवरण क्र० १६८)

२३ संमत १५६१ वर्ष फागुण सुदी....। (विवरण क्र० ११७)

२४ सं० १५७८ मू० स० धर्मभूषण । (विवरण क्र० ३८३)

२५ संमत १५८२....। (विवरण क्र० ४८२)

२६ सं० १५८३.... । (विवरण क्र० १२१)

२७ सं० १५८३....ती १२....। (विवरण क्र० ४५३)

२८ संमत १५८४ श्री मू. स. भ. विजयकीर्ति तत्पट्टे भ. शुभचंद्रदेवोपदेशात् ब्रह्म श्रीशांता वेलीयाई-ति प्रणमंति । (विवरण क्र २०५)

२९ संमत १६०० वर्षे फागुण वदी ५ शुक्रे श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीरत्नकीर्ति प्रतिष्ठितं सेनगणे बघेरवाल ज्ञातिय चवरियागोत्रे सा. धाऊजा भार्या बोपाई सुत भा. माणिक भार्या पदमाई भ्राता रतन भार्या पसाई पुत्र धाऊजी एते श्रीसुपार्श्वनाथं नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र. २०९)

३० संवत १६०७ वर्षे वैशाख वदी २ गुरु श्रीमूलसंघे भ. श्रीशुभ-चंद्रगुरूपदेशात् हूँ सखेस्वरा गोत्रे सा. जीना भा. माली सु. नाका भा. नाकदे भ्रा. जगा भा. ललितादे भ्रा.-गार एते सर्वे नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र. ४=६)

३१ [सं.] १६०८-ठया- । (विवरण क्र. ३८४)

३२ संमत १६०९ फालगुण २ दिन- । (विवरण क्र. १२९)

३३ संवत १६११ ते रागविदे (?) प्रणमंति । (विवरण क्र. ४६०)

३४ संमत १६१४ सेनगण धरमाई वांपाई चांगासा । (विवरण क्र. २००,३६६)

३५ सं० १६१५ मा० १२ । (विवरण क्र. ४६०)

३६ सं० १६१६ । (विवरण क्र. ४६१)

३७ सके १४८५ मू० स- । (विवरण क्र. २२५)

३८ सक १४८७ प्रजापतसंवत्सरे श्रीमू. सरस्वती. बलात्कार. भ. धर्मचंद्राणाम् उपदेशात ज्ञाति बघेरवाल भुरा गोत्रे सा रतन सं. भार्या पुतली लखमाई-प्रणमंति । (विवरण क्र. ४३४)

३९ सं. १६२५ आषाढ शुद्धि ५ श्रीमूलसंघे ब्रह्म श्रीहंस ब्रह्म श्रीराजपालोपदेशात् हुंबड ज्ञातौ सा. समराज भा. लोकाई स. आसजी भा. बाकाई । (विवरण क्र. २६८)

४० श्रीमूलसंघ संमत १६३१ वर्षे फाग सुदी १० सोमे भ. श्रीगुणकीर्तिगुरूपदेशात् सं. कर भार्या सहागदेई सं. वीरदास भा. ताकमई श्रीअजितनाथ जिन प्रणमंति ।
(विवरण क्र. ३०७)

४१ संमत १६३६ म.ानोजा पु (?) । (विवरण क्र. ३०६)

४२ संवत् १६३६ श्रीकाष्ठासंघे भ० विद्याभूषण प्रतिष्ठितं हुंबड सा. जयवंतभार्या तसमादे सु-जीवराजना धनराजसा प्रणपालसा नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र. ४०८)

४३ शक १५०१ मा. तिथी ८ काष्ठासंघे भ. श्रीश्रीभूषणमद्रुपदेशात् प० जयवंत (विवरण क्र. ४३६)

४४ सके १५०३ वृषा नाम संवत्सरे फागुण सुदि ७ श्रीमूलसंघ ब. भ. धर्मभूषणोपदेशात बघेरवालज्ञाति ठवलागोत्रे सं. पासुसा भार्या सं० रुपाई तयो पुत्रौ आपुसा भार्या लिंबाई रामासा भार्या वोपाई एते प्रणमंति । (विवरण क्र. ४२१)

४५ सके १५०६ माघ वदी १ गोत्र चवरिया गुणासा ।
(विवरण क्र. ३९१)

४६ संमत १६४५ वैसाख सुदी ७ सोमवार श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगणे पुष्करगच्छे भट्टारकश्रीप्रतापकीर्ति तस्य आम्नाये बघेर-

वालज्ञातिये थोरखंडियागोत्रे संगई पुंनासा स० धवाई प्रणमंति।
(विवरण क्र० २५०)

४७ संवत १६४६ वर्षे श्रीमूलसंग भट्टारक श्री'''वीर तत्पट्टे भ. श्री'''सेन तस्य शिष्य पंडित श्रीगजा उपदेशात् साह बावजी भार्या रामाई तयो पुत्र गकुरसाह तस्य भार्या पेमाई तयो सुत सुवाजीसाह भार्या लखमाई तयो नित्यं प्रणमंति'''सात फागुण शुदी १० गुरुवासरे श्रीचिंतामणी पार्श्वनाथचैत्यालये प्रतिष्ठितं॥ शुभं भवतु॥ कल्याणमस्तु॥ ते पूजता ते सर्वंतु॥ जयस्तु॥
(विवरण क्र० २११)

४८ सं. १६४९ फा. शु. १३ मू. बलात्कार. भ. पद्मकीर्ति उपदेशात्'''। (विवरण क्र० २३०)

४९ [सं०] १६५२ वैसाख सुद १४ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे पद्मकीर्ति विद्याभूषण हेमकीर्ति सदुपदेशात् श्रीश्रीमाल'''
(विवरण क्र० २६६, २६९)

५० संवत १६५३ वैसाख शुद्ध १४ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे भट्टारक हेमकीर्ति उपदेशात् श्री श्रीमालज्ञाती महासा नित्यं प्रणमतु
(विवरण क्र० २७५)

५१ शके १५१९ मन्मथनामसंवत्सरे वैसाख सुदि त्रयोदशीदिने वटापितं श्रीमूलसंघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीधर्मभूषणोपदेशात् पल्लीवालज्ञातीय स. वायासा तस्य भार्या गंगाई तयो पुत्र सं. लखमसी तस्य भार्या द्वौ गोमाई लालाई तेषां पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र सं. मोतासा द्वितीय नेमा प्रणमंति। (विवरण क्र० १२४)

५२ श्रीमूलसंघे सेनगणे वृषभसेनगणधरान्वये श्रीसमंतभद्र'''लक्ष्मीसेनभट्टारकउपदेशात् सके १५२१ फागुण सुद पा. रवौ संघवी सोमसेठी श्रीमंगल। (विवरण क्र० १२०)

५३ संवत् १६५८ वर्षे आषाढ वदी····अगरवालज्ञा० । (विवरण क्र० ४८३) ।

५४ शके १५२५ वर्षे शुभकृत् नाम संवत्सरे ज्येष्ठशुक्लपक्षे १३ तिथौ प्रतिष्ठिता । (विवरण क्र० २७१)

५५ संमत १६६० वर्षे फालगुण शुद्धि १० श्रीकाष्टासंघे लाडवाग-डगच्छे भ० श्रीप्रतापकीर्ति नंदिसंघे बघेरवालज्ञातिय-सा भारया वीरूना परिनवाई तयो पुत्र सा० नोगु भा. परिहाई श्रीपद्मा-वति प्रणमंति श्रीकाष्टासंघे नंदितटगच्छे भट्टारक श्री श्री श्रीभूषण प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ४१४)

५६ शक १५२५ वर्षे श्रीमूलसंघे सेनगणे श्रीमनवृषभसेनगणान्वये भ० श्रीसोमसेन तत्पट्टे भ० श्रीमाणिकसेन तत्पट्टे भ० श्रीगुण-भद्र तत्पट्टे भ० श्रीगुणसेन उपदेशात् बघेरवालज्ञातीय खटवड-गोत्रे सं० श्रीहरकसा भार्या गोजाई तयो सुत सं० गणासा भार्या कडताई येते श्रीरत्नत्रयचतुर्विंशति प्रणमंति । (विवरण क्र० १९०)

५७ संमत १६६० वर्षे फाग सुद ॥ गु० श्री एतत्-वा- मुक्ताबाई श्रीशीतलनाथबिंबका भ०-। (विवरण क्र० २७८)

५८ सक १५२६ माहो सुद १२ भट्टारक हेमकीर्ति उपदेशात् प्रति-ष्ठितं सितलसिंघवी-ताजी सवाल तुरासु (?) रुपा नित्यं प्रण-मंति । (विवरण क्र० ४३९)

५९ संवत १६६३ वर्षे····श्रीमूलसंघे····भ० जगतकीर्ति सदुपदेशात्-स्वेरान्वये-प्रतिष्ठितं (विवरण क्र० ४८६)

६० संमत १६६४····महाराजाधिराज···श्रीचन्द्रकीर्ति-तत्पट्टे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिजी आम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचा-र्यान्वय प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २७)

६१ संमत १६६९ चैत्रसुद १५ रवौ मूलसंघे कुं० भ० यशोकीर्ति

तत्पट्टे भ० ललितकीर्ति तत्पट्टे भ० धर्मकीर्ति उपदेशात्-वंदे-। (विवरण क्र० २१३)

६२ ॐ नमः संमत १६७१ वर्षे वैसाख सुद ५ मूलसंघे बलात्कार-गणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० यशकीर्ति तत्पट्टे भ० धर्मकीर्ति तदुपदेशात् पोरपट्टे सा उदयचंद भार्या-अचिवारा सुले गोहिलगोत्रे-उदयगीरेंद्र प्रतिष्ठा प्रसिद्धं मोनी दामोदर निर्मापितं संभवानि संस्थाहित प्रतिष्ठामध्ये प्रतिष्ठितं नंदिश्वरजिनबिंब। (विवरण क्र० २१५)

६३ संवत् १६७२ वर्षे फागुण सित २ तिथौ मेडतानगरे लोढागोत्रे सं० थारपात भार्या सकतादेवीभ्यां श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्रसूरिभिः। (विवरण क्र० १५८)

६४ सके १५३७। (विवरण क्र० ४४१)

६५ संवत १६७६ वर्षे माघवदी ८ श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे भट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवालज्ञातौ बोरखंड्यागोत्रे धर्मदासा भार्या अंबाई तयो पुत्र लखमणसा प्रमुख पंचपुत्र सभार्या सपुत्र श्रीचन्द्रप्रभु प्रणमंति। श्रीकाष्ठासंघे नंदितट-गच्छे भ० श्रीभूषण प्रतिष्ठितं बहादरपुरे। (विवरण क्र० २९८)

६६ संवत १६७६ वर्षे माघवदी····काष्ठासंगे लाडवागडगच्छे श्रीप्रता-पकीर्ति उपदेशात् बघेरवाल ज्ञातिय गोवालगोत्रे सं० बापु भार्या जमुना····(विवरण क्र० १४३)

६७ [सं०] १६८१ पार्श्वनाथ नासिक। (विवरण क्र० ४३८)

६८ संवत १६८१ वरषे चैत्र सुदी ५ रवऊ श्रीमूलसंघे भट्टारकश्री-ललितकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यश्रीरत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे आचार्यश्रीचंद्रकीर्तिस्तदुपदेशात् गोलापूर्वान्वये खाग नाम गोत्रे सेठि भानु भार्या चंदनसिरी तत्पुत्र सेठि कतुरु भार्या किसबा तस्य पुत्री जादी नित्यं प्रणमंति (विवरण क्र० २६५)

६९ संमत १६८१ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ भ० धर्मकीर्ति उपदेशात् परवारज्ञातो…। (विवरण क्र० २२३)

७० संमत १६८१ वै० सु० १ दिने संजालपुरवास्तव्य सं० चंद्रा श्रीपार्श्वनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयदेवसू [रिभिः]। (विवरण क्र० २०१)

७१ संवत १६८१ माघ सुदी १ दिन…। (विवरणक्र० १०८)

७२ संवरगोत्र पानासा संमत १६८६ । (विवरण क्र० १४४)

७३ संवत १६८६ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीधर्मचंद्र तदाम्नीय आ(चार्य)पासकीर्ति तदुपदेशात् संघवि वरहरसाह गोलसिंघारा रामटेक सांतिनाथ प्रसादेन् ज्येष्ट वद्य ५ शमि तिलक मंगलं शुभं भवतु ॥ छ ॥ (विवरण क्र० २७४)

७४ सं० १६९१ मा० रत्नकीर्ति । (विवरण क्र० ३८२)

७५ संमत १६९२ मिति वैसाख वदी ११ सोमवासरे भ० धर्मचंद्रजी । (विवरण क्र० १२०)

७६ शके १५६१ प्रमवनामसंवत्सरे फालगुण सुदी द्वितीया मूलसंघे पुष्करगच्छे सेनगणे भट्टारक श्रीसोमसेनउपदेशात् प्रतिष्ठितं…। (विवरण क्र० १११)

७७ शके १५६१ फालगुण सुदी २ गुरु श्रीमूलसंघे पुष्करगच्छे सेनगणे…हुंबड…। (विवरण क्र० १३४)

७८ शक १५६१ फालगुण…श्रीमूलसंघ सेनगण भ० श्रीसोमसेन तुकसाव गुणासाव…बोपासा नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र० २११)

७९ शके १५६१ फाग वदी १० शनैश्वरे काष्ठासंघे लाडवागड बघ्हादगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये श्रीनरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे तमो०…

ब० मा० पामादि पु० देवाला नि० प्रतिष्ठितं श्रीलक्ष्मीसेन प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० २३५)

८० शके १५६१ पार्थिवनामसंवत्सरे श्रीमू० ब० म० भ० धर्मचंद्रोपदेशात् बघेरवालज्ञातीय जंडारियागोत्रे श्रावण भा० गंगाई तयोपुत्र भाणिकमा भार्या गोपाई प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ३८९)

८१ संमत १७०३ वर्षे ज्येष्ट वदी १० शके श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये वराडप्रदेशे कारंजीनगरे प्रतापकीर्तिआम्नाय बघेरवाल ज्ञातीय कावला गोत्र सा श्रीपासमा भार्या पद्माई तयो सुत सा वण भार्या मणकाई तयो पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र स० श्रीरामा भार्या अंबाई द्वितीय पुत्र सा पवसा एते समस्तै श्रीकाष्टासंघे नंदितटगच्छे भ० श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्रीविश्वसेन तत्पट्टे श्रीविद्याभूषण तत्पट्टे भ० श्रीश्रीभूषण तत्पट्टे श्रीचंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीराजकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीसेनजी प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० १३५)

८२ मूलसंगे बलात्कारगणे भ० धर्मभूषणगुरुपदेशात् बघेरवाल···· पुत्र····मा (मिन्न अक्षरमें) संमत १७०६ वर्षे मी···माह सु० ५ मो····पुजामा···। (विवरण क्र० २१०)

८३ शके १५७२···। (विवरण क्र० ११८)

८४ संमत १७११ म० सकलकीर्ति सा० लाले पुत्रवंते प्रणमंति। (विवरण क्र० ३३६)

८५ ॐनमः सिद्धेभ्यः सा म० संवत १७११ श्रीभट्टारक····। (विवरण क्र० ४७३)

८६ संवत १७१३ वर्षे माघ सुदि ११ गुरौ श्रीमूलसंघे ब्रह्म श्रीशांतिदास तत्पट्टे ब्रह्मश्रीवादिराज गुरूपदेशात् हुंबड ज्ञातीय बाई

लावाई इति सिद्धयंत्रं नित्यं प्रणमंति । शुभं भूयात् ।
(विवरण क्र० २७५)

८७ शक १५७८—सुखनाम मू० स० भ० श्रीधर्मभूषण उपदेशात् तिमासा भार्या वखाई तयो पुत्र भूतसा त० देवाई ।
(विवरण क्र० १८४)

८८ शके १५८० माघ सुदी ५ सोमे कारंजानगरे काष्टासंघे नंदितट-गच्छे भ० इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं बघेरवालज्ञाति गोवलगोत्रे'''भा० ढुलणबाई''''प्रणमंति । (विवरण क्र० १४१)

८९ संवत १७१५ वर्षे माघ सुदी ५ काष्टासंघे नंदितटगच्छे विद्या-गणे''''बघेरवाल ज्ञातीय बोरखंडयागोत्रे सं० खांमा भार्या पुतलाई तयो पुत्र सं० धनजी भार्या पदाई येन सुपार्श्वनाथ प्रणमंति । (विवरण क्र० १४२)

९० शके १५८० माघ सुदी ५ सोमवार काष्टासंघे नंदितटगच्छे भट्टारक श्री इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं बघेरवालज्ञातौ बोरखंडियागोत्रे तेऊजीसा भार्या जसाई तयो पुत्र पौत्र नाथुसा सा० चिंतामणसा एते अंबिका नित्यं [प्रणमंति] (विवरण क्र० ४४७)

९१ संमत १७१५ माघ सुदी ५ सोमवार काष्टासंघे नंदितटगच्छे विद्यागणे भट्टारकरामसेनान्वये राजकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक लक्ष्मी-सेन तत्पट्टे भ० इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं संघवी खांमा भार्या पुतलाई तयो पुत्र सं० धनजी भार्या पदाई अंबिका प्रणमंति काष्टासंघे लोहाचार्यान्वये प्रतापकीर्ति संघवी खांभा भार्या पुतलाई सं० धनजी । (विवरण क्र० ४४८)

९२ संवत १७१५ माघ सुदी ५ सोमे काष्टासंघे लाडवागडगच्छे भ० प्रतापकीर्ति तदाम्नाये बघेरवालज्ञातौ कावरी''''।
(विवरण क्र० ५)

९३ शाके १५८१ सौ० फा० व० ३ मू० स० भ० पद्मकीर्ति सो० ज्ञा० बुनमेट भाग्या भ्राता । (विवरण क्र० २०२)

९४ शा० १५८१ क० व० पद्म० भ० जे० का० ज्ञा० बघेरवाल लुगाई दा पु ता सा मा वा सा त (?)····ग गु····।
(विवरण क्र० ४०६, ४०९)

९५ सक १५८२ स्यार्वरी नाम संवत्सरे तीथ फाल्गुण सुद दसमी १०॥ श्रीशांतीनाथचैत्यालय श्रीबलात्कार गणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान् भट्टारक श्रीपद्मकीर्ति उपदेशात् रामटेक नग्र ज्ञाती सद्दुतवाल···रायाजी जाई । (विवरण क्र० २७३)

९६ सके १५८२ फाल्गुण शुद्ध ७ तिलक सेन भट्टारक श्रीजिनसेन बघेरवालज्ञातौ चवरियागोत्रे सा०···भार्या···नित्यं प्रणमंति ।
(विवरण क्र० ४४५)

९७ संमत १७१८ । (विवरण क्र० १२३)

९८ शाके १५८३ प्रभवनामसंवत्सरे ज्येष्टवदी प्रथम···य० कुं० भ०···। (विवरण क्र० २२९)

९९ शके १५८६ वर्षे क्रोधनामसंवत्सरे तिथी फागुण शुद ५ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भ० धर्मचंद्र तत्पट्टे भ० धर्मभूषण महाराज प० नेमाजी भार्या राजाई पुत्र सोयराजी तां प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २०८)

१०० शक १५८६····। (विवरण क्र० ३८८)

१०१ शके १५८९ । (विवरण क्र० ७)

१०२ शके १५९२ वैसाख····मुलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक कुमुदचंद्र तत्पट्टे भ० अजितकीर्ति त० भ० विशालकीर्ति उपदेशात् सोनोपंडित रोडे ।
(विवरण क्र० १८०)

१०३ संमत १७३१ । (विवरण क्र० १२२)

१०४ सके १५९६ फा० शु ॥ ३ भ०'''कीर्ति तत्पट्टे दयाभूषण श्रीमू० स० ब० । (विवरण क्र० २२१)

१०५ शके १५९७ मुलसंघ बलात्कारगण भ० धर्मभूषण ॐ हरीसाव पुत्र फकीचंद प्रणमंति । (विवरण क्र० २२८)

१०६ श० १५९७ मू० सेनगणे भ० जि० तजेगामग्रामे गु० गनसेठ भा० सिशबाइ पु० कृस्नाजी भा० मेगाई पु० जोगाजी प्रणमंति । (विवरण क्र० ४५७)

१०७ संमत १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीसुरेंद्रकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेरवालान्वये गृध्रवालगोत्रे सा देवसी पुत्र संगहान''''प्रतिष्ठा कारिता'''। (विवरण क्र० ३७७)

१०८ शाके १५९७ मू ॥ ब ॥ भ० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् ऊजानीपल्लीवालज्ञातीय माणिकसा तत्पुत्र नारसा सुत शतसा प्रणमंति । (विवरण क्र० १५९)

१०९ [श०] १५६७ मु० जीनसेन उ० लखसेट माहोरकर प्रणमंति । (विवरण क्र० १६२)

११० शके १५६६पिंग्ल् श्रीमू० । (विवरण क्र० ४९७)

१११ सक १६०१ संमत १७३६''''। (विवरण क्र० ३५९)

११२ सक १६०१ मार्गशिर्ष''''। (विवरण क्र० २२०)

११३ १६०१ सं० श्रीमू० । (विवरण क्र० ४९१)

११४ सके १६०१ फाल्गुण सुदि ११ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे भट्टारकश्रीपद्मकीर्तिसदुपदेशात्श्रीपद्मावतीपल्लीवालज्ञातौ अडनाव कुस्तानी पानसी भार्या मगनाई तयोपुत्र बाबुजी प्रणमंति । (विवरण क्र० २७२)

११५ सांतिनाथ सके १६०४ श्री....। (विवरण क्र० ३७५)

११६ रा० अरजुनसा सके १६०७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी ५ श्रीमूलसंघे खंडारियागोत्रे सः पी० । (विवरण क्र० १२९)

११७ सातनाथ सके १६०७....४ माघेर....। (विवरण क्र० ४६२)

११८ सके १६०७....। (विवरण क्र० ४७४)

११९ सके १७०७ संमत १७४२ । (विवरण क्र० ४५२)

१२० शके १६०७ प्रभवनामसंवत्सरे फालगुण वदी १० भ० धर्मचंद्र उपदेशात् मु०....नगरे ज्ञाते उज्जेनीपल्लीवार गोदसा भार्या नेमाई व० साह...भार्या नागाई प्रणमंति । (विवरण क्र० १८७)

१२१ सके १६०८ फागण वदि १० श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविशालकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीपद्मकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीविद्याभूषण....स्वकर्मक्षयार्थं । (विवरण क्र० २६७)

१२२ संवत १७४४ सके १६०९ फालगुण सुद १३ श्रीमत्काष्टासंघे लाडवागडगच्छे भ० प्रतापकीर्ति आम्नाये वघेरवालज्ञातौ गोवालगोत्रे संघवी पदाजी भार्या तानाई तयो पुत्र संघवी जमनाजी भार्या हांसुबाई तयो पुत्रा तुर्य स० पुतलाबा भार्या गंगाई स० पुजाबा भा० देवकु स० शीतलाबा भा० सकाई इ० पदाजी एते सह नित्यं प्रणमंति श्रीकाष्टासंघे नदितटगच्छे भ० इंद्रभूषण भ० सुरेंद्रकीर्तिः । (विवरण क्र० १७२, १७३, ४४६)

१२३ सके १६०९ फा० सु० १३ काष्टासंघे लाडवागडगच्छे प्रतापकीर्त्याम्नाय भ० सुरेंद्रकीर्ति सं० पदाजी भा० तानाई पु० राजबा भा० सोनाई पु० अनतोबा भा० पामाई जी प्रतिष्ठितं (विवरण क्र० १७५)

१२४ सके १६०९...बलात्कार....। (विवरण क्र० ४७८)

१२५ संवत १७४५ ज्येष्ठ सुदी २ सोमवार श्रीकारंजानगरे काष्टासंघे प्रतापकीर्तिआम्नाये वघेरवालज्ञातौ वोरखंडियागोत्रे सा० मलासा भार्या शकाई तयो पुत्रा अत्र सा अर्जुन भा० रंगाई शितलसा भार्या सायरा लक्ष्मणसा भा० जीवाई येसोबा पुतलाबा....नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र० ५४९)

१२६ मिती वैसाख सुदी ३ संमत १७४५....। (विवरण क्र० ६६)

१२७ संमत १७४६....। (विवरण क्र० ३२६)

१२८ शके १६११ श्री...। (विवरण क्र० ३६१)

१२९ सं० १७४६ । (विवरण क्र० ३८४)

१३० संमत १७४७ सके १६१२ ज्येष्ट वदी ७ म० श्रीइंद्रभूषण त० म० सुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये म० श्रीनरेंद्रकीर्ति प० म० श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये वघेरवालज्ञाति गोवालगोत्रे सं० वापु पुत्र सं० भोज संघवी पदाजी भार्या तानाई पुत्र सं० वापु सं० जमनाजी सं० राजवा अथ संघवी जमनाजी भार्या हसाई समस्त कुटमपरिवार नित्यं प्रणमंति दर्शनयंत्र श्रीअवढनगर प्रतिष्टितं । (विवरण क्र० १७६)

१३१ शके १६१२ ज्येष्ठ वदि ७ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे म० श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वय म० धर्मभूषण त० म० विशालकीर्ति त० म० धर्मचंद्रोपदेशात् वघेरवालज्ञाति खडासो गोत्रे सा० राघुसा सुत कपुसा अंबिका नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र० ४३२)

१३२ संमत १७५० सवधारी नाम संवत्सरे आषाढ़ कृष्ण तिथ....भार्या श्री.... । (विवरण क्र० ७३)

१३३ शके १६१७ फा० ५....। (विवरण क्र० ३७८)

१३४ सं० १७५२ माघ वदी ८ श्रीमूलसंघ म० श्रीहेमकीर्ति गु० त० न न जा सवजी (?) । विवरण क्र० ४११)

१३५ संवत १७५३ वर्षे वैसाख सुदि ६ सनौ श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति तदाम्नाये वघेरवालज्ञातौ गोवालगोत्रे संघवी भोज भार्या पदमाई तयोपुत्र अरजुन भार्या सकाई तासो पुत्र सं० तवना भार्या

सिता पुत्र सं० भामा भार्या देगई संघवी धर्मा भार्या फालाई तयो पुत्र सं० मितल भार्या देनकु भार्या हिराई तयो पुत्र भोज द्वितीयभार्या…इत्यादि सपरिवारे नित्यं प्रणमंति । श्रीकाष्ठासंघे नंदीतटगच्छे भ० रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० इंद्रभूषण तत्पट्टे भ० मु (रेंद्रकीर्ति)….। (विवरण क्र० १६९)

१३६ संवत १७५३ वरषे मिती वैसाख सुदी ३…पापडीवाल प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ५८,६३,६४,८८)

१३७ शके १६१९ वै० सु० ३ श्रीमूलसंघ सेनगण । (विवरण क्र० १६४,२१६)

१३८ संवत १७५४ मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे भ० छत्रसेनोपदेशात्…। (विवरण क्र० ८)

१३९ [सं०] १७५६ श्रीमु० बा० भ० श्रीदेवेंद्रकीर्ति भ० प्रतिष्ठित मिती माघ सुद ५ । (विवरण क्र० २०४,४६९)

१४० सके १६२२…भ० श्री ….चंद्रगुरुपदेशात्….। (विवरण क्र० २३०)

१४१ शके १६२४ चित्रभानुनामसंवत्सरे माघ….।

१४२ स० १६२६ भ० हेमकीर्ति उपदेशात् प्रतिष्ठितं सी० स० । (विवरण क्र० ४१२)

१४३ शक १६२६ तारणनामसंवत्सरे माहो सुद १३ शुक्रे मुलसंघ बलात्कारगण कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ० विद्याभूषण त० भ० हेमकीर्ति उपदेशात् उज्जैनीपल्लीवालज्ञातीय सिंगवी लखमप्रसादजी भार्या गोमाई तस्य पुत्र नेमासिंगवी सितलसिंगवी….सितलसिंगवीप्रतिष्ठितं सीसीनगरे चंद्रनाथचैत्यालये गुमास्ता चिंतामणिसा नित्यं प्रणमतु (विवरण क्र० २१०)

१४४ शक १६२६ तारण संवत्सरं माह सुद १३ मूलसंघ ब० भ०

हेमकीर्ति उपदेशात् सितलसंगई प्रतिष्ठितं शुभं भूयात् । (विवरण क्र० १८६)

१४५ शके १६२८-विभवनामसंवत्सरे माघ····। (विवरण क्र० ३०५, ३३८,४०१)

१४६ सक १६३६ जय० फा० द्ताजी । (विवरण क्र० ४३५)

१४७ संमत १७७२ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंद (कुंदाचार्यान्वये)····। (विवरण क्र० ५७)

१४८ संमत १७७८ चैत्र सुदी ६ श्रीमू० स० । (विवरण क्र० २९)

१४९ सं० १७८३ । (विवरण क्र० ४६३)

१५० संमत १७९१ मूलसंघ । (विवरण क्र० ११९)

१५१ संमत १७९३ प्र० श्रीमू० स० ब० म० श्रीधर्मचंद्रना उपदेशात् ज्ञान वा० मोजसा भा: नात्राई त० पु० फद्श्रा (?) नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र० ४०५)

१५२ संवत १८०० वैसाख शु॥ ३ भौमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये····नागपुरमे····प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ५१,५६)

१५३ संमत १८०० वैसाख सुदी ३ । (विवरण क्र० ५९)

१५४ संमत १८१० माघ सुद २ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये गोपाचलपट्टे भट्टारक श्रीचारुचंद्रभूषण तदोपदेशात्····नगरे प्रतिष्ठा करापिता····कामठी सदर····। (विवरण क्र० २०९)

१५५ शके १६७६ । (विवरण क्र० ३३५)

१५६ श्रीमूलसंगे सके १६७६····। (विवरण क्र० ४४३)

१५७ शके १६७७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी १० बुधे मुलसंघ पुष्करगच्छे सेनगणेस्नाये भट्टारकजी सोमसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनसेनगुरूपदेशात् कारंजाग्रामवास्तव्य बघेरवालज्ञात

सावळागोत्रे वीरासाह भार्या हिराई तयोपुत्र जिनासाह भार्या गोपाई तयो पुत्र द्वौ प्रथम पुत्र ठवनासा भार्या अंबाई द्वितीयपुत्र शितलसाह भार्या पदाई नित्यं प्रणमंति। (विवरण क्र० १७७)

१५८ शक १६७८ माघ सुद १४ मूलसंघ भ० शांतिसेनोपदेशात् प्रतिष्ठितं कारंजाग्रामवास्तव्येन नेवाज्ञाति फु० गोत्र पु० चिंतामणसा नित्यं प्रणमंति। (विवरण क्र० २१२)

१५९ संमत १८१४ शके १६७९। (विवरण क्र० ४४४]

१६० शक १६८१ फा० व ॥ ६ मू० स० व० कु० भ० धर्मचंद्र···· पार्श्वनाथबिंब। (विवरण क्र० १३८)

१६१ शक १६८६ स० भ० व० भ० धर्मचंद्र। (विवरण क्र० २०३)

१६२ शके १६८७ फा० ५ श्र०। (विवरण क्र० ४३१)

१६३ सके १६८७ मन्मथ अजितकीर्तिउपदेशात् स० छ रे भ टा कं (?) फा० सु० २। (विवरण क्र० ४७०)

१६४ संवत १८२३ चैत्र वदी ८। (विवरण क्र० ३१६)

१६५ संमत १८२७ सके १६९२ वैसाख सुदी १२····उपदेशात्····। (विवरण क्र० २९९)

१६६ सके १६९२ मिती वैसाख वद ११ श्रीमूलसंघे स० व० भ० धर्मचंद्र प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ६)

१६७ शके १६६५। (विवरण क्र० ४६७)

१६८ सके १६६५ मन्मथनामसंवत्सरे····। (विवरण क्र० २३६)

१६९ सके १६९७ फा ॥ ५ अ० बावजि। (विवरण क्र० ४५६)

१७० सके १६९७ स० भ० स०····भ० अजितकीर्ति····। (विवरण क्र० ४६५)

१७१ सके १६९७ म० फा० सु० ५ भ० श्र० मना। (विवरण क्र० ४७३)

१७२ सके १६६७ फा० ५ श्र० अयं ति०। विवरण क्र० ४७७)

१७३ (सके) १६६७ फा० ५ अ० ज० क० । (विवरण क्र० ४७६)

१७४ शके १६९७ मन्मथनामसंवत्सरे अजितकीर्ति उपदेशात् परवार हिरामन फाल० शु० द्वितीया २ । (विवरण क्र० ४८०)

१७५ सके १६६७ मनाजी सेठ भ० अ० । (विवरण क्र० ४२३)

१७६ शके १६९७ मि० फा० २''''नथु । (विवरण क्र० ३१५)

१७७ समत १८३२ मन्मथनामसंवत्सरे मू० व० स० कु० भ० पद्मकीर्ति भ० विद्याभूषण भ० हेमकीर्ति तत्पट्टे अजितकीर्ति फाल्गुण मासे शुद २ पंचपरमेष्टी । (विवरण क्र० २२७)

१७८ शक १६६७'''नाम संवत्सरे भ० अजितकीर्ति उपदेशात् फा० सु० २ । (विवरण क्र० २०६)

१७९ शके १६९८ सु०''''(विवरण क्र० २२४)

१८० श्रीमूलसंघी सके १७०५ । (विवरण क ४४०)

१८१ सक १७०७ चैत्र वद १३ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण । (विवरण क्र० ७६)

१८२ संमत १८४५ सके १७१० श्रीमत्काष्टासंघे लाडबागड नंदितटगच्छे भ० सुरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ० सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० लक्ष्मी सेनजी''''श्रीबघेलवालज्ञाति जुगिया गोत्रे'''काष्टासंघ गादी'''' । (विवरण क्र० १३३)

१८३ सके १७१० शै कीलनामसंवत्सरे मिती श्रावण सुद १२ श्रीमूलसंघ चिमनाजी सरावणे तय पुत्र मुरारजी । (विवरण क्र० १२८)

१८४ सा० १७१० काष्टासंघी वघासा जोगी । (विवरण क्र० १७३)

१८५ 'संमत १८४६ कार्तिक सुदी ४ काष्टासंघे नंदितटगच्छे'''' श्रीलक्ष्मीसेनजी प्रतिष्ठित'''। (विवरण क्र० १३२)

१८६ संमत १८५२ भट्टारक''''उपदेशात् रामकालेन प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ४६८)

१८७ सके १७१८ संवत १८५३ मार्गेश्वर····। (विवरण क्र० ४६२, ४६६)

१८८ ॐ नमः सिद्धेभ्यः संमत १८५७ शके १७२२ भादवा सुदी १० सोमवासरे कुंदकुंदाचार्याम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० श्री श्री श्री अजितकीर्ति तस्य उपदेशात्····गोहिल परवार ज्ञाते···मंगलं भूयात्। (विवरण क्र० २१)

१८९ साल १७२३ संवत १८५८ फागवदी २। (विवरण क्र० २२५)

१९० संमत १८५९ शके १७२४ ला नागपूरमध्ये भ० रत्नकीर्ति उपदेशात्····। (विवरण क्र० ३०, ४४, ४५)

१९१ संमत १८५६ दुंदुभिनामसंवत्सरे नागपूरनगरे रघुवरराज्ये भ० श्रीरत्नकीर्तिउपदेशात् श्रीपरवार वंशे····। (विवरण क्र० ३२)

१९२ संमत १८५६ शके १७२४ श्री मूलसंघ बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भ० रत्नकीर्ति उपदेशात् नागपूरनगरे रघुवरराज्ये परवारान्वये सेतगागर गोहिल्लगोत्र···भार्या····प्रतिष्ठा करापितं। (विवरण क्र० ३३, ४३)

१९३ संमत १८६१ वैसाख सुदी ५ सोमवासरे सवाईजयनगरे श्रीसुरेंद्रकीर्तिउपदेशात्····हिरा···प्रतिष्टा कारिता। (विवरण क्र० ३४६)

१९४ संवत १८६६ फाल्गुण कृष्ण ५ शुक्रवारे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ३७०, ३७२)

१९५ संमत १८६८ फागुण सुदी ७ बुध श्रीमूलसंघ बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ····प्रतिष्टितं। (विवरण क्र० ११०)

१९६ शके १७४३ श्रीमूल····। (विवरण क्र० ४८१)

१९७ शके १७४४ श्रीमूलसंघ। (विवरण क्र० ९०, १७१)

१९८ संवत १८८१ वर्षे माघ मासे शुद्ध ५ सोम श्रीकाष्टासंघे भ०

सुरेंद्रकीर्ति तत्शिष्य भ० देवेंद्रकीर्ति राजोमान ज्ञाति बघेरवाल। (विवरण क्र० १७०)

१९९ संमत १८८१ मू० स० व० आचार्य श्रीरामकीर्ति उपदेशात्... प्रतिष्ठित श्रीउमरावतीनगरे। (विवरण क्र० १९२)

२०० संवत १८८५ श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वय भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति उपदेशात्...प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ५२)

२०१ संवत १८८५ मार्गशिर्ष वद १२ गुरुदिने श्रीमत्काष्टासंघे लाडबागडगच्छे भ० प्रतापकीर्ति आम्नाय नंदितटगच्छे भ० सुरेंद्रकीर्ति तस्य भ० देवेंद्रकीर्ति राज्यमान ज्ञाति बघेरवाल गोत्र बोरखंड्या सा० खेमासा पु० पूनासा यंत्र प्रणाम्यंति। (विवरण क्र० २९२)

२०२ संमत १८८७ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्याम्नाये श्रीमत्भट्टारक धर्मचंद्रदेवात् तत्पट्टे भट्टारक देवेंद्रकीर्तिदेवात् तत्पट्टे भ० पद्मनंदिदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्तिदेवात् उपदेशात् बघेरवाल पाससा भवसा सरसग्राममध्ये प्रतिष्ठा करापितं। (विवरण क्र० ४२८)

२०३ संमत १८८७ शके १७५२ श्रावणमासे शुक्लपक्षे ती० ५ आदितवासरे बालात्कारगणे कारंजापुरपट्टाधिकारी श्रीमंत भ० देवेंद्रकीर्तिस्वामीजी मीदं बिंब प्रतिष्ठितं।
(विवरण क्र० ४७१)

२०४ शक १७५२ संमत १८८७ वैसाख सुदी ७ गुरुवार स्वस्ति श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० धर्मचंद्रदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्तिदेवात् त० भ० पद्मनंदिदेवात् कार्यरंजकपुरपट्टाधिकारी श्रीमत् देवेंद्रकीर्तिउपदेशात् वैरामक्षेत्रे सिरसग्रामे माणिकसा बघेरवाल तत्पुत्र पामा गोत्र चवरे प्रतिष्ठा करावितं। (विवरण क्र० १९१)

२०५ संमत १८८७ का ज्येष्ठ सुदी ९ विंशतिनामसंवत्सरे श्रीमू० स० व० कुं० भ० पद्मनंदिदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्ति…प्रतिष्ठा कराान्वितं। (विवरण क्र० २८)

२०६ संवत् १८८८ वैसाख कृष्ण ५ रविवासरे श्रीमूलसंघे व० स० श्रीकु० इदं प्रतिमा कारयेत् श्रीसकलपंचकमेटिके स्वकर्मक्षयार्थं प्रतिमा प्रतिष्ठिनिये। (विवरण क्र० ५५)

२०७ संमत १८८८….। (विवरण क्र० १०६)

२०८ संमत १८८६ वैसाख शुक्ल ११ गुरुवासर मलसंघ व० स० कुंदकुंदाचार्यान्वय। (विवरण क्र० ८५)

२०९ संमत १८८९ वृषभायणे…। (विवरण क्र० १०३)

२१० संमत १८९१ शके १७५६ जयनामसंवत्सरे श्रावणमासे कृष्णपक्षे पराकी मूलसंघे स० व० कारंजानगरे इदं पद्मादेवि श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठितम्। (विवरण क्र० २३७)

२११ संमत १८९३ वर्षे माघ सुद १० बुधदिनी मुलसंघ कुंदकुंदाचार्याम्नाय व० स० भट्टारकपद्मनंदिदेवात् तत्शिष्य भ० देवेंद्रकीर्तिदेवात् तत् उपदेशात्….भार्या हिता पुत्र नेमुराम भ्राता दामूजी भार्या लाडव….प्रतिष्ठितं प्रणमंति। (विवरण क्र० १८९)

२१२ सं० १८९३ श्रीमू० नागपूर श्रीपाश्र्व चं०। (विवरण क्र० ३९६)

२१३ श्रीमूलसंघ सक १७५९। (विवरण क्र० ४५४,४५८)

२१४ श्रीसंवत १८९४ साल आषाढ़ व॥ ९ श्रीमहावीर स्वामीजीका मुख। (विवरण क्र० ४९,५०)

२१५ संमत १८९७ शके १७६२ भगवतिनामसंवत्सरे वैसाख सुदी ३ बुधवासरे इदं श्रीपार्श्वनाथस्वामी श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिस्वामी

नागपूरे प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २१४)

२१६ सवत १८९८ मिती श्रावण सुदि ८ सोमदिने नागपूरे श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये इदं जलयात्रायंत्रं प्रतिष्ठितं (विवरण क्र० २७०)

२१७ संमत १८९९ फागुण सुदी ७ बुधवासरे श्रीमूलसंग बालात्कार गण सरस्वतीगच्छ कुंदकुंदाम्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिमा प्रतिष्ठितं गोपीसाह । (विवरण क्र० ३३२)

२१८ श्रीमूलसंघे शके १७६४ । (विवरण क्र० ११२)

२१९ श्रीपारसनाथजी सक १७६५ र…नाम संवत्सरे । (विवरण क्र० ७७)

२२० संमत १९०० सके १७६५ सोबल नाम संवत्सरे चैत्र सुदी ३ सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नागपूर पार्श्वनाथचैत्यालये अयं मेरू देवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० १८१)

२२१ संवत १९०० शके १७६५ सोमवक नाम संत्वसरे चैत्र सुद ३ सोमवार मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीनागपूरे श्रीमत् चिंतामणिपार्श्वनाथचैत्यालये श्रीशांतिनाथस्वामी देवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० १७८,१७९)

२२२ संमत १९०२ माघ शु॥ १३ (विवरण क्र० २८३,३००)

२२३ संमत १९०२ माघ सुदी तेरसी भ० देवेंद्रकीर्ति हस्तेन सुखालाल प्यारेलाल…प्रतिष्ठा करापिता । (विवरण क्र० ३४२)

२२४ शके १७६७ । (विवरण क्र० ३९५)

२२५ संमत १९०२ शके १७६७ तेरसोदिवसे प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३९)

२२६ संवत १९०४ शके १७६९ मिती वैसाख सुदी १३ बुधवासरे इदं श्रीचन्द्रनाथस्वामी प्रतिष्ठा श्रीमत्देवेंद्रकीर्तिस्वामी तेन प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ६०,६१)

२२७ संमत १९०४ शके १७६९ प्लवंगनामसंवत्सरे मिती वैसाख सुदी १२ बुधवासरे इदं मुनिसुव्रत स्वामी श्रीमूलसंघ बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीमद् देवेंद्रकीर्ति उपदेशात् बघेरवालवंश चवरियागोत्रे रतनसावजी....श्रीनागपूरे प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २२४)

२२८ संमत १९०४ मिती वैसाख सुदी १३ । (विवरण क्र० २८२)

२२९ संवत् १९०७ शके १७७२ मिती श्रावणसुदी ५ सोमवार नागपूरनगरे श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण श्रीपार्श्वनाथस्वामिचैत्यालये इदं पद्मावतिदेवि प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० २२४)

२३० संवत् १९०७ शके १७७२ मिती श्रावण सुदी ५ सोमवासरे नागपूरनगर मुलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीपार्श्वनाथस्वामीचैत्यालये अयं पार्श्वनाथप्रतिमा भ० देवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठितं । (विचरण क्र० १९६)

२३१ संवत १९०७ मिती श्रावण सुद ५ मू० स० ब० नागपूरे पार्श्वनाथदेवालये प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० १८५, २८५)

२३२ अयं मेरु इंगोलीग्रामे शांतीनाथस्वामीचैत्यालये स्थापित संवत् १९०८ शक १७७३ वर्षे विरोधकृतनामसंवत्सरे श्रावणमासे शुक्लपक्षे १० बुधवासरे मुलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागपूरनगरे पार्श्वनाथस्वामीचैत्यालये अयं मेरु जिनान् श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठाप्य इंगोलीग्रामे स्थापितं (विवरण क्र० १६५)

२३३ संमत १९०८ शक १७७३ श्रावण सुद १० बुधवार मुलसंग सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदाचार्यान्वये नागपुरनगरे श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये अयं श्रीनेमिजिन देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० २१७, २३०)

२३४ शके १७७५ पार्थिवनामसंवत्सरे ज्येष्ठ सुदी ११ तिलक श्री-मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे गुणभद्रदेवात् तत्पट्टे श्रुतवीरदेवात् तत्पट्टे भ० माणिकसेनदेवात् त० नेमसेनउपदेशात् बघनेरा ज्ञाति माणिकशेटी भार्या सोनाई तस्य पुत्र धायसेटी भार्या गुणाई तस्य पुत्र आयसेटी भार्या रत्नाई लखमणसेटी भार्या धरवाई रंगसेटी भार्या भालाई इदं प्रतिष्ठा केली द्वितीय साखा भ० गुणभद्रदेवा तत्पट्टे भ० लक्ष्मीसेनश्री प्रतिष्ठितं श्री आयाजी लखमजी रंगो (विवरण क्र० २२६)

२३५ संमत १९१३ शके १७७८ मिती फाग सुदी २ मुलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदान्वय अनंतनाथस्वामी नागपूरे प्रतिष्ठितं (विवरण क्र० १८३)

२३६ संमत १९१५ शके १७८० माघ सुदी ३ मू० स० ब० कुं० प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० १९८)

२३७ मा ये धा म न (?) संवत १९१५। (विवरण क्र० ४१९)

२३८ संमत १९१६ मि० फाग सुद ११ श्री मू० स० ब० कुं० हिरालालसा ठाकूर। (विवरण क्र० ३४, ५३)

२३९ संमत १९१६ मि० फाग सुद ११ श्री मू० स० ब० कुं० लुखुसा चोणसाव। (विवरण क्र० ३५,३६,२२८,२२९)

२४० संमत १९१६ फागुण सुद ११ समतीवृतं (?) कुंदकुंदाम्नाय गणढु गंगाराम। (विवरण क्र० ३७)

२४१ संवत १९१६ मि० फागण सुदी ११ श० श्रीमू० स० ब० कुं० अयं श्रीअजितनाथस्वामी सुखोसाव परवार तेन प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ४१,२८६,२८८–२९०,२९३,३०३,३०८,३२१)

२४२ संमत १९१६ मिती माघ सुदी १० श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये अयं श्रीमहावीरस्वामीजी भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी उपदेशात् संबुरामजी तस्य

पुत्र मागचंदजी अजमेरा खंडेरवाल श्रावकेन प्रतिष्ठितं गुरुवासरे नागपुर शुक्रवारीपेठ श्रीजिनचैत्यालय। (विवरण क्र० ६५,६६,७२,७५,७६)

२४३ संमत १९१६ मिती माघ सुदी १० गुरुवार। (विवरण क्र० ६७,६८,८२)

२४४ संमत १९१६ मिती माघ सुदी १० सरूपचंद अजमेरा तेन प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ७१)

२४५ संमत १९१६ माघ सुदी १० मूलसंघे प्रतिष्ठितं।
(विवरण क्र० ७८)

२४६ संमत १९१६ माघ सुदी १० गुरुवारे श्रीमू० स० व० कुं० नेमिनाथस्वामीजिन। (विवरण क्र० ८१,१६९)

२४७ संमत १९१६ मिती माघ सुदी १० गुरुवासरे श्रीमू० स० व० भट्टारकदेवेंद्रकीर्तिस्वामीजी हस्तेन…प्रतिष्ठितं…नागपूरमध्ये।
(विवरण क्र० ८६)

२४८ संमत १९१६ मि० फा० सुदी ११ शनिवार श्रीमू० स० व० कुंद० अयं श्रीआदिनाथ श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीना प्रतिष्ठितं।
(विवरण क्र० २८७)

२४९ संमत १९१६ मिती फागुण सुदी ११ शनिवासरे नागपूरनगरे श्रीमहावीरस्वामीचैत्यालये श्रीमूलसंघे स० व० कुं० अयं श्रीपार्श्वनाथस्वामीजी श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी स्वहस्तेन प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० २९१)

२५० संमत १९१६ मिती फागुणसुदी ११ शनिवासरे श्रीमू० स० व० कुं० नागपूरनगरे श्रीजिनचैत्यालये अयं श्रीआदिनाथस्वामी मूलनायक भ० श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामी उपदेशात् ठकुरदास तत्पुत्र मनीलाल परवार वोछल मुर कोछल गोत्र ते प्रतिष्ठितं।
(विवरण क्र० २६६)

२५१ संवत १६१६ मिती माघ···। (विवरण क्र० ८६,४२७)

२५२ संमत १६२५ मार्गशिर्ष सुदी ५ गुरु श्रीमू० भ० हेमकीर्ति तत्पट्टे भ०····करा····। (विवरण क्र० २८०)

२५३ संमत १९२५ का माघ सुदी ५ सोमवारे श्रीमूलसंघे बलात्कार-गणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० हेम-कीर्ति उपदेशात् रामटेकमध्ये संघवी मनालालेन प्रतिष्ठितं ।
(विवरण क्र० २८४)

२५४ संवत १९२५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे भट्टारक श्रीहेम-कीर्तिजी तदाम्नाय····परवालान्वये कोछलगोत्रे संघवी भुरसीदास तत्पुत्र मनालालेन प्रतिष्ठा कराविंतं । (विवरण क्र० ४)

२५५ संवत १९२५ शके १७९० विभवनाम संवत्सरे शुक्लपक्षे तीथी ७ बुधवासरे श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-चार्याम्नाये इदं प्रतिमा देवेंद्रकीर्ति स्वामीन हस्ते नागपूरमध्ये चोखालाल तस्य भार्या बीराबाई ने प्रतिष्ठा कराविंतं ।

२५६ श्रीजिनो जयति ॥ श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्रेभ्यो नमः । संमत १९२५ का शके १७९० का विभवनामसंवत्सरे सिसरऋतौ मासातमासोत्तममासे मार्गशिर्षमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ ५ पंचमी गुरुवासरे उत्तराषाढ नक्षत्रे गजनामयोगे श्रीनागपुरवा-स्तव्यमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नंद्याम्नाये कुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीनागौरपट्टे भट्टारकश्री हरषकीर्तिजी तत्पट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी तराडेण (?)····इक्ष्वाकुवंशे धुरामोरी गोत्रे संघवी कृपारामजी तत्पुत्र कलुषाऊजी भार्या हीराबाई तत्पुत्र वृषपाल सावजी छोटेलाल····तेन सपरिवारेण संघवी कलुषाऊ श्रीप्रतिष्ठा करापितं ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रयामस्तु ॥ रक्षित-मस्तु ॥ (विवरण क्र० २८५)

२५७ श्रीसंमत १९२५ शक १७९० विभवनामसंवत्सरे मिती वैसाख- मासे शुक्लपक्षे तीथौ ७ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बालात्कारगणे श्रीसरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीचन्द्रप्रभस्वामीन प्रतिमाया श्रीमद् देवेंद्रकीर्तिस्वामीहस्ते श्रीनागपूरमध्ये प्यारे- सावजी भार्या पुनाबाई परवार तेने प्रतिष्ठा करापितं।

(विवरण क्र० २९४)

२५८ संमत १९२५ वै० शु ॥७ बु० कुं० दे० नागपूरमध्ये गुमान- साव तस्य पुत्र चुडामणसा तस्य पुत्र भोजराज परवार तेन प्रतिष्ठा कराप्वितं। (विवरण क्र० २९६)

२५९ संमत १९२५ वैसाख शुद्द ७ बुध० श्रीमू० स० ब० कुं० श्रीपार्श्वनाथस्वामीना देवेन्द्रकीर्तिस्वामीनहस्ते नागपूरमध्ये प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० २१२-१४)

२६० संमत १९२५ वैसाख सुदी ७ प्रतिष्ठितं मनबोध जिन मुंगा- बाई। (विवरण क्र० ३२७)

२६१ संमत १९२५ मिती श्रवण सुदी ५ प्रतिष्ठा नागपूरमध्ये आदि- नाथजी। (विवरण क्र० ३२९)

२६२ संमत १९२५ शक १७९० आदिनाथस्वामी।

(विवरण क्र० ३४४)

२६३ संमत १९२५ का मिती माघ सुदी ५ सोमवासरे श्री मूलसंघ ब० स० कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे भ० हेमकीर्तिना तदाम्नायवरती पंडित सवाईरामोपदेशात् परवारान्वये कोछल्लगोत्रे संघई तुलसीदास तत्पुत्र सं०....लाल कुंजलाल विहारीलालेन प्रतिष्ठा की। (विवरण क्र० ३५९)

२६४ संमत् १९२५ वैसाख सुदी ७ बुधवारे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याम्नाये भट्टारकश्रीमद्देवेंद्रकीर्ति.... प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ३७१)

२६५ संमत १९२५ माघ सुदी ५ सोमे प्रतिष्ठितं ।
(विवरण क्र० ३७३-४)

२६६ श्रीमूलसंगचे····संमत १९२६ प्रभवनाम संवत्सरे श्रावण व ॥५॥
(विवरण क्र० ४५१)

२६७ संमत १९२८ प्रभवनामसंवत्सरे* माघ शुक्ल द्वादशीतिथौ बुधवासरे प्रतिष्ठाचार्य श्रीमत् देवेंद्रकीर्तिभट्टारक प्रतिष्ठा करणार प्यारेसाव मनासाव । (विवरण क्र० ३९३)

२६८ श्रीपारसनाथजी संमत १९२८ । (विवरण क्र० २९२)

२६९ संवत १९२८ प्रजापतिनामसंवत्सरे माघशुक्ले द्वादशीतिथौ बुधवासरे प्रतिष्ठाचार्यश्रीमत् देवेंद्रकीर्ति भट्टारक प्रतिष्ठा करविणार मनालाल सवाईसंघवी । (विवरण क्र० ४२)

२७० संवत १९२८ (विवरण क्र० ३८)

२७१ ॐ चंद्रनाथ येन संमत १९३२ । (विवरण क्र० ७०)

२७२ संमत १९३९ शके १८०४···प्रतिष्ठाचार्य विशालकिर्ती भट्टारक प्रतिष्ठा करविणार सुतीयाबाई परवारीन । (विवरण क्र० २७९)

२७३ श्रीपारसनाथजी सं० १९४८ (विवरण क्र० ३०४)

२७४ संमत १९५२ वैसाख सुदि १३ सोमवासर···प्रतिष्ठितं ।
(विवरण क्र० ८४)

२७५ सं० १९५८ व० सु० १२ पदासा भोजासाव ।
(विवरण क्र० ४०२)

२७६ संमत १९५८ वैसाख शुद्ध १५ मूलसंघे कुंदकुंदाम्नाये भट्टारक देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३७६)

२७७ मा० शी० ७ श्री० रा० ब० स्व० बा० श्री० श्र० प्र० ना० सं० १९६१ । (विवरण क्र० ४१८)

---

* यह संवत्सर नाम गलत प्रतीत होता है ।

२७८ संमत १९६१ मिती ज्येष्ठ शु ॥१० श्रीवीरसेन स्वामी उपदेशात् वांगामाव गंगामावजी चवरे याहानी प्रतिष्ठा करविली ।

(विवरण क्र० १४५)

२७९ नागपूर शेतवाल मन्दिर प० रवि० संमत १९६१ मार्गशिर्ष व ॥ सप्तम्यां पण्डितवर्य रामचंद्र ब्रह्मचारिणां पंच शेतवाल अनुराया प्रतिष्ठितं इदं प्रतिमा । (विवरण क्र० १०७)

२८० संमत १९६६""कुं०म्नाय सिवर्नातग्र प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० ३२५)

२८१ वीरसंमत २४३६ मि० मा० शु ॥ ५ सु० वा० ग० प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० ४३७)

२८२ संमत १९६८ ज्येष्ठ सुद ८ शुक्रवासरे मुलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कारंजापुरे पट्टाधिकारी भ० देवेंद्रकीर्तिस्वामी उपदेशात् गिरनारजीकी पादुका खंडेलवालज्ञातिय पाटणीगोत्र हजारीलाल गेंदालाल येन प्रतिष्ठा करापितं नागपूरनगरे ।

(विवरण क्र० १६७, २३३)

२८३ संमत १९७६ पण्डित रामभाऊना प्रतिष्ठितं कन्हैयालालजी गरीबे यांचे आईचे नन्दिश्वर व्रतोद्यापनार्थ ।

(विवरण क्र० २२२)

२८४ स्वस्ति श्री २४५८ श्रीवीरसंवत्सरे १९८८ विक्रम माघमासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याम्नाये फणिंद्रपुरनिवासी परवारज्ञातिय सेलासूर गोइल्लगोत्रोत्पन्न परमानंदीप्रजात्मज परवारभूषण फत्तेचंददिपचंद्राभ्यां छपारानगरे प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० ३२०-२३)

२८५ श्रीमहावीरनिर्वाणसंमत २४६० विक्रम संमत १९९० शके १८५५ फाल्गुण शुद्ध १२ सोमवार श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छ

बलात्कारगण श्रीकुंदकुंदाचार्याम्नायांतील वासल गोत्रांतील परवारज्ञाति नागपूरनिवासी शेठ कनईलाल नेमिचंदजी यांनी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथ येथील श्री ब्र० जीवराज गौतमचंद सोलापूर याचे प्रतिष्ठामध्ये श्रीमहावीर तीर्थंकराचे बिंब प्रतिष्ठित केले असे ॥ (विवरण क्र० ६२)

२८६ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान शांतिनाथ तीर्थंकर जिनबिंब प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात् नागपूरस्थ दि० जैन सैतवाल समाज वीरसंवत २४६१ मिती मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कृतेति शम् । (विवरण क्र० १०४-५)

२८७ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान आदिनाथ तीर्थंकर जिनबिंब प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात् नागपूरस्थ दिगम्बर जैन सैतवाल समाज व श्री० राजाराम डुव्वीसाव काटोलकरेणप्रतिमा आणिता प्रतिष्ठाचार्य श्री० पंडितवर्य रामभाऊ महामहोपाध्याय पंडित श्री० अखिल सैंतवाल जैन राजगुरुपीठ संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर वीरसंवत् २४६१ मिती मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कृतेति शम् ।

(विवरण क्र० १०६)

२८८ स्वस्ति श्री १०८ श्रीभट्टारकविशालकीर्ति उपदेशात् सं० २४६१ मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् बुधौ प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० ३८६-७, ३९३-४, ४१५-७)

[अनिश्चित समयके लेख]

२८९ संवत १५४ – संघ र नी गां पुत्रा न र नौ (?)

(विवरण क्र० ४१०)

२९० सं० १५…सुद १२ सकला पुत्र मनसुख भार्या मडना।
(विवरण क्र० ४२२)

२९१ संवत १५ – ६ वर्षे वैसाख सुदि ३ मंगलदिने भट्टारकजिन-चंद्राम्नाये गोलापूर्वे संघे इलाम…। (विवरण क्र० १६२)

२९२ संमत १–६१ वर्षे वैसाख सुदी…को…जीवराज… ।
(विवरण क्र० ७४)

२९३ सके १–७६ शुभकृत नाम संवत्सरे कार्तिक शुद्ध प्रतिपदा १ बुधवार सावरगावग्राम श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमहिचंद्र भट्टारकउपदेशात् तस्य श्रावक तिमाजी पलसापुरे तस्य भार्या यचाई व गंगाई तस्य पुत्र येकुजि कोनेरवा तस्य यंत्रं।
(विवरणक्र० २७६-२७७)

२९४ …७८ वैसाख सुदी ३…पुत्र मोती भार्या…म…।
(विवरण क्र० ३९७)

[अज्ञात समयके लेख]

२९५ संवत…वैसाख मासे शुद ३ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याम्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिष्ठितं नागपूरमध्ये…। (विवरण क्र० ५४)

२९६ सोकाजी। (विवरण क्र० ११६)

२९७ …मूलसंघ बलात्कारगण पितल्यागोत्रे रामासा भार्या नेमाई पुत्र रतनसा भार्या पदमाई द्वितीय पुत्र हिरासा भार्या पुंजाई तृतीय पुत्र नवनासा चतुर्थ पुत्र पदाजी…श्रीचंद्रप्रभ प्रतिष्ठा… संवत…। (विवरण क्र० १२१)

२९८ श्रीकाष्ठासंघ नंदितटगच्छ भ० श्रीरामसेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मी-सेनजी प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० १२६)

२९९ श्रीवासुपूज्य जिनवर। (विवरण क्र० १८२)

२०० ····महाराजाधिराज····देवेंद्रकीर्ति····बलात्कारगण सरस्वती [गच्छ]····। (विवरण क्र० १९३)

२०१ भ० हेमकीर्ति उपदेशात्····स० प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २०७)

२०२ हेमराज तस्य पुत्र हंसराज भार्या तमाबाई प्रतिष्ठा माघ सुदी····। (विवरण क्र० २८१)

२०३ ····सातनाथ····। (विवरण क्र० ३५३)

२०४ श्री आदिसर । (विवरण क्र० ३५८)

२०५ श्रीमू० स० भ० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् रामसेन । (विवरण क्र० ३७९)

२०६ श्रीमू० भ० जि० का प सेठ प्र (?) (विवरण क्र० ३८१)

२०७ श्रीमूलसंघे भ० श्रीभुवनकीर्ति····। (विवरण क्र० ३९०-४६३)

२०८ श्रीमूलसंग । (विवरण क्र० ३९८, ४०३, ४५६, ४८६)

२०९ श्रीमू० स० ब० । (विवरण क्र० ४००)

२१० श्रीधर्मचंद्रउपदेशात् कषरसेट । (विवरण क्र० ४०४)

२११ लखमनसा रुपा । (विवरण क्र० ४०७)

२१२ ब्र० पं० नेमीचंद्रजी । (विवरण क्र० ४२०)

२१३ सेनगण भ० श्रीलक्ष्मीसेन····च्यारित्रमति सेवक देवीचे चंद्राइत्ये····। (विवरण क्र० १६४)

२१४ मू० ब० स० धर्मचंद्र हेमसेठ नित्यं····ता । (विवरण क्र० ४४२)

२१५ मूलसंघे भ० सुरेंद्रकीर्ति····प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ४५५)

२१६ ····मू० भ० जि० पार वा गट (?) (विवरण क्र० ४६४)

२१७ श्रीआदिनाथ सा० श्रीवंत । (विवरण क्र० ४६६)

२१८ मू० संघ तानसेट वमनौसा । (विवरण क्र० ४७२)

२१९ श्रीमूलसंघ ब्रह्म. मल्लिदास सा····भार्या सखाई । (विवरण क्र० ४८८)

३२० श्रीमूलसंघ संकराजी पुजारी ना। (विवरण क्र० १२५-६)

३२१ रुखबमा ठवली। (विवरण क्र० १२७)

३२२ बाबाजी बडलकार। (विवरण क्र० ४६४)

३२३ मू० म० जि० गद्‌पेठ स्वाहित। (विवरण क्र० ४६५)

३२४ श्रीमूलसंघे भ० श्रीमल्लिभूषण भा० लखा भार्या अजी सुता सोनाई। (विवरण क्र० १६१)

मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण

[१] अजितनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, केलीबाग, नागपुर ।

१ अजितनाथ (सफेद पाषाण १½ फुट) लेख क्र० १८
२ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु० २ इं०) लेख क्र० १८
३ ,, ,, ,, लेख क्र० १८
४ पार्श्वनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २५४
५ चौवीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ९२
६ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० १६६
७ धर्मनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १०१
८ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० १३८

लेखरहित प्रतिमाएँ – शान्तिनाथ (धातु ७ इं०), चौवीसी (काला पाषाण १½ फुट), पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०), चन्द्रप्रभ (काला पाषाण ९ इं०) पार्श्वनाथ (काला-पाषाण ६ इं०)
पार्श्वनाथ (काला पाषाण ८ इं०) यक्षिणी (कृष्ण पाषाण १० इं०) ।

[२] दिगम्बर जैन मन्दिर, मस्कासाथ, नागपुर

९ आदिनाथ (सफेद पाषाण २½ फु०) लेख क्र० १८
१० पद्मप्रभ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
११ आदिनाथ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १८
१२ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
१३ अजितनाथ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १८

१४ चन्द्रप्रभ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १८
१५ आदिनाथ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १८
१६ सुपार्श्वनाथ (,,) लेख क्र० १८
१७ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
१८ वासुपूज्य (सफेद पाषाण ११ इं०) लेख क्र० १८
१९ पार्श्वनाथ (काला पाषाण १ फु० २ इं०) लेख क्र० १८
२० पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
२१ चन्द्रप्रभ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १८
२२ अजितनाथ (,,) लेख क्र० १८
२३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० १८
२४ आदिनाथ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८
२५ नेमिनाथ (सफेद पा० ८ इं०) लेख क्र० १८
२६ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८
२७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० ६०
२८ पार्श्वनाथ (काला पा० ११ इं०) लेख क्र० २०५
२९ पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० १४८
३० पार्श्वनाथ (धातु १ फु०) लेख क्र० १६०
३१ पार्श्वनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० १८८
३२ पार्श्वनाथ (धातु ९ इं०) लेख क्र० १९१
३३ पद्मप्रभ (धातु ११ इं०) लेख क्र० १९२
३४ चौवीसी (धातु ७ इं०) लेख क्र० २२८
३५ चौवीसी (धातु ७ इं०) लेख क्र० २२६
३६ चौवीसी (धातु ७ इं०) लेख क्र० २२९
३७ पार्श्वनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४०
३८ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २७०
३९ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० २२५

४० मुनिसुव्रत (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ७
४१ अजितनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१
४२ धर्मनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६६
४३ चौवीसी (धातु १० इं०) लेख क्र० १६२
४४ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १९०
४५ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० १९०। लेखरहित प्रतिमाएँ—
पार्श्वनाथ (धातु १ से ४ इं० की दस प्रतिमाएँ)

[३] दिगम्बर जैन मन्दिर, किराणा बाजार, नागपुर

४६ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
४७ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १८
४८ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८
४९ महावीर (काला पा० ४३/४ फु०) लेख क्र० २१४
५० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २१४
५१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० १ फुट) लेख क्र० १५२
५२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फुट) लेख क्र० २००
५३ चौवीसी (धातु ६ इं०) लेख क्र० २३८
५४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १३/४ फुट) लेख क्र० २९५
५५ पार्श्वनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० २०६
५६ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० २ प्रतिमाएँ) लेख १५२
५७ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १५७
५८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १३६
५९ सुपार्श्व (पीला पा० ७ इं०) लेख क्र० १५३
६० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २२६
६१ पार्श्वनाथ (पीला पा० १ फु०) लेख क्र० २२६
६२ महावीर (धातु १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २८५

६३ चन्द्रप्रभ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १२६
६४ नेमिनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १२६

लेखरहित प्रतिमाएँ— पार्श्वनाथ (सफेद पा० १½ फु०), पार्श्वनाथ (धातु २ से ३ इं० ४ प्रतिमाएँ), चन्द्रप्रभ (काला पा० ११ इं० २ प्रतिमाएँ), अज्ञातचिह्न मूर्ति (स्फटिक, १½ इं०), यक्षिणी (धातु ४ इं०)

[४] दिगम्बर जैन मन्दिर, जुनी शुक्रवारी पेठ, नागपुर

६५ महावीर (धातु ८ इं०) लेख क्र० २४२
६६ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० १२६
६७ सिद्ध (धातु ५½ इं०) लेख क्र० २४३
६८ नन्दीश्वर (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४३
६९ पंचमेरु (धातु १½ फु०) लेख क० २४२ (दो प्रतिमाएँ)
७० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० २७१
७१ चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० २४४
७२ चौबीसी (धातु १ फु०) लेख क्र० २४२
७३ महावीर (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० १३२
७४ आदिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० २६२
७५ शांतिनाथ (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४२
७६ आदिनाथ (धातु १ फुट २ इं०) लेख क्र० २४२
७७ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २१६
७८ चन्द्रप्रभ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४५
७९ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० १८१
८० पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १०
८१ नेमिनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४६
८२ आदिनाथ (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० २४३

८३ पार्श्वनाथ (लाल पा० ७ इं०) (लेख कन्नड है)
८४ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २७४
८५ चन्द्रप्रभ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० २०८
८६ वासुपूज्य (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० २५१
८७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
८८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १३६
८९ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु० १ इं०) लेख क्र० २४७
९० यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १९७

लेखरहित प्रतिमाएँ – पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०), आदिनाथ (काला पा० ६ इं०), आदिनाथ (काला पा० ३½ इं०), सिद्ध (धातु ५½ इं०, दो मूर्तियाँ), यक्षिणी (धातु ४ इं० दो मूर्तियाँ)

[५] दिगम्बर जैन सेतवाल मन्दिर, इतवारी बाजार, नागपुर

९१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ६ इं०) लेख क्र० १८
९२ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० ६ इं०) लेख क्र० १८
९३ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० १८
९४ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
९५ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
९६ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
९७ पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० १८
९८ चन्द्रप्रभ (काला पा० ८ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
९९ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१०० अजितनाथ (लाल पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१०१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१०२ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८

१०३ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २०६
१०४ शांतिनाथ (धातु ११ इं०) लेख क्र० २८६
१०५ बाहुबली (धातु १० इं०) लेख क्र० २८६
१०६ पार्श्वनाथ (काला पा० ८ इं०) लेख क्र० २०७
१०७ पार्श्वनाथ (धातु ११ इं०) लेख क्र० २७६
१०८ नन्दीश्वर (धातु ४ इं०) लेख क्र० ७१
१०९ आदिनाथ (धातु ११ इं०) लेख क्र० २८७
११० नेमिनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १९५
१११ पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० ७६
११२ चौबीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २१८
११३ शांतिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १२
११४ शांतिनाथ (धातु, ५ इं०) लेख क्र० ४
११५ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ३
११६ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २९६
११७ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २३
११८ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ८३
११९ पार्श्वनाथ (३½ इं० धातु) लेख क्र० १५०
१२० यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ७५
१२१ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २६
१२२ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० १०३
१२३ यक्षिणी (धातु ८ इं०) लेख क्र० ६७
१२४ रत्नत्रय यंत्र (धातु ९ इं०) लेख क्र० ५१
१२५ सम्यग्दर्शन यंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० ३२०
१२६ दशलक्षण यंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० ३२०
१२७ सम्यक्चारित्र यंत्र (धातु ८ इं० लेख क्र० ३२०
१२८ षोडशकारण यंत्र (धातु १२ इं०) लेख क्र० १८३

१२९ अज्ञातवर्णन यंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ११६

लेखरहित प्रतिमाएँ – चन्द्रप्रभ (काला पा० ९ इं० दो मूर्तियाँ), चरणपादुका (धातु ३ इं०, दो पादुका), अजितनाथ (काला पा० ४ इं०), चौवीसी (धातु ५ इं० दो मूर्तियाँ) पार्श्व-नाथ (धातु-छोटी छोटी ८ मूर्तियाँ) चरणपादुका (धातु ३ इं०, दो पादुका),

[६] दिगम्बर जैन सेनगण मन्दिर, लाडपुरा इतवारी, नागपुर

१३० पार्श्वनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० ५२
१३१ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० २९७
१३२ शीतलनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८५
१३३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८२
१३४ शांतिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० ७७
१३५ बाहुबली (धातु ११ इं०) लेख क्र० ८१ (दो मूर्तियाँ)
१३६ बाहुबली (धातु १० इं०) लेख क्र० २९८
१३७ अस्पष्ट चिह्न मूर्ति (धातु ९ इं०) लेख क्र० २१
१३८ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १६०
१३९ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३२
१४० पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १
१४१ पार्श्वनाथ (काला पा० ९ इं०) लेख क्र० ८८
१४२ सुपार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० ८९
१४३ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० ६६
१४४ पार्श्वनाथ (धातु १ इं०) लेख क्र० ७२
१४५ आदिनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० २७८
१४६ चन्द्रप्रभ (सफेद-पा० १० इं०) लेख क्र० १८
१४७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८

१४८ अरनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८
१४९ पद्मप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
१५० मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१५१ अजितनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१५२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१५३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० १८
(दो मूर्तियाँ)

१५४ अरनाथ (सफेद पा० ८ इं०) लेख क्र० १८
१५५ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८
१५६ आदिनाथ (४ इं० धातु) लेख क्र० १८
१५७ चौवीसी (धातु ६ इं०) लेख क्र० ९
१५८ धर्मनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० ६३
१५९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख १०८
१६० वासुपूज्य (धातु ५ इं०) लेख क्र० १३
१६१ आदिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३०४
१६२ चिह्नरहित मूर्ति (धातु ३ इं०) लेख क्र० १०९
१६३ पार्श्वनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २६१
१६४ श्रेयांसनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३१३
१६५ सुमतिनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २०
१६६ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २
१६७ पंचपरमेष्ठी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ८
१६८ रत्नत्रय मूर्ति (धातु ९ इं०) लेख क्र० २२
१६९ चौवीसी (धातु ११ इं०) लेख क्र० १३५
१७० सरस्वती (धातु ५ इं०) लेख क्र० १९८
१७१ यक्षिणी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२७
१७२ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२२

१७३ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १८४
१७४ दशलक्षण यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२२
१७५ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२३
१७६ रत्नत्रय यंत्र (धातु २ इं०) लेख क्र० १३०

लेखरहित प्रतिमाएँ – चौवीसी (काला पा० १ फुट), सिद्ध (धातु ६ इं०, दो मूर्तियाँ), नंदीश्वर (धातु ५ इं०), पार्श्वनाथ (काला पा० २½ फु० चौवीसी के मध्यस्थित), पद्मावती (सफेद पा० २ फु०), पद्मावती (धातु ९ इं०), पद्मावती (धातु ६ इं०), पद्मावती (धातु १० इं०),

[७] पार्श्वप्रभु दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, इतवारी, नागपुर

१७७ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० १५७
१७८ शांतिनाथ (धातु १ फु० २ इं०) लेख क्र० २२१
१७९ आदिनाथ (धातु १ फु० २ इं०) लेख क्र० २२१
१८० नन्दीश्वर (धातु ५ इं०) लेख क्र० १०२
१८१ पंचमेरु (धातु ११ इं०) लेख क्र० २२० (चार मूर्तियाँ)
१८२ वासुपूज्य (धातु ७ इं०) लेख क्र० २१६
१८३ अनन्तनाथ (धातु ९ इं०) लेख क्र० २२५
१८४ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ८७
१८५ चौवीसी (धातु २½ इं०) लेख क्र० २३१
१८६ चौवीसी (धातु ८ इं०) लेख क्र० १४४
१८७ चौवीसी (धातु ९ इं०) लेख क्र० १२०
१८८ रत्नत्रय मूर्ति (धातु ६ इं०) लेख क्र० ११
१८९ महावीर (धातु १० इं०) लेख क्र० २११
१९० चौवीसी (धातु ६ इं०) लेख क्र० ५६
१९१ क्षेत्रपाल (धातु ६ इं०) लेख क्र० २०४

१९२ सरस्वती (धातु ५ इं०) लेख क्र० १६६ (दो मूर्तियाँ)
१९३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० ३००
१९४ यक्षिणी (धातु ४½ इं०) लेख क्र० १३७
१९५ पंचमेरु (धातु २ फुट ९ इं०) लेख क्र० २३२
१९६ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० २३० (दो मूर्तियाँ)
१९७ आदिनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० २८२
१९८ बाहुबली (धातु ७ इं०) लेख क्र० २३६ (दो मूर्तियाँ)
१९९ आदिनाथ (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४६
२०० पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३४
२०१ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० ७०
२०२ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० ६३
२०३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १६१
२०४ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० १३६
२०५ चन्द्रप्रभ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २८
२०६ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० १७८
२०७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २०१
२०८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ९९
२०९ पंचमेरु (धातु २ फु० ३ इं०) लेख क्र० १५४ (दो मूर्तियाँ)
२१० चौबीसी (धातु १० इं०) लेख क्र० १४३
२११ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० ७८
२१२ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० १५८
२१३ चन्द्रप्रभ (धातु ४इं०) लेख क्र० ६१
२१४ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २१५
२१५ नन्दीश्वर (धातु १ फु०) लेख क्र० ६२
२१६ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १३७
२१७ नेमिनाथ (काला पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २३३

२१८ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १६
२१९ पद्मप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १६
२२० चौंसठ ऋद्धि (धातु ५ इं०) लेख क्र० ११२
२२१ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १०४
२२२ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २८३
२२३ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० ६६
२२४ मुनिसुव्रत (काला पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २२७
२२५ पार्श्वनाथ (धातु ५½ इं०) लेख क्र० ३७
२२६ चौबीसी (धातु १० इं०) लेख क्र० २३४
२२७ शांतिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० १७७
२२८ श्रेयांस (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० १०५
२२९ चिन्ह रहित मूर्ति (काला पा० १० इं०) लेख क्र० ९८
२३० आदिनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० २३३
२३१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० २ फु० ३ इं०) लेख क्र० ५
२३२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ३ फु० ३ इं०) लेख क्र० ५
२३३ शिखरजी पादुका (सफेद पा० १½ फु०) लेख क्र० २८२
२३४ पद्मावती (धातु ११ इं०) लेख क्र० २२९
२३५ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० ७९
२३६ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १६८
२३७ पद्मावती (धातु ११ इं०) लेख क्र० २१०
२३८ आदिनाथ (सफेद पा० १फु० २इं०) लेख क्र० १८ (दोमूर्तियाँ)
२३९ आदिनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४० शीतलनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८
२४१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)

२४३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
२४४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १:' ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४५ पद्मप्रभ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४६ मुनिसुव्रत (साँवला पा० ८ इं०) लेख क्र० १८
२४७ चन्द्रप्रभ (साँवला पा० ९ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४८ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२४९ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५० सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० १८
२५१ सुमतिनाथ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८
२५२ अरनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५३ नेमिनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५४ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५५ अजितनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५६ श्रेयांसनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५७ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
२५८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० ४ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५९ अजितनाथ (लाल पा० १० इं) लेख क्र० १८
२६० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८
२६१ नेमिनाथ (लाल पा० ११ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२६२ पार्श्वनाथ (लाल पा० १० इं०) लेख क्र० १८
२६३ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १८
२६४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ५ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२६५ सम्यक्चारित्रयंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० १८
२६६ दशलक्षण यंत्र (धातु ५ इं०) लेख क्र० ६८
२६७ सम्यक्चारित्र यंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० ४९
२६८ सम्यग्दर्शन यंत्र (धातु ५ इं०) लेख क्र० ३९

२६९ सम्यक्चारित्रयंत्र (धातु ५ इं०) लेख क्र० ४९
२७० जलयंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० २१६
२७१ सम्यग्दर्शनयंत्र (धातु ५ इं०) लेख क्र० ५४
२७२ सम्यग्दर्शनयंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ११४
२७३ दशलक्षणयंत्र (धातु ६ इं०) लेख क्र० ६५
२७४ कलिकुण्डयंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ७३
२७५ सिद्धयंत्र (धातु ६ इं०) लेख क्र० ८६
२७६ षोडशकारणयंत्र (धातु १४ इं०) लेख क्र० २६३
२७७ दशलक्षणयंत्र (धातु ११ इं०) लेख क्र० २९३
लेखरहित मूर्तियाँ – सप्तऋषि (धातु ५ से ८ इं०), पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु० २ इं०), आदिनाथ (पीला वालुकापाषाण २ फु० २ इं०)

[८] दिगम्बर जैन परवार मन्दिर, इतवारी, नागपुर

२७८ शीतलनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ५७
२७९ नेमिनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २७२
२८० पुष्पदन्त (धातु ५ इं०) लेख क्र० २५२
२८१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० ३०८
२८२ चन्द्रप्रभ (पीला पा० ६ इं०) लेख क्र० २२८
२८३ पार्श्वनाथ (काला पा० ६ इं०) लेख क्र० २२२
२८४ चौवीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २५३
२८५ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ५½ फु०) लेख क्र० २५६
२८६ पार्श्वनाथ (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४१ (दो मूर्तियाँ)
२८७ आदिनाथ (धातु ६ इं) लेख क्र० २४८
२८८ वासुपूज्य (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४१
२८९ महावीर (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१

२९० अजितनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४१
२९१ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० २४६
२९२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २६८
२९३ चौबीसी (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४१
२९४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ५ फु०) लेख क्र० २५७
२९५ नेमिनाथ (सफेद पा० २ फु० २ इं०) लेख० क्र० २५७
२९६ नेमिनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २५८
२९७ पार्श्वनाथ (धातु ८½ इं०) लेख क्र० २५७
२९८ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ६५
२९९ अजितनाथ (काला पा० ४ इं०) लेख क्र० १६५
३०० चिह्नरहितमूर्ति (काला पा० ५ इं०) लेख क्र० २२२
३०१ आदिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २५७
३०२ चिह्नरहित मूर्ति (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ६
३०३ चौबीसी (धातु ४½ इं०) लेख क्र० २४१
३०४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २७२
३०५ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १२५
३०६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ४१
३०७ अजितनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० ४०
३०८ अनन्तनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २४१
३०९ सुपार्श्वनाथ (काला पा० ११ इं०) लेख क्र० २६
३१० चिह्नरहितमूर्ति (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० ८२
३११ मुनिसुव्रत (काला पा० ११ इं०) लेख क्र० ४७
३१२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० २५६
३१३ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० २५६
३१४ आदिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० २५९
३१५ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १७६

३१६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १६४
३१७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० ३ इं०) लेख क्र० २५७
३१८ पार्श्वनाथ (काला पा० २ फु० ४ इं०) लेख क्र० २५७
३१९ नन्दीश्वर (धातु ५ इं०) उर्दू लिपिमें लेख०
३२० आदिनाथ (धातु ६½ इं) लेख क्र० २८४
३२१ शीतलनाथ (लाल पा० १ फु० ४ इं०) लेख क्र० २८४
३२२ महावीर (धातु १ फु० ६ इं०) लेख क्र० २८४
३२३ पुष्पदंत (धातु १ फु० ९ इं०) लेख क्र० २८४
३२४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १७६
३२५ महावीर (धातु ४ इं०) लेख क्र० २८०
३२६ चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२७
३२७ चौबीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २६०
३२८ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २३९
३२९ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० २३९
३३० यक्षिणी (धातु ५ इं०,) लेख क्र० १४०
३३१ यक्षिणी (धातु ८ इं) लेख क्र० २४१ (दो मूर्तियाँ)
३३२ चन्द्रप्रभ (धातु १ फु० २ इं) लेख क्र० २१७
३३३ चौबीसी (धातु ५ इं) लेख क्र० २४१
३३४ रत्नत्रयमूर्ति (धातु ५ इं) लेख क्र० २४१
३३५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १५५
३३६ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं) लेख क्र० ८४
३३७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं) लेख क्र० २४१
३३८ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १४५
३३९ आदिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २६१
३४० पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० २५७
३४१ चन्द्रप्रभ (काला पा० ८ इं०) लेख क्र० २५७

३४२ पार्श्वनाथ (लाल पा० १ फु०) लेख क्र० २२३ (तीन मूर्तियाँ)
३४३ नेमिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १७
३४४ आदिनाथ (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० २६२
३४५ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १½ फु०) लेख क्र० २५७
३४६ अरनाथ (काला पा० ३ इं०) लेख क्र० १६३
३४७ चन्द्रप्रभ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४१
३४८ आदिनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २२९
३४९ शीतलनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४१
३५० आदिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४१
३५१ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१
३५२ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४१
३५३ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३०३
३५४ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४१
३५५ चन्द्रप्रभ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६३
३५६ अजितनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६३
३५७ आदिनाथ (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४१
३५८ आदिनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० २०४
३५९ नन्दीश्वर (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १११
३६० सुपार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१
३६१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० १२८
३६२ महावीर (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४१
३६३ आदिनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २६७
३६४ आदिनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २४१
३६५ महावीर (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४१
३६६ आदिनाथ (धातु १ फु०) लेख क्र० २५०
३६७ पुष्पदन्त (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८

३६८ अरनाथ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८
३६९ चन्द्रनाथ (सफेद पा० ८ इं०) लेख क्र० १८
लेखरहित मूर्तियाँ – वासुपूज्य (काला पा० ५ इं०), पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०), पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०), शान्तिनाथ (धातु ४ इं०), १५ मूर्तियाँ लेख तथा चिह्नके विना छोटी-छोटी हैं।

[९] दिगम्बर जैन मन्दिर, सदर बाजार, नागपुर

३७० पार्श्वनाथ (काला पा० १½ फु०) लेख क्र० १९४
३७१ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २६४
३७२ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १९४
३७३ शांतिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २६५
३७४ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २६५
३७५ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ११५
३७६ चौबीसी (धातु ११ इं०) लेख क्र० २७६
३७७ दशलक्षण यंत्र (धातु ६ इं०) लेख क्र० १०७
लेखरहित – पद्मप्रभ (सफेद पा० १ फु०)

[१०] गृहचैत्यालय–श्री० सुन्दरसा हिरासा जोहरापुरकर, इतवारी, नागपुर

३७८ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १२२
३७९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३०५
३८० रत्नत्रय (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १५
३८१ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०६
३८२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ६४
३८३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २४

३८४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १२९
लेखरहित – छोटी-छोटी धातुकी १० प्रतिमाएँ

[११] गृहचैत्यालय–श्री० अंबादास गुलाबसा गहाणकरी, इतवारी

३८५ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २३१

३८६ आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २८८

३८७ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८

३८८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १००

[१२] गृहचैत्यालय–श्री० माणिकसा चिन्तामणसा दर्यापुरकर, इतवारी

३८९ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ८०

३९० पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३०७

३९१ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ४५

३९२ नवग्रह यंत्र (धातु ४ इं०) लेख क्र० २०१

[१३] गृहचैत्यालय–श्री० रतनसा गणपतसा देवलसी, इतवारी

३९३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ४ इं०) लेख क्र० २८८

३९४ आदिनाथ (काला पा० ४ इं०) लेख क्र० २८८

३९५ चन्द्रप्रभ (काला पा० ४ इं०) लेख क्र० २२४

३९६ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २१२

३७७ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २९४

३९८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०८
लेखरहित-पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०), आदिनाथ (धातु २½ इं०)

[१४] गृहचैत्यालय—श्री० कन्हयालाल सुन्दरसा गरिबे, इतवारी

३९९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३४

यक्षिणी (धातु ६ इं०)-लेखरहित

[१५] गृहचैत्यालय—श्री० सवाईसंगई मोतीलाल गुलाबसा, इतवारी

४०० पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०९

४०१ यक्षिणी (धातु इं० ५) लेख क्र० १४५

लेखरहित-पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०), चन्द्रप्रभ (स्फटिक, ३ इं०)

[१६] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा पदासा खोरणे, इतवारी

४०२ आदिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २७५

४०३ पार्श्वनाथ (धातु २, इं०) लेख क्र० ३०८

४०४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१०

४०५ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १५१

[१७] गृहचैत्यालय-श्री० दादा गुलाबसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४०६ चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ९४

[१८] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा खेमासा जोहरापुरकर, इतवारी

४०७ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३११

[१९] गृहचैत्यालय-श्री जयकुमार प्रभुसा किल्लेदार, इतवारी

४०८ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ४२

[२०] गृहचैत्यालय-श्री तिलोकचंद येसूसा खेडकर, इतवारी

४०९ चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ९४

४१० पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २८६

४११ आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १३४

४१२ चरणपादुका (धातु २ इं०) लेख क्र० १४२
लेखरहित – शान्तिनाथ (धातु २ इं०), पार्श्वनाथ (धातु २ इं०)

[२१] गृहचैत्यालय-श्री विष्णुकुमार हिरासा जोगी, इतवारी

४१३ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १४
४१४ यक्षिणी (धातु ५½ इं०) लेख क्र० ५५
लेखरहित – (चौबीसी धातु ३ इं०), महावीर (धातु २½ इं०)

[२२] गृहचैत्यालय-श्री नागोराव गुजावा श्रावणे, इतवारी

४१५ सिद्ध (धातु ४ इं०) लेख क्र० २८८
४१६ आदिनाथ (चाँदी ३ इं०) लेख क्र० २८८ (दो मूर्तियाँ)
४१७ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८ (दो मूर्तियाँ)
४१८ पार्श्वनाथ (सोना २ इं०) लेख क्र० २७७
४१९ चौबीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २३७
४२० चरणपादुका (चाँदी १ इं०) लेख क्र० ३१२
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) (दो मूर्तियाँ), बाहुबली (धातु ३ इं०), सरस्वती (धातु २ इं०)

[२३] गृहचैत्यालय-श्री गुलाबसा व्यंकुसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४२१ चन्द्रप्रभ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० ४४
४२२ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २९०
४२३ यक्षिणी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १७५
लेखरहित–पार्श्वनाथ (लाल पा० ३ इं०)

[२४] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा जिनदास चवड़े, इतवारी

४२४ सिद्ध (धातु ४ इं०) लेख क्र० २८८
४२५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १८६

[२५] गृहचैत्यालय-श्री०नेमासा पासुसा जोहरापुरकर, इतवारी

४२६ पंचपरमेष्ठी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २०
४२७ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २५१
४२८ कलिकुण्ड यन्त्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० २०२
४२९ षोडशकारण यन्त्र (धातु० ८ इं०) लेख क्र० २०३

[२६] गृहचैत्यालय-श्री०माणिकचंद बालाजी आगरकर, इतवारी

४३० पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ४८
४३१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० १६२
४३२ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० १३१

[२७] गृहचैत्यालय-श्री०सुंदरसा गंगासा खेडकर, इतवारी

४३३ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० १६
४३४ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० ३८
लेखरहित–पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) चौबीसी (धातु ५ इं०)

[२८] गृहचैत्यालय-श्री०लक्ष्मणराव सेवाराम पिंजरकार, इतवारी

४३५ आदिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० १४६
४३६ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इंच) लेख क्र० ४३
लेखरहित–यक्षिणी (धातु ६ इं०)

[२९] गृहचैत्यालय-श्री०पुरणलाल बापुसा खेडकर, इतवारी

४३७ चौबीसी (धातु २½ इं०) लेख क्र० २८१
४३८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ६७

[३०] गृहचैत्यालय-श्री०महादेवराव तानबा पिंजरकर, इतवारी

४३९ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ५८
४४० पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १८०

४४१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ६४
४४२ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३१४
४४३ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १५६

[३१] गृहचैत्यालय-श्री० वर्धासा सकुसा महाजन, इतवारी

४४४ चौबीसी (धातु २½ इं०) लेख क्र० १५६
४४५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ६६
४४६ षोडशकारण यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२२
४४७ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ६०
४४८ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ६१
४४९ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १२५
४५० यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ४६
लेखरहित-पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०)

[३२] गृहचैत्यालय-श्री० नत्थुसा पैकाजी चवरे, इतवारी

४५१ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ५ इं०) लेख क्र० २६६
४५२ चन्द्रप्रभ (धातु २ इं०) लेख क्र० ११६
४५३ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २७
४५४ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २१२ (दो मूर्तियाँ)
४५५ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१५
४५६ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २०८ (दो मूर्तियाँ)
४५७ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १०६
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु २ इं०)

[३३] गृहचैत्यालय-श्री रतनसा पिंजरकर, इतवारी

४५८ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २१३

[३४] गृहचैत्यालय-श्री लक्ष्मणराव देवमनसा बोबडे, इतवारी

४५९ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १६६

४६० पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३५
४६१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३६
४६२ चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ११७
४६३ चिह्नरहित मूर्ति (धातु २ इं०) लेख क्र० १४६
४६४ पार्श्वनाथ (काला पा० ३ इं०) लेख क्र० ३१६

[३५] गृहचैत्यालय-श्री बापुजी विश्रामजी गिल्लरकर, मस्कासाथ

४६५ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७०
४६६ आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१७
४६७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १६७
४६८ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० १८६
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु १½ इं०)

[३६] गृहचैत्यालय-श्री गोविंदराव शिवराम नाकाडे, इतवारी

४६९ चौबीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १३६
४७० चिह्नरहित मूर्ति (धातु ३ इं०) लेख क्र० १६३
४७१ पार्श्वनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २०३
४७२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१८
४७३ यक्षिणी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७१
४७४ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ११८
४७५ दशलक्षणयंत्र (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ५०

[३७] गृहचैत्यालय-श्रीमती तानाबाई बापुजी गांधी, इतवारी

४७६ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ८५
४७७ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७२
४७८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १२४
४७९ चन्द्रप्रभ (धातु १½ इं०) लेख क्र० १७३
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) यक्षिणी (धातु ६ इं०)

[३८] गृहचैत्यालय-श्री राजाबापू लच्छाबापू ठवली, इतवारी

४८० चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १३४

४८१ यक्षिणी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १९६;

४८२ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २५

[३९] गृहचैत्यालय-श्री जयकृष्णपंत सावलकर, इतवारी

४८३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ५३

४८४ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० ३१

[४०] गृहचैत्यालय-श्री कृष्णाजी भागवतकर, इतवारी

४८५ सिद्ध (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८

४८६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २०८

लेखरहित – यक्षिणी (धातु ३ इं०)

[४१] गृहचैत्यालय-श्री राजाराम डुब्बीसाव काटोलकर, इतवारी

४८७ चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० २४३

४८८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१९

लेखरहित – चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ४ इं०)

[४२] गृहचैत्यालय-श्री हिरासा नत्थुसा मुठमारे, इतवारी

४८९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ५६

४९० आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३३

४९१ चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ११३

४९२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १८७

४९३ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २०७

लेखरहित – यक्षिणी (धातु ३ इं०)

[४३] गृहचैत्यालय-श्री लखबसा विनायकसा, इतवारी

४९४ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३२२

[४४] गृहचैत्यालय-श्री पांडुरंग बापूजी उदापूरकर, इतवारी

४९५ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २२३

[४५] गृहचैत्यालय-श्री गणपतराव पलसापुरे; इतवारी

४९६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १८७

[४६] गृहचैत्यालय-श्री सुरेन्द्र गंगासा जोहरापुरकर, इतवारी

४९७ चन्द्रप्रभ (धातु २ इं०) लेख क्र० ११०
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु २ इं०)

नामसूची

उल्लिखित अंक पृष्ठों के हैं।

□

MĀṆIKACHANDRA D. J. GRANTHAMĀLĀ

* The Serial Numbers marked with asterisk are out of print.

*1. **Laghīyastraya-ādi-saṁgrahaḥ**: This vol. contains four small works: 1) *Laghīyastrayam* of Akalaṅkadeva (c. 7th century A. D.), a small Prakaraṇa dealing with *pramāṇa, naya* and *pravacana.* Akalaṅka is an eminent logician who deserves to be remembered along with Dharmakīrti and others. His works are very important for a student of Indian logic. Here the text is presented with the Sk. commentary of Abhayacandrasūri. 2) *Svarūpasaṁbodhana* attributed to Akalaṅka, a short yet brilliant exposition of *ātman* in 25 verses. 3-4) *Laghu-Sarvajña-siddhiḥ* and *Bṛhat-Sarvajña-siddhiḥ* of Anantakīrti. These two texts discuss the Jaina doctrine of Sarvajñatā. Edited with some introductory notes in Sk. on Akalaṅka, Abhayacandra and Anantakīrti by Pt. KALLAPPA BHARAMAPPA NITAVE, Bombay Saṁvata 1972, Crown pp. 8-204, Price As. 6/-.

*2. **Sāgāra-dharmāmṛtam** of Āśādhara: Āśādhara is a voluminous writer of the 13th century A. D., with many Sanskrit works on different subjects to his credit. This is the first part of his *Dharmāmṛta* with his own commentary in Sk. dealing with the duties of a layman. Pt. NATHURAM PREMI adds an introductory note on

Āśādhara and his works. Ed. by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp. 8-246, Price As. 8/-.

*3. **Vikrāntakauravam** or **Sulocanānāṭakam** of Hastimalla (A.D. 13th century) : A Sanskrit drama in six acts. Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp. 4-164, Price As. 6/-.

*4. **Pārśvanātha-caritam** of Vādirājasūri : Vādirāja was an eminent poet and logician of the 10th century A. D. This is a biography of the 23rd Tīrthaṅkara in Sanskrit extending over 12 cantos. Edited with an introductory note on Vādirāja and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 18-198, Price As. 8/-.

*5. **Maithilīkalyāṇam** or **Sītānāṭakam** of Hastimalla : A Sk. drama in 5 acts, see No. 3 above. Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 4-96, Price As. 4/-.

*6. **Ārādhanāsāra** of Devasena : A Prākrit work dealing with religio-didactic topics. Prākrit text with the Sk. commentary of Ratnakīrtideva, edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 128, Price As. 4/6.

*7. **Jinadattacaritam** of Guṇabhadra : A Sk. poem in 9 cantos dealing with the life of Jinadatta, edited by Pt. MANOHARLAL, Bambay saṁvat 1973, Crown pp. 96, Price As. 5/-.

8. **Pradyumnacarita** of Mahāsenācārya : A Sk. poem in 14 cantos dealing with the life of Pradyumna. It is composed in a dignified style. Edited by Pts. MANOHARLAL and RAMAPRASAD, Bombay Samvat 1973, Crown pp. 230, Price As. 8/-.

9. **Cāritrasāra** of Cāmuṇḍarāya : It deals with the rules of conduct for a house-holder and a monk. Edited by Pt. INDRALAL and UDAYALAL, Bombay Samvat 1974, Crown pp. 103, Price As. 6/-.

*10. **Pramāṇanirṇaya** of Vādirāja : A manual of logic discussing specially the nature of Pramāṇas. Edited by Pts. INDRALAL and KHUBCHAND, Bombay Samvat 1974, Crown pp. 80, Price As. 5/-.

* 11. **Ācārasāra** of Vīranandi : A Sk. text dealing with Darśana, Jñāna etc. Edited by Pts. INDRALAL and MANOHARLAL, Bombay Samvat 1974, Crown pp. 2-98, Price As. 6/-.

* 12. **Trilokasāra** of Nemichandra : An important Prākrit text on Jaina cosmography published here with the Sk. commentary of Mādhavacandra. Pt. PREMI has written a critical note on Nemicandra and Mādhavacandra in the Introduction. Edited with an index of Gāthās by Pt. MANOHARLAL, Bombay Samvat 1975, Crown pp. 10-405-20, Price Rs. 1/12/-.

* 13. **Tattvānuśāsana-ādi-saṁgrahaḥ** : This vol. contains the following works. 1) *Tattvānuśāsana* of Nāgasena. 2) *Iṣṭopadeśa* of Pūjyapāda with the Sk.

commentary of Āśādhara. 3) *Nītisāra* of Indranandi. 4) *Mokṣapañcāśikā*. 5) *Śrutāvatāra* of Indranandi. 6) *Adhyātmataraṅgiṇī* of Somadeva. 7) *Bṛhat-pañca-namaskāra* or *Pātrakesarī-stotra* of Pātrakesarī with a Sk. commentary. 8) *Adhyātmāṣṭaka* of Vādirāja. 9) *Dvātriṁśikā* of Amitagati. 10) *Vairāgyamaṇimālā* of Śrīcandra. 11) *Tattvasāra* (in Prākrit) of Devasena. 12) *Śrutaskandha* (in Prākrit) of Brahma Hemacandra. 13) *Ḍhāḍasī-gāthā* in Prākrit with Sk. chāyā. 14) *Jñānasāra* of Padmasiṁha, Prākrit text and Sk. chāyā. Pt. PREMI has added short critical notes on these authors and their works. Edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1975, Crown pp. 4-176, Price As. 14/-.

* 14. **Anagāra-dharmāmṛta** of Āśādhara : Second part of the *Dharmāmṛta* dealing with the rules about the life of a monk. Text and author's own commentary. Edited with verse and quotation Indices by Pts. BANSIDHAR and MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1976, Crown pp. 692-35, Price Rs. 3/8/-.

*15. **Yuktyanuśāsana** of Samantabhadra : A logical Stotra which has weilded great influence on later authors like Siddhasena, Hemacandra etc.. Text published with an equally important commentary of Vidyānanda. There is an introductory note on Vidyānanda by Pt. PREMI. Ed. by Pts. INDRALAL and SHRILAL, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp. 6-182, Price As. 13/-.

*16. **Nayacakra-ādi-saṁgraha**: This vol. contains the following texts. 1) *Laghu-Nayacakra* of Devasena, Prākrit text with Sk. chāyā. 2) *Nayacakra* of Devasena, Prākrit text and Sk. chāyā. 3) *Ālāpapaddhati* of Devasena. There is an introductory note in Hindī on Devasena and his *Nayacakra* by Pt. PREMI. Edited by Pt. BANSIDHARA with Indices, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp. 42-148. Price As. 15/-.

*17. **Ṣaṭprābhṛtādi-saṁgraha**: This vol. contains the following Prākrit works of Kundakunda of venerable authority and antiquity. 1) *Darśana-prābhṛta*, 2) *Cāritra-prābhṛta*, 3) *Sūtra-prābhṛta*, 4) *Bodha-prābhṛta*, 5) *Bhāva-prābhṛta*, 6) *Mokṣa-prābhṛta*, 7) *Liṅga-prābhṛta*, 8) *Śīla-prābhṛta*, 9) *Rayaṇasāra* and 10) *Dvādaśānuprekṣā*. The first six are published with the Sk. commentary of Śrutasāgara and the last four with the Sk. chāyā only. There is an introduction in Hindī by Pt. PREMI who adds some critical information about Kundakunda, Śrutasāgara and their works. Edited with an Index of verses etc. by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp. 12-442-32. Price Rs. 3/-.

*18. **Prāyaścittādi-saṁgraha**: The following texts are included in this volume. 1) *Chedapiṇḍa* of Indranandi Yogīndra, Prākrit text and Sk. chāyā. 2) *Chedaśāstra* or *Chedanavati*, Prākrit text and Sk. chāyā and notes. 3) *Prāyaścitta-cūlikā* of Gurudāsa, Sk. text with the commentary of Nandiguru. 4) *Prāyaścittagrantha* in Sk. verses by Bhaṭṭākalaṅka. There is a critical

introductory note in Hindī by Pt. PREMI. Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1978, Crown pp.16-172-12, Price Rs. 1/2/-.

*19. **Mūlācāra** of Vaṭṭakera, part I: An ancient Prākrit text in Jaina Śaurasenī, Published with Sk. chāyā and Vasunandi's Sk. commentary. A highly valuable text for students of Prākrit and ancient Indian monastic life. Edited by Pts. PANNALAL, GAJADHARALAL and SHRILAL, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp. 516, Price Rs- 2/4/-.

20. **Bhāvasaṁgraha-ādiḥ**: This vol. contains the following works. 1) *Bhāvasaṁgraha* of Devasena, Prākrit text and Sk. chāyā. 2) *Bhāvasaṁgraha* in Sk. verse of Vāmadeva Paṇḍita. 3) *Bhāva-tribhaṅgī* or *Bhāvasaṁgraha* of Śrutamuni, Prākrit text and Sk. chāyā. 4) *Āsravatribhaṅgī* of Śrutamuni, Prākrit text and Sk. chāyā. There is a Hindī Introduction with critical remarks on these texts by Pt. PREMI. Edited with an Index of verses by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1978, Crown pp. 8-284-28, Price Rs. 2/4/-

21. **Siddhāntasāra-ādi-Saṁgraha**: This vol. contains some twentyfive texts. 1) *Siddhāntasāra* of Jinacandra, Prākrit text, Sk. chāyā and the commentary of Jñānabhūṣaṇa. 2) *Yogasāra* of Yogicandra, Apabhraṁśa text with Sk. chāyā. 3) *Kallāṇāloyaṇā* of Ajitabrahma, Prākrit text with Sk. chāyā, 4) *Amṛtāśīti* of Yogīndradeva, a didactic work in Sanskrit. 5) *Ratna-*

mālā of Śivakoṭi. 6) *Śāstrasārasamuccaya* of Māghanandi, a Sūtra work divided in four lessons. 7) *Arhatpravacanam* of Prabhācandra, a Sūtra work in five lessons. 8) *Āptasvarūpam*, a discourse on the nature of divinity. 9) *Jñānalocanastotra* of Vādirāja (Pomarājasuta). 10) *Samavasaraṇastotra* of Viṣṇusena. 11) *Sarvajñastavana* of Jayānandasūri. 12) *Pārśvanātha-samasyā-stotra*. 13) *Citrabandhastotra* of Guṇabhadra. 14) *Maharṣi-stotra* (of Āśādhara). 15) *Pārśvanātha-stotra* or *Lakṣmīstotra* with Sk. commentary. 16) *Neminātha-stotra* in which are used only two letters viz. *n* & *m*. 17) *Śaṅkhadevāṣṭaka* of Bhānukīrti. 18) *Nijātmāṣṭaka* of Yogīndradeva in Prākrit. 19) *Tattvabhāvanā* or *Sāmāyika-pāṭha* of Amitagati. 20) *Dharmarasāyana* of Padmanandi, Prākrit text and Sk. chāyā. 21) *Sārasamuccaya* of Kulabhadra. 22) *Aṁgapaṇṇatti* of Śubhacandra, Prākrit text and Sk. chāyā. 23) *Śrutāvatāra* of Vibudha Śrīdhara. 24) *Śalākāniksepaṇa-niṣkāsana-vivaraṇam*. 25) *Kalyāṇamālā* of Āśādhara. Pt. PREMI has added critical notes in the Introduction on some of these authors. Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1979 Crown pp. 32-324, Price Rs. 1/8/-.

*22. **Nītivākyāmṛtam** of Somadeva : An important text on Indian Polity, next only to *Kauṭilya-Arthaśāstra*. The Sūtras are published here along with a Sanskrit commentary. There is a critical Introduction by PREMI comparing this work with Arthaśāstra. Edited by

Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1979, Crown pp. 34-426, Price Rs. 1/12/-.

* 23. **Mūlācāra** of Vaṭṭakera, part II: Prākrit text, Sk. chāyā and the commentary of Vasunandi, see No. 19 above. Bombay Saṁvat 1980, Crown pp. 332, Price Rs. 1/8/-

24. **Ratnakaraṇḍaka-śrāvakācāra** of Samantabhadra: With the Sanskrit commentary of Prabhācandra. There is an exhaustive Hindī Introduction by Pt. JUGAL KISHORE MUKTHAR, extending over more than pp. 300, dealing with the various topics about Samantabhadra and his works. Bombay Saṁvat 1982, Crown pp. 2-84-252-114, Price Rs. 2/-.

25. **Pañcasaṁgrahaḥ** of Amitagati: A good compendium in Sanskrit of the contents of *Gommaṭasāra*. Edited with a note on the author and his works by Pt. DARBARILAL, Bombay 1927, Crown pp. 8-240, Price As. 13/-.

26. **Lāṭīsaṁhitā** of Rājamalla: It deals with the duties of a layman and its author was a contemporary of Akbar to whom references are found in his compositions. There is an exhaustive Introduction in Hindī by Pt. JUGALKISHORE. Edited by Pt. DARBARILAL, Bombay Saṁvat 1948, Crown pp. 24-136, Price As. 8/-.

27. **Purudevacampū** of Arhaddāsa: A Campū work in Sanskrit written in a high-flown style. Edited with notes by Pt. JINADASA, Bombay Saṁvat 1985, Crown p. 4-206, Price As. 12/-.

28. **Jaina-Śilālekha-saṁgraha:** It is a handy volume giving the Devanāgarī version of *Epigraphia Carnatica* II (Revised ed.) with Introduction, Indices etc. by Prof. HIRALAL JAIN, Bombay 1928, Crown pp. 16-164-428-40, Price Rs. 2/8/- .

29-30-31. **Padmacarita** of Raviṣeṇa : This is the Jaina recension of Rāma's story and as such indispensable to the students of Indian epic literature. It was finished in A. D. 676, and it has close similarities with *Paümcariu* of Vimala (beginning of the Christian era). Edited by Pt. DARBARILAL, Bombay Saṁvat 1985, vol. i, pp. 8-512 ; vol. ii, pp. 8-436 ; vol. iii, pp. 8-446. Thus pp. about 1400 in all. Price Rs. 4/8/- .

32-33. **Harivaṁśa-purāṇa** of Jinasena I : This is the Jaina recension of the Kṛṣṇa legend. These two volumes are very useful to those interested in Indian epics. It was composed in A.D. 783 by Jinasena of the Punnāṭa-saṁgha. There is a Hindī Introduction by Pt. PREMIJI. Edited by Pt. DARBARILAL, Bombay 1930, vol. i and ii pp. 48-12-806, Price Rs. 3/8/-.

34. **Nītivākyāmṛtam**, a supplement to No. 22 above : This gives the missing portion of the Sanskrit commentary, Bombay Saṁvat 1989, Crown pp. 4-76, Price As. 4/-.

35. **Jambūsvāmi-caritam** and **Adhyātma-kamala-mārtaṇḍa** of Rājamalla : See No. 26 above. Edited with an Introduction in Hindī by Pt. JAGADISH-

CHANDRA, M. A., Bombay Saṁvat 1993, Crown pp. 18-264-4, Price Rs. 1/8/-.

36. **Triṣaṣṭi-smṛti-śāstra** of Āśādhara: Sanskrit text and Marāṭhī rendering. Edited by Pt. MOTILAL HIRACHANDA, Bombay 1937, Crown pp. 2-8-166, Price As. 8/-.

37. **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol. I Ādipurāṇa (Saṁdhis 1-37): A Jaina Epic in Apabhraṁśa of the 10th century A.D. Apabhraṁśa Text, Variants, explanatory Notes of Prabhācandra. A model edition of an Apabhraṁśa text. Critically edited with an Introduction and Notes in English by Dr. P. L. VAIDYA, M. A., D.Litt., Bombay 1937, Royal 8vo pp. 42-672, Price Rs. 10/-.

37(a) Rāmāyaṇa portion separately issued. Price Rs. 2.50.

38. **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra Vol. I: This is an important Nyāya work, being an exhaustive commentary on Akalaṅka's *Laghīyastrayam* with Vivṛti (see No. 1 above). The text of the commentary is very ably edited with critical and comparative foot-notes by Pt. MAHENDRAKUMARA. There is a learned Hindī Introduction exhaustively dealing with Akalaṅka, Prabhācandra, their dates and works etc. written by Pt. KAILASCHANDRA. A model edition of a Nyāya text. Bombay 1938, Royal 8 vo., pp. 20-126-38-402-6, Price Rs. 8/-.

39. **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra, Vol. II: See No 38 above. Edited by Pt. MAHENDRAKUMAR-SHASTRI who has added an Introduction in Hindī dealing with the contents of the work and giving some details about the author. There is a Table of contents and twelve Appendices giving useful Indices. Bombay 1941. Royal 8vo pp. 20 + 94 + 403-930. Price Rs. 8/8/-.

40. **Varāṅgacaritam** of Jaṭā-Siṁhanandi: A rare Sanskrit Kāvya brought to light and edited with an exhaustive critical Introduction and Notes in English by Prof. A. N. Upadhye, M. A., Bombay 1938, Crown pp. 16+56+392, Price Rs. 3/-.

41. **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol. II (Saṁdhis 38-80): See No. 37 above. The Apabhraṁśa Text critically edited to the variant Readings and Glosses, along with an Introduction and five Appendices by Dr. P. L. VAIDYA, M.A., D. Litt., Bombay 1940. Royal 8vo pp. 24+570 Price Rs. 10/-.

42. **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol. III (Saṁdhis 81-102): See No. 37 and 40 above. The Apabhraṁśas Text critically edited with variant Readings and Glosses by Dr. P. L. VAIDYA, M. A., D. Litt. The Introduction covers a biography of Puṣpadanta, discussing all about his date, works, patrons and metropolis (Mānyakheṭa). Pt. PREMI's essay 'Mahākavi Puṣpadanta' in Hindī is included here. Bombay 1941. Royal 8vo pp. 32+28+314. Price Rs. 6/-.

42(a). **Harivaṁśa** portion is separately issued. Price Rs. 2.50.

43. **Ajanāpavanaṁjaya-nāṭakam** and **Subhadrā-nāṭikā** of Hastimalla: Two Sanskrit Dramas of Hastimalla (see also No. 3 above). Critically edited by Prof. M. V. PATWARDHAN. The Introduction in English is a well documented essay on Hastimalla and his four plays which are fully studied. There is an Index of stanzas from all the four plays. Bombay 1950. Crown pp. 8+68+120+128. Pricc Rs. 3/-.

44. **Syādvādasiddhi** of Vādībhasiṁha: Edited by Pt. DARBARILAL with Introductions etc. in Hindī shedding good deal of light on the author and contents of the work. Bombay 1950. Crown pp. 26+32+34+80. Price Rs. 1-50.

45. **Jaina Śilālekha-saṁgraha,** Part II (see No. 28 above): The texts of 302 Inscriptions (following A. Guérinot's order) are given in Devanāgarī with summary in Hindī. There is an Index of Proper Names at the end. Compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M. A. Bombay 1952. Crown pp. 4+520. Price Rs. 8/-.

46. **Jaina Śilālekha-saṁgraha,** Part III (see Nos. 23 & 45 above): The texts of 303-846 inscriptions (following Guérinot's list) is given in Devanāgarī with summary in Hindī compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M.A. There is an Index of Proper Names at the end. The Introduction by Shri G.C. CHAUDHARI is an exhaustive

study of inscriptions. Bombay 1957. Crown pp. 8+178 +592+42. Price Rs. 10/-.

47. **Pramāṇaprameyakalikā** of Narendrasena (A. D. 18th century): A Nyāya text dealing with Pramāṇa and Prameya. The Sanskrit text critically edited by Pt. DARBARILAL. The Hindī Introduction deals with the author and a number of topics connected with the contents of this work. Bhāratiya Jñānapīṭha Kashi, Varanasi 1961. Price Rs. 1.50.

For copies please write to—

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪTHA
Durgakunda Road,
Varanasi—5 (India).

Or

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪTHA
3620/21 Netaji Subhash Marg,
Delhi—6 (India).
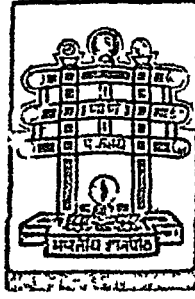
भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध
और अप्रकाशित सामग्रीका
अनुसन्धान और प्रकाशन
तथा लोक-हितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन
अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

मुद्रक : सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५